अनुवादक डॉ० मधु

Фёдор Достоевский
„ПОВЕСТИ И РАССКАЗЫ“
на языке хинди

Fyodor Dostoyevsky
STORIES
in Hindi

सोवियत संघ में मुद्रित

Д $\frac{4702010100-096}{031(05)-85}$ 354-85
ISBN 5—05—000392—x

अनुक्रम
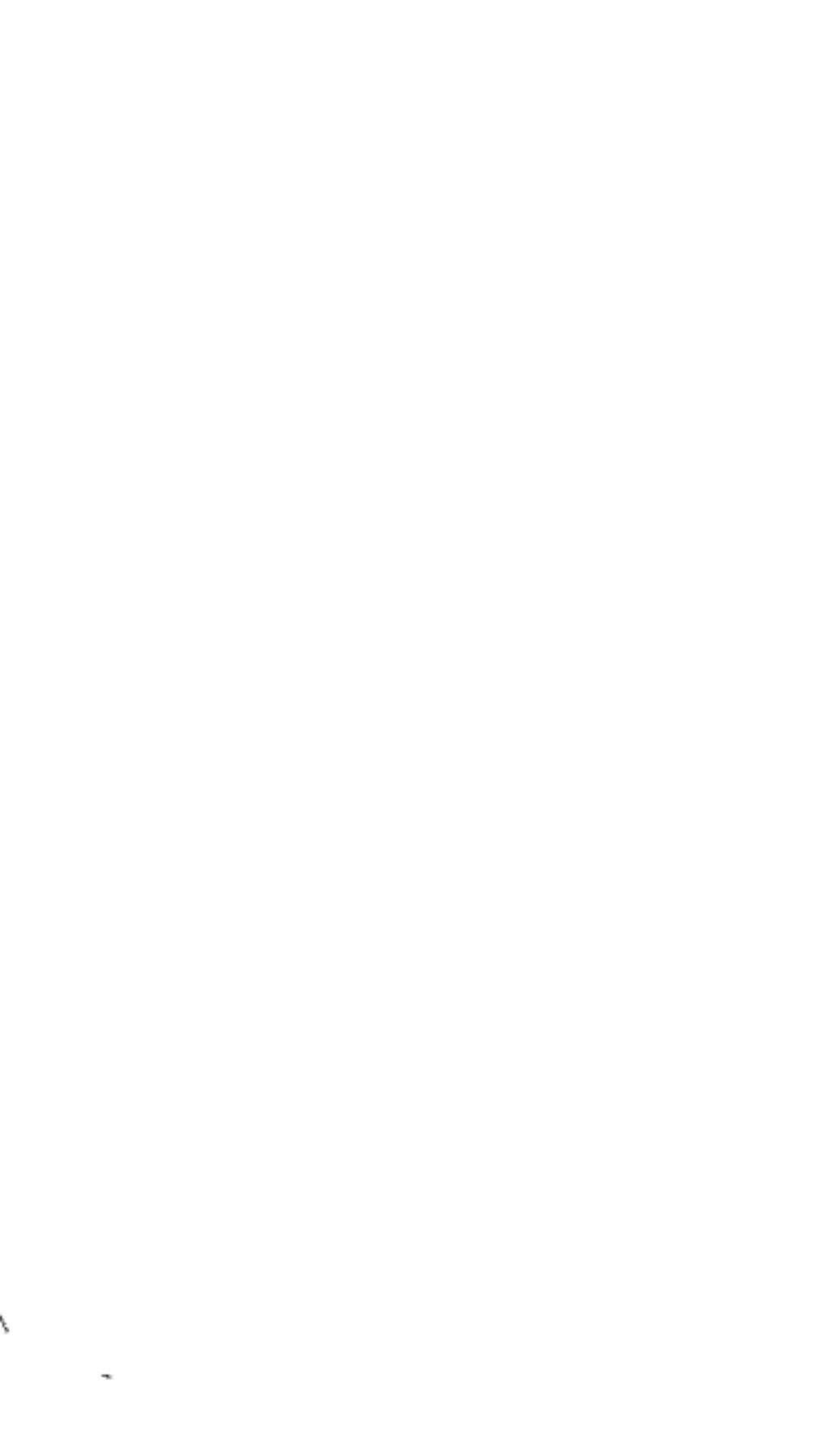
फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की – भविष्य का समकालीन

रूसी लेखक जब हम पुश्किन और गोगोल, दोस्तोयेव्स्की और तोलस्तोय का नाम लेते हुए इन शब्दों का उच्चारण करते हैं तो हमें एक विशेष अर्थ की अनुभूति होती है जो साहित्यकार और हमारे देश की साहित्यिक धरोहर की सामान्य धारणा से कहीं अधिक व्यापक महत्व को अभिव्यक्त करता है। हम अनुभव करते हैं कि रूसी लेखक लेखक ही नहीं, उससे कुछ बढ़कर है और वह रूसी ही नहीं, उससे कुछ अधिक है।

पिछली शताब्दी में हमारी संस्कृति विश्व-मंच पर पहुंच गयी। वह अपनी शब्द-शक्ति, मानव और मानवजाति के सम्मुख अपने गहन उत्तरदायित्व, सामाजिक और नैतिक समस्याओं के समाधानों की साहसिक खोज के फलस्वरूप ऐसा कर पायी।

इसलिये रूसी लेखक सार्वजनिक कार्यकर्त्ता और दार्शनिक भी बन गया, क्योंकि वह पूरी तरह से अपनी जनता का अंग रहते हुए विश्व-संस्कृति का अभिन्न अंग हो गया और अपने समय का प्रतिनिधि होते हुए भविष्य का समकालीन बन गया।

साहित्यकार की ऐसी उदात्त और गौरवमयी व्याख्या फ्योदोर मिखाइलोविच दोस्तोयेव्स्की पर भी सर्वथा लागू होती है जिन्होंने अपनी आत्मा और प्रतिभा की पूरी शक्ति से, विचार के पूर्ण प्रयास तथा अन्तरात्मा की वेदना में दुखद समय के जटिल और यातनाप्रद प्रश्नों की ओर ध्यान दिया। उस दुखद समय के प्रश्नों की ओर, जब दौलत, हिंसा और मानवद्वेष ने लोगों को निर्मम और अर्थहीन लक्ष्य – सत्ता के लिये लाभ, लाभ के लिये सत्ता – का साधन बना दिया था।

दोस्तोयेव्स्की के कृतित्व ने तब यह कहा था और आज भी यह

कहता है कि मानव की आत्मा विद्रोह करती है, वह मुक्ति-मार्गों की खोज में छटपटाती है, कि क्रय-विक्रय का माल बनने को राजी होने के बजाय वह नष्ट हो जाना बेहतर मानेगी।

दोस्तोयेव्स्की का कृतित्व एक उत्कट कलाकार की शाश्वत बेचैनी, अस्वीकार्य दुनिया के विरुद्ध उसकी आवाज, उसकी चुनौती को ही नहीं बल्कि उसकी घबराहट, मार्ग खोजनेवाले की भूल-भटकन की यातनाओं उन असंगतियों को भी व्यक्त करता है जिनका किसी एक व्यक्ति के लिये हल ढूंढना सम्भव नहीं।

दोस्तोयेव्स्की के समकालीन प्रसिद्ध कवि नेक्रासोव ने निकट आने क्रान्ति को ही अपने समय की एकमात्र गतिशील शक्ति माना। दोस्तोयेव्स्की ने समय की सीमा से मुक्त अन्तिम नैतिक आदर्शों की खोज करते हुए अपने युग से बहुत दूर तक झांकने का प्रयास किया। स्पष्ट है कि ऐसे व्यापक प्रश्न का व्यावहारिक और कारगर उत्तर नहीं मिल सकता था। किन्तु मेधावी लेखक ने जिस यातनापूर्ण आवेश से इस प्रश्न को प्रस्तुत किया है, उसका आज भी महत्त्व बना हुआ है, जब अत्याचार और दौलत की दुनिया कायम है जिसमें मानव की आत्मा को रौंदा गया है, वह बुरी तरह से लहू-लुहान है।

नहीं, दोस्तोयेव्स्की ने विनम्रता की शिक्षा नहीं दी। अपने पूरे कृतित्व द्वारा उन्होंने यही कहा है – अब और ऐसे नहीं जीना चाहिये! रूसी क्रान्तिकारियों ने यह याद रखा और दुनिया के अग्रणी लोग, जो २०वीं शताब्दी की असंगतियों के सम्मुख नत-मस्तक नहीं होते हैं, आज भी उनके सन्देश पर कान दे रहे हैं।

मानव और लेखक के नाते फ्योदोर दोस्तोयेव्स्की की उपलब्धि सदियों तक हमारे लिये मूल्यवान बनी रहेगी, वह हमारे पूर्वगामी और हमारी आत्मा की स्मृति है।

कोन्स्तान्तीन फ़ेदिन

(११ नवम्बर १९७१ को
फ्योदोर मिखाइलोविच
दोस्तोयेव्स्की की १५०वीं
वर्षगांठ को समर्पित
. [illegible] सभा के उद्घाटन-
। में)

दिल का कमज़ोर

एक ही छत के नीचे, एक ही फ्लैट, एक ही मंजिल यानी चौथी मंजिल पर दो जवान सहकर्मी रहते थे। एक था अर्कादी इवानोविच नेफेदेविच और दूसरा था वास्या शुम्कोव लेखक निश्चय ही अपने पाठक को यह स्पष्ट करने की आवश्यकता अनुभव करता है कि क्यों एक नायक का पितृनाम सहित पूरा नाम दिया गया है और दूसरे का अधूरा। यदि अन्य किसी कारण से नहीं तो केवल इसीलिये ऐसा करना जरूरी है कि संबोधन के इस रूप को अशिष्टता और जरूरत से ज्यादा अनौपचारिकता का द्योतक न माना जाये। किन्तु इसके लिये जरूरी है कि इनके पदों, आयु, पेशे और नौकरी, यहा तक कि पात्रों के चारित्रिक लक्षणों के वर्णन से इसे शुरू किया जाये। चूकि बहुत-से लेखक इसी तरह से अपनी कहानिया शुरू करते हैं तो इस कहानी के लेखक ने केवल उनसे भिन्न होने के लिये ही (अर्थात, जैसा कि कुछ कहेंगे, अपने असीम दम्भ के कारण) पात्रों की गति-विधियों से ही इसे आरम्भ करने का निर्णय किया है। तो अपनी प्रस्तावना समाप्त करके वह आरम्भ कर रहा है।

नववर्ष की पूर्ववेला में शुम्कोव शाम के पाच बजने के बाद घर लौटा। बिस्तर पर सो रहा अर्कादी इवानोविच जाग गया और उसने तनिक आख खोलकर अपने दोस्त पर नजर डाली। उसने देखा कि उसका मित्र बहुत ही बढ़िया फ्रॉक-कोट और एकदम साफ-सुथरी कमीज़ पहने है। निश्चय ही उसे इससे बड़ा आश्चर्य हुआ। "ऐसे ठाट-बाट से वास्या कहा गया होगा? और दिन का भोजन भी आज उसने घर पर नहीं किया।" शुम्कोव ने इसी बीच मोमबत्ती जला दी और अर्कादी इवानोविच फौरन यह भाप गया कि उसका मित्र मानो सयोगवश ही

उसे जगा देने का ढोंग करने की सोच रहा है। वास्तव में था भी ऐसा ही – वास्या दो बार खांसा, दो बार उसने कमरे का चक्कर लगाया और आखिर मानो संयोगवश पाइप को हाथ से नीचे गिरा दिया जिसमें वह अंगीठी के पास कोने में खड़ा हुआ तम्बाकू भर रहा था। अर्कादी इवानोविच मन ही मन हंसा।

"वास्या, बस, काफ़ी तिकड़मबाज़ी कर चुके!" अर्कादी इवानोविच ने कहा।

"अर्काशा*, तुम सो नहीं रहे?"

"सच, ठीक से तो नहीं कह सकता – लेकिन लगता है कि सो नहीं रहा हूं।"

"ओह, अर्काशा! नमस्ते, मेरे प्यारे! ओह मेरे भैया, मेरे भैया! तुम नहीं जानते कि मैं तुमसे क्या कहनेवाला हूं!"

"बिल्कुल नहीं जानता। जरा इधर आओ तो।"

वास्या, जो मानो ऐसी आशा ही कर रहा था, फ़ौरन उसके पास चला गया। उसने अर्कादी इवानोविच से किसी प्रकार के छल-कपट की उम्मीद नहीं की थी। अर्कादी इवानोविच ने बड़ी फ़ुर्ती से उसके हाथ पकड़ लिये, पलटा देकर उसे अपने नीचे दबा लिया और मानो अपनी इस बलि का "गला घोंटने" लगा। खुशमिजाज अर्कादी इवानोविच को अपनी इस कार्रवाई में स्पष्टतः बड़ा मजा आ रहा था।

"तो आ गये काबू!" वह चिल्ला रहा था, "आ गये न काबू!"

"अर्काशा, अर्काशा, यह तुम क्या कर रहे हो? छोड़ दो, भगवान के लिये छोड़ दो, मेरे फ़ॉक-कोट का सत्यानास हो जायेगा!"

"मेरी बला से। क्या जरूरत है तुम्हें फ़ॉक-कोट की? तुम इतने सहज विश्वासी क्यों हो, खुद ही दूसरों के हाथों में फंसते हो? बताओ तुम कहां गये थे, तुमने दिन का खाना कहां खाया?"

"अर्काशा, भगवान के लिये छोड़ दो!"

"दिन का खाना कहां खाया?"

"यही तो मैं तुम्हें बताना चाहता हूं।"

"तो बताओ।"

"तुम पहले मुझे छोड़ दो!"

---

* अर्कादी नाम का स्नेहपूर्ण, लघु रूप। – अनु०

"नहीं, जब तक बताओगे नहीं, तब तक नहीं छोड़ूगा!"

"अर्काशा, अर्काशा! तुम समझते क्यों नहीं कि ऐसा नहीं कि जा सकता, यह असम्भव है!" अपने दोस्त के मज़बूत हाथों से छ की कोशिश करते हुए कमज़ोर वास्या चिल्लाया, "कुछ ऐसे मा भी तो होते हैं! "

"कैसे मामले? "

"ऐसे मामले, जिनके बारे में अगर ऐसी स्थिति में बताया ज तो आदमी अपनी गरिमा खो बैठता है। यह बिल्कुल सम्भव नहीं सब कुछ मज़ाक बन जायेगा—और यहां मज़ाक की नहीं, बल्कि ब गम्भीर बात है।"

"गोली मारो तुम अपनी इस गम्भीर बात को! यह भी खू रही! तुम मुझे कुछ ऐसा सुनाओ कि मैं हंसना चाहूं, कुछ ऐसा सुनाओ मैं गम्भीर कुछ नहीं सुनना चाहता। वरना तुम क्या खाक दोस्त हो! बताओ तो, कैसे दोस्त हो तुम? बताओ तो?"

"अर्काशा, कसम भगवान की, ऐसा नहीं किया जा सकता!"

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहता. "

"ओह, अर्काशा!" पलंग पर आर-पार लेटे और अपने शब्दों को यथाशक्ति अधिकतम गम्भीरता प्रदान करते हुए वास्या ने कहना शुरू किया। "अर्काशा! शायद मैं तुम्हें बता ही दूंगा, लेकिन .."

"बताओ तो! "

"मैं विवाह का प्रस्ताव कर आया हूं!"

अर्कादी इवानोविच ने एक भी शब्द और कहे बिना वास्या को बच्चे की तरह हाथों में उठा लिया, यद्यपि वास्या नाटा नहीं, काफ़ी लम्बा, मगर दुबला-पतला था, और बड़ी आसानी से उसे इस तरह उठाये हुए वह कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाने और ऐसा ज़ाहिर करने लगा मानो बच्चे को लोरी दे रहा हो।

"तो मैं तुझ दूल्हे को पोतड़े बांध रहा हूं," वह कहता जा रहा था। किन्तु यह देखकर कि उसके हाथों पर लेटा हुआ वास्या न तो हिल-डुल रहा है और न कुछ कह ही रहा है, वह गम्भीर हो गया और अनुभव करने लगा कि शायद मज़ाक अपनी सीमा को लांघ गया है। उसने उसे कमरे के बीचोंबीच खड़ा कर दिया और बहुत ही निश्छल तथा मैत्रीपूर्ण ढंग से उसका गाल चूमा।

"वास्या, नाराज़ तो नहीं हो गये?"
"अर्कादी, सुनो तो"
"आओ, नववर्ष के पर्व के नाम पर सुलह कर लें।"
"मुझे तो कोई आपत्ति नहीं, लेकिन तुम क्यों ऐसे सिरफिरे हो, शैतान की दुम? कितनी बार मैं तुमसे कह चुका हूं कि भगवान की क़सम, मज़ाक की भी कोई हद होनी है, हद होती है!"
'पर ख़ैर, अब तो तुम नाराज़ नहीं हो न?"
"मेरी बात छोड़ो, मैं कब किसी से नाराज़ होता हूं! लेकिन तुमने मेरे दिल को ठेस लगायी है, समझते हो न!"
'कैसे दिल को ठेस लगायी है? किस तरह?"
"मैं तो तुम्हारे पास एक दोस्त की तरह आ रहा था, ख़ुशी से छलकता दिल लिये, तुम्हें अपनी ख़ुशी का भागीदार बनाने को, तुम्हें अपनी ख़ुशी के बारे में बताने को"
"किस ख़ुशी के बारे में बताने को? तुम बताते क्यों नहीं?"
'यही कि मैं शादी करने जा रहा हूं!" वास्या ने तनिक खीझकर कहा, क्योंकि वह वास्तव में ही कुछ नाराज़ था।
"तुम! तुम शादी कर रहे हो! सचमुच शादी कर रहे हो?" अर्कादी पूरे ज़ोर से चिल्ला उठा। "नहीं, नहीं यह सब क्या है? वह भी इस तरह से रहे हो और आंसू भी बह रहे हैं! वास्या, मेरे प्यारे वास्या, मेरे लाडले, बस काफ़ी है! क्या सचमुच तुम शादी करने जा रहे हो?" और अर्कादी इवानोविच ने उसे फिर से अपनी बांहों में भर लिया।
"समझते हो या नहीं कि मैं परेशान क्यों हो उठा हूं?" वास्या ने कहा। 'तुम दयालु हो, तुम दोस्त हो, मैं यह जानता हूं। मैं तुम्हारे पास इतना ख़ुश-ख़ुश आ रहा था, मेरी आत्मा में उल्लास उमड़ रहा था और अचानक अपने दिल की यह सारी ख़ुशी, अपना यह सारा उल्लास मुझे अपनी गरिमा खोकर बिस्तर पर आर-पार लेटे और छटपटाते हुए व्यक्त करना पड़ा समझते हो, अर्कादी," वास्या तनिक हंसकर कहता गया, "इसने तो उपहासजनक रूप ले लिया – उस क्षण तो मैं कुछ हद तक अपने पर भी अधिकार नहीं रखता था। मैं उस बात के महत्व को तो कम नहीं कर सकता था अच्छा हुआ कि तुमने यह नहीं पूछा – उसका नाम क्या है? क़सम खाकर कहता

"यह सब कैसे हुआ, कैसे हुआ? बताओ, मुझे सब कुछ बताओ! मैं मारे खुशी पागल हूं भैया, नाहक हैरान हूं, बेहद हैरान हूं मैं। कसम भगवान की, बिल्कुल ऐसा लगता है मानो अचानक बिजली गिर पड़ी हो! नहीं, नहीं, मेरे भैया, तुमने यह अपने मन से बात बना ली है। कसम भगवान की, यह तुम्हारा मनगढ़न्त किस्सा है, तुमने मन हारी है!" अर्कादी हर्षातिरेक से चिल्ला उठा और उसने सचमुच विश्वास न करते हुए वास्या के चेहरे की ओर से देखा। किन्तु उस पर जल्दी से जल्दी शादी करने के मसले की जोरदार पुष्टि का भाव देखकर बिस्तर पर आ गिरा और खुशी से ऐसे कलाबाजियां करने लगा कि दीवारें हिल उठीं।

"वास्या, यहां आकर बैठो!" आखिर बिस्तर पर बैठते हुए वह चिल्लाया।

"भैया, सच कहता हूं, मैं नहीं जानता कि कैसे शुरू करूं, कहां से शुरू करूं!"

दोनों हर्ष-विह्वल होकर एक-दूसरे को ताक रहे थे।

"वास्या, वह है कौन?"

'अर्तेम्येव परिवार की!" खुशी से क्षीण हुई आवाज में वास्या ने जवाब दिया।

अरे नहीं?'

सच मैं तो इस परिवार के बारे में तुम्हारे कान खाता रहा, खाता रहा, फिर चुप रहने लगा और तुमने कभी ध्यान ही नहीं दिया। ओह अर्काशा कितनी मुश्किल से मैंने तुमसे यह सब छिपाया, लेकिन तुम्हें बताते हुए डरता था, डरता था! सोचता था कि मामला सिरे नहीं चढ़ेगा और मैं प्यार में दीवाना हो चुका हूं, अर्काशा! हे भगवान हे मेरे भगवान! तो किस्सा यों हुआ," उत्तेजना से लगातार रुकते हुए उसने कहना आरम्भ किया, "एक साल पहले उसका मंगेतर था अचानक उसे काम के सिलसिले में किसी दूसरी जगह भेज दिया गया। मैं उसे जानता था – वह बस यों ही था, ख़ैर हटाओ उसकी चर्चा! तो उसने चिट्ठियां लिखनी बन्द कर दीं, लापता ही हो गया। ये लोग इन्तज़ार करते रहे, इन्तज़ार करते रहे, समझ नहीं पाये कि इसका क्या मतलब निकालें? चार महीने पहले वह अचानक बीवी के साथ वापस आया और इनके यहां सूरत तक नहीं दिखाई। कितना घटियापन है! कैसी नीचता है! इनका पक्ष लेनेवाला कोई नहीं। वह बेचारी रोती रही रोती रही और तभी मुझे उससे प्यार हो गया यों तो मैं बहुत पहले से, हमेशा ही उसे प्यार करता रहा था! तो मैं उसे दिलासा देने लगा, उनके यहां जाता रहा, जाता रहा सच कहता हूं, मैं नहीं जानता कि यह कैसे हुआ, लेकिन वह भी मुझे प्यार करने लगी। एक हफ्ता पहले मैं अपने को वश में न रख सका, रो पड़ा सिसकने लगा और उससे सब कुछ कह दिया – यही कि मैं उससे प्यार करता हूं – मतलब यह कि सब कुछ कह दिया! 'मैं ख़ुद भी आपको प्यार करने को तैयार हूं, वसीली पेत्रोविच, लेकिन मैं एक ग़रीब लड़की हूं मुझसे खिलवाड़ नहीं कीजियेगा। मैं किसी को प्यार करने की हिम्मत ही नहीं कर पाती।' तो भैया मेरे, समझते हो न! मामले को समझते हो न? हमने उसी वक्त एक-दूसरे को वचन दे दिया। मैं सोचता रहा बहुत मत्थापच्ची करता रहा – उसकी मां से यह कैसे कहा जाये? वह बोली – 'यह मुश्किल काम है, थोड़ा रुक जाइये।' मां डरती है, हो सकता है कि मुझे आपसे शादी न करने दे। वह ख़ुद भी रोती रही। मैंने उससे कुछ कहे बिना आज उसकी मां से सब कुछ कह डाला।

लीजा उसके सामने घुटनों के बल हो गयी, मैं भी... उसने हमें आशीर्वाद दिया। अर्काशा, अर्काशा! मेरे बहुत ही प्यारे दोस्त! हम तीनों एकसाथ रहेंगे। नहीं, मैं किसी भी हालत में तुमसे अलग नहीं होऊंगा।"

"वास्या, मैं चाहे कितनी भी कोशिश क्यों न करूं, मुझे यकीन नहीं हो रहा, कसम भगवान की, मुझे किसी तरह भी यकीन नहीं हो रहा, कसम खाता हूं। सच, मुझे तो कुछ ऐसे लगता है.. सुनो तो, यह कैसे हो सकता है कि तुम शादी करने जा रहे हो?.. यह कैसे हुआ कि मुझे इसका पता नहीं चला, बताओ तो? सच कहूं वास्या मैंने खुद भी शादी करने की सोची थी, भैया। लेकिन अब अगर तुम शादी कर रहे हो तो बात खत्म हो जाती है। यही चाहता हूं कि तुम सुखी रहो, सुखी रहो! "

"ओह भैया, अब मन को कितना चैन मिल रहा है, कितना हल्का है मेरा दिल.." वास्या ने उठकर उत्तेजना के कारण कमरे मे इधर-उधर आते-जाते हुए कहा। "मैं सच कह रहा हूं न, सच कह रहा हूं न? तुम भी ऐसा ही महसूस करते हो न? बेशक हम गरीबी की, मगर सुखी जिन्दगी बितायेंगे। यह तो कोई कपोल-कल्पना नहीं; हमारा सुख किताबी चीज नही है। हम तो वास्तव मे ही सुखी होंगे!."

"वास्या, वास्या, सुनो तो।"

"क्या बात है?" अर्कादी इवानोविच के सामने रुकते हुए वास्या ने पूछा।

"मेरे दिमाग मे एक ख्याल आया है, लेकिन तुमसे कहते हुए घबराता हू! तुमसे माफी चाहता हू, तुम मेरे सन्देहो को दूर कर दो। तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होगी? तुम जानते हो कि मैं बहुत खुश हू, बेशक, इतना खुश हू कि जिसका कोई ठिकाना नही, लेकिन—तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होगी? बताओ तो?"

"हे भगवान, हे भगवान! तुम भी कमाल कर रहे हो, अर्काशा!" अर्कादी इवानोविच को बहुत ही हैरानी से देखते हुए वास्या ने कहा। "सचमुच क्या बात कर रहे हो तुम? बुढ़िया तक ने इस मसले पर दो मिनट भी गौर नही किया, जब मैंने सारी बात साफ तौर पर उसके सामने कह दी। तुम यह पूछो कि उनकी कैसे गुजर-बसर होती है? तीन व्यक्तियों के लिये पाच सौ रूबल सालाना। इतनी ही तो पेंशन मिलती है उन्हे बूढ़े के मरने के बाद। मा-बेटी और इनके अलावा उसका

छोटा भाई जिसकी स्कूल की फीस भी इसी रकम मे से दी जाती है। तो ऐसे गुजारा करते हैं ये लोग ! ये तो हम-तुम ही रईस है ! कभी-कभी, किसी अच्छे साल मे मेरी आमदनी तो सात सौ तक पहुच जाती है।"

"सुनो तो वास्या, तुम मुझे माफ कर देना, भगवान की कसम, मैं तो बस, यो ही कहता हू, मैं सिर्फ यह सोच रहा हू कि कही कुछ गडबड न हो जाये – तुम किन सात सौ रूबलो की बात कर रहे हो ? सिर्फ तीन सौ ही तो "

"तीन सौ ! और यूलिआन मास्ताकोविच ? उसे भूल गये ?"

"यूलिआन मास्ताकोविच ! लेकिन भैया, यह तो भरोसे का काम नही है, यह तो वेतन के उन तीन सौ रूबलो के समान नही है जहा हर रूबल पक्के दोस्त की तरह है। यूलिआन मास्ताकोविच बेशक बडा आदमी है, मैं उसकी इज्जत करता हू, उसे समझता हू, यो ही तो इतना ऊचा ओहदा नही है उसका। कसम भगवान की, मैं तो उसे प्यार भी करता हू, क्योकि वह तुम्हे प्यार करता है और तुम्हे काम के पैसे देता है, जबकि उसका ऐसा करना जरूरी नही था, वह अपने लिये किसी क्लर्क की नियुक्ति करवा सकता था – तुम सहमत हो न मेरी बात से वास्या इतना ही नही – मै कोई बेसिर-पैर की बाते नही कर रहा हू। मैं यह कह सकता हू कि सारे पीटर्सबर्ग मे किसी को भी तुम्हारे जैसी सुन्दर लिखावट नही है, मैं यह मानता हू," अर्कादी इवानोविच ने बडे उत्साह से कहा, "लेकिन भगवान न करे ! अगर ऐसा हो जाये कि तुम उसकी नजर से गिर जाओ, वह तुमसे नाराज हो जाये, उसके यहा काम न रहे या वह किसी दूसरे को यह काम दे दे – कुछ भी तो हो सकता है ! यूलिआन मास्ताकोविच आज है, कल नही है, वास्या "

"सुनो अर्काशा, यो तो हम पर इसी वक्त यह छत भी गिर सकती है . ."

"हा, हा. मैं तो यो ही अपने ख्याल जाहिर कर रहा था "

"नही, तुम मेरी बात सुनो, ध्यान से सुनो – बात यह है – वह मुझसे नाता तोड ही नही सकता नही, तुम मेरी बात सुन लो, ध्यान से सुन लो। मैं तो उसके सभी काम बडी लगन से पूरे करता हू, वह इतना दयालु व्यक्ति है, अर्काशा, उसने तो आज ही मुझे चादी के पचास रूबल दिये हैं !"

"सच, वास्या ? सरकारी इनाम के तौर पर?"

"इनाम कैसा! अपनी जेब से। बोला—'भैया, तुम्हे ि
पाच महीनो से पैसे नही मिले है, चाहते हो तो ये पैसे ले लो। धन्
देता हू तुम्हे, धन्यवाद, मैं तुम्हारे काम से खुश हू' कसम ह
हू! बोला—'तुम मेरे यहां बेगार थोडे ही करते हो।' सच!
कहा उसने। मेरी आखो से आसू बह निकले, अर्कादा। कसम भग
की!"

"सुनो वास्या, तुमने उन कागजो की नकल पूरी कर ली?"

"नही अभी तो पूरी नही की।"

"प्यारे वास्या! मेरे फरिश्ते! यह तुमने क्या किया?"

"सुनो अर्कादी, कोई बात नहीं—अभी दो दिन बाकी हैं,
खत्म कर लूगा"

"लेकिन तुमने अभी तक यह किया क्यो नही?"

"बस हो गये चालू, हो गये चालू! तुम तो ऐसी हताशा
देख रहे हो कि मेरा कलेजा फटा जा रहा है, दिल टुकडे-टुकडे हो र
है। तुम तो हमेशा इसी तरह से मेरी जान निकाल लेते हो! ऐ
चिल्लाने लगते हो कि आकर बचाओ! जरा सोचो तो—आखिर ऐस
क्या मुसीबत आ गयी है? खत्म कर लूगा, भगवान की कसम, ख
कर लूगा"

"और अगर खत्म न कर पाये तो?" उछलकर खड़ा होता हुआ
अर्कादी ऊचे बोला। "उसने तुम्हे आज ही इनाम दिया है! तुम शादी
करनेवाले हो छि, छि छि!"

"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं" वास्या चिल्ला उठा। "मै
अभी बैठ जाता हू, इसी क्षण बैठ जाता हू काम करने के लिये। कोई
बात नहीं!"

"तुमने ऐसी लापरवाही की कैसे, वास्या?"

"ओह अर्काशा! भला मै चैन से बैठ सकता था? ऐसी हालत
थी मेरे मन की? मै तो दफ्तर मे भी बडी मुश्किल से बैठा रह सका।
मेरा दिल तो मेरे बस मे नही था और, कोई बात नही! मै आठ
घंटे काम करूंगा, बल्कि आठ घंटे काम करूंगा, पूरी रात भी,
और—कुछ कर डालूगा!"

बहुत काफी है काम?"

"और, मेरे भाई! " वास्या ने माथे पर ऐसे बल डाले मानो दुनिया मे इससे भयानक और जानलेवा कोई दूसरा सवाल ही न
"बहुत, बहुत ही ज्यादा।"

"जानते हो, मेरे दिमाग मे एक ख्याल आया था..."

"क्या?"

"नही, अभी नही बताऊगा, तुम लिखो।"

"बताओ तो! बताओ तो!"

"अब छ से अधिक का समय हो चुका है, वास्या!"

इतना कहकर अर्कादी मुस्कराया और उसने मक्कारी से आ मारी, लेकिन कुछ डरते-डरते और यह न जानते हुए कि वा की क्या प्रतिक्रिया होगी।

"तो, बताओ?" वास्या ने लिखना बन्द करके, उससे न मिलाते और प्रत्याशा से कुछ पीला भी पडते हुए पूछा।

"जानते हो, क्या?"

"भगवान के लिये बताओ भी।"

"जानते हो, क्या? तुम बहुत विह्वल हो, तुम अधिक काम नह कर पाओगे. जरा रुको, रुको, रुको, रुको – मैं सब समझता हूं सब समझता हूं – सुनो तो!" बडे उत्साह से पलग पर से उठते वास्या को बीच मे ही टोकते और पूरी शक्ति से उसकी आपत्ति का विरोध करते हुए अर्कादी कह उठा। "सबसे पहले तो तुम्हे शान्त हो जाना चाहिये, दिल को मजबूत करना चाहिये, ठीक है न?"

"अर्काशा! अर्काशा!" कुर्सी से उछलकर खडा होता हुआ वास्या चिल्ला उठा। "मैं सारी रात काम करता रहूगा, भगवान की क़सम, सारी रात बैठा रहूगा!"

"हां, हा! केवल सुबह को ही तुम्हारी आख लगेगी ."

"नही सोऊगा, किसी हालत मे नही सोऊगा..."

"नही, नही, ऐसे काम नही चलेगा, बेशक तुम सो जाओगे, पाच बजे सो जाना। आठ बजे मैं तुम्हे जगा दूगा। कल छुट्टी का दिन है – तुम दिन भर जमकर लिखते रहना... उसके बाद रात को, और हा – क्या बहुत काम बाकी है?.."

"यह देखो, इतना बाकी है!.."

वास्या ने खुशी और प्रत्याशा से कापते हुए कापी दिखाई।

"यह देखो!.."

"सुनो, मेरे भाई, यह तो बहुत नहीं है ..."

"मेरे प्यारे, कुछ वहां भी है," सहमी-सहमी नजर से अर्कादी की ओर देखते हुए, मानो इस बात का निर्णय अर्कादी के हाथ में ही हो कि उसे जाने की अनुमति मिलेगी या नहीं, वास्या ने उत्तर दिया।

"वहां कितना बाकी है?"

"छोटे-छोटे दो पृष्ठ ..."

"अच्छा? सुनो तो। हम काम पूरा कर लेंगे कसम भगवान की पूरा कर लेंगे!"

"अर्काशा!"

"वास्या! सुनो तो! नववर्ष की इस शाम को सभी पारिवारिक ढंग से इकट्ठे हो रहे हैं, हम दोनों ही बेघर-बार है, यतीम है ... उफ! वास्या! ..."

अर्कादी ने वास्या को बाहों में भर लिया और शेर की तरह मजबूत गिरफ्त में जकड़ लिया।

"अर्कादी, तो तय रहा!"

"वास्या, मैं यही कहने जा रहा था। बात यह है वास्या मेरे बुद्धू दोस्त! सुनो, सुनो तो! बात यह है ..."

मुंह खोले हुए ही अर्कादी चुप हो गया, क्योंकि हर्षातिरेक में अपनी बात कह नहीं पाया। वास्या उसका कंधा थामे हुए उसे घूर रहा था और अपने होंठों को ऐसे हिला रहा था मानो खुद उसकी बात पूरी करना चाहता हो।

"तो!" वास्या ने आखिर कहा।

"मेरा आज उससे परिचय करवाओ!"

"अर्कादी! हम चाय पीने वहां चलेंगे! जानते हो, क्या? जानते हो? हम नया साल शुरू होने तक भी वहां नहीं रुकेंगे, पहले ही चले आयेंगे," वास्या हार्दिक उल्लास में चिल्ला उठा।

मतलब यह कि पूरे दो घण्टे, न कम, न ज्यादा ...

"और इसके बाद मैं जब तक काम खत्म न करूं दूसरे से कोई वास्ता नहीं होगा! ..."

"वास्या! ..."

"अर्कादी!"

अर्कादी ने पाँच मिनट में ही ठाठदार कपड़े पहन लिये। वास्या

ने अपने कपड़ों को सिर्फ टीप-टाप कर लिया, क्योंकि घर आते ह उसने कपड़े नहीं उतारे थे – इतने जोश में वह काम में जुट गया था
दोनों जल्दी-जल्दी सड़क पर आ गये, दोनों एक-दूसरे से बढ़ खुश थे। इन्हें पीटर्सबर्ग स्तोरोना नामक हलके से कोलोम्ना की ओ जाना था। अर्कादी इवानोविच फुर्ती से और बड़े-बड़े डग भर रहा था उसकी चाल से ही यह देखा जा सकता था कि वह अधिकाधिक खि जाते वास्या के सुख से कितना खुश है। अर्कादी की तुलना में वास्य छोटे डग भर रहा था, मगर अपनी गरिमा सुरक्षित रखते हुए। दूसर ओर, अर्कादी इवानोविच ने उसे इतने अच्छे रूप में कभी नहीं पाया था। इस समय वह उसका पहले से कहीं अधिक आदर कर रहा था और उसका वह शारीरिक दोष भी, जिसके बारे में पाठक अभी तक नहीं जानता (वास्या की एक बगल तनिक टेढ़ी थी), और जो अर्कादी इवानोविच के दयालु हृदय में सदैव गहन, स्नेहपूर्ण सहानुभूति पैदा करता था, इस समय उसके मित्र को और भी अधिक स्नेहशील बना रहा था तथा वास्या स्पष्टत इसके सर्वथा योग्य था। अर्कादी इवानो विच ने तो खुशी के मारे रोना भी चाहा, मगर किसी तरह अपने को सम्भाल लिया।

"किधर, वास्या, किधर जा रहे हो? यहा से नजदीक रहेगा!" वास्या को वोज्नेसेन्स्की प्रोस्पेक्ट की तरफ मुड़ते देखकर अर्कादी इवानो विच चिल्लाया।

"चुप रहो, अर्काशा, चुप रहो "

"सच कहता हू, यहा से नजदीक रहेगा, वास्या।"

"अर्काशा! जानते हो?" वास्या ने रहस्यपूर्ण और खुशी के का क्षीण आवाज में कहना शुरू किया। "जानते हो? मैं लीजा के लि छोटा-सा उपहार ले जाना चाहता हू "

"क्या उपहार?"

"भैया, यहा कोने पर मदाम लेरू की बहुत बढ़िया दुकान है!"

"हा, तो!"

"टोपी, मेरे प्यारे, टोपी – आज मैंने यहा बहुत ही प्यारी टोपी देखी है। मैंने उसके फैशन के बारे में पूछा। जवाब मिला – Manon Lescaut* – कमाल की चीज है! गहरे लाल रंग के रिबन हैं और

* फ्रांसीसी लेखक अन्तुआ फ़ासुआ प्रेवो के इसी नामवाले उपन्यास की नायिका। – स०

अगर वह महगी नहीं अर्काशा, बेशक महगी भी हो। "

"तुम तो सभी कवियो से बढ-चढकर हो, वास्या! आओ चले!"

वे भागने लगे और दो मिनट बाद दुकान पर पहुच गये। घुघराले बालो और काली आखोवाली फ्रासीसी महिला ने उनका स्वागत किया। वह उसी क्षण, अपने गाहको पर पहली नजर डालते ही उनकी तरह खिल उठी, खुश हो गयी, यहा तक कि, अगर ऐसा कहा जा सके, उनसे भी ज्यादा खुशी की तरग मे आ गयी। हर्षातिरेक के कारण वास्या तो मदाम लेरू को चूमने को भी तैयार था

"अर्काशा!" उसने दुकान की बहुत बडी मेज़ पर लकडी के छोटे-छोटे स्टैडो पर सजी बहुत सुन्दर, बहुत अनूठी टोपियो पर सरसरी नजर डालते हुए कहा। "कमाल है न! वह कितनी बढिया चीज है! और वह? मिसाल के तौर पर, वह प्यारी-सी, देख रहे हो न?" सिरे पर रखी हुई एक बहुत ही सुन्दर टोपी की ओर सकेत करते हुए वह फुसफुसाया। लेकिन यह वही नहीं थी जो वास्या खरीदना चाहता था, क्योकि उसे दूर से ही देखने पर वह उसके मन से उतर चुकी थी। उसने इस दूसरी पर, अनुपम, अनूठी टोपी पर अपनी नजर गडा दी थी जो दूसरे सिरे पर रखी हुई थी। वह उसे ऐसे देख रहा था मानो कोई उसे चुरा ले जायेगा या फिर यह टोपी मानो इसीलिये अपनी जगह से उड जायेगी कि वास्या को न मिल सके।

"वह देखो," अर्कादी इवानोविच ने एक टोपी की तरफ इशारा करते हुए कहा। "शायद वह सबसे अच्छी है।"

"अरे, वाह, अर्काशा! सचमुच तारीफ के लायक हो तुम। तुम्हारी पसन्द के लिये मैं खास तौर पर तुम्हारी इज्जत करने लगा हू," अर्कादी के प्रति स्नेहाभिभूत होकर चालाकी से काम लेते हुए वास्या ने कहा। "बहुत बढिया है तुम्हारी टोपी, लेकिन जरा इधर आओ तो!"

"इससे बेहतर कहा है?"

"इधर देखो तो!"

"यह?" अर्कादी ने सन्देह प्रकट किया।

किन्तु जब और अधिक धीरज रखने मे असमर्थ वास्या ने इस टोपी को लकडी के स्टैड से झपट लिया, जहा से वह इतने लम्बे अरसे तक इन्तजार करने के बाद ऐसे अच्छे गाहक के आने पर खुश होती हुई मानो खुद ही उडकर उसके हाथ मे आ गयी। जब उसके सभी फीते,

झालरें और लेसें सरसरा उठी तो अर्कादी इवानोविच की मजबूत छाती से अचानक खुशी की चीख निकल गयी। यहां तक कि मदाम सेक ने भी, जो पसन्द के मामले में अपनी निर्विवाद श्रेष्ठता और उत्कृष्ट के बावजूद टोपी के चुनाव के इस सारे वक्त में केवल शिष्टतावश खामोश रही थी, खूब खुली मुस्कान से उसका अनुमोदन किया। उस हर अदा, उसकी नजर, हाव-भाव और मुस्कान—सभी कुछ यह कह लग रहा था—हां! तुमने ठीक चुनाव किया है और उस खुशी लायक हो जो तुम्हारी राह देख रही है।

"तो तुम वहां अलग कोने में नखरे कर रही थी, कर रही न नखरे!" इस प्यारी टोपी पर अपना सारा प्यार लुटाते हुए वास्या चिल्ला उठा। "जान-बूझकर छिप रही थी, शैतान की नानी, मेरी प्यारी!" और उसने उसे चूमा यानी टोपी के आस-पास की हवा को चूमा, क्योंकि वह अपनी इस दौलत को छूते हुए डर रहा था।

"तो हीरा ऐसे अपने गुण और चमक को छिपाये रहता है," खुशी की तरंग में अर्कादी ने इतना और जोड़ दिया तथा मजाक के लिये बहुत जंचता हुआ उक्त वाक्य दोहरा दिया जो उसने उसी सुबह को अखबार में पढ़ा था। "तो वास्या, अब क्या विचार है?"

"हुर्रा, अर्काशा! आज तो तुम्हारा भी दिमाग खूब चल रहा है। मेरी बात को सच मानना, तुम औरतों को दीवाना कर दोगे। मदाम सेक, मदाम सेक!"

कहिये?

"प्यारी मदाम सेक! "

मदाम सेक ने अर्कादी इवानोविच की तरफ देखा और सौजन्यता से मुस्करा दी।

"आप विश्वास नहीं करेंगी कि इस क्षण मैं आपकी पूजा कर रहा हूं... आपको चूमने की अनुमति चाहता हूं..." और वास्या ने दुकान मालकिन को चूमा।

निस्सन्देह ही इस क्षण मदाम सेक को बहुत ही शरम में [illegible] पड़ा, क्योंकि वास्या जैसे शैतान के सामने उसकी [illegible] कर रहा। किन्तु मैं और ईश्वर यह भी कहना चाहूंगा कि मदाम सेक ने वास्या के उत्साह को जिस ढंग से ग्रहण किया उसमें [illegible] और अपार सौजन्य तथा [illegible] के

"नहीं, अर्कादी, नहीं, मैं जानता हू कि तुम मुझे इतना अधिक चाहते हो कि जिसकी कोई सीमा नहीं, किन्तु इस समय मैं जो कुछ अनुभव कर रहा हू, तुम उसका सौवां अश भी अनुभव नहीं कर सकते। मेरा दिल उमडा पड रहा है, छलका जा रहा है! अर्कादी! मैं ऐसे सौभाग्य के योग्य नहीं हू। मैं यह सुन रहा हू, अनुभव कर रहा हू! किसलिये मुझे ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ है," घुटी-घुटी सिसकियोंवाली आवाज़ मे उसने कहा. "ऐसा क्या किया है मैंने, बताओ तो! देखो तो इस दुनिया मे कितने लोग हैं, कितने आसू, कितने दुख-दर्द हैं, हंसी-खुशी के बिना इन्हें कितने नीरस दिन बिताने पड़ते हैं! लेकिन मैं... मुझे ऐसी लडकी प्यार करती है, मुझे... तुम अभी उसे खुद देख लोगे, स्वय उसके नेकदिल का मूल्याकन कर लोगे। मैं नीचे कुल मे पैदा हुआ, अब मेरा अपना पद है और पक्की आमदनी यानी मेरा वेतन है। मैं शारीरिक दोष के साथ पैदा हुआ, एक ओर को कुछ झुका हुआ हू। लेकिन मैं जैसा हू, वह उसी रूप मे मुझे प्यार करने लगी। आज यूलिआन मास्ताकोविच भी इतना स्नेहशील, इतना कृपालु था, इतनी शिष्टता से पेश आया। आम तौर पर बहुत कम ही वह मुझसे बातचीत करता है। आज मेरे पास आकर बोला – 'तो वास्या (कसम भगवान की, उसने मुझे ऐसे ही सम्बोधित किया), छुट्टियो में मौज करोगे न?' (खुद हस रहा था)।

"'हुज़ूर, बात यह है,' मैं बोला, 'कुछ काम-काज है,' और इसी क्षण हिम्मत बटोरकर यह भी कह दिया – 'शायद कुछ मौज़ भी कर लू, हुज़ूर।' सच, ऐसे ही कह दिया। उसने इसी वक्त मुझे पैसे दे दिये। इसके बाद दो-चार शब्द और कहे। भैया मेरे, मैं रो पड़ा, मेरी आखे छलछला आईं। लगता है कि वह भी कुछ द्रवित हो उठा था, उसने मेरा कन्धा थपथपाया और बोला – 'वास्या, ऐसे ही, हमेशा ऐसे ही अनुभव करते रहना जैसे अब कर रहे हो . '"

वास्या क्षण भर को चुप हो गया। अर्कादी इवानोविच ने मुह फेरकर मुट्ठी से आसू की बूंद पोछी।

"इतना ही नहीं, इतना ही नहीं . " वास्या कहता गया। "मैंने पहले कभी तुमसे इसके बारे मे नहीं कहा, अर्कादी .. अर्कादी! तुम्हारी दोस्ती मुझे कितनी अधिक खुशी देती है, तुम्हारे बिना मैं इस दुनिया मे जिन्दा ही न रहता, – नहीं, नहीं, तुम एक भी शब्द मुह से नहीं

निकालो, अर्कादी! अपना हाथ मुझे अपने हाथ में लेने दो, तुम्हारे प्रति अपना आभार प्रकट करने दो!'' वास्या अपनी बात आगे जारी न रख सका।

अर्कादी इवानोविच तो वास्या के गले में बांहें डाल देना चाहता था, लेकिन चूंकि वे सड़क पार कर रहे थे तो उन्हें अपने कानों के पास ही ऊंची आवाज सुनाई दी – 'बचकर! सम्भलकर!'' और ये दोनों डरकर, घबराकर पटरी की तरफ भाग गये। अर्कादी इवानोविच को तो इससे खुशी भी हुई। वास्या का आभार प्रकट करना उसे इस विशेष क्षण का परिणाम प्रतीत हुआ। खुद उसे अफसोस होने लगा। उसने अनुभव किया कि वास्या के लिये वह बहुत कम ही कुछ कर पाया है! इतना थोड़ा-सा करने के लिये भी वास्या जब आभार जताने लगा तो उसे तो अपने पर शर्म भी आई! लेकिन अभी तो पूरी जिन्दगी सामने थी और अर्कादी इवानोविच ने राहत की सांस ली

निश्चय ही इस समय इनके आने की प्रतीक्षा नहीं हो रही थी! इसका प्रमाण यह था कि चाय पी जाने लगी थी। हां, यह सच है कि कभी-कभी बूढ़े लोग जवानों से ज्यादा अनुभूतिशील होते हैं, सो भी कैसे जवानों से! बात यह है कि लीजा बहुत संजीदगी से यह यकीन दिला रही थी कि वास्या नहीं आयेगा। 'नहीं आयेगा वह, अम्मा। मेरा दिल कह रहा है कि नहीं आयेगा।'' लेकिन मां कह रही थी कि इसके उलट उसका दिल कहता है कि वह जरूर आयेगा, वह घर पर बैठा नहीं रह सकेगा, भागा आयेगा, कि अब दफ्तर का कोई कामकाज भी नहीं है और फिर नये साल का मौका भी। लीजा तो दरवाजा खोलते हुए भी वास्या के आने की आशा नहीं कर रही थी – उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ, उसकी सांस जहां की तहां रह गयी, अचानक पकड़ लिये गये पक्षी की तरह उसका दिल धड़क उठा, वह बेरी की तरह, जिससे बहुत मिलती-जुलती भी थी, लाल हो गयी। हे भगवान, कैसा आश्चर्य था यह उसके लिये! कैसे खुशी से "ओह!" निकल गया उसके मुंह से। "बहुत दगेबाज हो तुम, मेरे प्यारे!' वास्या के गले में बांहें डालकर वह चिल्ला उठी, किन्तु उसकी हैरानी अचानक ही महसूस होनेवाली उस शर्म की कल्पना कीजिये जब उसने वास्या के पीछे अर्कादी इवानोविच को देखा जो मानो छिपने की कोशिश कर रहा था और कुछ-कुछ घबराया हुआ था। यहां यह कह

देना जरूरी है कि वह औरतो के मामले मे फूहड था, बहुत सारी फूहड था और एक बार तो ऐसा भी हुआ कि... लेकिन हम इसकी बाद मे चर्चा करेगे। फिर भी आप अपने को उसकी स्थिति मे रखकर देखिये – इसमे हसने की कोई बात नही। वह ड्योढ़ी मे खड़ा था, गलोश, ओवरकोट और कनटोपा पहने जो उसने झटपट उतार दिया, पीले रग के बुने हुए गन्दे-मन्दे गुलूबन्द मे बुरी तरह से लिपटा-लिपटाया और जिसे उसने अधिक प्रभाव के लिये पीछे की ओर बांध रखा था। यह सब खोलना, जल्दी से उतारना जरूरी था ताकि अधिक अच्छे ढग से अपने को प्रस्तुत कर सके, क्योकि दुनिया में कोई ऐसा आदमी नही है जो अपने को अच्छे रूप मे प्रस्तुत न करना चाहता हो। और इधर वास्या था, खीझ पैदा करनेवाला, असह्य, बेवक, वही प्यारा और बहुत ही दयालु वास्या, मगर असह्य और निर्दयी वास्या! "लो लीज़ा " वह चिल्लाया, "यह रहा तुम्हारे सामने मेरा अर्कादी! कैसा, कैसा है? यह है मेरा सबसे अच्छा दोस्त, इसे गले लगाओ इसे चूमो, लीज़ा, एक चुम्बन पेशगी दे दो, बाद मे अधिक अच्छी तरह से जान लेने पर तुम खुद ही इसे चूमना चाहोगी " तो बताइये? तो बताइये, मैं पूछता हू कि अर्कादी इवानोविच क्या करता? और वह अभी तक अपना आधा मफलर ही उतार पाया था! सच कहता हू कि वास्या के उत्साह मे ज्यादा जोश के लिये मुझे कभी-कभी दर्द भी आती है। निश्चय ही इस उत्साह का मतलब है दयालु हृदय किन्तु इससे बड़ी अटपटी स्थिति हो जाती है, यह कुछ अच्छा नही!

आखिर दोनों भीतर गये। बुढ़िया को अर्कादी इवानोविच से मिलकर इतनी खुशी हुई कि बयान से बाहर। उसने इतना अधिक सुना था उसके बारे में वह लेकिन वह अपनी बात पूरी नही कर पायी। कमरे से खुशीभरे "ओह!" के गूज उठने से उसका वाक्य अधूरा ही रह गया। हे भगवान! अचानक ही कागज उतारकर लिया हो वहाँ टोपी के सामने अपने प्यारे हाथों को भोले-भाले ढग से बांधे हुए [illegible] मुस्करा रही थी [illegible] मुस्करा रही थी हे भगवान, [illegible] [illegible] के बाद इससे बढ़ी सुन्दर टोपी क्या नहीं थी!

और, मेरे भगवान, [illegible] मिलनी आखें इतना [illegible] हों! [illegible] [illegible] [illegible] है! [illegible] [illegible] [illegible] इतना [illegible] हो? [illegible] [illegible] मे [illegible] [illegible] [illegible] थी, [illegible] है

ऐसी कृतघ्नता से क्रोध भी आ रहा है, बुरा भी लग रहा है। देखिये, देखिये तो महानुभावो, इस प्यारी टोपी से बेहतर टोपी और कौन-सी हो सकती है! जरा, देखिये तो लेकिन नहीं, नहीं, मेरा शिकवा-शिकायत बेकार है। वे सभी मुझसे सहमत हो गये हैं। यह तो क्षण भर का भ्रम था, कुहासा था, भावनाओं का आवेश था। मैं उन्हें क्षमा करने को तैयार हू लेकिन फिर भी देखिये तो महानुभावो मैं माफी चाहता हू, मैं अभी भी टोपी की ही बात करता जा रहा हू! महीन रेशमी मलमल की बनी हुई बहुत ही हल्की-फुल्की, लेस से सजा हुआ गहरे लाल रग का फीता टोपी के शिखर और भालर के बीच से गुजर रहा था तथा पीछे की ओर दो चौडे और लम्बे फीते थे। वे गुद्दी से जरा नीचे, गर्दन पर गिरेंगे जरूरत इस बात की थी कि टोपी को ही थोडा गुद्दी पर पहना जाये। तो देखिये, जरा देखिये, और इसके बाद मैं आपसे पूछना चाहता हू! लेकिन मैं देख रहा हू कि आप इधर देख ही नहीं रहे हैं! लगता है कि आपकी बला से! आप दूसरी ओर देख रहे हैं आप देख रहे है कि कैसे मोतियो जैसी आसुओ की दो बडी-बडी बूदे काजल जैसी काली दो आखो मे उभरी, लम्बी बरौनियो पर क्षण भर को सिहरी और फिर महीन रेशमी कपडे पर नही, बल्कि हवा पर गिर गयी जिससे मदाम लेरू की यह कलाकृति बनी हुई थी फिर से मेरे दिल को दुख हो रहा है–वह इसलिये कि आसू की ये बूदे लगभग टोपी के लिये नही थीं! नहीं! मेरे ख्याल मे ऐसी चीज तो भावुकता के बिना ही भेट की जानी चाहिये। केवल तभी उसका असली मूल्य आका जा सकता है! मैं स्वीकार करता हू, महानुभावो, मैं तो पूरी तरह से टोपी के ही पक्ष मे हू!

ये लोग बैठ गये–वास्या लीजा के साथ और अर्कादी इवानोविच बुढिया की बगल मे। बातचीत शुरू हुई और अर्कादी इवानोविच ने अपने को अच्छे रूप मे प्रस्तुत किया। मैं खुशी से उसे इसका श्रेय देता हू। उससे तो ऐसी आशा करना भी कठिन था। वास्या के बारे मे दो-चार शब्द कहने के बाद वह बहुत ही अच्छे ढग से वास्या के उपकारी यूलिआन मास्ताकोविच की चर्चा करने लगा। ऐसी सूझ-बूझ, ऐसी बुद्धिमत्ता से वह बात करता रहा कि बातचीत एक घण्टे मे भी खत्म नही हुई। कैसी कुशलता, कैसी होशियारी से अर्कादी इवानो-

विच ने वास्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सम्बन्ध रखनेवाले यूनिआन मान्टा-कोविच के ऐसे कुछ लक्षणों का उल्लेख किया कि यह तो देखते ही बनता था। बुढ़िया तो उस पर मुग्ध हो गयी, सच्चे दिल से मुग्ध हो गयी। उसने खुद यह स्वीकार किया। उसने जान-बूझकर वास्या को एक तरफ बुलाया और वहा उससे कहा कि उसका दोस्त बहुत बढ़िया, बहुत ही शिष्ट नौजवान है और सबसे बड़ी बात तो यह कि बहुत ही धीर-गम्भीर युवा व्यक्ति है। वास्या इस प्रशसा के कारण ठहाका मारकर हसता-हसता रह गया। उसे याद हो आया कि कैसे धीर-गम्भीर अर्कादी पन्द्रह मिनट तक बिस्तर पर उसके साथ कुश्ती करता रहा था! इसके बाद बुढ़िया ने उसे आख से इशारा किया और कहा कि वह दबे पाव और बहुत सावधानी से उसके पीछे-पीछे दूसरे कमरे में आ जाये। यहा यह मानना होगा कि उसने लीज़ा के साथ कुछ छल किया। बेशक यह सही है कि स्नेह से अभिभूत होकर ही उसने लीज़ा का एक राज खोल दिया और चोरी-छिपे वास्या को वह उपहार दिखाना चाहा जो लीज़ा ने नववर्ष के सम्बन्ध मे उसे भेट करने के लिये तैयार किया था। यह बटुआ था जिस पर सुनहरे धागो से कढ़ाई की गयी थी, मनके लगाये गये थे और वह बहुत ही सुन्दर ढग से चित्रित था। एक तरफ हिरन बना हुआ था, बिल्कुल जीता-जागता-सा, जो बहुत तेज़ी से भागता हुआ, इतना प्यारा और ज़िन्दा-सा! दूसरी ओर एक प्रसिद्ध जनरल की तस्वीर थी, वह भी बहुत बढ़िया थी, एकदम सजीव लगती थी। वास्या की खुशी की तो खैर, चर्चा ही क्या की जाये। इसी बीच मेहमानखाने मे भी यो ही वक्त नही बीता। लीज़ा सीधे अर्कादी इवानोविच के पास गयी। उसने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिये, किसी चीज़ के लिये उसे धन्यवाद दिया और अर्कादी इवानोविच आखिर यह भाप गया कि उसी, बहुत ही प्यारे वास्या की चर्चा चल रही है। लीज़ा तो बहुत द्रवित भी थी – उसने सुना था कि अर्कादी इवानोविच उसके मगेतर का सच्चा दोस्त है, उसे बेहद प्यार करता है, उसकी बहुत ही चिन्ता करता है, हर कदम पर उसे बहुत ही अच्छी नसीहतें देता है, कि लीज़ा उसे धन्यवाद दिये बिना नही रह सकती, उसका आभार माने बिना नही रह सकती, कि वह आशा करती है कि अर्कादी इवानोविच वास्या को जितना प्यार करता है, उसका आधा तो उसे भी करने लगेगा। इसके बाद उसने यह पूछा

कि वास्या अपने स्वास्थ्य की चिन्ता करता है या नही, उसने उसके अत्यधिक भावुकतापूर्ण स्वभाव, लोगों और व्यावहारिक जीवन की अज्ञानता के बारे मे चिन्ता प्रकट की, यह कहा कि समय आने पर वर्त्तव्यनिष्ठा से उसकी देख-भाल करेगी, उसे सहेजेगी, उसके भाग्य की चिन्ता करेगी और अन्त मे उसने यह आशा प्रकट की कि अर्कादी इवानोविच उनसे अलग नही, बल्कि उनके साथ ही रहेगा।

' तीनो एक जान होकर रहेगे!" अपने सहज उल्लास मे वह चिल्ला उठी।

लेकिन इन दोनो के जाने का वक्त हो गया था। जाहिर है कि इनको रोका गया, मगर वास्या ने साफ इन्कार कर दिया। अर्कादी इवानोविच ने भी ऐसा ही किया। स्पष्ट है कि इनसे इसका कारण पूछा गया और फौरन यह बात सामने आ गयी कि यूलिआन मास्ताकोविच ने वास्या को बहुत जल्दी से पूरा करने के लिये कोई जरूरी, महत्त्वपूर्ण काम दिया है जिसे परसो सुबह उसे उसके सामने पेश करना है। यह काम न सिर्फ पूरा ही नही हुआ था, बल्कि बहुत काफी बाकी रह गया था। लीज़ा की मा तो यह सुनते ही आह-ओह कर उठी, लीज़ा डर गयी, घबरा गयी और उसने वास्या को फौरन अपने यहा से भगा दिया। इसकी वजह से उनके अन्तिम चुम्बन को कोई हानि नही पहुची। वह छोटा रहा और जल्दी मे लिया गया, मगर अधिक जोर और प्यार से। आखिर वे विदा हुए और दोनो मित्र घर चल दिये।

सडक पर पहुचते ही दोनो एक-दूसरे की बात काटते हुए अपने अपने मन पर पडी छापो की चर्चा करने लगे। जैसा कि होना चाहिये था—अर्कादी इवानोविच लीज़ा को प्यार करने लगा था, जी-जान से चाहने लगा था! और अगर सौभाग्यशाली वास्या को नही तो अन्य किसको वह अपना राजदान बना सकता था? यही उसने किया भी। उसने किसी तरह की झेप-झिझक के बिना झटपट सब कुछ स्वीकार कर लिया। वास्या खूब हसा, बेहद खुश हुआ, कह उठा कि यह तो अच्छा ही है और अब वे पहले से भी ज्यादा पक्के दोस्त हो जायेगे। "तुम मेरे मन का भाव समझ गये हो वास्या," अर्कादी इवानोविच ने कहा, "हा! मैं उसे वैसे ही प्यार करता हू, जैसे तुम्हे! वह तुम्हारी तरह मेरी भी रक्षक-देवी होगी, क्योकि तुम दोनो की खुशी मेरी भी खुशी बन जायेगी, उससे मेरे मन को भी चैन मिले-

गा। वह मेरी भी स्वामिनी होगी, वास्या। मेरा शुभ-सौभाग्य भी उसी के हाथो मे होगा। तुम्हारी तरह वह बेशक मुझ पर भी अपना हुक्म चलाये। तुम्हारे साथ दोस्ती का मतलब उसके साथ भी दोस्ती है। मैं तुम दोनो को अब एक-दूसरे मे अलग नही कर सकता। मेरे लिये अब एक ही जगह तुम जैसे दो व्यक्ति होंगे..." भाव-विह्वलता के कारण अर्कादी चुप हो गया। दूसरी ओर उसके शब्दों ने वास्या को दिल की गहराई तक उद्वेलित कर दिया। बात यह है कि उसने अर्कादी के मुह से कभी ऐसे शब्द सुनने की आशा नही की थी। अर्कादी इवानो-विच तो बहुत बोलना ही नही जानता था, सपने देखना उसे बिल्कुल पसन्द नही था। किन्तु अब तो वह फौरन ही बड़े सुखद, सुहावने और प्यारे-प्यारे सपने देखने लगा था! "कैसे मैं तुम दोनों की रक्षा करूगा, तुम दोनो को सहेजूगा," वह फिर से कह उठा। "पहली बात तो यह है वास्या, कि मैं तुम्हारे सभी बच्चो का धर्म-पिता बनूगा, सभी का। दूसरे, हमे भविष्य की चिन्ता करनी चाहिये, वास्या। फर्नीचर खरीदना चाहिये, ऐसा फ्लैट किराये पर लेना चाहिये कि उसके, तुम्हारे और मेरे लिये अलग-अलग दरबे हो जाये। सुनो, वास्या, मैं कल ही 'कि-राये पर खाली है' दरवाजो पर लगे ऐसे इश्तिहार पढने जाऊगा। तीन . नही, दो कमरे हमारे लिये काफी होंगे, हमे इससे ज्यादा की जरूरत नही। मुझे लगता है वास्या, कि आज मैं बेसिरपैर की बाते करता रहा था—पैसे तो आ ही जायेंगे। सच! जैसे ही मैंने उसकी आंखो मे झाका, उसी समय अनुभव किया कि पैसे हासिल कर लेगे। उसके लिये हम सब कुछ करने को तैयार हैं! ओह, हम कैसे काम करेंगे! वास्या, अब हम जोखिम उठा सकते हैं, फ्लैट के लिये कोई पच्चीस रूबल भी दे सकते हैं। भैया मेरे, फ्लैट है तो सब कुछ है। अच्छे कमरे हों तो... आदमी का मन खिला रहता है और वह सपने भी प्यारे-प्यारे देखता है! दूसरी बात यह है कि लीज़ा हमारी खजांची होगी—एक पैसे की भी फजूलखर्ची नही होगी! क्या मजाल कि मैं अब कभी शराबखाने मे जाऊ! आखिर तुम मुझे क्या समझते हो? किसी हालत मे भी ऐसा नही करूगा। फिर कुछ और पैसे भी आ जायेंगे, पुरस्कार मिलेंगे, क्योकि हम बड़ी लगन से काम करेंगे। ओह, ऐसे काम करेंगे जैसे बैल जमीन जोतते हैं!.. तुम कल्पना करो तो," खुशी के कारण अर्कादी इवानोविच की आवाज क्षीण हो

गयी, "सहसा ऐसे अप्रत्याशित ही तीस या पच्चीस रूबल हमारी जेबो मे आ गिरे! ऐसे इनाम का मतलब है – कोई टोपी, कोई गुलूबन्द, मोज़े! हा, उसे ज़रूर ही मेरे लिये गुलूबन्द बुनना चाहिये। देखो तो यह मेरा गुलूबन्द कैसा बेहूदा है – पीले रग का, भद्दा-सा। वह आज मेरे लिये मुसीबत बन गया! और वास्या, तुम भी खूब हो – तुम मेरा परिचय करवा रहे थे और मैं जुए मे बधा खडा था लेकिन खैर, हटाओ इस बात को! हा, चादी की चीज़े मैं अपने ज़िम्मे लेता हू! तुम दोनो को उपहार तो मुझे देना ही है – मेरे लिये यह गौरव मेरे आत्म-सम्मान की बात है! मेरे पुरस्कार तो कही भाग नही जायेगे। स्कोरोख्वोदोव को तो कोई उन्हे दे नही देगा? उस पट्ठी की जेब मे पडे हुए तो वे सडते नही रहेगे। भैया मेरे, मैं तुम्हारे लिये चादी के चम्मच, अच्छी छुरिया खरीद लूगा, चादी की छुरिया नही, मगर बहुत बढिया छुरिया। और वास्कट भी मेरा मतलब यह कि वास्कट तो अपने लिये। आखिर तो मैं विवाह के समय तुम दोनो के सेहरे थामूगा! लेकिन अब तुम ज़रा सम्भलकर रहना सम्भलकर। मेरे भैया, मैं आज और कल, सारी रात डडा लेकर तुम्हारे सिर पर खडा रहूगा, काम करवा-करवाकर तुम्हारी जान निकाल लूगा। खत्म करो, भैया, जल्दी से काम खत्म करो! शाम को फिर दोनो लीज़ा के यहा जायेगे, दोनो खुश होगे और ताश भी खेलेगे! खूब मज़ा रहेगा! ओह शैतान! कितने अफसोस की बात है कि तुम्हारे काम मे हाथ नही बटा सकता। नही तो तुम्हारा काम लेकर तुम्हारी जगह खुद ही, खुद ही सब कुछ लिख डालता. हम दोनो की लिखावट एक जैसी क्यो नही?"

"हा!" वास्या ने जवाब दिया। "हा! जल्दी करनी चाहिये। मेरे ख्याल मे अब ग्यारह बज रहे होगे – जल्दी करनी चाहिये काम मे जुटना चाहिये!" इतना कहकर वास्या, जो इस सारे वक्त या तो मुस्कराता रहा था या फिर उल्लासपूर्ण टीका-टिप्पणी करते हुए अर्कादी की दोस्ती की भावनाओ के प्रवाह को रोकने के प्रयास मे लगा रहा था, थोडे मे यह कि बहुत ज़िन्दादिली दिखाता रहा था, अचानक उत्साहहीन-सा हो गया, उसने मौन धारण कर लिया और लगभग दौडने लगा। ऐसे लगता था कि किसी बोझिल विचार ने अचानक उसके जोशभरे दिमाग को बर्फ की तरह ठण्डा कर दिया था, उसका दिल बैठ गया था।

अर्कादी इवानोविच तो चिन्तित भी होने लगा। परेशानी में पूछे जानेवाले अपने प्रश्नों के उसे वास्या से लगभग उत्तर नहीं मिले। वास्या एक-दो शब्द कहकर उसे टाल देता, कभी-कभी फिजूल उठता जिसका उसके प्रश्नों से कोई सम्बन्ध न होता। "तुम्हें क्या हुआ है, वास्या?" मुश्किल से उसका साथ दे पाते हुए वह आखिर चिल्ला उठा। "क्या तुम इतने ज्यादा परेशान हो रहे हो?" – "ओह भैया, हम काफी बक-बक कर चुके!" वास्या ने कुछ झल्लाकर जवाब दिया। "हिम्मत न हारो, वास्या," अर्कादी ने उसे टोका, "मैंने तो अपनी आंखों से इससे भी थोड़े समय में तुम्हें कहीं ज्यादा लिखते देखा है... तुम्हें फिक्र करने की क्या जरूरत है! तुममें प्रतिभा है! बहुत जल्दी होने पर तुम कुछ तेजी से भी लिख सकते हो। आखिर वे इसे छपवाने तो जा नहीं रहे। लिख लोगे! लेकिन इस वक्त तुम उत्तेजित हो, परेशान हो और इसलिये काम करने में काफी मुश्किल होगी " वास्या ने कोई जवाब नहीं दिया या धीरे से बुदबुदाकर रह गया और दोनों बहुत घबराये हुए से घर को भाग चले।

वास्या फौरन ही नकल करने बैठ गया। अर्कादी इवानोविच शान्त और खामोश हो गया, उसने धीरे-धीरे कपड़े बदले और बिस्तर पर लेट गया, मगर उसकी आंखें वास्या पर टिकी रहीं कोई डर उस पर हावी हो गया था "इसे हुआ क्या है?" उसने वास्या के पीले पड़ गये चेहरे, तमतमाती आंखों और उसकी हर गति-विधि में झलकनेवाली चिन्ता की ओर ध्यान देते हुए अपने आपसे पूछा। "उसका हाथ भी कांप रहा है ओह, सचमुच ऐसा ही है! क्या उसे दो घण्टे सो लेने का सुझाव न दूं, कम से कम वह सोकर अपनी झल्लाहट को तो दूर कर ले। वास्या ने इसी वक्त एक पृष्ठ समाप्त करके आंखें ऊपर उठाईं, अनचाहे ही अर्कादी की ओर देखा और उसी क्षण सिर झुकाकर फिर से लिखने लगा।

"वास्या, मेरी बात सुनो," अर्कादी इवानोविच ने अचानक [illegible] [illegible] किया "क्या तुम्हारे लिये कुछ देर [illegible] [illegible] ऐसा बेहतर नहीं [illegible]? देखो तो, तुम्हें [illegible] कैसे बुखार [illegible] हुआ है

वास्या ने झल्लाहट [illegible] [illegible] [illegible] गुस्से से अर्कादी की तरफ देखा और कोई जवाब नहीं दिया।

"सुनो वास्या, यह तुम अपने साथ क्या जुल्म कर रहे हो?"

वास्या ने उसी क्षण मानो कुछ सोचते हुए पूछा –

"अर्कादी, अगर चाय का प्याला पिया जाये तो कैसा रहे ?

"क्यो ? किसलिये ?

"उससे ताकत आ जायेगी। मैं सोना नही चाहता मै नही सोऊगा ! मैं रात भर लिखता रहूगा। लेकिन चाय पीते हुए मै कुछ आराम कर लूगा और यह बोझल क्षण भी निकल जायेगा।

"बहुत खूब, भैया वास्या, बहुत बढिया ! तुमने मेरे मन की बात कह दी। मैं खुद भी यही सुझाव देना चाहता था। लेकिन मुझे हैरानी हो रही है कि चाय का ख्याल मेरे दिमाग मे क्यो नही आया। मगर जानते हो कि एक समस्या है ? मावरा नही उठेगी किसी हालत मे भी नही जागेगी "

"अच्छा "

"लेकिन यह कुछ नही, मामूली बात है !" पलग से नगे पाव ही नीचे कूदते हुए अर्कादी इवानोविच चिल्ला उठा। "मैं खुद समोवार गर्म कर लूगा। कोई पहली बार थोडे ही कर रहा हू ? "

अर्कादी इवानोविच रसोईघर मे भाग गया और समोवार गर्माने के काम मे जुट गया। इस बीच वास्या लिखता रहा। अर्कादी इवानोविच ने समोवार ही नही गर्माया, बल्कि कपडे पहनकर नानबाई की दुकान से खाने को कुछ खरीद भी लाया ताकि वास्या रात भर के लिये शक्ति-सचय कर ले। पन्द्रह मिनट बाद समोवार मेज पर रखा था। वे दोनो चाय पीने लगे, मगर बातचीत का रग नही जम सका। वास्या अपनी चिन्ता मे ही डूबा हुआ था।

"हा, कल तो मुझे अपने अफसरो को बधाई देने के लिये जाना होगा " वास्या ने आखिर वर्तमान की ओर लौटते हुए कहा।

"तुम्हे ऐसा करने की बिल्कुल जरूरत नही।"

"नही, भैया, ऐसा करना ही होगा," वास्या ने कहा।

"मैं हर जगह पर तुम्हारी ओर से हस्ताक्षर कर दूगा तुम्हे यह झझट किसलिये करना है ! तुम कल काम करो। जैसा कि मैने तुमसे कहा है, आज तुम सुबह के पाच बजे तक काम करो और इसके बाद सो जाना। नही तो कल कैसी सूरत होगी तुम्हारी ? मै ठीक आठ बजे तुम्हे जगा दूगा "

"मेरी जगह तुम्हारे लिये मेरे हस्ताक्षर करना क्या ठीक होगा ?"

कुछ हद तक सहमत होते हुए वास्या ने जानना चाहा।

"इसमें कौन-सी खास बात है? सभी तो ऐसा करते हैं!."

"सच मुझे तो डर लगता है "

"किस बात का? किस बात का डर लगता है?"

"दूसरों के मामले में तो कुछ नहीं, मगर यूलिआन मास्ताकोवि
वह तो मेरा सरपरस्त है। जैसे ही परायी लिखावट देखेगा "

"देख चुका परायी लिखावट! तुम भी कमाल करते हो, वास्य
कैसे देखेगा वह परायी लिखावट? तुम जानते हो, तुम्हारे हस्ताक्षर
मैं बिल्कुल तुम्हारे जैसे ही करता हू और उन्हें सजाता भी उसी तरह
हू, कसम भगवान की। बस, काफी है। हटाओ इस मामले को! क
देख पायेगा यह फर्क? "

वास्या ने कोई जवाब नहीं दिया और जल्दी-जल्दी चाय का अ
गिलास खाली कर दिया इसके बाद उसने सन्देह प्रकट करते
अपना सिर हिलाया।

"वास्या, मेरे प्यारे! काश, हमें सफलता मिल जाये! वास्य
यह तुम्हें हुआ क्या है? तुम तो मुझे बुरी तरह से डरा रहे हो
जानते हो, मैं अब बिस्तर पर नही जाऊगा, वास्या, नहीं सोऊगा
मुझे दिखाओ तो, क्या बहुत बाकी है?"

वास्या ने अर्कादी की तरफ ऐसे देखा कि उसका दिल काप उ
और उसकी जबान पर ताला-सा पड गया।

"वास्या! तुम्हें क्या हुआ है? तुम ऐसे क्यों देख रहे हो?

"अर्कादी, यूलिआन मास्ताकोविच को कल बधाई देने तो मैं जाऊग
ही।"

"तो जाओ!" यातनापूर्ण प्रत्याशा से उसे आखे फाड-फाडकर
देखते हुए अर्कादी ने कहा।

"सुनो, वास्या, तुम जरा तेजी से लिखना शुरू कर दो।
तुम्हें कोई बुरी सलाह नही दे रहा हू, कसम खाकर कहता हू! सु
यूलिआन मास्ताकोविच भी कितनी बार यह कह चुका है कि तुम्हारी
लिखावट में उसे सबसे ज्यादा तो यही पसन्द है कि वह साफ होती
है! सिर्फ स्कोरोप्लेखिन को ही यह पसन्द है कि लिखावट सुलेख की
कापी की तरह साफ भी हो और सुन्दर भी। वह इसलिये कि बाद
में वह ऐसा कागज घर ले जाये और उसके बच्चे उसकी नकल कर

सके। उल्लू, अपने बच्चों के लिये सुलेख की कापी नहीं खरीद सकता! मगर यूलिआन मास्ताकोविच सिर्फ यही कहता है, यही माग करता है – लिखावट साफ, साफ और साफ हो! तुम्हे और क्या चाहिये! सच वास्या, मेरी समझ में नहीं आता कि मैं तुमसे बात कैसे करू मुझे तो डर भी लगता है अपनी इस उदासी से तुम तो मेरी जान निकाले ले रहे हो।"

"कोई बात नही, कोई बात नही!" वास्या ने कहा और थका-टूटा-सा कुर्सी पर पीछे की ओर लुढ़क गया। अर्कादी घबरा उठा।

"तुम्हे पानी दू? वास्या! वास्या!"

"घबराने की कोई बात नही, कोई बात नही," वास्या ने अर्कादी का हाथ दबाते हुए कहा। "मैं ठीक-ठाक हू, बस, यो ही मन उदास हो उठा, अर्कादी। मैं खुद भी इसका कारण नहीं जानता। सुनो, कोई दूसरी बात करो, मुझे काम की याद नहीं दिलाओ"

"शान्त हो जाओ, भगवान के लिये शान्त हो जाओ, वास्या। तुम काम खत्म कर लोगे, कसम भगवान की, खत्म कर लोगे! और अगर खत्म नहीं भी कर पाये तो कौन-सा पहाड़ टूट पड़ेगा! यह भी कोई अपराध नहीं है!"

"अर्कादी," वास्या ने अपने मित्र की ओर ऐसी अर्थपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा कि वह बिल्कुल डर गया, क्योंकि वास्या कभी भी इतना परेशान नहीं हुआ था। "अगर मैं पहले की तरह अकेला ही होता नहीं! मैं यह नहीं कहना चाहता था। मैं तुमसे कहना चाहता हू, एक दोस्त के नाते अपने दिल की बात कहना चाहता हू लेकिन खैर, तुम्हे क्यो परेशान किया जाये? देखते हो न अर्काशा, कुछ लोग बड़े-बड़े काम करते है और दूसरे, मेरे जैसे, छोटे-छोटे। लेकिन अगर तुमसे कृतज्ञता आभार की आशा की जाती और तुम ऐसा करने में असमर्थ होते, तो?"

"वास्या! मैं तुम्हे बिल्कुल नहीं समझ पा रहा हू!"

"मैं कृतघ्न कभी नहीं था," वास्या मानो अपने आपसे बात करता हुआ धीरे-धीरे कहता गया। "लेकिन अगर मैं वह सब नहीं कह पाता जो अनुभव करता हू तो यह मानो तो अर्कादी, यह मानो कृतघ्नता होगी और यही चीज मुझे मारे डाल रही है।"

"यह तुम क्या कह रहे हो, क्या कह रहे हो! क्या इसी से

तुम्हारी सारी कृतज्ञता है कि तुम वक़्त पर काम पूरा करते हो या नहीं? सोचो तो वास्या, तुम क्या कह रहे हो! क्या कृतज्ञता प्रकट करने का यही मानदण्ड है?"

वास्या अचानक चुप हो गया और उसने अर्कादी की तरफ़ ऐसे देखा मानो अर्कादी के इस अप्रत्याशित तर्क से उसके सारे सन्देह दूर हो गये हो। वह तो मुस्करा भी दिया, लेकिन उसी समय उसके चेहरे पर सोच का पहलेवाला भाव आ गया। अर्कादी इस मुस्कान को सभी तरह के भय का अन्त और फिर से प्रकट होनेवाले चिन्ता के भाव को किसी बेहतर सकल्प का द्योतक मानते हुए बहुत खुश हुआ।

"भाई अर्काशा, जब जागोगे, तो मुझ पर नज़र डाल लेना," वास्या ने कहा, "हो सकता है कि मेरी आख लग जाये, तब तो मुसीबत हो जायेगी। और अब मैं काम करने बैठता हू अर्काशा!"

"क्या बात है?"

"नही, कुछ नही, मैं तो यो ही मैं चाहता था ."

वास्या बैठ गया और चुप हो गया, अर्कादी लेट गया। दोनो मे से किसी ने भी लीज़ा या उसकी मा के बारे मे कुछ नहीं कहा। शायद दोनो अपने को कुछ हद तक दोषी महसूस कर रहे थे, कि उन्हे उस वक्त उनके यहा जाकर वक्त बरबाद नही करना चाहिये था। अर्कादी इवानोविच वास्या के बारे मे चिन्ता करता हुआ जल्द ही सो गया। उसे बड़ी हैरानी हुई कि सुबह के सात बजने के बाद ही उसकी आख खुली। वास्या हाथ मे कलम लिये कुर्सी पर ही सो रहा था, बहुत थका-थका और पीला-पीला नज़र आ रहा था। मोमबत्ती जल चुकी थी। मावरा रसोईघर मे समोवार गर्मा रही थी।

"वास्या, वास्या!" अर्कादी घबराकर चिल्ला उठा "तुम कब सोये?"

वास्या ने आखे खोली और कुर्सी से उछल पड़ा

"ओह!" वह बोला। "मेरी तो यही बैठे-बैठे आख लग गयी!"

उसने फ़ौरन कागजो की तरफ़ ध्यान दिया—ख़ैर, सब ठीक-ठाक था [illegible] स्याही और न ही मोमबत्ती के मोम का कही धब्बा लग

[illegible] है कि कोई छ बजे मै ऊघ गया," वास्या ने कहा। [illegible] होती है रात को! आओ चाय पी ले और मै फिर से.."

"अब तो तुम्हारी तबीयत अच्छी है न?"

"हा, हा, अब सब कुछ ठीक है! "

"नया साल मुबारक, भाई वास्या।"

"तुम्हे भी, तुम्हे भी मुबारक, मेरे प्यारे दोस्त।" ये दोनो गले मिले। वास्या की ठोडी काप रही थी और आखे नम होती जा रही थी। अर्कादी इवानोविच चुप था – उसका दिल दुखी था। दोनो ने जल्दी-जल्दी चाय खत्म की

"अर्कादी! मैंने यूलिआन मास्ताकोविच के यहा खुद जाने का फैसला किया है "

"लेकिन उसे तो फर्क ही मालूम नही होगा "

"किन्तु मेरे भैया, मुझे तो मेरी आत्मा चैन नही लेने दे रही।"

"मगर तुम तो उसी के लिये बैठे हुए काम कर रहे हो, अपनी जान खपा रहे हो बस, काफी है! सुनो भैया, मैं खुद वहा जाऊगा "

"कहा?" वास्या ने पूछा।

"अर्तेम्येव के यहा। अपनी और तुम्हारी ओर से बधाई दे आऊगा।"

"ओह, मेरे बहुत ही प्यारे दोस्त! अच्छी बात है, मैं घर पर ही रहूगा। मैं देख रहा हू कि तुमने ठीक ही सोचा है – मै यहा काम कर रहा हू, काहिली मे वक्त बरबाद नही कर रहा हू! जरा रुको मैं अभी खत लिखे देता हू।"

"लिखो, मेरे भाई, लिखो, जल्दी करने की जरूरत नही। मुझे तो अभी हाथ-मुह धोना, दाढी बनाना और फ्राक-कोट साफ करना है। ओह, भैया वास्या, हमें खुशी और सुख मिलेगा! मुझे गले लगाओ, वास्या!"

"काश, ऐसा ही हो, मेरे भाई! "

"क्या श्रीमान शुम्कोव यही रहते है?" जीने पर किसी बच्चे की आवाज गूज उठी।

"हा, हा, यही रहते है, भैया," नौकरानी माव्रा ने मेहमान को भीतर भेजते हुए कहा।

"कौन है? कौन है वहा?" कुर्सी से उछलकर खडा होने और ड्योढी की ओर लपकते हुए वास्या चिल्लाया, "अरे, तुम हो पेत्या? "

"नमस्ते, वसीली पेत्रोविच, आपको नववर्ष की बधाई देने का

सम्मान प्राप्त हो रहा है मुझे," कोई दस साल के काले, घुघराले बालों-वाले बड़े प्यारे-से लड़के ने कहा, "मेरी बहन और मां ने भी आपका अभिवादन करने को कहा है। बहन ने तो अपनी ओर से आपको चूमने की हिदायत भी की है "

वास्या ने इस सन्देशवाहक को हवा में उछाला और लीज़ा से बहुत मिलते-जुलते होंठों पर अत्यधिक मीठा, लम्बा और उल्लासपूर्ण चुम्बन अंकित कर दिया।

"अर्कादी, तुम भी इसे चूमो!" पेत्या को उसे देते हुए वास्या ने कहा और पेत्या ज़मीन को छुए बिना अर्कादी इवानोविच की मज़बूत-शाली और उत्सुक बांहों में पहुंच गया।

"प्यारे बच्चे, चाय पिओगे?"

"बहुत, बहुत धन्यवाद। हम पी चुके हैं! हम आज जल्दी उठ गये थे। मेरी बहन और मां सुबह की प्रार्थना में गयी हैं। बहन आज दो घण्टे तक मेरे बालों को घुघराले बनाती, उन पर पोमेड लगाती और मेरे हाथ-मुंह धोती रही, मेरे पतलून को ठीक-ठाक करती रही, क्योंकि साशा के साथ खेलते हुए कल वह फट गया था—हम बर्फ के गोलों से खेलते रहे थे ."

"तो? आगे बताओ, आगे बताओ न!"

"तो वह आपके पास आने के लिये मुझे सजाती-संवारती रही, इसके बाद उसने पोमेड लगाया, फिर खूब ज़ोर से चूमकर बोली—'वास्या के पास जाओ, बधाई दो और पूछो कि आप खुश तो हैं, आपकी रात तो चैन से बीती' और इसके अलावा .. इसके अलावा कुछ और पूछने को भी कहा था—हां, याद आया! वह काम खत्म हुआ या नहीं जिसके बारे में आप कल . कैसे कहा था उसने .. ओह, वह तो मेरे पास लिखा हुआ है," लड़के ने जेब से कागज़ निकालकर पढ़ते हुए कहा, "हां! चिन्तित थे।"

"खत्म हो जायेगा! हो जायेगा! उससे यही कह देना कि खत्म हो जायेगा, ज़रूर खत्म हो जायेगा, कसम खाकर कहता हूं!"

"इसके अलावा ... ओह, मैं भूल ही गया; बहन ने रुक्का और उपहार भी भेजा है, लेकिन मैं तो भूल ही गया! .."

"ओह!.. ओह, मेरे प्यारे! कहां है ... कहां है? यह रहा?! क्या लिखा है उसने मुझे। मेरी गुड़िया, मेरी प्यारी!

सब हो जाने का नतीजा है। कल से तुम तो खुद अपने नहीं रहे। तुम तो मन पर पड़ी कल की छापों के प्रभावों से अभी तक मुक्त नहीं हो पाये हो। निश्चय ही! अपने को सम्भालो, प्यारे वास्या! तो मैं चल दिया, चल दिया!"

दोनों मित्र आखिर जुदा हुए। अर्कादी इवानोविच सारी सुबह खोया-खोया और वास्या के बारे में ही सोचता रहा। उसे मालूम था कि वास्या कमज़ोर और भावुक व्यक्ति है। "हां, यह तो खुशी ने उसका चैन छीन लिया है, मैंने ठीक ही सोचा था!" उसने अपने आपसे कहा। "हे भगवान! उसने तो मुझे भी परेशान कर डाला है। यह आदमी कैसे राई का पहाड़ बना सकता है! कैसे परेशान हो उ: है! ओह, इसे बचाना चाहिये! बचाना चाहिये!" अर्कादी खुद । न अनुभव करते हुए कह उठा कि अपने दिल में उसने छोटी-छो घरेलू परेशानियों को, जो वास्तव में बहुत ही तुच्छ थीं, बहुत भया रूप दे दिया है। केवल ग्यारह बजे ही वह यूलिआन मास्ताकोविच ड्योढ़ी में पहुंचा, ताकि उन श्रद्धापूर्ण लोगों की लम्बी सूची में अप तुच्छ नाम भी लिख दे जो स्याही के धब्बों और ढेरों हस्ताक्षरों कागज पर अपना नाम लिखकर जा चुके थे। किन्तु जब उसने अपने आंखों के सामने वास्या शुम्कोव के हस्ताक्षर देखे तो सोचिये उसे कितनी हैरानी हुई होगी। वह दंग रह गया। "उसके साथ यह हो क्या रहा है?" उसने सोचा। कुछ ही देर पहले आशा से ओत-प्रोत हो उठने वाला अर्कादी इवानोविच परेशान होता हुआ बाहर आया। सचमुच ही मुसीबत आ रही थी – लेकिन कहां से? कैसी मुसीबत?

बड़े उदासीभरे विचार लिये हुए वह कोलोम्ना पहुंचा, शुरू में खोया-खोया रहा, लेकिन लीज़ा से बात करने के बाद आंखों में आंसू लिये बाहर आया, क्योंकि वास्या के बारे में सचमुच ही डर गया था। वह भागता हुआ घर को चल दिया और नेवा नदी के तट पर उसने वास्या को अपने सामने पाया। वह भी भागा आ रहा था।

"कहां जा रहे हो तुम?" अर्कादी इवानोविच चिल्लाया।

वास्या ऐसे रुक गया मानो रंगे हाथों पकड़ा गया हो।

"मैं तो वैसे ही ही बाहर आ गया था, घूमने का मन हो रहा था।"

"तो अपने को रोक न सके, कोलोम्ना जा रहे थे न? ओह,

वास्या, तुम बेहद उत्तेजित हो!"

"नहीं, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं। मुझे सब कुछ बताओ न अर्कादी!" वास्या ने जैसे खिलखिलाते हुए कहा मानो वह अर्कादी की और अधिक पूछ-ताछ से बचना चाहता हो। अर्कादी इवानोविच ने गहरी सांस ली। वास्या को देखते हुए खुद उसकी अपनी हिम्मत जवाब देती जा रही थी।

अर्तेम्येव परिवार के बारे में बातें सुनकर वह खिल उठा। उसने ढंग से बातचीत भी की। इन दोनों ने दोपहर का भोजन किया। बुढ़िया ने बिस्कुटों से अर्कादी इवानोविच की जेब भर दी थी और दोनों मि उन्हें चबाते हुए चहक उठे। वास्या ने वचन दिया कि भोजन के ब वह सो जायेगा, ताकि रात भर बैठकर नकल करता रहे। वह सचमु लेट भी गया। सुबह किसी ने, जिसे वह इन्कार नहीं कर सकता था अर्कादी इवानोविच को चाय पर बुला लिया था। तो दोनो मित्र अल हुए। अर्कादी ने जल्दी से जल्दी वापस आने का, यदि सम्भव हुअ तो आठ बजे तक लौट आने का वादा किया। जुदाई के ये तीन घण्टे उसके लिये तीन सालों की तरह बीते। आखिर वह वास्या के पास लौटा। कमरे में पहुंचने पर उसने वहां अन्धेरा पाया। वास्या घर पर नही था। उसने मावरा से पूछा। मावरा ने बताया कि वह लगातार लिखता रहा था, सोया नही था, इसके बाद कमरे में इधर-उधर चक्कर काटता रहा और फिर एक घण्टा पहले यह कहकर बाहर भाग गया कि आध घण्टे मे लौट आयेगा। "'और जब अर्कादी इवानोविच आये तो बुढ़िया तुम उससे कह देना,'" मावरा ने अन्त में कहा, "'कि मैं घूमने गया हूं,' और उसने तीन या चार बार यह बात दोहरायी।"

"वह अर्तेम्येव परिवारवालों के यहां गया है!" अर्कादी इवानोविच ने सोचा और सिर हिलाया।

एक मिनट बाद वह किसी आशा से सजीव होकर उछल पड़ा। उसने सोचा कि वास्या ने अपना काम खत्म कर लिया है, बस, यही बात है। इसके बाद सब्र से काम नही ले सका और उनके यहां भाग गया। लेकिन नहीं! उसने मेरा इन्तजार तो किया होता.. देखूं तो, क्या हाल है उसके काम का।"

उसने मोमबत्ती जलाई और वास्या की मेज की तरफ लपका-

काम आगे बढ़ रहा था और ऐसे प्रतीत होता था कि जल्द ही खत्म हो जायेगा। अर्कादी इवानोविच ने और अधिक छानबीन करनी चाही लेकिन तभी अचानक वास्या कमरे में आ गया

"तुम, यहां?" वह डर के मारे सिहरकर चिल्ला उठा।

अर्कादी इवानोविच चुप रहा। वास्या से कुछ पूछते हुए उसे घबराहट हुई। वास्या ने आंखें झुका लीं और चुप रहते हुए कागजों को ठीक-ठाक करने लगा। आखिर दोनों की नजरें मिलीं। वास्या की नजर ऐसी गिड़गिड़ाती, ऐसी मिन्नत करती और कुचली-कुचली थी कि अर्कादी सिहर उठा। उसका दिल कांपा और छलछला आया

"वास्या, मेरे भाई, तुम्हें क्या हुआ है? यह क्या है?" वह वास्या की ओर लपकते तथा उसे अपनी बांहों में भरते हुए चिल्ला उठा। "मुझसे सब कुछ कहो। मैं तुम्हें और तुम्हारी परेशानी को नहीं समझ पा रहा हूं। तुम्हें हुआ क्या है, यातनायें सहनेवाले मेरे दोस्त? क्या हुआ है? मेरे सामने अपना दिल खोल दो। यह नहीं हो सकता कि सिर्फ इस काम की वजह से "

वास्या उसके साथ और अधिक चिपक गया और कुछ भी नहीं कह पाया। उसकी सांस उसके गले में ही अटक गयी थी।

"बस, काफी हो चुका, वास्या, काफी हो चुका। अगर तुम खत्म नहीं करोगे तो कौनसी आफत आ जायेगी? मैं तुम्हें समझ नहीं पा रहा हूं। मुझे अपनी यातनाओं का कारण बताओ। तुम्हारे लिये तुम्हारे लिये मैं क्या नहीं करूंगा ओह, भगवान मेरे भगवान!" वह कमरे में इधर-उधर आता-जाता और सामने आ जानेवाली हर चीज को हाथ में लेता हुआ, मानो वास्या के दर्द की फौरन कोई दवा ढूंढ सकता हो, चिल्ला रहा था। "तुम्हारी जगह मैं खुद कल यूलिआन मास्ताकोविच के यहां जाऊंगा, उसकी मिन्नत-समाजत करूंगा उसके सामने गिड़गिड़ाऊंगा कि वह तुम्हारे काम के लिये एक दिन और बढ़ा दे। अगर तुम केवल इसी वजह से इतनी व्यथा सह रहे हो तो मैं उसे सब कुछ, सब कुछ स्पष्ट कर दूंगा "

"भगवान के लिये हरगिज ऐसा नहीं करना!" वास्या चिल्ला उठा और उसका चेहरा बिल्कुल फक हो गया। वह बड़ी मुश्किल से ही खड़ा रह पाया।

"वास्या, वास्या!"

वास्या सम्भला। उसके होंठ काँप रहे थे। उसने कुछ कहना चाहा, मगर कुछ कहे बिना जोर से अर्कादी का हाथ दबाकर ही रह गया. उसका हाथ ठण्डा था। चिन्ता और व्यथापूर्ण प्रतीक्षा का भाव लि हुए अर्कादी उसके सामने खडा था। वास्या ने फिर से उसकी तर देखा।

"वास्या! भगवान तुम्हारा भला करे, वास्या! तुम मेरे दि के टुकडे किये दे रहे हो, मेरे दोस्त, मेरे प्यारे मित्र!"

वास्या की आँखो से अश्रुधार बह चली। उसने अपने को अर्का के वक्ष पर गिरा दिया।

"मैंने तुम्हे धोखा दिया है, अर्कादी!" वह कह उठा। मैंने तुम्हें धोखा दिया है, मुझे माफ कर दो, माफ कर दो! मैंने तुम्हारी मैत्री के साथ कपट किया है "

"यह क्या, यह क्या कह रहे हो वास्या? क्या बात है?" अर्कादी ने बहुत ही घबराकर पूछा।

"यह देखो! "

और वास्या ने हताशा का भाव दिखाते हुए उसी कापी जैसी, जिसकी वह नकल कर रहा था, मोटी-मोटी छ और कापियाँ एक दराज से निकालकर मेज पर फेंक दी।

"यह क्या है?"

"परसो तक मुझे इन सबको नकल करना है। मैंने तो चौथा भाग भी पूरा नही किया! यह कैसे हुआ, मुझसे नही पूछो, नही पूछो ." वास्या कहता गया और इसी क्षण यह बताने लगा कि क्या चीज उसके मन को ऐसे व्यथित कर रही थी। "अर्कादी, मेरे दोस्त! मैं खुद नहीं जानता कि मुझे क्या हो गया था! मैं तो जैसे किसी स्वप्न-लोक से बाहर आ रहा हू। मैंने तीन सप्ताह यो ही बरबाद कर दिये! मैं तो उसके यहा. उसके यहा ही जाता रहा मेरा दिल टीसता था, यातना सहता था .. नही जानता था कि लीजा क्या जवाब देगी. मैं कुछ भी नहीं लिख सका। मैंने इसके बारे मे सोचा ही नही। केवल अभी, जब मेरा सौभाग्य मुस्कराया है, मैं होश मे आया हू।"

"वास्या!" अर्कादी इवानोविच ने दृढ़ता से कहना आरम्भ किया। "वास्या! मैं तुम्हे बचाऊगा। मैं सब कुछ समझता हू। यह कोई हसी-मजाक नही। मैं तुम्हे बचाऊगा! तुम मेरी बात सुनो, ध्यान से

शत्रुता रखनेवाले लोग किसी कारण के बिना अचानक आपस में सु[illegible] कर लें, कि वे खुशी के कारण एक-दूसरे से गले मिले और फिर तुम्हारे फ्लैट पर मेहमान के तौर पर आये। मेरे दोस्त! मेरे प्यारे दोस्त [illegible] मैं मजाक नहीं कर रहा हूं, यह बिल्कुल सच है। बहुत अरसे से [illegible] तुम्हें लगभग ऐसे ही रूपों में देख चुका हूं। चूंकि तुम खुश हो, इसलिये तुम यह चाहते हो कि सभी एकबारगी तुम्हारी तरह खुशी के र[illegible] में रंग जायें। तुम्हें अकेले ही खुश होते हुए दुख होता है, शर्म होती है! इसलिये तुम अपनी पूरी शक्ति से इस खुशी के योग्य होना [illegible] हो, यहां तक कि अपने मन के चैन के लिये कोई बड़ा कारनामा करना चाहते हो! मैं यह भी अच्छी तरह से समझता हूं कि कैसे [illegible] अपने को इस चीज़ के लिये समर्पित करने को तैयार हो कि [illegible] अपना उत्साह, अपनी कार्य-कुशलता [illegible] जैसा कि तुम कहते हो, [illegible] अपनी कृतज्ञता दिखानी चाहिये थी, वहीं तुम अचानक सकपका [illegible] गये! तुम्हें इस ख्याल से बहुत अफसोस होता है कि यूलि[illegible] मस्ताकोविच जब यह देखेगा कि उसने तुमसे जो आशायें की थी [illegible] तुमने वे पूरी नहीं कीं तो उसके माथे पर बल पड़ जायेंगे और शायद [illegible] नाराज भी हो जाये। यह सोचकर तुम्हें दुख होता है कि जिसे तुम अपना उपकारक मानते हो, उससे तुम्हें अपनी भर्त्सना सुनने को मिलेगी और सो भी ऐसे क्षण में! जब तुम्हारा हृदय खुशी से छलछला रहा है! और जब तुम यह नहीं जानते कि अपनी कृतज्ञता को किस पर खर्च करो... ऐसा ही है न? ऐसा ही?

अर्कादी इवानोविच, जिसकी अन्तिम शब्द कहते हुए आवाज़ [illegible] रही थी, चुप हो गया और उसने गहरी सांस ली।

वास्या अपने मित्र को ममत्व से देख रहा था। उसके होंठों पर मुस्कान [illegible] उठी।

इतना ही [illegible] [illegible] की [illegible] में उसके चेहरे पर कुछ [illegible]

हुए कहा, "मैं तुम्हारे लिये अपने को बलिदान करने को तैयार हू। मैं कल ही यूलिआन मास्ताकोविच के यहा जाऊगा तुम मेरी बात नही काटो। वास्या, तुम अपने दोष को अपराध की सीमा तक ले जा रहे हो। मगर यूलिआन मास्ताकोविच उदार और दयालु व्यक्ति है इसके अलावा, तुम्हारे जैसा नही है। भाई वास्या, वह हमारी बात बड़े इतमीनान से सुनेगा और हमे मुसीबत से निजात दिला देगा। अब बोलो। हो गयी न तुम्हारे दिल को तसल्ली?"

वास्या ने डबडबाई आखो से अर्कादी का हाथ दबाया।

'बस, काफी है, अर्कादी, काफी है," उसने कहा, 'बात तय हो गयी। मैने काम खत्म नही किया, ठीक है, नही खत्म किया तो नही किया। और तुम्हारे वहा जाने की जरूरत नही है। मैं खुद ही सब कुछ कह दूगा, खुद ही वहा जाऊगा। मैं अब शान्त हो गया हू बिल्कुल शान्त हो गया हू। लेकिन तुम नही जाना सुनते हो न।

'वास्या, मेरे प्यारे!" अर्कादी इवानोविच खुशी से चिल्ला उठा। 'मैने तो तुम्हारे ही शब्दो के अनुसार ऐसा कहा है। मैं खुश हू कि तुम्हारा मन बदल गया है, तुम सम्भल गये हो। लेकिन यह याद रखना कि तुम्हारे साथ चाहे कुछ भी क्यो न हो, तुम पर कैसी भी क्यो न गुजरे मैं हमेशा तुम्हारे साथ हू! मैं देख रहा हू कि तुम यह चाहते हुए व्यथित हो रहे हो कि मैं यूलिआन मास्ताकोविच से कुछ न कहू – मैं नही कहूगा, एक शब्द भी नही कहूगा तुम खुद ही कहना। देखो न – तुम कल वहा जाओगे या नही, तुम नही जाओगे तुम यहा बैठकर लिखोगे, समझे न? और मैं वहा जाकर यह पता लगाऊगा कि यह किस तरह का काम है, बहुत जल्दी का या नही वक्त पर पूरा होना चाहिये या नही और अगर इसमे देर हो जाये तो उसका क्या नतीजा हो सकता है? इसके बाद मैं भागा हुआ तुम्हारे पास आऊगा देखते हो, देखते हो न! कुछ उम्मीद तो बधती है। मान लो कि काम जल्दी का न हो – तब तो बात बन जायेगी। यूलिआन मास्ताकोविच कुछ न कहे, तब तो सकट टल जायेगा।

वास्या ने सन्देहपूर्वक सिर हिलाया। किन्तु उसकी आभारपूर्ण दृष्टि मित्र के चेहरे पर टिकी रही।

"बस, काफी है, काफी है! मैं इतनी ज्यादा कमजोरी महसूस कर रहा हू, इतना ज्यादा थक गया हू," उसने हाफते हुए कहा

"मैं खुद इसके बारे में नहीं सोचना चाहता। आओ, किसी और बात की चर्चा करें! शायद अब मैं निपटूंगा तो नहीं, केवल दो पृष्ठ समाप्त कर दूंगा ताकि पैरा खत्म हो जाये। सुनो तो . मैं बहुत अरसे से तुमसे यह पूछना चाहता था—तुम इतनी अच्छी तरह से मुझे कैसे जानते हो?"

वास्या की आंखों से आंसू की बूंदें अर्कादी के हाथ पर गिरीं।

"वास्या, अगर तुम्हें यह मालूम होता कि मैं तुम्हें कितना अधिक प्यार करता हूं तो तुमने यह पूछा ही न होता। ठीक है न!"

"हां, हां, अर्कादी, मैं यह नहीं जानता हूं, क्योंकि क्योंकि मैं नहीं जानता हूं कि किसलिये तुम मुझे इतना प्यार करते हो! ओह, अर्कादी, जानते हो कि तुम्हारा प्यार भी मेरी जान लेता था? तुम्हें मालूम नहीं कि कितनी बार, खास तौर पर सोने के लिये लेटने और तुम्हारे बारे में सोचने पर (क्योंकि सोने के वक्त मैं हमेशा तुम्हारे बारे में सोचता हूं) मैं आंसू बहाता था और मेरा हृदय इसलिये, इसलिये इसलिये कांप उठता था कि तुम मुझे इतना अधिक प्यार करते हो, लेकिन मैं किसी तरह भी अपने मन का बोझ हल्का नहीं कर सकता था, तुम्हारे प्रति किसी तरह भी आभार प्रकट नहीं कर सकता था . "

"तो देखते हो वास्या, देखते हो कि तुम कैसे हो!. देखो न, अब तुम कितने परेशान हो," अर्कादी ने कहा जिसका हृदय इस क्षण बुरी तरह से तड़प रहा था और जिसे पिछले दिन सड़क पर घटी घटना याद हो आयी थी।

"बस, काफी है! तुम यह चाहते हो कि मैं शान्त हो जाऊं, लेकिन मैं तो कभी भी इतना शान्त और सुखी नहीं था! जानते हो सुनो, मैं तुमसे सब कुछ कहना चाहता हूं, लेकिन डरता हूं कि तुम्हें दुख होगा . तुम हमेशा दुखी होते और मुझ पर चिल्लाते रहते हो और मैं डर जाता हूं... देखो तो, इस समय मैं कैसे कांप रहा हूं, लेकिन किस कारण, मुझे मालूम नहीं। मैं तुमसे जो कहना चाहता हूं, वह यह है। मुझे लगता है कि मैं पहले अपने को नहीं जानता था—हां, नहीं जानता था! और दूसरों को भी कल ही जान पाया। भैया मेरे, मैंने यह अनुभव नहीं किया था, पूरी तरह से इस सब का मूल्यांकन नहीं कर पाया था। मेरा दिल... कठोर था.. सुनो तो, यह कैसे हुआ कि मैंने इस दुनिया में किसी के साथ, किसी के साथ भी नेकी नहीं

की, क्योंकि ऐसा कर ही नहीं सकता था – मैं तो शक्ल-सूरत से भी अच्छा नहीं हूं   लेकिन हर किसी ने मेरे साथ भलाई की है! सबसे पहले तो तुमने ही – क्या मैं यह नहीं देखता हूं? मैं सिर्फ चुप रहा हूं, चुप रहा हूं!"

"वास्या, बस करो!"

"क्यों, इसमें क्या बात है! इसमें क्या बात है! मैं तो यों ही " आसुओं के कारण वास्या मुश्किल से ही कह पाया। "मैंने कल तुमसे यूलिआन मास्ताकोविच की चर्चा की थी। तुम तो खुद यह जानते हो कि वह बड़ा कठोर और रूखा आदमी है, खुद तुम भी कई बार उसकी टीका-टिप्पणी का शिकार हो चुके हो, लेकिन मेरे साथ उसने कल हंसी-मज़ाक तक किया, मेरे प्रति अपना स्नेह व्यक्त किया और अपना दयालु हृदय, जिसे बुद्धिमत्ता दिखाते हुए वह औरों से छिपाये रखता है, मेरे सामने खोल दिया "

'तो इससे क्या सिद्ध होता है? यही कि तुम अपने सुख-सौभाग्य के योग्य हो।"

"ओह, अर्कादी! कितना मैं चाहता था इस काम को खत्म कर देना! नहीं, मैं अपने सुख-सौभाग्य को नष्ट कर डालूंगा! मुझे ऐसी पूर्वानुभूति हो रही है! नहीं, इसके कारण नहीं," वास्या ने मेज़ पर पड़े हुए ढेर सारे फौरी काम की ओर अर्कादी की नज़र जाते देखकर कहा, "यह तो कुछ नहीं, ये तो लिखे हुए कागज़ हैं   यह सब बकवास है! यह मामला तो तय हो चुका है   मैं   अर्कादी आज उनके यहां गया था   मैं भीतर नहीं गया। मेरा मन बड़ा दुखी हुआ   मुझे बहुत बुरा लगा! मैं तो सिर्फ दरवाज़े के पास ही खड़ा रहा। वह पियानो बजा रही थी   मैं सुनता रहा। देखते हो न अर्कादी " उसने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए कहा, "मुझे भीतर जाने की जुर्रत नहीं हुई

'सुनो   वास्या   यह तुम्हें हो क्या रहा है? तुम मेरी ओर ऐसे क्यों देख रहे हो?'

"मुझे क्या हो रहा है? कुछ नहीं! ज़रा मेरी तबीयत अच्छी नहीं। पांव कांप रहे हैं। यह इसलिये कि मैं रात को काम करता रहा। हां यही बात है! मेरी आंखों के सामने अब सब कुछ हरा-हरा ही होता जा रहा है। मुझे यहां, यहां "

उसने दिल की तरफ इशारा किया। वह बेहोश हो गया।

जब उसे होश आया तो अर्कादी ने अपनी मर्जी से कुछ उपाय करने चाहे। उसने चाहा कि वास्या को जबर्दस्ती बिस्तर पर लिटा दे। वास्या किसी भी कीमत पर इसके लिये राजी नहीं हुआ। वह रोने लगा, उसने अपने हाथों को दबाया-मरोड़ा, लिखना चाहा, अवश्य ही दो पृष्ठ समाप्त करने चाहे। अर्कादी ने उसे ऐसा करने दिया, ताकि उसका दिल न दुखे।

"सुनो तो," अपनी कुर्सी पर बैठने के बाद वास्या ने कहा, "सुनो तो, मेरे दिमाग में एक ख्याल आया है, मुझे उम्मीद नजर आई है।"

वह अर्कादी की तरफ देखकर मुस्कराया और उसके उतरे हुए चेहरे पर वास्तव में ही आशा की चमक आ गयी।

"देखो, मैं यह करूंगा कि परसों उसके पास पूरा काम नहीं ले जाऊंगा। बाकी के बारे में झूठ बोल दूंगा, यह कह दूंगा कि कागज जल गये, भीग गये, गुम हो गये ... या यही कि खतम नहीं कर पाया— मुझसे झूठ नहीं बोला जाता। मैं खुद स्पष्ट कर दूंगा—जानते हो क्या? मैं उसे खुद सब कुछ स्पष्ट कर दूंगा। मैं कहूंगा कि यह, यह बात है, काम पूरा नहीं कर सका ... मैं उससे अपने प्यार की चर्चा करूंगा। उसने तो खुद भी कुछ ही समय पहले शादी की है, मेरी बात उसकी समझ में आ जायेगी! जाहिर है कि मैं यह सब बड़े आदर से, बहुत शान्त ढंग से करूंगा। वह मेरे आंसू देखेगा और उनसे उसका दिल पिघल जायेगा ..."

"हां, बेशक ऐसा ही होगा ... तुम जाओ ... उसके पास जाओ, सब कुछ उसे स्पष्ट कर दो ... आंसुओं की भी कोई जरूरत नहीं है! किसलिये? सच ... वास्या, तुमने मुझे बिल्कुल ही डरा दिया था।"

"हां ... मैं जरूर जाऊंगा। और अब तुम मुझे लिखने दो, लिखने दो, अर्कादी। मैं किसी का कुछ बुरा नहीं करता ... मुझे लिखने दो!"

अर्कादी बिस्तर पर जा लेटा। वास्या पर वह भरोसा नहीं करता था, बिल्कुल भरोसा नहीं करता था। वह कुछ भी कर सकता था।

[illegible] किस बात की [illegible] कैसी बात? मगर बात वास्तव में [illegible] नहीं थी। [illegible] इस [illegible] में थी कि वास्या ने अपनी [illegible] नहीं की थी कि वह खुद को अपने सामने ही अपराधी

महसूस कर रहा था, भाग्य के सम्मुख अपने को कृतघ्न अनुभव कर रहा था, कि अपने सुख-सौभाग्य से वह हतप्रभ और स्तम्भित हो गया था तथा अपने को इसके योग्य नही समझता था, कि वह इसी की रट लगाने का आधार ढूढता था, और अपने अप्रत्याशित सुख की स्थिति से अभी तक उबर नही पाया था। "तो यह थी असली चीज़!" अर्कादी इवानोविच ने सोचा। "उसे बचाना चाहिये। खुद अपने से उसकी सुलह करवानी चाहिये। वह तो खुद अपना मरसिया पढ़ रहा है।" वह सोचता रहा, सोचता रहा और उसने जल्दी से जल्दी, अगले ही दिन यूलिआन मास्ताकोविच के यहा जाने और उसे सब कुछ बता देने का फैसला किया।

वास्या बैठा हुआ लिख रहा था। बुरी तरह से सतप्त-व्यथित अर्कादी इवानोविच इस मामले पर फिर से विचार करने के लिये लेट गया और पौ फटने के कुछ ही पहले उसकी आख खुली।

"ओह, बेडा गर्क! फिर वही हुआ!" वास्या की ओर देखकर जो बैठा हुआ लिख रहा था, वह चिल्ला उठा।

अर्कादी उसकी तरफ लपका, उसने उसे बाहो मे भरा और जबर्दस्ती बिस्तर पर लिटा दिया। वास्या मुस्कराया, उसकी आखे कमज़ोरी से मुदी जा रही थी। वह बडी मुश्किल से ही बात कर पा रहा था।

"मैं खुद भी लेटना चाहता था," उसने कहा। "जानते हो, अर्कादी, मुझे एक रास्ता सूझा है। मैं काम खत्म कर लूगा। मैंने लिखने की रफ़्तार बढ़ा दी है! मुझमें अब बैठने की ताकत नही रही। तुम आठ बजे मुझे जगा देना।"

वह और कुछ न कह पाया तथा मुर्दे की तरह गहरी नीद सो गया।

"मावरा!" चाय लेकर आनेवाली नौकरानी से अर्कादी इवानोविच ने फुसफुसाकर कहा, "उसने एक घण्टे बाद जगा देने के लिये कहा है। हरगिज ऐसा नही करना! बेशक वह दस घण्टे तक सोता रहे, समझी?"

"समझ गयी, साहब।"

"दिन का खाना नही पकाना, लकडिया चीरने-चारने का झझट नही करना, जरा भी शोर नही करना, वरना तुम्हारी खूब खबर लूगा! अगर मेरे बारे मे पूछे तो कह देना कि दफ्तर गया हू, समझी?"

"समझ गयी, साहब, समझ गयी। बेशक जितना भी सोयें, मेरा क्या जाता है! साहब के सोने से मुझे तो खुशी ही है। मैं तो साहब लोगों के माल-सामान की बडी चिन्ता करती हू। और कुछ दिन पहले मुझसे जो प्याला टूट गया था और जिसके लिये आपने मुझे डांटा था तो वह मैंने नही, बिल्ली मासा ने तोडा था। मुझे मालूम नही उसने कैसे यह किया। 'भाग यहा से, शैतान की नानी,' मैंने उससे कहा!'

शी-शी चुप रहो, चुप रहो!"

अकाकी इवानोविच मावरा को रसोईघर में ले गया, उसमें चाबी मारी और उसे ताला लगाकर बन्द कर दिया। इसके बाद वह दफ्तर को रवाना हो गया। रास्ते में यह सोचता रहा कि कैसे वह पुनिआन मास्तार्कोविच के सामने जाये, क्या ऐसा करना ठीक होगा, कहीं यह धृष्टता तो नहीं होगी? वह सहमा-सहमा-सा दफ्तर पहुचा, उसने डरते-डरते यह पूछा कि हुजूर यानी बडे साहब दफ्तर में है या नहीं। उसे बताया गया कि वह दफ्तर में नहीं है और न ही आयेंगे। अकाकी इवानोविच ने उसी समय उनके घर जाना चाहा, लेकिन तभी फौरन ही उसके दिमाग में यह ख्याल आया कि पुनिआन मास्तार्कोविच अगर दफ्तर नहीं आये तो इसका मतलब है कि वह घर पर किसी जरूरी काम में उलझे हुए है। वह दफ्तर में ही रुक गया। घण्टे ऐसे बीत रहे थे मानो कभी खत्म ही नहीं होंगे। चुपके-चुपके उसने बाकी का दिये गये काम के बारे में भी जानकारी हासिल करने की कोशिश की। किन्तु किसी को कुछ मालूम नहीं था। सिर्फ इतना ही पता था कि पुनिआन मास्तार्कोविच उसे खास काम देते थे मगर क्या काम यह कोई नहीं जानता था। आखिर दिन के तीन बजे और अकाकी इवानोविच घर की तरफ चल पड़ा। एक क्लर्क ने उसे ड्योढ़ी में रोका और यह बताया कि साढ़े बारह के बाद वसील्यी येगोरोविच [illegible] आया था और उसने पूछा था कि आप यहां है या नहीं, अगर पुनिआन मास्तार्कोविच दफ्तर में है या नहीं। यह सुनकर अकाकी इवानोविच ने किराये की घोड़ा-गाड़ी ली और डर के मारे कांपता हुआ घर की ओर रवाना हो गया।

दरवाजा खुला पड़ा था। वह बहुत ही [illegible] [illegible]
[illegible] था। अकाकी इवानोविच को [illegible] [illegible]

है!" उदास और थकी-थकी आंखो से उसकी ओर देखते हुए वह कहता रहा, "परेशानी की क्या बात है? बस, काफ़ी है!"

"तुम, तुम मुझे तसल्ली देते हो," अर्कादी चिल्ला उठा जिसका कलेजा टुकडे-टुकडे हुआ जा रहा था। "वास्या," आखिर उसने कहा, "तुम लेट जाओ, थोडी देर सो लो, क्यो, ठीक है न? अपने को व्यर्थ यातना नही दो! यही ज्यादा अच्छा होगा कि बाद में फिर काम करने बैठ जाना!"

"हा, हा!" वास्या ने दोहराया। "जैसा तुम चाहो! अच्छी बात है, मैं लेट जाता हू। हा, लेट जाता हू। मैं तो इसे खत्म करना चाहता था, लेकिन अब मैंने अपना इरादा बदल लिया है, हा "

और अर्कादी उसे बिस्तर पर खीच ले गया।

"सुनो वास्या," उसने दृढता से कहा, "आखिर इस मामले को तय करना तो बहुत जरूरी है। मुझे बताओ कि तुमने अपने मन मे क्या सोचा है?"

"ओह!" वास्या ने अपने कमज़ोर हो गये हाथ को झटका और मुह फेर लिया।

"बस, बहुत हो चुका, वास्या, बहुत हो चुका! तुम मुझे अपने दिल की बात बताओ! मैं तुम्हारा हत्यारा नही बनना चाहता—मैं अब और खामोश नही रह सकता। मैं जानता हू कि मेरे सामने अपना दिल खोले बिना तुम सो नही सकोगे।"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी, जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," वास्या ने रहस्यपूर्ण ढग से इन शब्दो को दोहराया।

"तो यह मेरी बात मानने जा रहा है!" अर्कादी इवानोविच ने सोचा।

"मेरी बात सुनो, वास्या," अर्कादी ने कहा, "मैंने जो कहा था उसे याद करो और कल मैं तुम्हें मुसीबत से बचा लूंगा, कल मैं तुम्हारे भाग्य का निर्णय कर दूगा! भाग्य का निर्णय, यह मैं क्या कह रहा हू! तुमने मुझे इतना डरा दिया है, वास्या, कि मैं भी तुम्हारे ही शब्दों को दोहराने लगा हूं। कैसा भाग्य-निर्णय! यह सब बकवास है, मामूली बात है! तुम यूलिआन मास्ताकोविच की कृपादृष्टि से, यदि सकते हो, प्यार से वचित नही होना चाहते! और इस ... होगा. मैं "

अर्कादी इवानोविच और भी देर तक अपनी बात कहता जाता लेकिन वास्या ने उसे टोक दिया। वह बिस्तर पर उठकर बैठ गया कुछ कहे बिना उसने अपनी बाहें अर्कादी के गले में डाल दी और उसे चूम लिया।

"बस, काफी है!" उसने कमज़ोर आवाज़ में कहा, "काफी है! अब इसकी और चर्चा नहीं करो!"

उसने फिर से दीवार की ओर अपना मुंह कर लिया।

"हे भगवान!" अर्कादी सोच रहा था, "हे भगवान! इसे क्या हो गया है? यह तो बिल्कुल अपना सन्तुलन खो बैठा है। क्या इरादा बना लिया है इसने? यह अपनी जान ले लेगा।

अर्कादी हताशा से उसकी तरफ देख रहा था।

"अगर यह बीमार हो जाता," अर्कादी सोच रहा था, "तो शायद बेहतर होता। बीमारी के साथ उसकी चिन्ता दूर हो जाती और इसी बीच सामने की बहुत अच्छे ढंग से निपटाया जा सकता था। लेकिन मैं यह क्या बक रहा हूं! ओह, मेरे ईश्वर!"

इसी बीच वास्या की मानो आंख लग गयी। अर्कादी इवानोविच को खुशी हुई। "यह अच्छा लक्षण है!" उसने सोचा। उसने उसके पास बैठे हुए सारी रात जागते रहने का निर्णय कर लिया। किन्तु वास्या खुद बेचैन रहा। वह रह रहकर कांप उठता, बिस्तर में छटपटाता और थोड़ी देर को आंख खोल लेता। आखिर थकान ने अपना रंग दिखाया। ऐसे प्रतीत हुआ कि मानो वह घोड़े बेचकर सो गया है। रात के लगभग दो बजे थे। अर्कादी इवानोविच मेज़ पर कोहनियां टिकाये हुए कुर्सी पर ही ऊंघ गया।

उसकी नींद उखड़ी-उखड़ी और बड़ी अजीब-सी थी। उसे लगातार ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह सो नहीं रहा है और वास्या पहले की भांति बिस्तर पर लेटा हुआ है। किन्तु बहुत ही अजीब मामला था! उसे ऐसा लग रहा था कि वास्या ढोंग कर रहा है, कि वह उसे धोखा भी दे रहा है, कि ज़रा-ज़रा आंख खोलकर उसे देखते हुए वह धीरे-धीरे उठ रहा है और दबे पांवों लिखने की मेज़ की तरफ जा रहा है। अर्कादी को अपने दिल में टीसते दर्द की अनुभूति हुई। उसे वास्या को देखकर झुंझलाहट हुई, अफसोस और मानसिक कष्ट हो रहा था कि वह उस पर भरोसा नहीं करता था, उससे कुछ छिपाता था, दुःख-

छिपाव करता था। उसने चाहा कि उसे बाहों में भर ले, भींचे-भिंचाये और उसे बिस्तर पर ले जाये लेकिन इसी समय वास्या उसकी बाहों में चीख उठा और वह केवल उसका शव ही बिस्तर पर ले गया। अर्कादी के माथे पर ठण्डा पसीना आ गया था और उसका दिल बहुत ज़ोर से धक-धक कर रहा था। उसने आंखें खोलीं और पूरी तरह जाग गया। वास्या उसके सामने मेज़ पर बैठा हुआ लिख रहा था।

अपनी भावना पर विश्वास न करते हुए अर्कादी ने बिस्तर पर नज़र डाली – वास्या वहां नहीं था। अभी तक अपने स्वप्न के प्रभाव में बंधा हुआ अर्कादी भयभीत होकर जल्दी से उठा। वास्या हिल-डुल नहीं रहा था। वह लिखता जा रहा था। अर्कादी ने अचानक बहुत ही घबराकर यह देखा कि वास्या स्याही के बिना ही काग़ज़ पर क़लम घसीटता जा रहा है, बिल्कुल कोरे पन्ने ही उलटता जाता है और काग़ज़ को जल्द-से-जल्द लिख डालने की उतावली में है मानो बहुत बढ़िया ढंग और बड़ी सफलता से काम कर रहा हो! "नहीं, यह मानसिक अवस्था नहीं है!" अर्कादी इवानोविच ने सोचा और उसका सारा शरीर कांप उठा। "वास्या, वास्या! मुझसे कुछ बोलो तो!" उसके कंधों को झकझोरते हुए वह चिल्लाया। लेकिन वास्या ने कोई जवाब नहीं दिया और पहले की भांति स्याही के बिना काग़ज़ पर क़लम चलाता रहा।

"अन्धेरा ना! मैं लिखने की रफ़्तार बढ़ा रहा हूं," अर्कादी की तरफ़ सिर उठाए बिना उसने कहा।

अर्कादी ने वास्या का हाथ पकड़कर क़लम छीन ली।

वास्या कराह उठा। उसने अपना हाथ नीचे कर लिया और नज़रें उठाकर अर्कादी की तरफ़ देखा। इसके बाद बहुत ही व्यथित-पीड़ित [illegible] से माथे पर [illegible] हाथ फेरा मानो वह अपने [illegible] को [illegible] हुए [illegible] कुछ करना चाहता हो और फिर [illegible] सिर झुकाये हुए उसने सिर [illegible] पर [illegible] दिया।

"वास्या, वास्या!" अर्कादी इवानोविच [illegible] के [illegible] [illegible]।

[illegible]

[illegible] बाद [illegible] से [illegible] [illegible] हुआ। [illegible] [illegible] [illegible] में [illegible] थे और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रहा था, वह कुछ [illegible] रहा था।

इवानोविच ने दायें-बायें सभी को जवाब दिया या यह कहना बेहतर होगा कि किसी को भी कोई निश्चित उत्तर न देते हुए वह भीतरवाले कमरों में जाने का प्रयास करता रहा। आगे बढ़ते हुए उसे यह भी मालूम हो गया कि वास्या यूलिआन मास्ताकोविच के कक्ष में है, कि सभी वहां चले गये हैं और एस्पेर इवानोविच भी वहीं है। वह रुक गया। किसी वरिष्ठ सहयोगी ने उससे पूछा कि वह कहां जा रहा है और उसे क्या चाहिये? इस व्यक्ति को पहचाने बिना उसने वास्या के बारे में कुछ कहा और सीधा महामहिम के कक्ष की ओर चल दिया। वहां से यूलिआन मास्ताकोविच की आवाज़ सुनाई दे रही थी। "कहां जा रहे हैं आप?" किसी ने दरवाज़े के बिल्कुल निकट उससे पूछा। अर्कादी इवानोविच लगभग हतप्रभ-सा हो गया। उसने लौटना चाहा, लेकिन तनिक खुले हुए दरवाज़े में से उसे अपने बेचारे वास्या की झलक मिली। उसने दरवाज़ा खोला और जैसे-तैसे कमरे में घुस गया। वहां बड़ी घबराहट और परेशानी का वातावरण था, क्योंकि यूलिआन मास्ताकोविच सम्भवतः बहुत दुखी था। अधिक महत्त्वपूर्ण लोग उसके पास खड़े हुए मामले पर विचार-विमर्श कर रहे थे, मगर किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पा रहे थे। वास्या एक तरफ़ को खड़ा था। उसे देखकर अर्कादी का दिल बैठ गया। ज़र्द चेहरेवाला वास्या गर्दन ताने और सैनिक की तरह सावधानी की मुद्रा में हाथों को दायें-बायें सटाये खड़ा था। वह एकटक यूलिआन मास्ताकोविच को देख रहा था। अर्कादी इवानोविच की ओर फ़ौरन लोगों का ध्यान गया और किसी ने, जो यह जानता था कि वे दोनों एकसाथ रहते हैं, महामहिम को इसके बारे में बताया। अर्कादी को महामहिम के निकट ले जाया गया। उसने उससे पूछे गये सवालों का कुछ जवाब देना चाहा, यूलिआन मास्ताकोविच की ओर देखा और महामहिम के चेहरे पर सच्चा दयाभाव देखकर बुरी तरह से कांपते हुए बच्चे की भांति सिसकने लगा। इतना ही नहीं, वह तो महामहिम की ओर लपका, उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसे अपनी आंखों के पास ले गया और आंसुओं से तर करने लगा, यहां तक कि यूलिआन मास्ताकोविच जल्दी से अपना हाथ छुड़ाने को मजबूर हो गया, उसने उसे हवा में झटका और कहा—"बस, काफ़ी है, मेरे भाई, मैं देख रहा हूं कि तुम्हारा हृदय दयालु है।" अर्कादी सिसक रहा था और सभी को गिड़गिड़ाती नज़र से देख रहा

बहुत मजबूत दिल का होने पर भी यूलिआन मास्ताकोविच की आंखों से आंसू छलक पड़े। "इसे ले जाइये," उसने हाथ भटककर कहा।
"फ़ौज के लायक हूं!" वास्या ने धीरे से कहा, एड़ी पर घूमा और कमरे से बाहर चला गया। उसमें दिलचस्पी रखनेवाले सभी लोग भी उसके पीछे-पीछे चल दिये। अर्कादी भी दूसरों के पीछे-पीछे भीड़ में बढ़ रहा था। वास्या को अस्पताल ले जानेवाली गाड़ी की प्रतीक्षा करते हुए उसे प्रवेश-कक्ष में बिठा दिया गया। वह चुपचाप बैठा था और किन्हीं विचारों में बहुत खोया-डूबा हुआ प्रतीत हो रहा था। वह जिस किसी को पहचान लेता, उसकी ओर सिर भुका देता मानो विदा ले रहा हो। वह रह रहकर दरवाज़े की तरफ़ देखता और मानो अपने को उस क्षण के लिये तैयार करता जब यह कहा जायेगा – "चलो!" लोगों की भीड़ उसके निकट ही छोटा-सा घेरा बनाये हुए थी। सभी सिर हिला रहे थे, सभी दुखी हो रहे थे। बहुतों को उसके क़िस्से से, जो आन की आन में सभी को मालूम हो गया, हैरानी हो रही थी। कुछ तर्क-वितर्क करते थे, कुछ वास्या पर तरस खाते और उसकी प्रशंसा करते थे, कहते थे कि वह बहुत ही विनीत और शान्त नौजवान था, बहुत-सी उम्मीदें बंधवाता था। उन्होंने यह बताया कि कैसे उसने मन लगाकर पढ़ाई की, उसमें ज्ञान-पिपासा थी और उसने अपने को सुशिक्षित बनाने का यत्न किया। "अपनी ही हिम्मत से नीचे से ऊपर उठा!" किसी ने कहा। उसके प्रति महामहिम के लगाव का बड़ी भावुकता से उल्लेख किया गया। कुछ लोगों ने यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि क्यों वास्या के दिमाग़ में यह बात आई और सनक बनकर रह गयी कि काम न पूरा करने के लिये उसे फ़ौज में भेज दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि कुछ समय पहले तक बेचारा उसी सामाजिक श्रेणी से सम्बन्ध रखता था जिसके लोगों को सेना में भेजा जाता था और केवल यूलिआन मास्ताकोविच की सिफ़ारिश पर, जिसने वास्या में प्रतिभा, आज्ञाकारिता और दुर्लभ विनम्रता जैसे गुण देख लिये थे, उसे पहला पद मिला था। संक्षेप में यह कि तरह-तरह के स्पष्टीकरण और मत प्रकट किये जा रहे थे। स्तम्भित लोगों में एक की ओर तो विशेष रूप से ध्यान जाता था। वह वास्या का एक बहुत ही नाटा-सा सहकर्मी था। वह बिल्कुल नौजवान भी नहीं, लगभग तीस साल का था। उसके चेहरे का रंग बिल्कुल उड़ा हुआ था, उसका

लीज़ा के यहां गया। वहां क्या हुआ, इसका तो ज़िक्र ही क्या किया जाये! यहां तक कि नन्हे-से पेत्या ने भी, जो पूरी तरह से यह समझने में असमर्थ था कि दयालु वास्या के साथ क्या हो गया है, एक कोने में जाकर छोटे-छोटे हाथों से अपना मुंह ढक लिया और बाल-सुलभ सच्चे हृदय से फूट-फूटकर रोया। अर्कादी जब घर लौट रहा था तो झुटपुटा हो चुका था। नेवा के निकट पहुंचकर वह क्षण भर को रुका और उसने नदी की धुआरी, पाले से धुंधलायी दूरी पर नज़र डाली जो अंधेरे में ढके क्षितिज पर डूबने सूर्य की रक्तिम रश्मियों में लाल हो उठी थी। शहर के ऊपर रात की काली चादर फैल रही थी और सूरज की अन्तिम किरणों के प्रतिबिम्ब में नेवा का असीम, जमी बर्फ से फूला हुआ विस्तार पाले के असंख्य स्फुलिंगों से चमचमा रहा था। कोई बीस डिग्री की ठण्डक थी। बेहद तेज़ दौड़ाये जाते घोड़ों और जल्दी-जल्दी चल रहे लोगों से ठण्डी भाप उठ रही थी। घनी हवा ज़रा-सी आवाज़ से भी कांप जाती थी और नदी के दोनों ओर के घरों की छतों से मानो धुएं के दैत्याकार स्तम्भ कुण्डलों में बदल और फिर सीधे होते हुए ठण्डे आकाश में ऊपर उठ रहे थे, और ऐसा प्रतीत होता था मानो पुरानी इमारतों पर नयी इमारतें खड़ी होती जा रही हैं, हवा में एक नया शहर बनता जा रहा है... झुटपुटे के इस समय में ऐसा लग रहा था कि इस धरती के अपने सभी दुर्बल और शक्तिशाली वासियों, गरीबों के रैन-बसेरों तथा अमीरों, सौभाग्यशालियों के स्वर्ण-मंडे प्रासादों सहित यह दुनिया एक मृग-मरीचिका, एक जादुई चमत्कार, एक सपने के समान है जो आप भी आप में लुप्त हो जायेगी और भाप बनकर गहरे नीले आकाश में खो जायेगी। विस्मय के मारे वास्या के दुखी मित्र के मस्तिष्क में एक अजीब-सा विचार आया। वह सिहरा और अचानक एक बहुत ही शक्तिशाली तथा अभी तक अनजानी अनुभूति के कारण इस क्षण पैदा होनेवाला तेज़ रक्त-प्रवाह उसके हृदय में उमड़ पड़ा। वह तो मानो इस क्षण में सम्पूर्ण स्थिति की पूरी गम्भीरता को समझ पाया था और उसे यह मालूम हुआ था कि अपनी ख़ुशी को सहन न कर सकनेवाला उसका बेचारा दोस्त किस कारण से पागल हो गया था। उसके होंठ कांप उठे, आंखें चमचमा उठीं, उसका चेहरा पीला हो गया और इस क्षण उसे मानो किसी नयी चीज़ का आभास हुआ

अर्कादी इवानोविच उदास-उदास, दुखी-दुखी रहने लगा और हँसी-खुशी को भूल गया। पहलेवाला फ्लैट मानो अब उसे काटने को दौड़ता था — वह दूसरे फ्लैट मे जा बसा। लीज़ा के यहा जाने को उसका कभी मन नही हुआ, वह जा भी नही सकता था। दो साल बाद गिरजाघर मे उसकी लीज़ा से भेट हुई। उसकी शादी हो चुकी थी और गोद का बच्चा लिये हुए धाय उसके पीछे-पीछे आ रही थी। इन्होंने एक दूसरे का अभिवादन किया और काफी देर तक अतीत की चर्चा मे व्यस्त रहे। लीज़ा ने कहा कि भगवान की कृपा से वह सुखी है, निर्धन नही है, उसका पति दयालु व्यक्ति है जिसे वह प्यार करती है किन्तु बात करते-करते अचानक उसकी आखे छलक उठी, उसकी आवाज़ धीमी हो गयी, उसने मुह फेर लिया और गिरजे की वेदी पर झुक गयी, ताकि लोगो से अपने दुख को छिपा सके

एक अटपटी घटना

यह बहुत ही अटपटी घटना ठीक उस समय घटी, जब हमारी प्यारी मातृभूमि का बड़ी अदम्य शक्ति और अत्यधिक मर्मस्पर्शी ढंग से पुनरुत्थान आरम्भ हुआ और उसके सभी श्रेष्ठ सपूत नयी [illegible] करवटों और नयी आशाओं से अनुप्रेरित थे। उसी समय जाड़े की एक मेघ-मुक्त रात को, जब पाला पड़ रहा था, और ग्यारह बजने में बस [illegible] का वक्त था, पीटर्सबर्ग स्कोरोना नामक हलके के एक बढ़िया दुमंजिले मकान के एक आरामदेह, यहां तक कि बड़े ठाटदार कमरे में तीन अत्यधिक सम्मानित पुरुष बैठे हुए किसी दिलचस्प विषय पर बड़ी गम्भीर और ऊंचे स्तर की बातचीत कर रहे थे। ये तीनों व्यक्ति जनरल के पद पर काम करते थे। एक छोटी-सी मेज के गिर्द नर्म-नर्म आराम-कुर्सियों पर बैठे बातचीत करते हुए ये धीरे-धीरे और बड़े मजे से शैम्पेन के घूंट भी पीते जाते थे। शैम्पेन की बोतल बर्फ से भरे चांदी के कटोरे में थी, जो मेज पर रखा हुआ था। बात यह है कि मेजबान, पैंसठ साल का अविवाहित प्रिवी कौंसिलर स्तेपान निकीफ़ोरोविच निकीफ़ोरोव हाल ही में खरीदे गये अपने घर का प्रवेश समारोह और साथ ही जन्मदिन भी मना रहा था जो संयोग से इसी [illegible] था और जो उसने पहले कभी नहीं मनाया था। वैसे यह कोई [illegible] समारोह भी नहीं था [illegible] जैसा कि हम [illegible] हैं [illegible]

[illegible]

को रवाना हो जायेंगे, क्योंकि उनके मेजबान ने जिन्दगी भर वक्त की पाबन्दी पर कड़ाई से अमल किया था। उसके बारे में दो-चार शब्द – एक छोटे और तगदस्त कर्मचारी के रूप में उसने अपना कार्य-जीवन आरम्भ किया था बड़े धीरज से पैतालीस साल तक इस जुए को कंधे पर ढोया था, वह अच्छी तरह से यह जानता था कि किस ओहदे तक पहुंच जायेगा, आसमान के तारे तोड़ना उसे बिल्कुल पसन्द नहीं था सो वह दो सरकारी सितारों से सम्मानित हो चुका था और किसी भी विषय पर अपने व्यक्तिगत विचार प्रकट करना तो उसे जरा भी अच्छा नहीं लगता था। वह ईमानदार भी था यानी उसे खास बेईमानी का कोई काम नहीं करना पड़ा था वह छड़ा था क्योंकि स्वार्थी था बुद्धू नहीं था किन्तु अपनी अक्ल का प्रदर्शन करना भी उसे पसन्द नहीं था। सबसे अधिक तो वह अव्यवस्था और उत्साह से घृणा करता था जिसे नैतिक गड़बड़ मानता था और अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में एक तरह के मधुर और आलसभरे आराम तथा स्थायी एकाकीपन का आदी हो गया था। वह खुद तो कभी-कभी अपने से बेहतर हैसियतवाले लोगों के यहां मेहमान के तौर पर जाता था किन्तु जवानी के दिनों में ही उसे अपने यहां मेहमानों को आमन्त्रित करना पसन्द नहीं था और पिछले कुछ समय से तो ऐसा हाल था कि अगर वह ताश का ग्रेड पेशस का खेल न खेलता होता तो खाने के कमरे की दीवाल-घड़ी की संगत में ही बड़े इतमीनान से अपनी शामें बिताता। वह आराम-कुर्सी पर ऊंघता हुआ और अंगीठी पर रखी शीशे के ढक्कन के नीचे टिक-टिक करती इस घड़ी की आवाज़ सुनता रहता। दाढ़ी-मूंछ के बिना उसकी शक्ल-सूरत काफी प्रभावपूर्ण थी, वह अपनी उम्र से छोटा लगता था, उसने अपने को खूब सहेजा था, यह आशा पैदा करता था कि अभी काफी अरसे तक जिन्दा रहेगा और उसके आचार-व्यवहार में बड़ी शालीनता थी। उसकी नौकरी खासी आराम की थी, वह कुछ बैठकों में हिस्सा लेता था और किन्हीं दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करता था। थोड़े में यह कि उसे बहुत ही बढ़िया आदमी माना जाता था। उसे एक ही बात की धुन थी या यह कहना बेहतर होगा कि उसके मन में एक ही प्रबल इच्छा थी। वह यह कि उसका अपना मकान हो यानी रईसी ढंग का मकान, कोई बड़ी हवेली नहीं। आखिर उसकी यह इच्छा पूरी हो गयी। काफी ढूंढ-तलाश के बाद उसने पीटर्सबर्ग

स्मोरोना पर एक मकान खरीद लिया। यह सही है कि मकान कुछ दूर था, किन्तु उपवन सहित और बहुत सलोना भी। नये मकान-मालिक का ख्याल था कि इसका दूर होना अच्छा ही है। अपने यहां मेहमान आमन्त्रित करना उसे पसन्द नहीं था और खुद किसी के यहां या काम पर जाने के लिये उसके पास दो सीटोंवाली चाकलेट रंग की बग्घी थी, मिखेई नाम का कोचवान था और छोटे-छोटे, किन्तु मजबूत तथा सुन्दर घोड़ों की जोड़ी थी। यह खुशहाली चालीस साल तक की मन से बचत करने का ही सुफल थी और इस सब से इसके दिल को बहुत खुशी मिलती थी। चुनांचे नया मकान खरीदने और उसमें बस जाने के बाद स्तेपान निकीफोरोविच ने अपने शान्त दिल में ऐसी प्रसन्नता अनुभव की कि जन्मदिन पर, जिसे पहले वह घनिष्ठतम मित्रों से भी छिपाता था, मेहमान आमन्त्रित कर लिये। इन दो मेहमानों में से एक के बारे में उसके मन में एक विशेष विचार भी था। वह खुद तो ऊपर-वाली मंजिल पर रहता था, मगर नीचेवाली मंजिल के लिये जो बिल्कुल ऊपर की मंजिल जैसी थी, उसे किरायेदार की जरूरत थी। स्तेपान निकीफोरोविच को उम्मीद थी कि सेम्योन इवानोविच सिप्रोवा इसके लिये राजी हो जायेगा और इस कारण उसने इस शाम को दो बार खुद ही इस विषय की चर्चा भी चलायी थी। किन्तु सेम्योन इवानोविच इस मामले में चुप्पी साधे रहा। वह भी ऐसा आदमी था जिसने सब्र से और बहुत परिश्रम से अपने जीवन का रास्ता बनाया था। काले बालों और गलमुच्छोंवाले इस व्यक्ति के चेहरे पर स्थायी पीलापन की झलक-सी बनी रहती थी। वह विवाहित था, गुमसुम रहनेवाला घर-घुस्सू था, सब घरवालों पर अपना आतंक बनाये रहता था, बड़े आत्मविश्वास से नौकरी करता था। अच्छी तरह से यह जानता था कि वह किस ओर [illegible]

[illegible]

स्वभाव से लिये मन ही मन उसकी भर्त्सना करता था। इवान इल्यीच खुद भी कभी-कभी यह महसूस करता था कि उसमें बहुत अधिक आत्माभिमान है, यहां तक कि वह तुनुकमिजाज भी है। अजीब बात है कि कभी-कभी उसकी आत्मा उसे कचोटने लगती और उसे किसी चीज का हल्का-हल्का पश्चात्ताप भी होने लगता। भारी मन से और दिल में गुप्त फाम की चुभन-सी अनुभव करते हुए वह यह स्वीकार करता कि जितनी समझता है, वास्तव में उतनी ऊंची उडान नहीं भर रहा है। ऐसे क्षणों में उस पर उदासी-सी हावी हो जाती, खास तौर पर उस वक्त जब बवासीर भी उसे परेशान करती होती, वह अपने जीवन को une existence manquée* कहता, मन ही मन अपनी मसदीय योग्यता में भी उसका यकीन न रहता, अपने को बातूनी और केवल सुन्दर वाक्य गढनेवाला कहता। जाहिर है कि उसके ऐसा करने से वह लोगों की नजरों में ऊपर उठ जाता, किन्तु इससे इस बात में कोई बाधा न पडती कि आध घण्टे बाद वह पहले से अधिक दृढता के साथ अपना सिर ऊपर उठाता, बडे घमण्ड से अपनी हिम्मत बढाता, खुद को यह यकीन दिलाता कि अभी तो वह अपने रंग दिखायेगा और न केवल ऊंचा सरकारी पदाधिकारी ही, बल्कि राजनयिक भी बनेगा जिसे रूस बहुत अरसे तक याद रखेगा। कभी-कभी तो वह अपना स्मारक बनाये जाने के भी सपने देखता। इससे स्पष्ट है कि इवान इल्यीच ऊंची उडानें भरता था; यद्यपि अपने दिल की गहराई में, कुछ भय तक अनुभव करते हुए अपने अनिश्चित सपनों और आशाओं को छिपाये रहता था। सक्षेप में यह कि वह दयालु व्यक्ति, यहां तक कि मन से कवि भी था। पिछले कुछ वर्षों में हताशा के व्यथापूर्ण क्षण उसे कहीं अधिक परेशान करने लगे थे। वह बहुत चिडचिडा और शक्की हो गया तथा हर प्रकार की आपत्ति को अपना अपमान मानने लगा था। किन्तु नवजीवन ग्रहण करता हुआ रूस सहसा उसे बड़ी आशायें बंधवाने लगा। उसके जनरल बन जाने से उनकी पुष्टि हुई। उसकी हिम्मत बढी, उसने सिर ऊंचा किया। वह अचानक बडे सुन्दर ढंग से और बहुत बातें करने लगा, नवीनतम विषयों की चर्चा चलाने लगा

* व्यर्थ जीवन। (फ्रांसीसी)

की कोशिश की है, वह मेरे पल्ले कुछ भी नही पडा। आप मानवीयता की बात कर रहे हैं। क्या इससे आपका अभिप्राय मानव-प्रेम है?"

"हा, शायद, मानव-प्रेम ही। मैं. "

"कुछ कहने की अनुमति चाहता हू। जहा तक मैं समझता हू बात सिर्फ इतनी ही नही है। मानव-प्रेम तो हमेशा ही रहा है। किन्तु हमारे यहा किये जानेवाले सुधार इसी तक सीमित नही हैं। किसानो, कानून-कायदो आर्थिक तथा नैतिक मामलो के सवाल हमारे सामने आ गये हैं और और अन्य बहुत-से मसले उठ खडे हुए हैं। ये सभी एकसाथ और एकबारगी सामने आने पर बहुत बडी मुश्किलें पैदा कर सकते हैं। हमे इसकी चिन्ता है, केवल मानवीयता की नही "

"जी, मामला कही अधिक गहरा है," सेम्योन इवानोविच ने राय जाहिर की।

"बहुत अच्छी तरह से यह समझता हू और, सेम्योन इवानोविच मुझे यह कहने की इजाजत दे कि इन चीजो की गहराई मे समझने के मामले मे आपसे किसी तरह भी पीछे नही रहूगा," इवान इल्यीच ने व्यग्यपूर्वक और बडी कठोरता से जवाब दिया। "फिर भी मैं यह कहने की जुर्रत करूगा, स्तेपान निकीफोरोविच कि आप भी मुझे अच्छी तरह से नही समझ पाये है।"

"हा, नही समझा हू।"

"लेकिन मैं ऐसा विचार रखता और हर जगह उसका प्रचार करता हू कि मानवीयता खास तौर पर मातहतो के प्रति मानवीयता, कर्मचारी से मुशी, मुशी से नौकर, नौकर से गवार आदमी तक मानवीयता ही मेरे मतानुसार भावी सुधारो और सामान्य रूप से सभी चीजो के नये रूप का मानो आधार-स्तम्भ बन सकती है। भला क्यो? क्योंकि ऐसा ही है। इस तथ्य को सोचिये – मैं मानवीय हू इसलिये मुझे प्यार किया जाता है। मुझे प्यार किया जाता है, इसका मतलब है कि मुझ पर भरोसा किया जाता है। मेरे प्रति भरोसे की भावना अनुभव करने का अर्थ है कि मुझ पर यकीन किया जाता है यकीन करने का मतलब है मुझसे प्यार किया जाता है मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर कोई यकीन करता है तो सुधार पर भी यकीन करता [illegible] [illegible]

दृष्टि से एक-दूसरे को गले लगायेंगे और सारी चीज़ों को मैत्रीपूर्ण ढंग तथा आधारभूत रूप से हल कर लेंगे। आप हंस किसलिये रहे हैं, सेम्योन इवानोविच? क्या मेरी बात समझ में नहीं आई?"

स्तेपान निकीफ़ोरोविच ने कुछ कहे बिना अपनी भौंहें ऊपर चढ़ायीं। उसे हैरानी हो रही थी।

'मुझे लगता है कि मैंने कुछ थोड़ी ज़्यादा पी ली है," सेम्योन इवानोविच ने व्यंग्य-बाण छोड़ा, "और इसीलिये बात मेरे पल्ले नहीं पड़ रही है। दिमाग़ कुछ धुंधला-सा गया है।"

इवान इल्यीच को बहुत बुरा लगा।

"हम यह निभा नहीं सकेंगे," स्तेपान निकीफ़ोरोविच ने कुछ देर सोचने के बाद अचानक कहा।

"क्या मतलब है कि निभा नहीं सकेंगे?" इवान इल्यीच ने स्तेपान निकीफ़ोरोविच के इस अप्रत्याशित और अधूरे कथन से हैरान होते हुए पूछा।

'बस, नहीं निभा सकेंगे," स्तेपान निकीफ़ोरोविच स्पष्टतः अपने कथन की विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं करना चाहता था।

"आप नयी शराब और पुरानी बोतलों की तरफ़ तो इशारा नहीं कर रहे हैं?" इवान इल्यीच ने तनिक व्यंग्यपूर्वक आपत्ति की। अजी नहीं, ख़ुद अपने लिये तो मैं जवाबदेह हूं।"

इसी वक्त घड़ी ने साढ़े ग्यारह बजा दिये।

'लगता है कि अब हमें चलना चाहिये," सेम्योन इवानोविच ने अपनी जगह से उठने के लिये तैयार होते हुए कहा। लेकिन इवान इल्यीच उससे पहले ही उठ खड़ा हुआ और उसने अंगीठी की कारनिस पर रखी हुई मेबल फर की अपनी टोपी उठा ली। वह कुछ नाराज़-सा प्रतीत हो रहा था।

"तो सेम्योन इवानोविच, आप विचार करेंगे न?" मेहमानों को विदा करते हुए स्तेपान निकीफ़ोरोविच ने पूछा।

"आपका मतलब फ़्लैट के बारे में? जी, विचार करूंगा, विचार करूंगा।"

"और जो फ़ैसला करें, उसके बारे में मुझे जल्दी से सूचित कर दीजियेगा।"

"कामकाजी बात ही हो रही है?" श्रीमान प्रालीन्स्की ने कुछ

गुप्तामदी ढंग तथा अपनी टोपी में गिनवाड करते हुए अनुग्रहपूर्वक कहा। उसे लगा मानो उसकी अवहेलना की जा रही है।

स्तेपान निकीफ़ोरोविच ने अपनी भौंहें चढ़ायी और यह ज़ाहिर करते हुए चुप रहा कि मेहमानों को रोकना नहीं चाहता। सेम्योन इवानोविच ने जल्दी से विदा ले ली।

"यदि साधारण शिष्टता को भी नहीं समझते, तो तो जैसा चाहे, करें" श्रीमान प्रालीन्स्की ने मन ही मन सोचा और विदा लेने के लिये विशेष स्वावलम्बिता से स्तेपान निकीफ़ोरोविच की ओर हाथ बढ़ाया।

ड्योढ़ी में आकर इवान इल्यीच ने अपना हल्का और काफ़ी महंगा फर-कोट पहन लिया और न जाने किस कारण से उसने यह ज़ाहिर करने की भी कोशिश की कि वह सेम्योन इवानोविच के रिकून के पुराने फर-कोट की ओर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा है। दोनों ज़ीने से नीचे उतरने लगे।

"हमारे ये बड़े मियां कुछ नाराज़-से हो गये लगते हैं," इवान इल्यीच ने ख़ामोश सेम्योन इवानोविच से कहा।

"नहीं तो, किस कारण?" सेम्योन इवानोविच ने शान्ति और रुखाई से जवाब दिया।

"कठपुतली!" इवान इल्यीच ने मन ही मन सोचा।

वे दोनों ओसारे में आये। सेम्योन इवानोविच की स्लेज, जिसमें भूरा, भद्दा-सा घोड़ा जुता हुआ था, उसके सामने आ गयी।

"बेड़ा ग़र्क़! त्रीफ़ोन मेरी बग्घी को कहां ले गया!" अपनी घोड़ा-गाड़ी को दरवाज़े पर न पाकर इवान इल्यीच चिल्ला उठा।

उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई – बग्घी कहीं नज़र न आयी। स्तेपान निकीफ़ोरोविच के दरबान को बग्घी के बारे में कुछ भी मालूम नहीं था। सेम्योन इवानोविच के कोचवान वरलाम से पूछा गया। उसने जवाब दिया कि इवान इल्यीच का कोचवान सारे वक्त यहीं था, बग्घी भी यहीं थी और अब नहीं है।

"बड़ी अटपटी बात है!" श्रीमान शिपुलेंको ने कहा, "आप अगर चाहें तो मेरे साथ चल सकते हैं।"

"ये कमीने नौकर!" श्रीमान प्रालीन्स्की गुस्से से बौखलाकर चिल्ला ।। "बदमाश ने मुझसे यहां पीटर्सबर्ग स्तोरोना में ही अपनी किसी

भी नही थी, बडी शान्ति थी। आकाश निर्मल था, सितारे झिलमिला रहे थे। धरती पूनम के चाद की हल्की-हल्की रुपहली चादनी मे नहायी हुई थी। इतना अच्छा वातावरण था कि कोई पचासेक कदम चलने के बाद इवान इल्यीच अपनी मुसीबत के बारे मे लगभग भूल गया। उसे तो विशेष रूप से बहुत अच्छा लग रहा था। इसके अलावा हल्के नशे मे होने पर आदमी का मूड भी बहुत जल्दी-जल्दी बदलता रहता है। उसे तो अब सुनसान सडक के दोनो ओर बने हुए लकडी के भद्दे-भद्दे मकान भी अच्छे लग रहे थे।

"कितनी अच्छी बात है कि मैं पैदल घर जा रहा हू," उसने मन ही मन सोचा। "त्रीफोन को सबक मिल जायेगा और मुझे खुशी हासिल हो रही है। सच, ज्यादा अक्सर पैदल चलना चाहिये। कोई बात नही, बोल्शोई प्रोस्पेक्ट मे तो मुझे किराये की घोडा-गाडी मिल ही जायेगी। कितनी प्यारी रात है! कितने प्यारे-प्यारे है सभी मकान। शायद यहा छोटे लोग, क्लर्क-किरानी रहते है शायद व्यापारी और यह स्तेपान निकीफोरोविच! कितने प्रतिगामी है ये बूढे-खूसट! हा, हा बूढे खूसट c'est le mot.* वैसे वह आदमी समझदार है, उसमे bon sense** है, मामलो की गम्भीर, व्यावहारिक समझ रखता है। लेकिन बूढे तो बूढे ठहरे! उनमे वह नही है क्या कहते है उसे! हा कुछ तो नही है हम निभा नही सकेगे! क्या कहना चाहता था वह इन शब्दो के रूप मे? इन्हे कहते के वक्त तो वह सोच मे भी पड गया था। वैसे मेरी बात वह बिल्कुल नही समझा। लेकिन उसे समझने मे मुश्किल ही क्या थी? समझाने के मुकाबले मे उसे न समझ पाना मुश्किल था। मुख्य चीज तो यह है कि मुझे अपनी बात का पूर्ण विश्वास है, सच्चे दिल से विश्वास है। मानवीयता मानव प्रेम। मानव को इसकी चेतना करवाना उसे उसकी प्रतिष्ठा लौटाना और [illegible] सामग्री से आगे बढा जाये। लगता है कि बात बिल्कुल साफ है! जी हुजूर, साफ है! श्रीमान महामहिम यह [illegible] [illegible] लो कि [illegible] क्लर्क, किसी गरीब भूखे-किसी क्लर्क से [illegible] [illegible] है। 'तुम कौन हो?' वह जवाब देता है – 'क्लर्क।' [illegible]

---

* [illegible] (फ्रांसीसी)

** [illegible] (फ्रांसीसी)

बात है, क्लर्क; आगे हम पूछते हैं—'कौन-से क्लर्क हो तुम?' जवाब मिलता है—फलां, फलां क्लर्क। 'काम कर रहे हो न?'—'जी, कर रहा हूं।'—'सौभाग्यशाली होना चाहते हो?'—'जी, चाहता हूं।—'सुख-सौभाग्य के लिये क्या चाहिये?' यह चाहिये, वह चाहिये। 'क्यों?' क्योंकि और यह आदमी दो शब्दों में ही मुझे समझ जाता है—वह मेरा हो गया, एक तरह से जाल में फांस लिया गया मैं उसके साथ जो भी चाहूं, कर सकता हूं, उसी की भलाई के लिये। बड़ा अटपटा आदमी है यह सेम्योन इवानोविच! कैसा अटपटा तोबड़ा है उसका पुलिस-चौकी पर पिटवाया जाये—यह तो उसने जान-बूझकर मुझे चिढ़ाने को कहा था।—नहीं यह तुम्हारी बकवास है तुम करवाओ पिटाई, मैं तो ऐसा करूंगा नहीं। मैं तो श्रीफोन को शब्दों से शर्मिन्दा करूंगा, भला-बुरा कहकर लज्जित करूंगा और वह अपना कुसूर महसूस करेगा। रही डंडे की बात, हुम यह बात अभी तय नहीं हुई हुम अगर एभरान के यहां चला जाये तो कैसा रहे! छि यह कमबख्त लकड़ी की पटरी!'" अचानक ठोकर खाने पर वह चिल्ला उठा—"और यह राजधानी का हाल है! यह इसका सांस्कृतिक स्तर है! पांव तोड़ा जा सकता है। जी हां! यह सेम्योन इवानोविच तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाता, बड़ा ही घृणित तोबड़ा है उसका। जब मैंने यह कहा था कि नैतिक दृष्टि से वे एक-दूसरे को गले लगायेंगे तो वही खी-खी करके मुझ पर हंसा था। लगायेंगे वे गले तुम्हें इससे क्या लेना-देना है? तुम्हें तो हरगिज़ गले नहीं लगाऊंगा, किसी गवार को तरजीह दूंगा कोई गवार मिल जायेगा तो उससे बातें करूंगा। वैसे मैं नशे में था और शायद मैंने अपने को ढंग से व्यक्त नहीं किया। शायद अब भी मैं अच्छी तरह से अपने को व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं हुम, मैं अब कभी नहीं पीऊंगा। रात को आदमी बोलता रहता है और सुबह उसे अफसोस होने लगता है। फिर भी मैं लड़खड़ा तो नहीं रहा हूं, चलता जा रहा हूं वैसे वे सभी बदमाश हैं!"

इवान इल्यीच पटरी पर चलते हुए कुछ इस तरह असम्बद्ध और क्रमहीन ढंग से तर्क-वितर्क कर रहा था। ताज़ा हवा ने अपना असर दिखाया और उसका नशा कुछ हद तक उतर गया। पांच मिनट बाद वह पूरी तरह शान्त हो जाता और सोना चाहता। लेकिन बोल्शोई प्रोस्पेक्ट से कुछ ही इधर उसे अचानक संगीत सुनाई दिया। उसने

इधर-उधर नज़र दौड़ाई। सड़क के दूसरी ओर, बहुत ही आलीशान दो-मंजिले, किन्तु मकड़ी के अत्यधिक लम्बे मकान में ज़ोरदार दावत हो रही थी, वायोलिनें गूंज रही थीं, डबल बास बज रहा था और तीखी आवाज़ में बांसुरी क्वाड्रिल नाच की धुन बजा रही थी। खिड़कियों के नीचे लोग जमा थे जिनमें अधिकतर औरतें थीं—रूईदार जाकेटें पहने और सिरों पर दुपट्टे ओढ़े। ये सभी लोग झिलमिलियों की झिर्रियों में से भीतर की, बेशक थोड़ी-सी, झलक पाने की कोशिश कर रहे थे। ज़ाहिर था कि वहां खूब हर्ष-उल्लास का रंग जमा हुआ था। नाचने-वालों के पैरों की धमक सड़क के दूसरी ओर सुनाई दे रही थी। अपने निकट ही एक पुलिसमैन को देखकर इवान इल्यीच उसके पास गया।

"यह किसका घर है भैया?" उसने अपने कीमती फ़र-कोट को थोड़ा-सा ऐसे खोल लिया था कि पुलिसमैन उसके महत्त्वपूर्ण पद-चिह्न को देख ले।

"क्लर्क प्सेल्दोनीमोव का, वह रजिस्ट्री का काम करते हैं," पुलिसमैन ने पलक झपकते में पद-चिह्न को देखकर सावधान होते हुए जवाब दिया।

"प्सेल्दोनीमोव का? अरे! प्सेल्दोनीमोव का! क्या उसकी शादी हो रही है?"

"जी हुज़ूर, टिट्यूलर कौंसिलर की बेटी से शादी हो रही है उनकी—टिट्यूलर कौंसिलर म्लेकोपितायेव की बेटी से. वह नगरपालिका में काम करते रहे हैं। यह मकान अब दुलहन को दहेज में मिल रहा है।"

"तो अब यह प्सेल्दोनीमोव का हो गया, म्लेकोपितायेव का नहीं रहा?"

"जी हुज़ूर, प्सेल्दोनीमोव का। म्लेकोपितायेव का था, मगर अब प्सेल्दोनीमोव का है।"

"हुम। भैया, मैं इसलिये तुमसे यह पूछ रहा हूं क्योंकि मैं उसका अफ़सर हूं। मैं उसी विभाग का जनरल हूं जहां प्सेल्दोनीमोव काम करता है।"

"बिल्कुल सही फ़रमाया, हुज़ूर।" पुलिसमैन पूरी तरह से तनकर खड़ा हो गया और इवान इल्यीच मानो सोच में डूब गया। वह वहीं खड़ा हुआ कुछ सोच रहा था...

उसे याद आ रहा था कि प्सेल्दोनीमोव सचमुच उसी के विभाग,

उसी के कार्यालय में काम करता था। वह कोई दस रूबल मासिक वेतन पानेवाला बहुत मामूली-सा क्लर्क था। चूंकि श्रीमान प्रालीन्स्की कुछ ही समय पहले इस विभाग का अध्यक्ष नियुक्त हुआ था, इसलिये अपने अधीन काम करनेवाले सभी लोगों को अच्छी तरह से याद रखना उसके लिये सम्भव नहीं था। किन्तु प्सेल्दोनीमोव अजीब-सा कुलनाम था और इसलिये वह उसे याद रह गया था। इस कुलनाम की ओर उसका पहली बार ही ध्यान आकर्षित हुआ था और तभी उसने ऐसे कुलनाम वाले व्यक्ति को बड़ी जिज्ञासा से देखा था। अब उसे याद आ रहा था कि यह लम्बी, हुकदार नाक, सन के गुच्छों जैसे बालोंवाला, दुबला-पतला और मरियल नौजवान था। वह बहुत ही बुरी वर्दी पहने रहता था और उसका पतलून तो अशिष्टता की हद तक बेहूदा था। उसे याद आया कि कैसे उसके दिमाग में तभी यह ख्याल आया था कि इस बेचारे को त्योहार के मौके पर दस रूबल इनाम में क्यों न दे दे ताकि उसकी हालत कुछ ठीक हो सके। लेकिन चूंकि इस बेचारे का चेहरा बहुत ही मनहूस था और उस पर झलकनेवाले भाव घृणा पैदा करते थे, इसलिये इनाम देने का नेक ख्याल अपने आप ही दिमाग से निकल गया और प्सेल्दोनीमोव इनाम के बिना ही रह गया। एक हफ्ता पहले इसी प्सेल्दोनीमोव ने उसे शादी की अनुमति के अनुरोधपत्र से और भी अधिक आश्चर्यचकित कर दिया था। इवान इल्यीच को स्मरण था कि उसके पास शादी के मामले की तफसीलों में जाने का वक्त नहीं था और इसलिये वह तुरत-फुरत तथा सतही तौर पर तय कर दिया गया था। फिर भी उसे यह तो अच्छी तरह से याद था कि प्सेल्दोनीमोव को अपनी बीवी के साथ लकड़ी का मकान और चार सौ रूबल नक़द मिलेंगे। इस बात से उसे खासी हैरानी हुई थी। उसे स्मरण था कि प्से-ल्दोनीमोव और म्लेकोपितायेवा, इन दो अजीब-से कुलनामों के मेल पर उसने हल्का-सा व्यंग्यात्मक मजाक भी किया था। उसे यह सब कुछ बहुत अच्छी तरह से याद था।

यह सब याद करते हुए इवान इल्यीच अधिकाधिक सोच में डूबता जाता था। यह तो सर्वविदित है कि हमारे दिमाग में बहुत-से विचार किन्हीं अनुभूतियों के रूप में आन की आन में आते हैं और उन्हें साहि-त्यिक भाषा की बात तो दूर, साधारण मानवीय भाषा में भी व्यक्त नहीं किया जा सकता। किन्तु हम अपने नायक की इन अनुभूतियों

को, अधिक नही तो उनके सार को यानी उनमे जो सबसे अधिक महत्व-पूर्ण और सारगर्भित है, अपने पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेगे। कारण कि हमारी अनेक अनुभूतियों को साधारण भाषा मे व्यक्त करने पर वे सारहीन-सी प्रतीत होती हैं। इसीलिये वे कभी प्रकाश मे नही आती, यद्यपि सभी उन्हे अनुभव करते हैं। स्पष्ट है कि इवान इल्यीच की अनुभूतिया और विचार कुछ असम्बद्ध थे। किन्तु इसका कारण तो आपको मालूम ही है।

"हा तो!" उसके मस्तिष्क मे यह विचार आया, "हम सब बातें करते हैं, बाते करते रहते हैं, लेकिन जब कुछ करने-कराने का वक्त आता है तो नतीजा खाक भी नही निकलता। मिसाल के तौर पर इसी प्सेल्दोनीमोव को लिया जा सकता है—वह अभी-अभी शादी करके घर लौटा है, उसके मन मे बडी विह्वलता है, वह सुहाग रात की राह देख रहा है उसके जीवन का यह एक सबसे ज्यादा खुशी का दिन है इस वक्त वह मेहमाननेवाजी मे व्यस्त है, दावत कर रहा है—मामूली-सी, ठाट-बाट के बिना, किन्तु बडी उल्लासपूर्ण, खुशी से उमगती हुई और सच्चे दिल से हा, अगर उसे यह पता चल जाता कि इसी वक्त, मैं, मैं, उसका अफसर, उसका सबसे बडा अफसर उसके घर के पास खडा हुआ उसकी शादी का सगीत सुन रहा हू, तो! सच मुच यह मालूम होने पर उसके साथ क्या बीतती? या फिर यदि मैं अचानक भीतर चला जाता तो क्या हाल होता उसका? हुम जाहिर है कि शुरू मे तो वह डर जाता, सकते मे आ जाता। मैंने उसके रग को भग कर दिया होता, सब कुछ गडबड कर डाला होता। लेकिन अगर मैं नही कोई भी दूसरा जनरल भीतर चला जाता, तो भी बिल्कुल यही हुआ होता यही तो बात है कि कोई भी दूसरा जनरल लेकिन मैं नहीं

"हा, स्तेपान निकीफोरोविच! आप मेरी बात नहीं समझ पाये, लेकिन यह रही बढ़िया मिसाल आपके सामने।

"जी हा, हम सभी मानवीयता का राग अलापते हैं, किन्तु किसी का कोई [illegible], कोई ठोस-कुछ करने मे हम सब असमर्थ हैं।

"किस तरह का ठोस-कुछ? इस तरह का। आप [illegible] [illegible]—समाज के सभी सदस्यों के वर्तमान सम्बन्धों के बारे मे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], एक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"हुम   तो मैं क्या सोच रहा था? अरे हा!

"जाहिर है कि वे मुझे सबसे महत्त्वपूर्ण अतिथि, किसी दिव्युता कौंसिलर या किसी रिश्तेदार, लाल नाकवाले कप्तान की बगल मे बिठायेंगे   गोगोल ने ऐसे पात्रों का बहुत ही बढ़िया वर्णन किया है। स्पष्ट है कि वहा दुल्हन से मेरा परिचय करवाया जायेगा, मैं उसकी प्रशसा करूगा, मेहमानो की हिम्मत बढ़ाऊगा। उनसे अनुरोध करूगा कि वे शर्मायें नही, अपनी मौज, नाच-रग जारी रखे, चुटकिया लूगा, हसी-मजाक करूगा, थोड़े मे यह कि मैं उन्हे कृपालु और बहुत मधुर लगूगा। जब मैं अपने से खुश होता हू तो हमेशा कृपालु और मधुर होता हू-हुम   लेकिन अभी, अभी तो लगता है कि मैं नशे मे धुत्त नहीं हू, जरा-जरा नशे मे

"जाहिर है कि एक सज्जन व्यक्ति के नाते मैं उन सबके साथ बराबरी का बर्ताव करूगा, अपने लिये कोई खास ध्यान की माग नही करूंगा. किन्तु नैतिक दृष्टि से, नैतिकता के विचार से यह दूसरी बात है। वे यह समझ जायेगे और इसका मूल्याकन करेगे. मेरी इस कार्रवाई से उनके सभी सद्गुण जागृत हो उठेगे. तो मैं कोई आध घण्टा बैठा रहूंगा.. शायद एक घण्टा भी। जाहिर है कि भोजन से ठीक पहले मैं वहा से चल दूगा। वे बेचारे तो खूब दौड-धूप करेंगे तरह-तरह के पकवान बनायेगे, तलेगे, बहुत झुक-झुककर मुझसे रुकने का अनुरोध करेगे, लेकिन मैं तो केवल एक जाम पी लूगा, बधाई दूगा, मगर भोजन से इन्कार कर दूगा। कहूंगा – बड़े काम हैं। और जैसे ही मैं यह कहूगा, सभी के चेहरो पर श्रद्धापूर्ण गम्भीरता छा जायेगी। इस तरह मैं बड़ी नज़ाकत से उन्हे यह याद दिला दूगा कि मेरे और उनके बीच जमीन-आसमान का फर्क है। यह नही कि मैं उन्हें इसकी चेतना करवाना चाहूगा, फिर भी ऐसा जरूरी है   बेशक कुछ भी कहो, नैतिक दृष्टि से भी यह जरूरी है। वैसे मे उसी क्षण मुस्करा दूंगा, शायद हस भी दूगा और क्षण भर मे सभी खिल उठेगे दुल्हन से एकबार फिर मज़ाक करूगा; हुम   यहा तक कि यह इशारा भी कर दूगा कि ठीक नौ महीने के बाद धर्म-पिता की हैसियत से फिर यहा आऊगा, हा, हा! इस वक्त तक वह अवश्य ही बच्चा जन देगी। ये लोग तो खरगोशो की तरह जल्दी-जल्दी बच्चे जनते हैं। सभी ठहाकर हस देंगे, दुल्हन सकपका जायेगी। मैं सच्चे दिल से उसका माथा

पांगेविच और सेम्योन इवानोविच के आत्म-तुष्ट चेहरे उसकी कल्पना में उभर आये।

"हम यह निभा नहीं सकेंगे!" स्तेपान निकीफ़ोरोविच ने धनक में मुस्कराते हुए कहा था।

"खी-खी-खी!" अपनी ज़हरीली मुस्कान के साथ सेम्योन इवानोविच ने उसकी हां में हां मिलायी थी।

"देखेंगे कि कैसे नहीं निभा सकेंगे!" इवान इल्यीच ने दृढ़ता से कहा और उसका चेहरा तक तमतमा उठा। वह पटरी से उतरा और दृढ़ता से डग भरता हुआ सड़क लांघकर अपने मातहत, रजिस्ट्री क्लर्क प्सेल्दोनीमोव के घर की तरफ़ चल दिया।

इवान इल्यीच के दुर्भाग्य का सितारा उसे वहां खींच ले गया। उसने बड़ी दिलेरी से खुले हुए चक्र-द्वार को पार किया और झबरी तथा खरखरी आवाज़वाले छोटे से कुत्ते को तिरस्कारपूर्वक ठोकर मारकर दूर हटा दिया जो वास्तव में नहीं, बल्कि दिखावे भर के लिये फटी सी आवाज़ में भौंकता हुआ उसके पांव पर झपटा था। तख्तों के रास्ते पर चलता हुआ वह एक बंद ओसारे तक पहुंचा जो अहाते में थोड़ा बढ़ा हुआ था, और लकड़ी की टूटी हुई तीन सीढ़ियां चढ़कर छोटे-से प्रवेश कक्ष में दाखिल हुआ। यहां कोने में बेशक कोई मोमबत्ती जल रही थी या इसी तरह की कोई दूसरी रोशनी थी लेकिन इसके बावजूद इवान इल्यीच ने गलोश समेत अपना बाया पांव मांस की जेली में धंसा दिया जो वहां ठंडी होने के लिये रखी हुई थी। इवान इल्यीच झुका और उसने जिज्ञासा से यह देखा कि वहां इसी तरह की जेलीवाली दो और तश्तरियां भी थीं और सांचे भी थे जिनमें शायद ब्लमजे* था। मांस की जेली के खराब होने से वह परेशान हो उठा और क्षण भर को उसके दिमाग़ में यह ख्याल आया कि क्या उसके लिये इसी वक्त यहां से खिसक जाना ठीक नहीं होगा? किन्तु उसे ऐसा करना बहुत घटिया प्रतीत हुआ। यह तर्क करते हुए कि उसे किसी ने देखा नहीं और उसके बारे में कोई भी ऐसा सोचने की हिम्मत नहीं

* एक प्रकार का बादामी पुडिंग। – अनु०

अनुभव हो रहा था — मानो फर्श पर मोम रगड़ा गया था। इसके बाद कमरों में [illegible] मोम [illegible] थे।

एक मिनट बाद [illegible] नाच ख़त्म हो गया और लगभग उसी समय वह हुआ जिसकी इवान इल्यीच ने पटरी पर चलते हुए कल्पना की थी। मेहमानों और नाचनेवालों के बीच, जिन्होंने अभी दम नहीं लिया था और चेहरे का पसीना भी नहीं पोंछा था, धीमी-धीमी आवाज़ और खुसर-फुसर होने लगी। सभी की नज़रें बड़ी तेज़ी से इस नये मेहमान की तरफ़ घूमने लगीं। इसके बाद सभी धीरे-धीरे पीछे हटने लगे। जिन लोगों का ध्यान इसकी तरफ़ नहीं गया था, उनके कपड़ों के छोर को खींचकर उन्हें सावधान किया गया। उन्होंने इधर-उधर देखा और दूसरों के साथ वे भी उसी क्षण पीछे हटने लगे। इवान इल्यीच अभी भी दरवाज़े के पास खड़ा था, एक भी क़दम आगे नहीं बढ़ा था और उसके तथा मेहमानों के बीच अधिकाधिक जगह ख़ाली होती जाती थी, जहां फ़र्श पर टाफ़ियों के लिफ़ाफ़े और दूसरे काग़ज़ और सिगरेटों के टुकड़े पड़े हुए थे। अचानक इस ख़ाली जगह में फ्रॉक-कोट पहने, अस्त-व्यस्त सुनहरे बालों तथा हुकदार नाकवाला एक सहमा-सा नौजवान आगे आया। वह कंधे झुकाये और इस अप्रत्याशित मेहमान की तरफ़ ऐसे देखते हुए आगे बढ़ रहा था जैसे कुत्ता अपने मालिक को उस वक़्त देखता है जब उसे दुतकारने के लिये पास बुलाया जाता है।

"नमस्ते प्सेल्दोनीमोव, पहचाना मुझे?" इवान इल्यीच ने कहा और उसी क्षण यह अनुभव किया कि उसने बड़ी बेतुकी बात कही है। उसने यह भी महसूस किया कि शायद इस समय वह बहुत ही बड़ी बेवकूफ़ी कर रहा है।

"हु... हुज़ूर आप!..." प्सेल्दोनीमोव बुदबुदाया।

"अरे हां। भैया, जैसा कि तुम ख़ुद समझते हो मैं तो तुम्हारे यहां बिल्कुल संयोग से ही आ गया हूं..."

लेकिन प्सेल्दोनीमोव स्पष्टतः कुछ भी समझने में असमर्थ था। वह तो एकदम हक्का-बक्का रह गया था और आंखें फाड़-फाड़कर देखता हुआ बुत बना खड़ा था।

"मैं आशा करता हूं कि तुम मुझे अपने यहां से निकाल नहीं दोगे तुम चाहो या न चाहो, लेकिन मेहमान तो मुझे मानना ही पड़ेगा!" इवान इल्यीच घबराहट के कारण बेहद दुर्बलता महसूस करते हुए

बढ़ता गया। उसने मुस्कराना चाहा, किन्तु वह ऐसा करने में असमर्थ था और स्तेपान निकीफ़ोरोविच तथा सेमयोन का मज़ाकिया किस्सा सुनाना तो उसके लिये अधिकाधिक असम्भव होता जा रहा था। बदकिस्मती से प्सेल्दोनीमोव अभी तक सकते की हालत से उभरा नहीं था और मूर्ख की तरह बहकी-बहकी नज़र से देखता जा रहा था। इवान इल्यीच को बेहद परेशानी हो रही थी, वह अनुभव कर रहा था कि अगर एक और मिनट तक यही हाल रहा तो स्थिति बिल्कुल गड़बड़ हो जायेगी।

"मैंने कुछ खलल तो नहीं डाल दिया? मैं जाता हूं!" उसने बड़ी मुश्किल से कहा और उसके होंठ के दायें सिरे पर कोई नस फड़क उठी।

किन्तु प्सेल्दोनीमोव अब तक सम्भल गया था।

"महामहिम जी, बड़ी कृपा की आपने... बड़ा सम्मान दिया है..." जल्दी से सिर झुकाते हुए वह बुदबुदाया। "कृपया बैठने का कष्ट कीजिये..." और पहले से भी अधिक सजग होकर उसने दोनों हाथों से उस सोफ़े की ओर इशारा किया जिसके सामने से नाच की जगह बनाने के लिये मेज़ हटा दी गयी थी।

इवान इल्यीच ने दिल में राहत की सांस ली और सोफ़े पर बैठ गया। उसी वक्त किसी ने लपककर उसके सामने मेज़ रख दी। इवान इल्यीच ने जल्दी से इधर-उधर नज़र दौड़ायी और यह देखा कि सिर्फ़ वही बैठा है और बाकी सभी लोग, यहां तक कि महिलायें भी खड़ी हैं। यह बुरा लक्षण था। किन्तु इस बात की ओर ध्यान दिलाने और उनकी हिम्मत बढ़ाने का अभी वक्त नहीं आया था। मेहमान अभी भी पीछे हटते जा रहे थे और उसके सामने बेहद झुका हुआ केवल प्सेल्दोनीमोव ही खड़ा था जो अभी तक कुछ भी समझ नहीं पा रहा था और मुस्करा भी नहीं रहा था। स्थिति बड़ी अटपटी थी। ऐसे में यह कहा जा सकता है कि इस क्षण में हमारे नायक ने इतनी व्यथा सहन की कि अपने मातहत के यहां उसका यह आदर्शवादी आगमन इस दृष्टि से सचमुच बहादुरी का एक कारनामा माना जा सकता था। लेकिन अचानक एक व्यक्ति प्सेल्दोनीमोव के निकट प्रकट हुआ और इवान इल्यीच को झुक-झुककर प्रणाम करने लगा। इवान इल्यीच को बहुत चैन मिला, क्योंकि उसे बेहद खुशी हुई जब उसने इस व्यक्ति में अपने दफ़्तर के बड़े क्लर्क अकीम पेत्रोविच ज़ूबिकोव

थी। इस क्षण में उसे और बहुत-सी चीज़ों की व्यथापूर्ण चेतना हो रही थी।

'आप कल्पना कीजिये कि मैं अभी-अभी स्तेपान निकीफ़ोरोविच निकीफ़ोरोव के यहा से आ रहा हू। शायद आपने उनका नाम सुना होगा वह प्रिवी कौंसिलर हैं उस आयोग में '

अकीम पेत्रोविच ने आदर से अपने को पूरी तरह आगे की तरफ झुका दिया मानो यह कहना चाहता हो–' हुजूर, उन्हें कौन नही जानता।

' वह अब तुम्हारे पड़ोसी हैं,' इवान इल्यीच ने शिष्टता तथा सहृदयता दिखाने के लिये क्षण भर को प्सेल्दोनीमोव को सम्बोधित करते हुए अपनी बात जारी रखी। किन्तु प्सेल्दोनीमोव की नजर में यह देखकर कि उसके लिये इस बात का कोई महत्त्व नहीं, झटपट मुह फेर लिया।

' जैसा कि आप जानते हैं, बड़े मिया उम्र भर एक मकान खरीदने के सपने देखते रहे थे और आख़िर उन्होंने वह खरीद ही लिया। सो भी प्यारा-सा मकान। हा और आज उनका जन्मदिन भी आ गया। पहले तो उन्होंने कभी अपना जन्मदिन नहीं मनाया था, यहा तक कि कंजूसी के कारण हमसे यह बात छिपाते भी रहे थे। हा, हा! लेकिन नये मकान से उन्हें इतनी ज्यादा खुशी हुई कि मुझे और सेम्योन इवानोविच को भी आमन्त्रित कर लिया। शिपुलेंको को जानते हैं न?'

अकीम पेत्रोविच फिर से झुक गया, बड़े उत्साह से आगे की ओर झुक गया! इवान इल्यीच तनिक खिल उठा। उसके दिमाग में यह ख्याल आने लगा था कि बड़ा क्लर्क भाप रहा है कि इस क्षण महामहिम का उसके सहारे के बिना काम नहीं चल सकता। इससे अधिक बुरी बात कोई नहीं हो सकती थी।

"तो हम तीनों बैठ गये, उन्होंने शैम्पेन हमारे सामने रख दी, हमने काम-काज की बातें कीं सभी तरह की चर्चा होती रही समस्याओं पर विचार किया कुछ वाद-विवाद भी हुआ हा, हा!'

अकीम पेत्रोविच ने आदर से भौंहें ऊपर चढ़ायी।

"लेकिन असली बात यह नहीं है। आखिर मैंने उनसे विदा ली, बड़े मिया वक्त के बड़े पाबन्द हैं, बुढ़ापे में ठीक वक्त पर सो जाते हैं। मैं बाहर आया... मेरा त्रीफ़ोन गायब था। मैं परेशान हो उठा, पूछा कि त्रीफ़ोन मेरी बग्घी को कहा ले गया? पता चला कि वह मेरे

देर से बाहर आने की आशा करते हुए अपनी किसी रिश्तेदार या बहन की शादी मे चला गया है, भगवान जाने किस की शादी मे। यही कही पीटर्सबर्ग स्तोरोना की ओर। और बग्घी भी अपने साथ ले गया।" जनरल ने शिष्टतावश फिर से प्सेल्दोनीमोव की तरफ देखा। वह फौरन झुक गया, मगर उस तरह से नहीं जैसे जनरल ने चाहा था। "सच्ची सहानुभूति से नही, दिल से नही," उसके दिमाग मे यह ख्याल आया।

"हद हो गयी!" बेहद आश्चर्यचकित अकीम पेत्रोविच कह उठा। सारी भीड मे हैरत की हल्की-सी आवाज़ सुनाई दी।

"आप मेरी स्थिति की कल्पना कर सकते हैं..." (इवान इल्यीच ने सब पर नज़र दौड़ाई।) कोई चारा नही था, मैं पैदल चल दिया। सोचा, बोल्शोई प्रोस्पेक्ट तक पैदल चला जाऊगा और वहा तो किराये की कोई घोड़ा-गाडी मिल ही जायेगी... हा, हा!"

"हा, हा, हा!" अकीम पेत्रोविच आदरपूर्वक हस दिया। भीड मे फिर से दबा-घुटा शोर सुनाई दिया, मगर इस बार खुशी जाहिर करता हुआ। इसी समय दीवार पर टगी हुई लालटेन की चिमनी चटककर टूट गयी। कोई उसे ठीक करने के लिये जल्दी से उधर लपका। प्सेल्दोनीमोव चौका और उसने कडी नज़र से लालटेन की तरफ देखा, किन्तु जनरल ने उसकी ओर ध्यान तक नही दिया और सभी ने चैन की सास ली।

"मैं चला जा रहा था. रात बहुत ही प्यारी और शात थी। अचानक मुझे सगीत सुनायी दिया, नाचनेवालो के पैरो की थाप कानों मे पडी। मैंने पुलिसमैन से पूछताछ की—पता चला कि प्सेल्दोनीमोव की शादी हो रही है। भैया, सारे पीटर्सबर्ग स्तोरोना को मालूम है कि तुम बडी दावत कर रहे हो। ठीक है न? हा-हा!" उसने फिर से प्सेल्दोनीमोव की तरफ देखा।

"ही-ही-ही! जी हुजूर.." अकीम पेत्रोविच हस दिया। मेहमान फिर से हिले-डुले, लेकिन सबसे बेहूदा बात यह रही कि प्सेल्दोनीमोव ने बेशक फिर से सिर झुकाया किन्तु मुस्कराया नही मानो वह काठ का बना हुआ हो। "यह उल्लू है क्या!" इवान इल्यीच ने मन ही मन सोचा, "अब तो इस गधे को मुस्करा देना चाहिये था और तब सारी बात बन जाती।" वह बेहद बेचैनी महसूस कर रहा था। "सोचा जरा अपने मातहत के यहा चलता हू। वह मुझे निकाल तो नही देगा..

मान न मान, मैं तेरा मेहमान। तुम मुझे माफ कर दो। अगर मैंने खलल डाल दिया है, तो मैं चला जाता हूं मैं तो सिर्फ देखने चला आया था "

धीरे-धीरे सभी मे कुछ सजीवता आने लगी थी। अकीम पेत्रोविच ने बहुत ही खुशामदी-सी सूरत बनाकर जनरल की तरफ देखा, मानो यह कहना चाहता था–"भला आप कैसे खलल डाल सकते हैं, हुजूर?" सभी मेहमान हिले-डुले और तनाव से मुक्ति के पहले चिह्न प्रकट करने लगे। लगभग सभी महिलाये बैठ गयी थीं। यह अच्छा और वांछित लक्षण था। उनमे से कुछ अधिक साहसी तो रूमालो से अपने को पखा भी झलने लगी थी। उनमे से एक ने, जो मखमल का पुराना-सा कोट पहने थी, जान-बूझकर ऊची आवाज मे फौजी अफसर से कुछ कहा। अफसर ने भी, जिसे उसने सम्बोधित किया था, ऊची आवाज मे जवाब देना चाहा, लेकिन चूकि और कोई भी ऊची आवाज मे नही बोल रहा था, इसलिये उसने अपना इरादा बदल लिया। पुरुषो ने, जिनमे अधिकतर क्लर्क और दो-तीन विद्यार्थी थे, एक-दूसरे की तरफ देखा मानो यह कह रहे हो कि अब राहत की सास लेनी चाहिये। वे खासे और विभिन्न दिशाओ मे दो-दो कदम इधर-उधर भी हुए। वैसे खास झिझक तो कोई भी महसूस नही कर रहा था, सिर्फ सभी को अटपटा लग रहा था और लगभग हर कोई मन ही मन उस व्यक्ति के प्रति झल्लाहट अनुभव कर रहा था जिसने इस तरह अचानक आकर उनके रग को भग कर दिया था। अपनी बुजदिली से शर्मिन्दा फौजी अफसर अब धीरे-धीरे मेज़ की तरफ बढ़ने लगा।

"भैया, तुम मुझे अपना कुलनाम और पैतृक नाम तो बताओ," इवान इल्यीच ने प्सेल्दोनीमोव से कहा।

"पोरफ़ीरी पेत्रोविच, हुज़ूर," अपने दीदो को ऐसे बाहर निकालते हुए उसने जवाब दिया मानो वह कवायद के वक्त किसी फौजी अफसर के सामने खड़ा हो।

"पोरफ़ीरी पेत्रोविच, अपनी जवान बीवी से मेरा परिचय तो कराओ ... मुझे उसके पास ले चलो ... मैं "

और उसने उठने की इच्छा प्रकट की। किन्तु प्सेल्दोनीमोव बडी तेज़ी से मेहमानखाने की तरफ भागा। वैसे दुलहन दरवाजे के पास ही खडी थी, किन्तु जैसे ही उसने यह सुना कि उसकी चर्चा हो रही है,

वह फौरन छिप गयी। एक मिनट बाद प्मेल्दोनीमोव उसका हाथ थामे हुए उसे अपने साथ लेकर आया। सभी ने उनके गुजरने के लिये जगह बना दी। इवान इल्यीच बडी गम्भीरता से उठा और उसने बहुत ही मधुर मुस्कान से उसका स्वागत किया।

"आप से मिलकर बेहद खुशी हुई," बडी शिष्टता से तनिक सिर झुकाकर उसने कहा, "और सो भी ऐसे दिन .."

वह अदा से मुस्कराया। महिलाओ मे खुशी की लहर दौड गयी।

"Charmant!"* मखमली पोशाक पहने महिला ने जरा जोर से कहा।

युवा दुलहन प्मेल्दोनीमोव के लिये अच्छी जोडी थी। वह दुबली-पतली और कोई सत्रह साल की थी। उसका रग पीला था, चेहरा छोटा-सा और नाक तीखी थी। उसकी छोटी-छोटी, चचल और जल्दी से दाये-बाये घूमती आखो में जरा भी घबराहट नही थी। इसके विपरीत वे टकटकी बाधकर देखती थी और उनमे कुछ-कुछ खीझ भी झलक रही थी। सम्भवत प्मेल्दोनीमोव ने सुन्दरता के लिये उसे अपनी पत्नी के रूप मे नही चुना था। वह मलमल का सफेद फ्रॉक पहने थी जिसके नीचे गुलाबी अस्तर लगा हुआ था। उसकी गर्दन पतली-सी थी, शरीर चिडिया जैसा, हड्डिया-पसलिया उभरी हुई। जनरल के अभिवादन के उत्तर में वह कुछ भी नही कह पाई।

"बडी प्यारी है तुम्हारी बीवी," इवान इल्यीच धीमे-धीमे मानो केवल प्मेल्दोनीमोव को सम्बोधित करते हुए ही कहता गया, मगर इस तरह कि उसकी जवान बीवी को भी सुनाई दे जाये। प्मेल्दोनीमोव ने जवाब मे कुछ भी नही कहा, यहा तक कि इस बार सिर भी नही झुकाया। इवान इल्यीच को यह तक लगा कि उसकी आखो मे रुखाई लिये कुछ छिपा हुआ है और वह मन ही मन कोई बुरी बात सोच रहा है, कोई खास बात, द्वेषपूर्ण बात। लेकिन चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, उसे उसके दिल को जीतना ही था। आखिर वह इसी के लिये तो यहा आया था।

"वाह, क्या जोडी है!" उसने सोचा। "वैसे "

उसने अपने निकट सोफे पर बैठी जवान दुलहन को फिर से सम्बो-

! (चार्मिंग)

धित किया मगर उसे उससे केवल "हा" और "नही" मे ही जवाब मिला और वह भी साफ तौर पर नही।

"काश, यह शर्मा ही जाती", वह दिल मे सोचता रहा। "तब मैं मजाक करने लगता। नही तो मेरी स्थिति बडी अटपटी है।" दुर्भाग्य से अकीम पेत्रोविच भी चुप्पी साधे था। बेशक मूर्खतावश ऐसा कर रहा था, फिर भी यह अक्षम्य था।

"महानुभावो! मैंने आपके रग मे भग तो नही कर दिया?" उसने सभी को सम्बोधित करते हुए पूछा। उसने अनुभव किया कि उसकी हथेलिया भी पसीने से तर होने लगी है।

"नही जनाब आप कोई फिक्र नही करे, हुजूर। हम अभी शुरू कर देगे और फिलहाल आराम कर रहे है," फौजी अफसर ने जवाब दिया। जवान दुलहन ने प्रशसा की दृष्टि से उसकी तरफ देखा। फौजी अफसर अभी जवान था और किसी पलटन की वर्दी पहने था। प्सेल्दोनीमोव आगे की ओर झुका हुआ वही खडा था और उसकी हुकदार नाक पहले से ज्यादा उभरी हुई प्रतीत हो रही थी। वह हाथ मे फर-कोट लेकर अपने महानुभावो की बातचीत के समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे नौकर की भाति खडा हुआ बातचीत सुन रहा था और वैसे ही देख रहा था। यह तुलना इवान इल्यीच ने स्वय सोच ली थी। वह अपना सन्तुलन खोता जा रहा था, अटपटापन, अत्यधिक अटपटापन अनुभव कर रहा था, यह महसूस कर रहा था कि उसके पैरो के नीचे से जमीन खिसकती जा रही है, कि वह कही, मानो घुप अन्धेरे मे आ गया है और वहा से बाहर नही निकल सकता।

अचानक सभी एक तरफ को हट गये और नाटी तथा गठे बदन की एक नारी सामने आयी। वह अधेड उम्र की थी, सीधे-सादे, मगर ढग के कपडे पहने थी। उसके कधो पर दुपट्टा था जिसे पिन लगाकर गले पर जमा दिया गया था। वह सिर पर टोपी पहने थी जिसकी स्पष्टत आदी नही थी। उसके हाथो मे छोटी-सी ट्रे थी जिसमे शैम्पेन की खुली हुई, मगर अभी तक शुरू न की गयी बोतल और दो गिलास रखे थे। न कम, कम न ज्यादा – दो गिलास। जाहिर था कि शैम्पेन

की यह बोतल दो व्यक्तियों के लिये थी।

अधेड़ उम्र की यह औरत सीधी जनरल के पास गयी।

"हुजूर, आपसे माफी चाहती हूं," उसने झुकते हुए कहा, "अगर हमें भुलाया नहीं, बेटे की शादी पर आने की मेहरबानी की है, तो आपसे यह अनुरोध भी करती हूं कि जवान जोड़ी को शेम्पेन का गिलास पीकर बधाई देने की कृपा करें। यह अनुरोध टालिये नहीं, हमारी इज़्ज़त बढ़ाइये।"

इवान इल्यीच को लगा कि अब बचाव की सूरत निकल आई। वह अभी बूढ़ी नहीं, पैंतालीस-छियालीस साल की औरत थी, इससे ज़्यादा नहीं। किन्तु उसका ऐसा दयालु, लाल-लाल, निश्छल और गोल-मोल रूसी चेहरा था, वह ऐसी खुशमिज़ाजी से मुस्कराती थी, ऐसी सहजता से सिर झुकाती थी कि इवान इल्यीच लगभग फिर उठा और कुछ आशा करने लगा।

"तो आप... आप मां हैं अपने इस बेटे की?" इवान इल्यीच ने सोफ़े से उठते हुए पूछा।

"हां, मां है, हुजूर," अपनी लम्बी गर्दन को आगे बढ़ाते और नाक को फिर से झुकाते हुए प्सेल्दोनीमोव बुदबुदाया।

"अरे वाह! बहुत, बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर।"

"तो हुजूर, इन्कार नहीं कीजियेगा।"

"मैं बहुत खुशी से इनकी सेहत का जाम पीऊंगा।"

ट्रे मेज पर रख दी गयी। प्सेल्दोनीमोव ने आगे बढ़कर शराब [illegible] दी। इवान इल्यीच ने, जो अभी तक खड़ा था, गिलास हाथ में ले लिया।

[illegible]

[illegible]

"और यह लम्बू (उसने फौजी अफसर की तरफ देखा) भी यही सिर पर सवार है। और कुछ नही तो 'हुर्रा ही चिल्लाये' तब सब कुछ ठीक हो जाये, बात बन जाये "

"और अकीम पेत्रोविच, आप भी शैम्पेन पीकर बधाई दीजिये " बुढ़िया ने बड़े क्लर्क को सम्बोधित करते हुए कहा। आप उसके अफसर है, वह आपके मातहत है। उस पर मेहर की नज़र बनाये रहिये, मा के नाते आपसे विनती करती हू। और भविष्य मे भी हमे नही भुलाइयेगा, प्यारे अकीम पेत्रोविच। बहुत दयालु व्यक्ति है आप।"

"कितनी अच्छी है हमारी ये रूसी बुढ़िया!" इवान इल्यीच ने सोचा। "सभी को रग मे ले आई यह औरत। मुझे तो हमेशा ही आम लोग बहुत अच्छे लगते रहे है "

इसी समय एक और ट्रे मेज की तरफ लायी गयी। इसे एक लड़की लेकर आ रही थी जो अभी तक एक बार भी न धुला और बुकरम के अस्तरवाला छीट का सरसराता और फूला हुआ फ्रांक पहने थी। ट्रे इतनी बड़ी थी कि वह बड़ी मुश्किल से ही उसे हाथो मे थाम पा रही थी। उसमे अनेक तश्तरियो मे सेब, टाफिया, दूसरी मिठाइया और अखरोट आदि रखे थे। यह ट्रे अभी तक सभी मेहमानो खास तौर पर महिलाओ के लिये मेहमानखाने मे रखी हुई थी। अब उसे सिर्फ जनरल के लिये यहा लाया गया था।

"हुजूर, लीजिये, कुछ चखने की मेहरबानी कीजिये। जो कुछ रूखा-सूखा हमारे पास है, हाजिर है," बुढ़िया ने सिर भुकाकर फिर से कहा।

"हा, जरूर सूखा " इवान इल्यीच ने कहा और खुशी से एक अखरोट लिया और उसे उगलियो मे दबाकर तोड़ा। वह अपने को पूरी तरह जनवादी दिखाना चाहता था।

इसी बीच दुलहन खिलखिलाकर हस दी।

"क्या बात है, श्रीमती जी?" इवान इल्यीच ने सजीवता के लक्षण देखकर मुस्कराते हुए पूछा।

"हुजूर, यह इवान कोन्स्तेनतीनिच हसा रहा है," दुलहन ने नजर भुकाते हुए जवाब दिया।

जनरल ने वास्तव मे ही सोफे के पास रखी एक कुर्सी पर बैठे सुनहरे बालोवाले एक सुन्दर नौजवान को प्सेल्दोनीमोव की पत्नी से

कुछ खुसर-फुसर करते हुए देखा था। नौजवान उठकर खड़ा हो गया। वह सम्भवत: बहुत ही शर्मीला और नौउम्र था।

"हुजूर, मैं इनसे 'स्वप्न-पुस्तक'* की चर्चा कर रहा था," वह मानो क्षमा-याचना करते हुए बुदबुदाया।

"किस 'स्वप्न-पुस्तक' की?" इवान इल्यीच ने कृपा भाव दिखाते हुए जानना चाहा।

"नयी 'स्वप्न-पुस्तक' है हुजूर, साहित्यिक पुस्तक। मैं इनसे कह रहा था, हुजूर, कि अगर किसी को स्वप्न मे पानायेव नज़र आयेगा तो वह ज़रूर अपनी पोशाक के अग्रभाग पर कॉफ़ी गिरा लेगा।"

"कैसा बुद्धूपन है," इवान इल्यीच ने खीझ तक महसूस करते हुए सोचा। नौजवान यह बताते हुए बेशक सकोच से लाल हो गया था फिर भी इस बात से बेहद खुश था कि श्रीमान पानायेव की चर्चा कर पाया था।

"हा, मैंने सुना है, इसके बारे मे सुना है" महामहिम ने कहा।

"लेकिन इससे बेहतर भी एक अन्य पुस्तक है," इवान इल्यीच के बिल्कुल निकट ही एक अन्य आवाज़ सुनाई दी। "एक नया शब्दकोश बनाया जा रहा है और कहते हैं कि श्रीमान क्रायेव्स्की उसके लिये व्याख्यात्मक लेख लिखेंगे और हिज्जो का स्पष्टीकरण देंगे जबकि स्वय ऊलोचनात्मक साहित्य लिखते हैं।

उस दूसरे नौजवान ने कहा जो बिल्कुल घबराहट अनुभव नहीं कर रहा था, बल्कि बड़ा बेतकल्लुफ़ था। वह दस्ताने और सफ़ेद वास्कट पहने था तथा हाथों मे टोप लिये था। वह नाच मे हिस्सा नहीं ले रहा था, अपने को घमण्डी जाहिर कर रहा था, क्योंकि व्यग्यात्मक पत्रिका 'लुआटी'** मे लेख लिखता था, अपने को मिसाल के रूप मे पेश करता था, विवाह मे सयोग से ही आ गया था, प्सेल्दोनीमोव ने उसे सम्मानित अतिथि के रूप मे आमन्त्रित किया था जिसके साथ उसकी बड़ी घनिष्ठता थी और एक साल पहले इन दोनो ने एक जर्मन महिला की

* यहां कवि न० फ़० श्चेरबिना (१८२१-१८६८) द्वारा रची गयी उस छोटी पुस्तक से अभिप्राय है जिसमें उसने जनवादी 'सोव्रेमेन्निक' ('समकालीन') पत्रिका के सम्पादकों न० नेक्रासोव और इ० पानायेव पर कीचड़ उछाला था।—सं०

** व्यग्यात्मक पत्रिका।—सं०

किराये की कोठरी मे एकसाथ गरीबी के दिन बिताये थे। हा, वह वोद्का पीता था और पीछे के एक कमरे मे, जिसका रास्ता सभी को मालूम था, कई बार जा चुका था। जनरल को वह बिल्कुल अच्छा नही लगा।

"और यह हसी की बात इसलिये है," सुनहरे बालो और पोशाक के अग्रभाग पर कॉफी गिराने की बात करनेवाले नौजवान ने जो सफेद वास्कट पहने नौजवान को बिल्कुल पसन्द नही था, अचानक कहा, "इसमे हसी की बात यह है हुजूर कि लेखक के मतानुसार श्रीमान त्रायेव्स्की को मानो हिज्जो का ज्ञान नही है और वह यह समझते हैं कि 'आलोचनात्मक साहित्य' को 'आ' के बजाय 'ऊ' से यानी ऊलोचनात्मक साहित्य लिखना चाहिये "

किन्तु बेचारे नौजवान ने बडी मुश्किल से ही अपनी बात समाप्त की। जनरल की आखो के भाव से उसे पता चल रहा था कि वह बहुत पहले से यह सब जानता है और इसीलिये खुद जनरल को परेशानी अनुभव हो रही थी। नौजवान को बहुत ही ज्यादा शर्म महसूस हुई। वह जल्दी से यहा से खिसक गया और बाकी सारे वक्त बहुत उदास रहा। इसके विपरीत, 'लुआठी' पत्रिका का बेतकल्लुफ सहयोगी और अधिक निकट आ गया तथा कही बिल्कुल नजदीक ही बैठने की कोशिश करने लगा। इस तरह की बेतकल्लुफी इवान इल्यीच को बिल्कुल अच्छी नही लगी।

"अरे हा! पोरफीरी कृपया यह तो बताओ," उसने कुछ कहने के लिये ही बात शुरू की, "मैं तुमसे व्यक्तिगत रूप से यह पूछना चाहता था, तुम्हे प्सेल्दोनीमोव क्यो कहते हैं, प्सेव्दोनीमोव* क्यो नही? सम्भवत. तुम्हारा कुलनाम प्सेव्दोनीमोव ही है?"

"मैं बिल्कुल सही तौर पर आपको यह नही बता सकता हुजूर," प्सेल्दोनीमोव ने उत्तर दिया।

"हुजूर, यह तो अवश्य ही इसके पिता जी के नौकरी शुरू करने के वक्त दस्तावेजो मे कही गडबड हो गयी होगी और इसलिये प्सेल्दोनीमोव कुलनाम ही रह गया," अकीम पेत्रोविच ने राय जाहिर की। "जनाब, कभी-कभी ऐसा हो जाता है।"

---

* यहा शब्द-विनवाद है रूसी शब्द प्सेव्दोनीम का अर्थ है उपमान। – अनु०

"जरूर ऐसा ही हुआ होगा," जनरल ने बड़े उत्साह से इस बात की पुष्टि की, "जरूर ऐसा ही हुआ होगा। जरा गौर कीजिये तो– प्सेव्दोनीमोव तो साहित्यिक शब्द 'प्सेव्दोनीम' से बनता है। लेकिन प्स्लेदोनीमोव का तो कुछ भी अर्थ नहीं है।"

"अज्ञानता के कारण भी ऐसा हो सकता है जनाब," अकीम पेत्रोविच ने इतना और जोड दिया।

"क्या मतलब है आपका अज्ञानता के कारण?"

"हुजूर, रूसी जनसाधारण कभी-कभी शब्दों का अपने ढंग से तोड-मरोड़कर उच्चारण करते हैं। उदाहरण के लिये वे 'अपहज' कहते हैं, जबकि 'अपाहिज' कहना चाहिये।"

"अरे, हा अपहज, हा, हा "

"'लम्बर' भी कहते है, हुजूर," लम्बू फौजी अफसर कह उठा जो बहुत देर से अपनी धाक जमाने के लिये कुछ कहने को परेशान हो रहा था।

"यह लम्बर क्या है?"

"नम्बर की जगह 'लम्बर', हुजूर।"

"अरे हा, 'नम्बर' की जगह 'लम्बर' अरे हा, हा, ... ह हा, हा!" इवान इल्यीच को फौजी अफसर के लिये भी हसना पड़

फौजी अफसर ने अपनी टाई ठीक की।

"वे तो 'टिक्स' भी कहते है," पत्रिका-सहकर्मी ने कहना आरम्भ किया। किन्तु महामहिम ने उसकी बात पर कान न देने की कोशिश की। वह सभी के लिये तो नहीं हस सकता था।

"'टिक्ट' की जगह 'टिक्स'," पत्रिका-सहकर्मी ने स्पष्टत खीझते हुए कहा।

इवान इल्यीच ने उसकी तरफ कड़ाई से देखा।

"तुम क्या राग अलापने जा रहे हो?" प्स्लेदोनीमोव ने फुसफुसाकर पत्रिका-सहकर्मी से कहा।

"ऐसा क्या हो गया, मैं तो बात ही कर रहा हू। क्या बात करना भी गुनाह है," उसने भी फुसफुसाते हुए बहस करनी चाही, मगर चुप हो गया और मन ही मन गुस्से से उबलता हुआ कमरे से गया।

न पोछेवाले उस आकर्षक कमरे मे पहुच गया जहा नाम

से ही नाचनेवाले मर्दों के लिये यारोस्लाव्ल के मेजपोश से ढकी एक छोटी-सी मेज़ पर दो किस्मों की वोद्का, हेरिंग मछली, केवियर और देसी शराबघरों में बनी हुई तेज़ शेरी रखी थी। वह गुस्से में भुनभुनाता हुआ अपने लिये कुछ वोद्का डाल ही रहा था कि अस्त-व्यस्त बालोंवाला डाक्टरी का विद्यार्थी, जो प्स्मेल्दोनीमोव के बॉल नृत्य का सबसे बढ़िया नर्तक था और कनकान नाच भी जानता था अचानक यहां भागता हुआ आया। वह बड़ी बेसब्री से सुराही की तरफ लपका।

"अभी शुरू करनेवाले हैं।" जल्दी-जल्दी अपने लिये जाम भरते हुए उसने कहा। "तुम देखने के लिये आ जाना – मैं हाथों से एकल नृत्य करूंगा और भोजन के बाद 'मत्स्य-नृत्य'* करने की जोखिम उठाऊंगा। यह तो विवाह के बहुत अनुरूप भी होगा। एक तरह से प्स्मेल्दोनीमोव के लिये मैत्रीपूर्ण संकेत होगा यह क्लियोपात्रा सेम्योनोव्ना बहुत खूब है, उसके साथ तो किसी भी तरह के नाच की जोखिम उठाई जा सकती है।"

"वह प्रतिगामी है," पत्रिका-सहकर्मी ने एक जाम पीकर उदासी से कहा।

"कौन प्रतिगामी है?"

"वही, जिसके सामने मिठाई रखी गयी है। प्रतिगामी है! मेरी बात सच मानना।"

"तुम तो हद कर रहे हो!" विद्यार्थी बुदबुदाया और क्वाड्रिल नाच की धुन का आरंभ सुनकर कमरे से बाहर भाग गया।

पत्रिका-सहकर्मी ने अकेला रह जाने पर अधिक साहस तथा अधिक स्वतन्त्र हो जाने के लिये और ढाल ली कुछ खाया और वास्तव में ही स्टेट कौंसिलर इवान इल्यीच का इस नौजवान पत्रकार से बढ़कर जिसकी उसने अवहेलना की थी कभी कोई कट्टर शत्रु और अदम्य प्रतिशोधक नहीं रहा होगा, विशेषतः वोद्का के दो जाम पीने के बाद। उफ़! इवान इल्यीच ने ऐसा सोचा भी नहीं था। उसने एक अन्य महत्त्वपूर्ण स्थिति के बारे में नहीं सोचा था जिसने महामहिम के प्रति मेहमानों के भावी पारस्परिक सम्बन्धों को प्रभावित किया। बात यह है कि यद्यपि उसने अपनी तरफ से अपने मातहत की शादी में उपस्थित

* बहुत ही तेज गतिवाला नृत्य। – सं०

होने का स्पष्टीकरण प्रस्तुत कर दिया था, तथापि इससे किसी को सन्तोष नही हुआ था और मेहमान अटपटापन महसूस करते जा रहे थे। किन्तु अचानक सभी कुछ ऐसे बदल गया मानो कोई जादू हो गया हो। सभी शान्त हो गये और अब वे उसी तरह से मौज करने, ठहाके लगाने, चीखने-चिल्लाने और नाचने को तैयार थे मानो अप्रत्याशित अतिथि कमरे में उपस्थित ही न हो। इसका कारण यह था कि न जाने किस तरह अचानक यह अफवाह, यह खुसर-फुसर, यह खबर फैल गयी थी कि मेहमान तो मानो.. नशे मे था। बेशक शुरू मे तो यह बात बेहूदा अफवाह मानी गयी, मगर धीरे-धीरे सभी को इसका विश्वास होता गया और सहसा सब कुछ स्पष्ट हो गया। इतना ही नहीं, सभी अपने को अचानक असाधारण रूप से स्वतन्त्र अनुभव करने लगे। और इसी वक्त तो भोजन के पहले वह आखिरी क्वाड्रिल नाच शुरू हुआ जिसमें शामिल होने के लिये डाक्टरी का विद्यार्थी इतनी उतावली कर रहा था।

इवान इल्यीच दुलहन को फिर से सम्बोधित करने और शब्द-खिलवाड से उसे खुश करने को तैयार ही हो रहा था कि सहसा लम्बू फौजी अफसर लपककर उसके पास गया और तेज़ी से एक घुटना टेककर उसने दुलहन को नाचने के लिये आमन्त्रित किया। वह उसी क्षण सोफे से उठी और क्वाड्रिल नाचनेवालो की पातो मे स्थान ग्रहण करने के लिये अफसर के साथ भाग गयी। फौजी अफसर ने माफी भी नहीं मागी और दुलहन ने जाते हुए जनरल की तरफ देखा तक नहीं। वह तो मानो खुश भी हुई कि जनरल से पिड छूटा।

"वैसे, उसे ऐसा करने का अधिकार है," इवान इल्यीच ने सोचा, "और फिर ये लोग शिष्टाचार भी तो नही जानते।"

"भैया पोरफीरी, तुम तकल्लुफ के फेर मे नही रहो," जनरल ने प्सेल्दोनीमोव को सम्बोधित किया। "शायद तुम्हे कुछ काम करना हो... प्रबन्ध या व्यवस्था मे सम्बन्धित कुछ करना हो। कृपया तुम औपचारिकता मे नही रहो।" – "यह क्या मेरी पहरेदारी कर रहा है?" उसने मन ही मन सोचा।

प्सेल्दोनीमोव की लम्बी गर्दन और उस पर टिकी हुई आंखे उसके लिये असह्य हो उठी थी। थोडे मे, यह सब कुछ वैसा नही था, बिल्कुल वैसा नही था जैसा उसने सोचा था, मगर वह अभी इसे मानने को तैयार नही था।

क्वाड्रिल नाच शुरू हुआ।

"इजाजत है, हुजूर?" अकीम पेत्रोविच ने पूछा जो बडे आदर से शैम्पेन की बोतल हाथो मे लिये हुए महामहिम के गिलास मे उसे डालने को तैयार था।

"मैं . मैं, सचमुच यह नही जानता, लकिन "

किन्तु अकीम पेत्रोविच खुशामदी ढग से खिले हुए चेहरे से शैम्पेन डालने भी लगा था। जनरल का गिलास भरने के बाद उसने मानो छिपे-छिपे, मानो चोरी करते, सिकुडते-सिमटते और सहमते हुए अपने गिलास मे भी शैम्पेन डाल ली। हा, पर जनरल के प्रति आदर का भाव दिखाते हुए अपना गिलास पूरी तरह नही भरा। अपने ठीक ऊपर के अफसर के निकट बैठा हुआ वह प्रसव-पीडा से व्यथित नारी की तरह अनुभव कर रहा था। सचमुच वह उससे किस बारे मे बातचीत करे? महामहिम का मन बहलाना तो उसका कर्त्तव्य भी था, क्योकि उसे उसका साथ देने का सम्मान प्राप्त हुआ था। शैम्पेन से मानो रास्ता निकल आया और महामहिम को यह अच्छा भी लग रहा था कि वह उसके गिलास मे शैम्पेन डाल रहा था – खुद शैम्पेन के कारण नही जो गर्म और बेहद बेमजा थी, बल्कि नैतिक दृष्टि से अच्छा लग रहा था।

"बुड्ढा खुद पीना चाहता है," इवान इल्यीच ने सोचा, "मगर मेरे बिना ऐसा करने की हिम्मत नही कर पा रहा। तो ठीक है पिये और अगर हम दोनो के बीच यह बोतल इसी तरह से रखी रह जायेगी, तो यह भी अटपटा लगेगा।"

उसने थोडी सी शैम्पेन पी और उसे यह बेकार बैठे रहने से तो बेहतर ही लगा।

"बात यह है कि मैं यहा," जनरल ने रुक-रुककर और शब्दो पर जोर देते हुए कहना शुरू किया, "बात यह है कि मैं तो यहा सयोग से ही आ गया हू और बहुत सम्भव है, कुछ लोगो को ऐसा लगे कि मेरा .. यो कहिये मेरा ... इस महफिल मे होना उचित नही।"

अकीम पेत्रोविच चुप रहा और सहमी-सहमी जिज्ञासा से सुनता रहा।

"किन्तु मैं आशा करता हू कि आप मेरे यहा होने का कारण

समझ जायेंगे . आखिर मैं शराब पीने तो यहा आया नही हूं। हा, हा!"

अकीम पेत्रोविच ने भी महामहिम के साथ-साथ हंसना चाहा, मगर न जाने क्यो, उसने ऐसा नही किया और एक बार फिर कोई ऐसी बात नही कह सका जिससे जनरल को सान्त्वना मिलती।

"मैं यहा इसलिये आया हू कि . यो कहना चाहिये, हौसला बढाने के लिये, यो कहना चाहिये, नैतिक, यों कहना चाहिये, लक्ष्य दिखाने के लिये," अकीम पेत्रोविच की मन्दबुद्धि पर झल्लाते हुए इवान इल्यीच कहता गया, मगर अचानक खुद भी खामोश हो गया। उसने देखा कि बेचारे अकीम पेत्रोविच ने तो मानो अपने को अपराधी अनुभव करते हुए नजरे भी झुका ली है। जनरल ने कुछ परेशान होते हुए झटपट शैम्पेन का एक और घूट भर लिया तथा अकीम पेत्रोविच ने मानो इसी मे अपना बचाव अनुभव करते हुए बोतल उठाई और जनरल के गिलास को फिर से भर दिया।

"तुम्हारे साधन तो बहुत सीमित है," इवान इल्यीच ने बेचारे अकीम पेत्रोविच को कडी नजर से देखते हुए सोचा। अकीम पेत्रोविच ने जनरल की यह कड़ी नजर अपने पर अनुभव करते हुए पूरी तरह से चुप रहने और नज़र ऊपर न उठाने का निर्णय कर लिया। वे इस तरह से दो मिनट तक, अकीम पेत्रोविच के लिये बहुत ही यातनापूर्ण दो मिनट तक एक-दूसरे के आमने-सामने बैठे रहे।

दो-चार शब्द अकीम पेत्रोविच के बारे मे। वह मेमने की तरह बहुत ही निरीह, पुराने ढग का आदमी था जिसे चुपचाप हुक्म बजाने की शिक्षा दी गयी थी। इसके बावजूद वह दयालु और यहा तक कि सज्जन व्यक्ति भी था। वह पीटर्सबर्गी रूसी था यानी उसके पिता और दादा पीटर्सबर्ग मे ही पैदा हुए, बडे हुए, वही उन्होने नौकरी की और कभी भी पीटर्सबर्ग मे बाहर नही गये थे। यह रूसी लोगो का सर्वथा एक विशेष वर्ग था। ये लोग रूस के बारे मे कुछ भी नही जानते थे और इससे उन्हे कोई परेशानी भी नही होती थी। पीटर्सबर्ग और मुख्यत उनके काम की जगह ही उनकी दिलचस्पी का केन्द्र बनी रहती थी। एक-एक कोपेक के दाववाले जुए के खेल, छोटी-छोटी दुकानों और मासिक वेतन तक उनकी चिन्ताए सीमित थी। एक भी रूसी रस्म-रिवाज या 'सुनीनुरका' के अतिरिक्त किसी भी रूसी गाने

जनक ढग से भुकता था यानी – बास की तरह बिल्कुल सीधा वह अचानक एक तरफ को ऐसे भुक जाता मानो गिर पडेगा, किन्तु अगले ही क्षण वैसा ही टेढा कोण बनाते हुए दूसरी दिशा में फर्श की ओर भुक जाता। वह अपने चेहरे को अत्यधिक गम्भीर बनाये रहता और यह विश्वास अनुभव करते हुए नाचता कि सभी उसकी नृत्य-कला से चकित हो रहे हैं। एक अन्य नाचनेवाला, जिसने क्वाड्रिल शुरू होने के पहले ही बहुत चढा ली थी, नाच की दूसरी मुद्रा के आरम्भ होते ही अपनी संगिनी के निकट सो गया और इस तरह इस महिला को अकेले ही नाचना पड़ा। हल्के नीले दुपट्टेवाली महिला के साथ नाचनेवाले जवान रजिस्ट्रार ने उस रात को नाचे गये पाचो क्वाड्रिल नाचो और सभी मुद्राओ में एक ही चीज बार-बार दोहरायी। वह यह कि अपनी नृत्य-संगिनी के तनिक पीछे खडा रहकर वह उसके दुपट्टे का छोर पकड लेता और उसके मुद्रा-परिवर्तन के समय उस छोर को दसेक बार चूम लेता। महिला उसके आगे-आगे नाचती चली जाती और यह जाहिर करती मानो उसने कुछ भी न देखा हो। डाक्टरी का विद्यार्थी वास्तव में ही हाथों से एकल नृत्य करता और बडे उल्लास का वातावरण बनाता, सभी लोग पैरो को जोर से थपथपाते तथा खुशी से मस्त होकर चीखते। थोडे में यह कि बहुत ही ज्यादा बेतकल्लुफी का आलम था। इवान इल्यीच, जिस पर अब शेम्पेन का भी असर होने लगा था, मुस्कराने ही वाला था कि एक कटु-सा सन्देह धीरे-धीरे उसकी आत्मा में सिर उठाने लगा। बेशक उसे बेतकल्लुफी और यह चीज बेहद पसन्द थी कि सब अपने को स्वतन्त्र अनुभव करे। वह ऐसा चाहता था, उसने सच्चे दिल से उस वक्त ऐसी बेतकल्लुफी के लिये कोशिश की थी जब वे सब पीछे हटते जाते थे, लेकिन अब यह बेतकल्लुफी सीमाओ का उल्लघन करती जा रही थी। मिसाल के तौर पर एक महिला ने, जो पुराना-पुराना नीला मखमली फ्रॉक पहने थी, नाच की छठी मुद्रा में फ्रॉक को पिन लगाकर ऐसी शक्ल दे दी मानो वह सलवार पहने हो। यह वही क्लियोपात्रा सेम्योनोव्ना थी जिसके बारे में उसके नृत्य-साथी, डाक्टरी के विद्यार्थी ने यह कहा था कि उसके साथ किसी भी तरह के नाच की जोखिम उठाई जा सकती है। डाक्टरी के विद्यार्थी के तो कहने ही क्या – वह तो बस, फोकिन* था। लेकिन यह हुआ

* नृत्य के लिये प्रसिद्ध एक नाम।–सं०

वह जानता था, बहुत अच्छी तरह से जानता था कि उसे बहुत पहले ही यहां से चले जाना चाहिये था जाना ही नहीं बल्कि भाग जाना चाहिये था। वह देख रहा था कि स्थिति वही नहीं थी हालात ने वही रूप नहीं अपनाया था जिसकी उसने सडक की पटरी पर चलते हुए कल्पना की थी।

'मैं किसलिये यहा आया था? क्या खाने-पीने के लिये?' उसने हेरिंग मछली खाते हुए अपने आपसे पूछा। उसे अपनी यह हरकत बहुत बुरी लग रही थी। अपनी इस करतूत पर वह कभी-कभी व्यंग्य कर रहा था। खुद उसे भी यह समझ में नहीं आ रहा था कि वास्तव में ही वह किसलिये यहा आया था।

लेकिन वह जाता तो कैसे? इस सब को खत्म किये बिना जाना सम्भव नहीं था। "लोग क्या कहेंगे? कहेंगे कि मैं अवांछित स्थानों पर आवारागर्दी करता रहा हूं। अगर मैं इस दावत के खत्म होने से पहले ही चला जाऊं, तो सचमुच ऐसा ही प्रतीत होगा। उदाहरण के लिये कल (क्योंकि कल यह बात सभी जगह फैल जायेगी) स्तेपान निकीफोरोविच सेम्योन इवानोविच, दफ्तरों में शेम्बेल और शूबिन के यहां लोग क्या कहेंगे? नहीं मुझे इस तरह से जाना चाहिये कि सभी मेरे यहा आने का कारण समझ जायें, मुझे अपने नैतिक लक्ष्य को स्पष्ट करना चाहिये" किन्तु ऐसा करने का उचित अवसर किसी तरह भी सामने नहीं आ रहा था। 'वे तो मेरी इज्जत तक नहीं करते' वह सोचता जा रहा था। "किस बात पर वे हंस रहे हैं? इतने बेझिझक हैं वे, मानो बिल्कुल भावनाहीन हों हां, मैं तो बहुत अरसे से ही पूरी जवान पीढ़ी के संगदिल होने की शंका कर रहा हूं! चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, मुझे यहां रुकना चाहिये! अब ये नाच खत्म कर चुके हैं, खाने की मेज पर सभी जमा हो जायेंगे मैं उनसे विभिन्न समस्याओं की, सुधारों और रूस की महत्ता की चर्चा करूंगा मैं अभी भी इनके दिल जीत लूंगा! हां! शायद अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है शायद वास्तव में हमेशा ऐसा ही होता है। लेकिन इनके साथ किस विषय को लेकर बातचीत शुरू की जाये, कैसे उनको अपनी ओर आकर्षित किया जाये? इसके लिये कौन-से उपाय का उपयोग ठीक होगा? कुछ समझ में नहीं आ रहा, कुछ भी समझ में नहीं आ रहा .. और इन्हें क्या चाहिये, ये किस चीज की

अपेक्षा करते है? मैं देख रहा हू कि ये लोग यहा खडे हस रहे है हे भगवान, कही मुझ पर तो नही हस रहे! और मुझे यहा क्या लेना-देना है . मैं तो यहा किसलिये हूं, क्यो यहा से जाता नही, क्या हासिल करना चाहता हू?.." वह यह सोच रहा था और किसी तरह की लज्जा, बहुत गहरी और असह्य लज्जा उसके दिल के टुकडे-टुकडे किये दे रही थी।

लेकिन अपने ही ढग से एक के बाद एक मुसीबत आती चली गयी।

मेज पर ठीक दो मिनट तक बैठने के बाद एक भयानक विचार उसके दिल-दिमाग पर हावी हो गया। उसने अचानक यह महसूस किया कि वह बुरी तरह नशे में है यानी पहले की तरह नही, बल्कि बुरी तरह। इसका कारण था शैम्पेन के बाद पिया गया वोद्का का जाम जिसने फौरन अपना असर दिखाया था। वह अनुभव कर रहा था, उसका अंग-अंग मानो यह कह रहा था कि अब वह अपने को सभाले रखने मे असमर्थ है। बेशक उसका हौसला बहुत बढ गया था, मगर उसकी चेतना उसका साथ दे रही थी और चीख-चीखकर कह रही थी - "यह बुरा है, बहुत बुरा है, यहा तक कि अनिष्ट भी है!" जाहिर है कि नशे की हालत के अस्थिर विचार एक ही बिन्दु पर टिके नही रह सकते थे - अचानक स्वय उसके लिये भी अच्छी तरह समझ में आनेवाले दो पक्ष उसके सामने प्रकट हो गये। एक पक्ष में हौसला दिखाने की इच्छा, बाधाओ को कलाई मरोड़ने की चाह और यह प्रबल आत्म-विश्वास था कि वह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेगा। दूसरा पक्ष उसकी आत्मा को कचोट रहा था, उसके दिल को बुरी तरह परेशान किये दे रहा था - "लोग क्या कहेगे? इसका क्या अन्त होगा? कल क्या होगा, कल, कल!"

धीरे-धीरे उसे इस बात का बहुत हल्का-हल्का सा अहसास हो गया कि मेहमानो में उसके दुश्मन भी है। "यह शायद इसलिये था कि [illegible] [illegible] [illegible] था।" उसने [illegible] सन्देह के साथ सोचा था। और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से उसे यह सन्देह हो गया था कि मेज पर [illegible]

मे ही उसके कुछ दुश्मन थे और इसमे सन्देह की कोई गुजाइश नही थी, उसे बेहद परेशानी हुई।

"मगर क्यो! किसलिये ऐसा है!" उसने सोचा।

इसी मेज़ के गिर्द तीस के तीस मेहमान बैठ गये जिनमे से कुछ तो पूरी तरह नशे मे धुत्त थे। दूसरे बडी बेतकल्लुफी दिखा रहे थे, बुरे ढग की आज़ादी का प्रदर्शन कर रहे थे, चीख़-चिल्ला रहे थे, सभी एक-साथ ऊचे-ऊचे बोलते थे, जाम उठाकर अट-शट बोल रहे थे और रोटी की गोलियां बना-बनाकर महिलाओ पर फेक रहे थे। मैला-कुचैला फ्रॉक-कोट पहने एक तुच्छ-सा व्यक्ति मेज के गिर्द बैठते ही कुर्सी से नीचे गिर गया और भोजन ख़त्म होने तक वही पडा रहा। दूसरा व्यक्ति अवश्य ही मेज़ पर चढना और सेहत का जाम पेश करना चाहता था और उसके कोट के पल्लू को पकडे रहनेवाला फौजी अफसर ही उसके इस अत्यधिक जोश को वश मे रख पा रहा था। भोजन पूरी तरह से गड़बड-झाला था, यद्यपि इसे तैयार करने के लिये किसी जनरल के भूदास बावरची को ख़ास तौर पर बुलाया गया था। खाने मे शामिल थे – मास-जेली, आलुओ के साथ जीभ, हरे मटरो के साथ कटलेट कलहस और अन्त मे पुडिग। पीने के लिये बियर, वोद्का और शेरी की व्यवस्था थी। शैम्पेन की बोतल सिर्फ जनरल के सामने ही रखी थी जिसे मजबूरन अकीम पेत्रोविच का गिलास भी भरना पडता था, क्योकि वह खाने की मेज़ पर अपनी मर्जी से किसी भी तरह की छूट नही ले सकता था। दूसरे मेहमानो के बधाई या शुभकामनाओ के जामो के लिये सस्ती शराब या इसी तरह का और कोई पेय रख दिया गया था। कई मेज़ो को, जिनमे ताश खेलने की मेज़ भी शामिल थी, एकसाथ जोडकर भोजन की बडी मेज़ बनाई गयी थी। उन पर तरह-तरह के मेज़पोश बिछाये गये थे जिनमे बेल-बूटोवाला यारोस्लाव्ल का मेजपोश भी था। हर पुरुष के बाद एक महिला को बिठाया गया था। प्सेल्दो-नीमोव की मा ने भोजन की मेज पर बैठना नही चाहा, क्योकि वह दौड-धूप और प्रबन्ध कर रही थी। किन्तु इसी समय एक मनहूस-सी सूरत सामने आ गयी जो पहले नज़र नही आई थी। यह औरत लाल रग का रेशमी फ्रॉक पहने थी, दात दर्द के कारण सूजे गाल पर कपडा बाधे थी और बहुत ही ऊची टोपी ओढे थी। पता चला कि यह दुलहन की मा थी जो आखिर तो भोजन के वक्त पीछेवाले कमरे से यहा

आने को राजी हो गयी थी। अभी तक वह प्मेन्दोनीमोव की मा के प्रति अपने अदम्य शत्रुभाव के कारण यहा नही आयी थी, मगर इसकी चर्चा हम बाद मे करेगे। इस महिला ने जनरल को गुस्से, यहा तक कि उपहासजनक दृष्टि से देखा और शायद यह नही चाहती थी कि जनरल से उसका परिचय करवाया जाये। इवान इल्यीच को यह औरत बहुत ही सन्देहमयी प्रतीत हुई। किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य कई व्यक्ति भी सन्देहजनक थे और अनचाहे ही भय तथा चिन्ता पैदा करते थे। ऐसा लगता था कि उन्होने इवान इल्यीच के ही खिलाफ आपस मे कोई साजिश कर रखी है। कम से कम उसे तो ऐसा ही लगता था और भोजन के पूरे समय मे उसे इसका अधिकाधिक विश्वास होता गया। इनमे से सबसे अधिक दुर्भावनापूर्ण तो था छोटी-सी दाढ़ी वाला कोई चित्रकार। वह कई बार इवान इल्यीच की ओर देखने के बाद अपने पास बैठे हुए व्यक्ति के कान मे कुछ खुसर-फुसर भी कर चुका था। एक अन्य अतिथि, जो विद्यार्थी था, बेशक पूरी तरह नशे मे गडगच्च था, फिर भी कई लक्षणो से सन्देह पैदा करता था। डाक्टरी का विद्यार्थी भी कोई अच्छी उम्मीद नही बधवाता था। फौजी अफसर पर भी पूरी तरह से भरोसा नही किया जा सकता था। किन्तु 'लुआठी' पत्रिका के सहकर्मी के चेहरे पर विशेषत और स्पष्ट रूप से घृणा की चमक दिखाई दे रही थी—वह अपनी कुर्सी पर खूब पसरा हुआ था, बडे घमण्ड और धृष्टता से देखता था, बडी अकड दिखाता था। बेशक दूसरे मेहमान 'लुआठी' मे केवल चार छोटी-छोटी कविताये छपवाकर उन्ही के आधार पर उदारतावादी बन बैठनेवाले इस लेखक की ओर कोई खास ध्यान नही देते थे, यहा तक कि स्पष्टत उसे नापसन्द भी करते थे, फिर भी जब सीधे इवान इल्यीच की तरफ फेकी गयी डबलरोटी की गोली उसके पास आकर गिरी तो वह कसम खाकर कहने को तैयार था कि 'लुआठी' के लेखक के अलावा यह किसी दूसरे की हरकत नही हो सकती थी।

जाहिर है कि इससे उसके मन को बहुत दुख हुआ था।

एक अन्य बात की चेतना विशेष रूप से अरुचिकर रही—इवान इल्यीच को इस बात का पूरा विश्वास हो गया कि वह शब्दो का कठिनाई मे और अस्पष्ट उच्चारण कर पा रहा है, कि बहुत कुछ कहना चाहता है, मगर उसकी जबान साथ नही दे रही है। इसके अतिरिक्त

वह मानो सब कुछ गड़बड़ाने लगा था और सबसे बड़ी बात तो यह थी कि कभी-कभी अकारण ही सहसा नथुने फरफराकर हंस पड़ता था, जबकि हंसने की कोई बात नही होती थी। किन्तु उसकी ऐसी मानसिक स्थिति शेम्पेन का वह गिलास पीने के फौरन बाद दूर हो गयी जिसे इवान इल्यीच ने बेशक खुद अपने लिये भरा था, लेकिन पीना नही चाहता था और सयोग से ही पी गया था। इस गिलास को पीने के बाद सहसा उसका मन लगभग रोने को होने लगा। उसने अनुभव किया कि वह मनक जैसी भावुकता की तरग मे बहने लगा है – वह फिर से सभी को प्यार करने लगा, यहा तक कि प्सेल्दोनीमोव और 'लुआठी' पत्रिका के सहकर्मी को भी। उसका मन हुआ कि सभी को गले लगा ले, सब कुछ भूल जाये और सुलह कर ले। इतना ही नही, उन्हे सब कुछ, सभी कुछ साफ-साफ बता दे यानी यह कि वह कैसा दयालु और भला आदमी है, उसमे कैसे अद्भुत गुण हैं। अपनी मातृभूमि के लिये वह कैसे उपयोगी होगा, महिलाओं का कैसे मन बहला सकता है और सबसे बढ़कर तो यह कि वह कितना प्रगतिशील है, छोटे से छोटे लोगों के प्रति कैसी मानवीय भावनाए रखता है और अन्त मे उन्हे साफ तौर पर यह बतायेगा कि किन प्रेरणाओं से अनुप्रेरित होकर वह बिन बुलाये मेहमान के रूप मे प्सेल्दोनीमोव के यहा आया है, उसने शेम्पेन की दो बोतले पी हैं और अपनी उपस्थिति से उसे खुशी प्रदान की है।

"सचाई, सबसे पहले तो पावन सचाई और निष्कपटता ! मैं अपनी निष्कपटता से उनके दिलो मे घर कर लूगा। मैं साफ तौर पर देख रहा हू कि वे मुझ पर विश्वास कर लेगे। अभी तो वे शत्रुभाव से भी मेरी ओर देखते हैं, किन्तु जब मैं खुलकर उनसे सब कुछ कह दूगा तो पूरी तरह से उनके दिल जीत लूगा। वे अपने जाम भरकर ऊची-ऊची आवाज़ो मे मेरे स्वास्थ्य की कामना करते हुए उन्हे पी जायेगे। मुझे यकीन है कि फौजी अफसर तो जाम को अपनी एड़ी पर मारकर उसे तोड़ भी डालेगा। "हुर्रा !" भी चिल्लाया जा सकता है। अगर हुस्सारों की तरह वे मुझे हवा मे उछालना चाहेगे तो मैं इसका भी विरोध नही करूगा। यह तो बहुत ही अच्छा रहेगा। नवविवाहिता का मैं माथा चूमूगा – बड़ी प्यारी है वह। अकीम पेत्रोविच भी बहुत अच्छा आदमी है। प्सेल्दोनीमोव भी निश्चय ही बाद मे बेहतर हो

जायेगा। कहना चाहिये कि उसमे ऊंचे समाज के निखार की कमी है. बेशक यह सही है कि इस सारी नयी पीढ़ी में मानसिक संवेदनशीलता की कमी है, फिर भी   फिर भी मैं उन्हें अन्य यूरोपीय राज्यों के बीच रूस के महत्त्व के बारे मे बताऊगा। किसानों के मसले की भी चर्चा करूगा और ये . ये सभी मुझे प्यार करेंगे और मैं इस स्थिति से बड़ी शान से उबर आऊगा ! .."

जाहिर है कि ये सपने बहुत ही सुखद थे, मगर अप्रिय यह था कि इन मधुर आशाओ के बीच इवान इल्यीच ने अचानक अपने में एक अन्य अप्रत्याशित गुण को पाया यानी थूकने के गुण को। उसकी इच्छा के सर्वथा विरुद्ध उसके मुह से लार गिरने लगी। अकीम पेत्रोविच के गाल पर अपने थूक के छीटो को देखकर उसे इसकी चेतना हुई। अकीम पेत्रोविच आदर की भावना के कारण थूक को इसी वक्त पोछने की हिम्मत न करते हुए ज्यो का त्यो बैठा था। इवान इल्यीच ने नेपकिन लेकर सहसा स्वय उसे पोछ दिया। किन्तु खुद उसे ही यह इतना बेहूदा और बेतुका लगा कि वह खामोश हो गया और हैरान होने लगा। अकीम पेत्रोविच ने बेशक काफी पी थी, फिर भी वह हतप्रभ-सा बैठा था। इवान इल्यीच ने अब यह महसूस किया कि लगभग पिछले पन्द्रह मिनट से वह अकीम पेत्रोविच से बहुत ही दिलचस्प विषय की चर्चा कर रहा है, किन्तु अकीम पेत्रोविच उसकी बाते सुनते हुए न केवल झेप, बल्कि किसी कारण घबराहट भी अनुभव कर रहा था। एक कुर्सी छोड़कर बैठा हुआ प्सेल्दोनीमोव भी अपनी गर्दन उसकी तरफ बढ़ाकर और सिर को एक ओर झुकाकर बहुत ही मनहूस-सी सूरत बनाये हुए उसकी बाते सुन रहा था। वह वास्तव मे ही मानो उस पर कड़ी नजर रख रहा था। मेहमानों की ओर नजर डालकर उसने यह देखा कि उनमे से बहुत-से सीधे उसकी तरफ देख और हस रहे हैं। किन्तु सबसे अजीब बात तो यह थी कि इससे उसे कोई घबराहट नहीं हुई, बल्कि, इसके विपरीत, उसने फिर से शेम्पेन का घूट लिया और अचानक सबको सुनाते हुए बोलने लगा।

"मैं अभी कह चुका हू!" उसने यथासम्भव ऊंची आवाज मे कहना शुरू किया, "महानुभावो, मैं अभी-अभी अकीम पेत्रोविच से कह रहा था कि रूस . हा, हा, रूस ही ... थोड़े मे यह आप समझते है कि मैं क्या कहना चा. . हता. . हू ... मेरी पूरी आस्था के अनुसार रूस

इस समय मान   मानवीयता उदारता के दौर मे से गुजर रहा है   "
"मान   मानवीयता!" मेज के दूसरे सिरे से सुनाई दिया।
"मान-मान!"
"हाय शैतान!"
इवान इल्यीच चुप हो गया। प्स्लेदोनीमोव अपनी कुर्सी से उठकर यह देखने लगा कि किसने ऐसे शब्द कहे हैं। अकीम पेत्रोविच मेहमानो को लज्जित करने के लिये छिपे-छिपे सिर हिला रहा था। इवान इल्यीच की नजर से यह छिपा न रहा, मगर वह यातना सहता हुआ चुप रहा।
"मानवीयता!" उसने दृढता से अपनी बात जारी रखी। "कुछ ही देर पहले   हा, कुछ ही देर पहले मैं स्तेपान निकी-की-फोरोविच से इसकी चर्चा करता रहा था   हा   यह कि   चीजो का, मेरा मतलब, चीजो का नवीकरण   "
"महामहिम जी!" मेज के दूसरे सिरे पर किसी की आवाज गूज उठी।
"क्या आदेश है?" बीच मे रुककर यह देखने की कोशिश करते हुए कि किसने उसे पुकारा है, इवान इल्यीच ने जवाब दिया।
"कुछ भी नही, महामहिम जी, मैं जरा अपनी धुन मे बह गया था, जारी रखिये! जारी र   खि   ये!" फिर से आवाज सुनाई दी।
इवान इल्यीच सिहर उठा।
"यही चीजों का   कहना चाहिये, नवीकरण   "
"महामहिम जी!" फिर से आवाज सुनाई दी।
"आप क्या चाहते है?"
"नमस्ते!"
इस बार इवान इल्यीच से बर्दाश्त नही हुआ। उसने अपनी बात अधूरी छोडकर वातावरण को बिगाडने और अपमान करनेवाले की ओर देखा। यह भी एक बहुत नौजवान विद्यार्थी था जिसने बेहद चढा ली थी और जो बहुत ही ज्यादा सन्देह पैदा करता था। वह बहुत समय से चिल्ला रहा था और उसने इस बात पर जोर देते हुए एक गिलास और दो तश्तरिया भी तोड डाली थी कि शादी के मौके पर तो ऐसा होना ही चाहिये। इवान इल्यीच जब उसकी ओर मुडा तो फौजी अफ्सर उसे खूब जोर से डाटने-डपटने लगा।

क्या बात है, चिल्ला क्यों रहे हो? तुम्हें यहां से निकाल देना चाहिये, समझे!"

"आपसे मेरा अभिप्राय नहीं था, महामहिम जी, आपसे अभिप्राय नहीं था! जारी रखिये!" नशे में धुत स्कूली छात्र अपनी कुर्सी पर पसरते हुए चिल्लाया, "जारी रखिये, मैं सुन रहा हूं और आपसे बे हद, बे हद खुश हूं! ब... हुत खूब, ब... हुत खूब!"

"नशे में धुत छोकरा!" प्सेल्दोनीमोव फुसफुसाया।

"देख रहा हूं कि नशे में धुत है, लेकिन..."

"बात यह है, महामहिम जी, मैंने अभी एक दिलचस्प किस्सा सुनाया था," फौजी अफसर ने कहना शुरू किया, "अपनी पलटन के एक लेफ्टीनेन्ट के बारे में जो अपने बड़े अफसरों के साथ इसी ढंग से बातचीत करता था। तो यह स्कूली छात्र भी उसी की नकल कर रहा है। वह लेफ्टीनेन्ट अपने बड़े अफसरों के हर शब्द के जवाब में 'ब हुत खूब, ब हुत खूब' कहता रहता था। दस साल पहले इसी के लिये उसे फौज से निकाल दिया गया था।"

"कौन लेफ्टीनेन्ट था वह?"

"हमारी पलटन का, हुजूर, वह 'बहुत खूब' शब्दों पर लट्टू हो गया था। शुरू में उसके प्रति नर्मी दिखाई गयी, उसके बाद उ गिरफ्तार कर लिया गया.. बड़े अफसर ने पिता की तरह उसे समझाय और वह उससे 'ब.. हुत खूब, ब हुत खूब' ही कहता रहा। अजी बात तो यह है कि वह बड़ा बहादुर अफसर था, छः फुट से अधि लम्बा। उन्होंने उस पर फ़ौजी मुकदमा चलाना चाहा, लेकिन यह देख कि वह तो पागल है।"

"तो . तो वह स्कूली छात्र है। स्कूली छात्र के साथ बेशक इतनी कड़ाई से पेश न आया जाये.. अपनी ओर से मैं क्षमा करने को तैयार हू..."

"हुजूर, उसकी डाक्टरी जाच-पड़ताल की गयी।"

"क्या मतलब! उसकी चीर... चीर-फाड की गयी?"

"अजी नही, वह तो बिल्कुल जिन्दा था।"

सब मेहमानो का, जिन्होंने अभी तक बड़ी शिष्टता का परिचय दिया था, ऊचा और लगभग एकसाथ ही ठहाका गूज उठा। इवान इल्यीच आग-बबूला हो गया।

"महानुभावो, महानुभावो!" शुरू मे तो लगभग हकलाये बिना वह चिल्ला उठा, "मैं इस चीज़ को अच्छी तरह से समझने की स्थिति मे हू कि ज़िन्दा आदमी की चीर-फाड नही की जाती। मेरा यह ख्याल था कि पागलपन के कारण वह ज़िन्दा नही रहा था यानी मर गया था यानी मैं यह कहना चाहता हू कि आप लोग मुझे प्यार नही करते जबकि मैं आप सभी को प्यार करता हू हा, और पोरफीरी को भी ऐसा कहकर मैं अपने को नीचे गिरा रहा हू "

इसी क्षण इवान इल्यीच के मुह से ढेर सारा थूक मेजपोश पर ऐसी जगह गिरा, जहा सभी की नज़र पड सकती थी। प्सेल्दोनीमोव उसे नेपकिन से साफ करने के लिये लपका। इस अन्तिम दुर्भाग्य ने इवान इल्यीच को पूरी तरह से कुचल डाला।

"महानुभावो, यह तो हद ही हो गयी!" वह हताशा से चिल्ला उठा।

"हुजूर, जब आदमी नशे मे धुत्त होता है " प्सेल्दोनीमोव ने फिर से यह कहना चाहा।

"पोरफीरी! मैं देख रहा हू कि आप आप सभी हा! मैं कहता हू, कि मैं आशा करता हू हा, मैं सभी से यह कहने का आह्वान करता हू—कैसे मैंने अपने को आपकी नज़रो मे गिरा लिया है?"

इवान इल्यीच लगभग रुआसा हो उठा।

"ओह, हुजूर, आप यह क्या कह रहे है!"

"पोरफीरी, मैं तुमसे पूछता हू यह बताओ कि अगर मैं तुम्हारे पास आया हा, तुम्हारी शादी मे तो मेरे सामने कोई लक्ष्य था न! मैं नैतिक दृष्टि से आपको ऊपर उठाना चाहता था मैं आप सब के दिलो को छूना चाहता था। मैं आप सब से यह पूछता हू—मैंने अपने को आप सबकी नज़रो मे बहुत नीचे गिरा दिया है या नही?"

कब्र की सी खामोशी छा गयी। यही तो बात थी कि कब्र जैसी खामोशी और वह भी ऐसे दो टूक सवाल के जवाब मे। "इस क्षण इनका ज़ोर से हुर्रा चिल्लाते हुए क्या बिगडता है!" महामहिम के दिमाग मे यह विचार कौंधा। लेकिन मेहमानो ने सिर्फ एक-दूसरे की तरफ देखा। अकीम पेत्रोविच न ज़िन्दा था, न मुर्दा और डर से बेहाल

प्योल्दोनीमोव मन ही मन वह भयानक प्रश्न दोहरा रहा था जो बहुत देर से उसे चिन्तित किये हुए था—

"इस सबके लिये मुझ पर कल क्या बीतेगी?"

अचानक 'मुआठी' पत्रिका के सहकर्मी ने, जो बेहद पिये हुए था, मगर अभी तक उदासीभरी चुप्पी साधे बैठा था, इवान इल्यीच को सीधे-सीधे सम्बोधित किया। उसकी आखे चमक रही थी और वह सभी की ओर से बोलने लगा।

"जी हा, हुजूर!" वह गरजती आवाज में चिल्ला उठा, "जी हा, हुजूर, आपने अपने को नीचे गिरा लिया है, आप प्रतिगामी हैं .. प्रतिगामी!"

"नौजवान, होश मे आइये! किसके साथ आप ऐसे बात कर रहे हैं?" अपनी कुर्सी से एक बार फिर झटपट उछलकर इवान इल्यीच गुस्से से चिल्ला उठा।

"आपके साथ, और, दूसरे यह कि मैं नौजवान नही हूं .. आप यहा अपना दिखावा करने और लोकप्रियता हासिल करने आये थे।"

"प्योल्दोनीमोव, यह क्या हो रहा है!" इवान इल्यीच चिल्लाया।

किन्तु प्योल्दोनीमोव ऐसे भयभीत होकर उछला कि जहा का तहा बुत बना रह गया और बिल्कुल यह नही समझ पा रहा था कि क्या करे। मेहमानो का भी अपनी-अपनी जगहो पर बुरा हाल हो गया। चित्रकार और विद्यार्थी ने तालिया बजायी, वे "शाबाश! शाबाश!" चिल्ला उठे।

पत्रिका-सहकर्मी अदम्य क्रोध से चिल्लाता जा रहा था—

"हा, आप यहा मानवीयता की डीग हाकने आये थे! आपने हम सभी की खुशी का रग बिगाड दिया। आपने शैम्पेन पी और यह नही सोचा कि दस रूबल मासिक वेतन पानेवाले बाबू के लिये यह बहुत महगी चीज है। मेरे ख्याल मे तो आप अपने मातहतो की जवान बीवियो के भी चटोरे है! इतना ही नही, मुझे यकीन है कि आप ठेकेदारी के शोषण के भी समर्थक हैं .. हा, हा, हा!"

"प्योल्दोनीमोव, प्योल्दोनीमोव!" इवान इल्यीच उसकी ओर बाहें फैलाकर चिल्ला रहा था। उसे पत्रिका-सहकर्मी का हर शब्द . पर खजर का नया वार लग रहा था।

हुजूर, अभी, आप परेशान नही हो!" प्योल्दोनीमोव

जितनी भी कल्पना की जा सकती थी। जब तक इवान इल्यीच फ़र्श पर पड़ा हुआ है और प्सेल्दोनीमोव उसके ऊपर खड़ा हुआ हताश से बाल नोच रहा है, हम अपनी कहानी को यहीं रोककर पोरफ़ीरी पेत्रोविच प्सेल्दोनीमोव के बारे में कुछ शब्द कह देते हैं।

शादी के एक महीना पहले तक वह शब्दशः नष्ट हो रहा था। वह किसी गुबेर्निया का रहनेवाला था जहां उसका पिता कभी कोई काम करता था और वही, जब उस पर मुक़दमा चल रहा था, इस दुनिया से कूच कर गया। साल भर से पीटर्सबर्ग में भारी दुख-मुसीबतें सहनेवाले प्सेल्दोनीमोव को अपनी शादी से पांच महीने पहले जब दस रूबल महीने की नौकरी मिली तो उसके तन-मन को मानो नया जन्म मिला, किन्तु परिस्थितियों ने उसे फिर से नीचे पटक दिया। इस पूरी दुनिया में केवल दो ही प्सेल्दोनीमोव रह गये थे – वह और उसकी मां जिसने पति की मृत्यु के बाद गुबेर्निया छोड़ दिया था। मां-बेटा जाड़े-पाले का कष्ट सहन करते थे और न जाने क्या कुछ खा-पीकर अपना पेट भरते थे। ऐसे दिन भी होते थे जब प्सेल्दोनीमोव मग लेकर फ़ोन्तान्का नदी पर जाता था ताकि वहीं अच्छी तरह से पानी पीकर अपनी प्यास बुझा ले। नौकरी मिल जाने पर उसने किसी मामूली-सी जगह पर अपने और मां के रहने की व्यवस्था कर ली। मां लोगों के कपड़े धोने लगी और बेटे ने अपने लिये बूट और ओवरकोट ख़रीदने की ख़ातिर चार महीनों तक बड़ी किफ़ायत की। और अपने दफ़्तर में उसने कितनी मुसीबतें झेलीं – उसके अफ़सर उससे यह तक पूछते थे कि उसे ग़ुसलख़ाने में गये हुए कितना अरसा हो गया है? उसके बारे में यह अफ़वाह फैली हुई थी कि खटमलों ने उसके कोट के कालर के नीचे अपना अड्डा बना रखा है। मगर प्सेल्दोनीमोव बहुत ही दृढ़ चरित्र का आदमी था। देखने में वह बड़ा दब्बू और चुप्पा लगता था। उसने बहुत ही मामूली तालीम पायी थी और लगभग कभी कोई बात-चीत नहीं करता था। निश्चित रूप से मैं यह नहीं कह सकता कि क्या कभी वह कुछ सोच-विचार करता था या नहीं, कुछ योजनायें और मंसूबे बनाता था या नहीं और किसी चीज़ के सपने देखता था यह नहीं? लेकिन दूसरी ओर उसमें कठिन परिस्थितियों में से रास्ता बनाने के सहज, अदम्य और अचेतन संकल्प ने जन्म ले लिया था। उसमें चींटी जैसी दृढ़ता थी। अगर चींटियों की बांबी को तोड़ दिया

किसी समय एक पसली टूट गयी थी। रूस में रस-बस गयी एक जर्मन टुकडखोर औरत को भी उसने इसलिये शरण दे रखी थी कि उसे 'अलफ लैला के किस्से' सुनाने में कमाल हासिल था। किस्मत के मारे इन टुकडखोरो को यातना देना, इन्हें हर क्षण बुरी तरह कोसते रहना ही उसकी सबसे बडी खुशी थी, यद्यपि उसकी बीवी समेत, जो दांत का दर्द लेकर ही पैदा हुई थी, किसी को भी उसके सामने मुह खोलने और विरोध मे एक भी शब्द बोलने की हिम्मत नही होती थी। वह उन्हे आपस में लडवाता, अपने मन से निन्दा-चुगलियां गढ़कर उनके बीच फैलाता और फिर उन्हे लगभग एक-दूसरी से हाथापाई करते देखकर खुश होता। जब उसकी बडी बेटी, जो अपने पति, किसी फौजी अफसर के साथ गरीबी के कोई दस साल बिताने के बाद विधवा होकर अपने छोटे-छोटे तीन बीमार बच्चो के साथ उसके यहां आकर रहने लगी, तो उसे बडी खुशी हुई। उसके बच्चे उसे फूटी आंखों नही सुहाते थे, लेकिन चूंकि उनके आने से उसके हर दिन के तकाजों के लिये मिलनेवाली सामग्री बढ गयी थी, इसलिये बूढ़ा खुश था। सतापक बूढे सहित झगडालू-गुस्सैल औरतो और बच्चो का यह सारा टोला पीटर्सबर्ग स्तोरोना के एक लकडी के घर मे घिचापिचा रहता था, पेट भरकर नही खाता था, क्योकि बूढ़ा कजूस था और बड़ी मुश्किल से एक-एक पैसा देता था, जो अपनी वोद्का के लिये खुले हाथ से खर्च करता था। ये लोग पूरी तरह से सो भी नही पाते थे, क्योंकि बूढे को अनिद्रारोग था और वह यह मांग करता था कि उसका मन बहलाया जाये। थोडे में यही कि सभी दुख-मुसीबतें झेलते थे और अपनी किस्मत को कोसते थे। इसी वक्त प्योत्रोनीमोव की ओर स्लेकोतिनायेव का ध्यान गया। प्योत्रोनीमोव की लम्बी नाक और विनम्र-विनीत सूरत ने उसे बहुत प्रभावित किया। दुबली-पतली और अनाकर्षक उसकी छोटी बेटी तब सत्रह साल की हुई थी। वह बेशक कभी एक जर्मन स्कूल मे पढ़ने के लिये जाती रही थी, मगर बहुत ही मामूली तालीम से ज्यादा कुछ भी हासिल नही कर पायी थी। कंठमाला रोग से ग्रस्त और मरियल-सा शरीर लिये हुए वह [illegible] टांगोंवाली [illegible] पिता के डर और [illegible] निन्दा, [illegible] और [illegible] के जहरीले वातावरण में बड़ी हुई। [illegible] न कभी कोई [illegible] की और न ही [illegible] उसके पास [illegible]

थी। शादी करने को वह कभी से बेकरार थी। पराये लोगो के सामने वह ऐसे बनी रहती मानो मुह मे ज़बान ही न हो, मगर घर मे, मा और टुकड़खोरो की उपस्थिति मे अपना द्वेषपूर्ण रूप प्रकट करती और तीखी बरमी की तरह दिल को चीरती। अपनी बहन के बच्चो को चिकोटियां काटना, मारना-पीटना और उनके रोटी या चीनी चुरा लेने पर उनकी शिकायते करना उसे खास तौर पर बहुत पसन्द था। इसीलिये बडी बहन के साथ उसका लगातार और अन्तहीन लडाई-झगडा रहता था। बूढे ने खुद ही प्सेल्दोनीमोव के सामने अपनी इस बेटी के साथ शादी करने का प्रस्ताव रखा। बहुत गरीब होते हुए भी प्सेल्दोनीमोव ने सोच-विचार करने के लिये कुछ दिन की मोहलत देने का अनुरोध किया। मा-बेटा बहुत समय तक सोच-विचार करते रहे। लेकिन बूढा अपनी बेटी को दहेज मे मकान भी दे रहा था जो बेशक लकडी का बना हुआ, एकमजिला और खस्ताहाल था, फिर भी मकान तो था। मकान के अलावा चार सौ रूबल भी मिल रहे थे – कब भला इतनी रकम जमा हो सकेगी! "मैं किसलिये इस आदमी को अपने घर मे ला रहा हू?" शराबी तानाशाह ने चिल्लाकर कहा। "सबसे पहले तो इसलिये कि तुम सब औरते हो और मैं सिर्फ औरतो से तग आ गया हू। मैं चाहता हू कि प्सेल्दोनीमोव मेरे इशारो पर नाचे क्योकि मैं उस पर मेहरबानी कर रहा हू। दूसरे, मैं इसलिये उसे अपने घर मे ला रहा हू कि तुम सभी यह नही चाहती हो और जल-भुन रही हो। इसलिये तुम सबका मुह चिढाने के लिये ही मैं ऐसा करूगा। जो कहा है, वही करके रहूगा! और पोरफीरी, तुम्हारी बीवी बन जाने के बाद तुम खूब उसकी पिटाई करना। उसके दिमाग मे जन्म से ही सात शैतान घुसे हुए है। तुम उन सभी को निकाल देना, मैं इसके लिये डडा भी तैयार कर दूगा "

प्सेल्दोनीमोव खामोश रहा, मगर उसने फैसला कर लिया था। शादी के पहले ही मा-बेटे को घर मे बुला लिया गया, नहलाया-धुलाया गया, उनको नये कपडे-लत्ते और शादी के लिये पैसे दिये गये। बूढा शायद इसीलिये इनकी सरपरस्ती करता था कि बाकी सारा परिवार इनसे जलता था। प्सेल्दोनीमोव की मा तो उसे अच्छी भी लगी और इसलिये उसके मामले मे वह सयम से काम लेता था और उसे नही कोसता था। हा, प्सेल्दोनीमोव को उसने शादी से एक हफ्ता

पहले अपने सामने 'कजाचोक' नाचने के लिये मजबूर किया। "बस, काफी है, मैं तो सिर्फ यह देखना चाहता था कि मेरे सामने तुम असली हकीकत को तो नही भूल जाते हो," नाच खत्म होने पर उसने कहा। शादी के लिये उसने बहुत ही थोड़ी रकम दी और अपने सभी रिश्तेदारों तथा परिचितो को आमन्त्रित किया। प्सेल्दोनीमोव की ओर से केवल 'लुआठी' पत्रिका के सहकर्मी और सम्मानित अतिथि के रूप में अकीम पेत्रोविच को आमन्त्रित किया गया था। प्सेल्दोनीमोव को अच्छी तरह से मालूम था कि दुलहन उससे नफरत करती है और वह उसके बजाय फौजी अफसर से शादी करने को कही अधिक उत्सुक थी। लेकिन वह सब कुछ बर्दाश्त कर रहा था, उसने अपनी मा के साथ ऐसा ही तय किया था। शादी के पूरे दिन और सारी शाम को बूढ़ा खूब गालिया देता और शराब पीता रहा। शादी का जश्न मनाने के सिलसिले में सारा कुनबा पीछे के कमरो में जमा हो गया था और वहा ऐसी पिचपिच थी कि दम घुटता था। आगे के कमरे बॉल-नृत्य और भोजन के लिये खाली कर दिये गये थे। नशे में धुत्त बूढ़ा आखिर जब रात के ग्यारह बजे के करीब सो गया तो दुलहन की मा ने, जो प्सेल्दोनीमोव की मा से उस दिन खास तौर पर बहुत नाराज थी, गुस्से को थूककर दयालु बनने और बॉल-नृत्य तथा भोजन के लिये बाहर आने का निर्णय किया। इवान इल्यीच के आ जाने से सब कुछ गड़बड़ हो गया। दुलहन की मा सहम गयी, वह नाराज होकर डाटने-डपटने लगी कि उसे पहले से इस बात की क्यो खबर नही दी गयी कि खुद जनरल को शादी में बुलाया गया है। उसे यकीन दिलाया गया कि वह अपनी मर्जी से, बिन बुलाये ही आया है, किन्तु वह ऐसी मूर्ख थी कि इस बात पर विश्वास करने को तैयार नही थी। जनरल के आने पर शैम्पेन की जरूरत पड़ी। प्सेल्दोनीमोव की मा के पास सिर्फ एक रूबल था और प्सेल्दोनीमोव की जेब बिल्कुल खाली थी। शैम्पेन की एक, फिर दूसरी बोतल के लिये, म्लेकोपितायेवा की मिन्नत-समाजत करनी पड़ी। उसके सामने नौकरी के भावी सम्बन्धो, पदोन्नति आदि की दुहाई दी गयी। आखिर उसने निजी पैसे दे दिये, मगर इसके लिये प्सेल्दोनीमोव से ऐसे नाक रगड़वाई की कि वह कई बार हताश होकर उस कमरे में [illegible] गया जहा सुहाग-रात की सेज सजायी गयी थी, वहा उसने चुपचाप [illegible] नोचे और विवश क्रोध के कारण सिर से पाव तक कापते हु[illegible]

उस बिस्तर पर औंधे मुह जा गिरा जहा उसे स्वर्गिक सुख पाना था। हा, इवान इल्यीच नही जानता था कि उस रात को उसने शैम्पेन की जो दो बोतले पी थी, उनकी कितनी कीमत चुकाई गयी थी। यह कल्पना की जा सकती है कि जब इवान इल्यीच की ऐसी अप्रत्याशित हालत हो गयी तो प्सेल्दोनीमोव के दिल पर क्या गुज़री होगी, उसे कितनी अधिक परेशानी हुई होगी। फिर से उसके सामने चिन्तायें थी और शायद रात भर उसे सनकी दुलहन के रोने-भींकने और उसकी मूर्ख रिश्तेदारिनो के ताने-बोलियो का सामना करना पडेगा। इसके बिना ही उसके सिर मे दर्द हो रहा था और आखो के सामने धुध तथा अन्धेरा छा रहा था। इधर इवान इल्यीच की मदद करने की ज़रूरत थी, सुबह के तीन बजे उसके लिये डाक्टर या बग्घी ढूढना ज़रूरी था ताकि उसे घर पहुचाया जा सके। हा, बग्घी ही चाहिये थी, क्योकि मामूली घोडा-गाडी मे ऐसे व्यक्ति को ऐसी हालत मे नही भेजा जा सकता था। यदि और कुछ नही, तो बग्घी का किराया चुकाना के लिये ही कहा से पैसे लाये जाये? दुलहन की मा ने, जो इस बात से बौखलायी हुई थी कि जनरल ने भोजन के पूरे समय के दौरान उसकी तरफ देखा तक नही, उससे बात भी नही की, यह एलान कर दिया कि उसके पास तो फूटी कौडी भी नही है। शायद वास्तव मे ही ऐसा हो। कहा से पैसे लिये जाये? क्या किया जाये? हा, बाल नोचने का उचित कारण भी था।

इसी बीच इवान इल्यीच को भोजन के कमरे मे ही रखे हुए चमडे के छोटे-से सोफे पर लाकर लिटा दिया गया। जब तक मेज़ो को साफ और अलग किया गया, प्सेल्दोनीमोव ने इधर-उधर दौड-भाग करते हुए पैसे उधार लेने की कोशिश की। उसने तो नौकरो से भी उधार मागा, लेकिन किसी के पास कुछ था ही नही। उसने अकीम पेत्रोविच से भी, जो दूसरो की तुलना मे अधिक देर तक वहा रुका रहा था, कर्ज मागने की हिम्मत की। किन्तु दयालु व्यक्ति होने के बावजूद पैसो की बात सुनकर वह ऐसे चकरा गया, इस तरह डर गया कि अचानक बेतुकी बाते करने लगा।

"किसी दूसरे समय मैं खुशी से," वह बुदबुदाया, "लेकिन इस वक्त सच कहता हूं, मैं माफी चाहता हूं..."

और वह अपनी टोपी लेकर झटपट यहां से भाग गया। केवल दयालु हृदयवाला वह नौजवान, जिसने स्वप्न-पुस्तक की चर्चा की थी, कुछ काम आया और सो भी बहुत नहीं। प्रोल्दोनीमोव की मुसीबतों के लिये दिल से हमदर्दी महसूस करते हुए वही सबके बाद रुका रह गया था। आखिर प्रोल्दोनीमोव, उसकी मां और नौजवान ने मशवरा करके यह तय किया कि डाक्टर को बुलाने के बजाय बग्घी लाना तथा रोगी को उसके घर पहुंचाना कहीं ज्यादा अच्छा होगा और जब तक बग्घी आये, तब तक घरेलू इलाज आजमाये जायें यानी उसकी कनपटियों और सिर को ठण्डे पानी से तर किया जाये, सिर पर बर्फ रखी जाये, आदि। प्रोल्दोनीमोव की मां ने यह सब करने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली। नौजवान बग्घी की तलाश में दौड़ गया। चूंकि इस वक्त पीटर्सबर्ग स्तोरोना में बग्घी तो क्या, मामूली घोड़ा गाड़ी का भी नाम-निशान नहीं था, इसलिये वह शहर के दूसरे इलाके में पहुंचा और वहां उसने कोचवानों को जगाया। मोलभाव होने लगी। कोचवान बोले कि ऐसे वक्त तो बग्घी का पांच रूबल किराया भी कम होगा। लेकिन आखिर वे तीन रूबल पर मान गये। चार बजे से कुछ ही पहले नौजवान जब किराये की बग्घी लेकर प्रोल्दोनीमोव के यहां पहुंचा तो पता चला कि उन्होंने बहुत पहले ही अपना फैसला बदल लिया था। बात यह थी कि इवान इल्यीच, जो अभी तक होश में नहीं आया था, इतना अधिक बीमार हो गया था, ऐसे कराह और छटपटा रहा था कि ऐसी हालत में उसे बग्घी में बिठाकर घर पहुंचाना बिल्कुल असम्भव [illegible] तक कि खतरनाक भी था। "और अब, इसका क्या नतीजा होगा?" पूरी तरह से हिम्मत हार चुके प्रोल्दोनीमोव ने कहा। तो क्या किया जाये? [illegible] नया सवाल सामने आ गया। अगर बीमार को घर में ही रखना है, तो उसे किस जगह लिटाया जाये? [illegible] घर में केवल दो पलंग थे — एक बहुत बड़ा, दोहरा पलंग, जिस [illegible] हाल ही में [illegible] थे, दूसरा, सादा पलंग भी, जो [illegible] का बना हुआ था, जो [illegible] के [illegible] के लिये [illegible] था। घर के [illegible]

[illegible]

से भरे गद्दों पर सटकर सोती थी। ये गद्दे बहुत खराब हो चुके थे, इनसे दुर्गन्ध आती थी यानी फेंकने लायक थे और इनकी भी कमी थी। तो बीमार को कहां लिटाया जाये? रोयोंवाला गद्दा तो शायद कोई मिल ही जाता, और कुछ नही तो किसी के नीचे से उसे निकाला जा सकता था, लेकिन उसे कहा और किस पर बिछाया जाये? रोगी के लिये बिस्तर की व्यवस्था हॉल मे ही करनी ठीक थी, क्योंकि यह कमरा परिवार के दूसरे लोगो से दूर था और उसका अलग दरवाजा भी था। मगर गद्दे को बिछाया किस पर जाये? क्या कुर्सियों पर? सर्वविदित है कि कुर्सियो पर केवल छात्रो के लिये ही तब सोने की व्यवस्था की जाती थी जब वे शनिवार और इतवार के लिये घर आते थे। इवान इल्यीच जैसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के लिये ऐसा प्रबन्ध करना बहुत अपमानजनक होता। अगले दिन अपने को कुर्सियो पर पाकर उसने क्या कहा होता? प्योत्दोनीमोव तो यह सुनने को भी तैयार नही था। बस, एक ही रास्ता रह गया था – उसे नवदम्पत्ति के पलग पर ले जाया जाये। जैसा कि हम कह चुके है, यह पलग भोजन-कक्ष के निकट छोटे कमरे मे बिछाया गया था। उस पर नया, दोहरा गद्दा था, जिस पर अभी तक कोई नही सोया था, साफ चादरे बिछी थी, मलमल के झालरवाले गिलाफ चढ़े गुलाबी रग के चार मृती तकिये रखे थे। बढ़िया सजावटवाली गुलाबी रग की रेशमी रजाई थी। ऊपर लटक रहे सुनहरे छल्ले मे से मलमल के परदे नीचे लटके हुए थे। थोड़े मे यह कि सब कुछ अच्छे ढग का था और इस कमरे मे आ चुके लगभग सभी मेहमानो ने इस प्रबन्ध की प्रशसा की थी। दुलहन को प्योत्दोनीमोव तो बेशक फूटी आंखो नही सुहाता था, फिर भी वह शादी की शाम के दौरान कई बार चुपके-चुपके और दबे पाव इस कमरे को देखने आ चुकी थी। जब उसे यह पता चला कि लगभग हैजे जैसे किसी रोग के इस रोगी को उनके पलग पर सुलाना चाहते है तो यह कल्पना की जा सकती है कि उसे कितना गुस्सा आया होगा, कितनी झल्लाहट हुई होगी! दुलहन की मा ने उसका पक्ष लिया, भला-बुरा कहा, यह धमकी दी कि अगले दिन ही वह पति से इसकी शिकायत करेगी, लेकिन प्योत्दोनीमोव ने झुकने से साफ इन्कार कर दिया और अपनी बात मनवाकर रहा। इवान इल्यीच को इस पलग पर लाया गया और नवदम्पत्ति के लिये हॉल मे कुर्सियो पर बिस्तर

"किसी दूसरे समय मैं खुशी से," वह बुदबुदाया, "लेकिन इस वक्त   सच कहता हू, मैं माफी चाहता हू..."

और वह अपनी टोपी लेकर झटपट यहां से भाग गया। केवल दयालु हृदयवाला वह नौजवान, जिसने स्वप्न-पुस्तक की चर्चा की थी, कुछ काम आया और सो भी बहुत नहीं। प्सेल्दोनीमोव की मुसीबतो के लिये दिल से हमदर्दी महसूस करते हुए वही सबके बाद रुका रह गया था। आखिर प्सेल्दोनीमोव, उसकी मां और नौजवान ने सलाह-मशविरा करके यह तय किया कि डाक्टर को बुलाने के बजाय बग्घी लाना तथा रोगी को उसके घर पहुचाना कही ज्यादा अच्छा होगा और जब तक बग्घी आये, तब तक घरेलू इलाज आजमाये जायें यानी उसकी कनपटियो और सिर को ठण्डे पानी से तर किया जाये, सिर पर बर्फ रखी जाये, आदि। प्सेल्दोनीमोव की मा ने यह सब करने की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली। नौजवान बग्घी की तलाश मे दौड गया। चूकि इस वक्त पीटर्सबर्ग स्तोरोना मे बग्घी तो क्या, मामूली घोडा-गाडी का भी नाम-निशान नही था, इसलिये वह शहर के दूरवाले इलाके मे पहुचा और वहा उसने कोचवानों को जगाया। सौदेबाज़ी होने लगी, कोचवान बोले कि ऐसे वक्त तो बग्घी का पाच रूबल किराया भी कम होगा। लेकिन आखिर वे तीन रूबल पर मान गये। चार बजने के कुछ ही पहले नौजवान जब किराये की बग्घी लेकर प्सेल्दोनीमोव के यहा पहुंचा तो पता चला कि उन्होने बहुत पहले ही अपना फ़ैसला बदल लिया था। बात यह थी कि इवान इल्यीच, जो अभी तक होश मे नही आया था, इतना अधिक बीमार हो गया था, ऐसे कराहता और छटपटाता था कि ऐसी हालत मे उसे बग्घी मे लिटाकर घर पहुचाना बिल्कुल असम्भव, यहा तक कि खतरनाक भी था। "कौन जाने, इसका क्या नतीजा हो?" पूरी तरह से हिम्मत हार चुके प्सेल्दोनीमोव ने कहा। तो क्या किया जाये? एक नया सवाल सामने आ गया। अगर बीमार को घर मे ही रखना है, तो उसे किस जगह लिटाया जाये? सारे घर में केवल दो पलग थे—एक बहुत बडा, दोहरा पलग, जिस पर बूढे म्लेकोपितायेव दम्पत्ति सोते थे, दूसरा, नया पलंग भी, जो अखरोट की लकडी का बना हुआ था, दो व्यक्तियों के सोने लायक था और नवदम्पति के लिये खरीदा गया था। घर के बाकी सभी लोग या यों कहना ज्यादा अच्छा होगा सभी औरतें फर्श पर सोती

मगा दिया गया। दुलहन ठुनकती रही, वह गुस्से में विकोटिया बाटना चाहती थी, मगर बात न मानने की हिम्मत नहीं कर सकी। वह बाप के डंडे से अच्छी तरह परिचित थी और जानती थी कि वह अगले दिन अवश्य ही पूरी जवाबतलबी करेगा। उसे तसल्ली देने के लिये गुलाबी रजाई और मलमल के गिलाफोंवाले तकिये हॉल में ला दिये गये। इसी क्षण नौजवान बग्घी लेकर आ गया और यह मालूम होने पर कि उसकी जरूरत नहीं रही, उसे ठण्डे पसीने आ गये। बग्घी का किराया उसी के मत्थे पड़ रहा था और उसके पास तो दस कोपेक का सिक्का भी कभी नहीं रहा था। प्सेल्दोनीमोव ने एलान कर दिया कि उसके पास तो एक पैसा भी नहीं है। कोचवान को समझाने-बुझाने की कोशिश की गयी। लेकिन वह शोर मचाने, यहा तक कि झिलमिलियों को पीटने लगा। इस किस्से का क्या अन्त हुआ, सविस्तार मुझे मालूम नहीं। यही लगता है कि नौजवान बन्धक बनकर उसी बग्घी में चौथी रोज्देस्तवेन्स्काया सड़क पर गया जहा वह अपने परिचितों के पास रात बिता रहे एक विद्यार्थी को जगाकर कुछ आशा करते हुए यह मालूम करना चाहता था कि उसके पैसे हैं या नहीं ? अकेले रह गये नवदम्पत्ति को जब हॉल में बन्द किया गया तो सुबह के चार बजे से अधिक का समय हो चुका था। रोगी की देख-भाल के लिये प्सेल्दोनीमोव की मा उसके पलग के पास रह गयी। वह फर्श पर दरी बिछाकर उसके पास लेट गयी और अपना पुराना-सा फर-कोट उसने ओढ़ लिया। लेकिन वह सो नहीं पायी, क्योंकि उसे लगातार उठना पड़ता था— इवान इल्यीच का पेट बुरी तरह से चल निकला था। प्सेल्दोनीमोव की साहसी और दयालु मा ने खुद ही इवान इल्यीच के सभी कपड़े उतारे, बेटे की तरह उसकी सेवा-सुश्रुषा करती और रात भर बरामदे को लाघकर सोने के कमरे से जरूरी बर्तन लाती और उन्हें बाहर ले जाती रही। लेकिन इस रात की मुसीबतों का यही अन्त नहीं हुआ।

नवदम्पति को हॉल में बन्द किये हुए अभी दस मिनट भी नहीं बीते थे कि अचानक जोर की चीख सुनाई दी, खुशी की चीख नहीं, बल्कि किसी अनिष्ट की सूचना देनेवाली। इसके फौरन बाद शोर, मानो कुर्सियों के गिरने-चिटकने की आवाज सुनाई दी और आन की

आन मे इस कमरे मे, जहा अभी तक अन्धेरा था, सभी तरह के रात के कपडे पहने डरी-सहमी और चीखती हुई औरतो की भीड घुस आई। ये औरते थी – दुलहन की मा, दुलहन की बडी बहन जो इस वक्त अपने बीमार बच्चो को भी छोड आई थी, दुलहन की तीन बूआये जिनमे टूटी पसलीवाली भी शामिल थी। बावर्चिन और किस्से-कहानिया सुनानेवाली जर्मन औरत भी आ गयी थी जिसके नीचे से नवदम्पति के लिये उसका निजी गद्दा, जो घर मे सबसे अच्छा था और उसकी एकमात्र सम्पत्ति था, जबर्दस्ती निकाल लिया गया था। ये सभी आदर के योग्य और चतुर नारिया अदम्य जिज्ञासा के कारण पिछले पन्द्रह मिनट से रसोईघर से निकलकर दबे पाव बरामदे को लाघती और हॉल के दरवाजे पर कान लगाकर आहट लेती रही थी। इसी बीच किसी ने झटपट मोमबत्ती जला दी और सबने यह अजीब दृश्य देखा। दो व्यक्तियो का वजन सहने मे असमर्थ और चौडे गद्दे को केवल कोनो पर ही थामे हुए कुर्सिया अपनी जगह से खिसक गयी थी और गद्दा उनके बीच फर्श पर गिर गया था। दुलहन गुस्से से ठुनक रही थी। इस बार तो वह पूरी तरह से जल-भुन गयी थी। नैतिक रूप से आहत प्सेल्दोनीमोव रगे हाथो पकडे गये अपराधी की तरह खडा था। उसने तो अपनी सफाई भी पेश करने की कोशिश नही की। सभी ओर से आह-ओह और हाय-वाय सुनायी दे रही थी। यह शोर सुनकर प्सेल्दोनीमोव की मा भी भागी आयी, लेकिन इस बार दुलहन की मा ने पूरी तरह से मैदान मार लिया। शुरू मे वह प्सेल्दोनीमोव की कुछ अजीब और अनुचित प्रकार की भर्त्सना करते हुए यह कहती रही – "इसके बाद भी तुम अपने को पति कहोगे? ऐसी बेइज्जती के बाद भी तुम अपने को किसी लायक मानोगे?" आदि, आदि और इसके पश्चात बेटी का हाथ पकडकर उसे अपने साथ ले गयी और अगले दिन गुस्सैल पिता के सामने, जो पूरा विवरण पेश करने की माग करेगा, जवाब देने की जिम्मेदारी भी उसने अपने ऊपर ले ली। उसके पीछे-पीछे बाकी सब औरते भी आह-ओह करती और सिर हिलाती हुई बाहर चली गयी। प्सेल्दोनीमोव की मा ही उसके पास रह गयी और उसने उसे तसल्ली देने की कोशिश की। लेकिन उसने उसे उसी वक्त खदेड दिया।

वह तसल्ली नही चाहता था। नगे पाव और सोने के जरूरी

कपड़े पहने हुए वह सोफे पर आ बैठा और बहुत ही उदासीभरे विचारों में डूब गया। उसके दिमाग में विचार गड्डमड्ड हो रहे थे, उलझ-उलझ रहे थे। कभी-कभी वह मानो यन्त्रवत् कमरे में इधर-उधर नज़र दौड़ाता जहा कुछ ही समय पहले नाचनेवाले हो-हल्ला मचा रहे थे और हवा मे अभी तक सिगरेटो का धुआ बसा हुआ था। कही-कही पर भीगे और गन्दे फर्श पर अभी तक सिगरेटो के टोंटे और टाफियो के कागज पडे थे। सुहाग रात की फर्श पर पडी टूटी-फूटी सेज और उल्टी हुई कुर्सिया मधुरतम और विश्वसनीय सासारिक आशाओ तथा सपनो के मटियामेट होने की गवाही दे रही थी। लगभग एक घण्टे तक वह इसी तरह बैठा रहा। बेहद परेशान करनेवाले ख्याल, जैसे कि दफ्तर में अब उसका क्या होगा? — उसके दिमाग मे उमडे आ रहे थे। बहुत व्यथित होते हुए वह यह स्वीकार कर रहा था कि चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, उसे अपनी नौकरी बदलनी चाहिये और आज रात को जो कुछ हुआ था, उसके बाद उसका इसी दफ्तर में काम करना असम्भव था। म्लेकोपितायेव भी उसके दिमाग मे आ रहा था जो शायद अगले ही दिन उसकी विनम्रता की जाच करने के लिये उससे फिर 'कज़ाचोक' नाच नचवायेगा। उसे इस बात की चेतना भी हो रही थी कि म्लेको-पितायेव ने बेशक शादी के दिन के लिये पचास रूबल दे दिये थे जो आखिरी कोपेक तक खर्च हो गये थे, उसने दहेज के चार सौ रूबल अभी तक नही दिये थे, उनका ज़िक्र तक नही किया था। हा, और मकान की रजिस्टरी भी अभी तक उसके नाम नही हुई थी। उसने अपनी बीवी के बारे में भी सोचा जो उसके जीवन की सबसे मुश्किल घड़ी मे उसका साथ छोड गयी थी। उसे उस लम्बे क़दवाले फौजी अफसर का भी ध्यान आया जिसने एक घुटना टेककर उसकी बीवी को नाचने के लिये आमन्त्रित किया था। यह चीज उसकी नज़र से छिपी नही रह सकी थी। उसे वे सात शैतान भी याद आये जो उसकी बीवी के पिता के कथनानुसार उसके दिमाग में घुसे बैठे हैं और जिन्हे निकालने के लिये उसके बाप ने उसे देने को डंडा तैयार करवाया था... बेशक वह अपने भीतर बहुत कुछ सहन करने की शक्ति अनुभव करता था, मगर किस्मत कुछ ऐसे अजीब-अजीब रग दिखा रही थी कि उसे अपनी इस शक्ति के बारे मे भी सन्देह हो सकता था।

प्स्लेदोनीमोव इसी तरह के विचारों से दुखी हो रहा था। इसी

बीच मोमबत्ती का आखिरी हिस्सा जलता जा रहा था। उसका हिलता-डुलता प्रकाश प्सेल्दोनीमोव की पार्श्वाकृति पर पड रहा था और उसे बृहदाकार मे दीवार पर प्रतिबिम्बित कर रहा था – आगे को बढी हुई गर्दन, हुकदार नाक और बालो के दो गुच्छे जिनमे से एक उसके माथे पर लहरा रहा था और दूसरा गुद्दी पर। आखिर जब सुबह की ताज़गी कमरे मे आई तो वह सिहरकर और मानसिक दृष्टि से निर्जीव-सा होकर उठा, लडखडाकर कुर्सियो के बीच पडे हुए गद्दे तक गया और कुछ भी ठीक-ठाक किये बिना, मोमबत्ती के आखिरी टुकडे को बुझाये बिना, यहा तक कि सिर के नीचे तकिया तक रखे बिना रेगते हुए बिस्तर पर जा गिरा और मुर्दे की तरह ऐसी गहरी नीद सो गया, जैसी नीद शायद उस व्यक्ति को आती है जिसे अगली सुबह सबके सामने किसी चौक मे कोडे लगाना निश्चित होता है।

दूसरी ओर उस यातनापूर्ण रात की भला क्या तुलना हो सकती थी जो इवान इल्यीच ने किस्मत के मारे प्सेल्दोनीमोव की सुहाग-सेज पर बितायी। कुछ समय तक तो सिर दर्द, उलटियो और इसी तरह के बहुत ही अप्रिय अन्य कष्टो के दौरो ने उसे क्षण भर को चैन नही लेने दिया। उसने नरक जैसी यातनाये भोगी। उसकी चेतना, जो कभी-कभार थोडी-सी देर को ही लौटती, उसके सामने ऐसे भयानक दृश्य, ऐसे मनहूस और घिनौने चित्र प्रस्तुत करती कि उसका सचेत न होना ही कहीं बेहतर होता। वैसे उसके दिमाग मे अभी तक सब कुछ गड्डमड्ड हुआ पडा था। मिसाल के तौर पर वह प्सेल्दोनीमोव की मा को पहचान रहा था, उसकी इस प्रकार की स्नेहपूर्ण बातो को सुन रहा था – "धीरज से काम लो प्यारे, धीरज से, सब ठीक हो जायेगा", उसे पहचान रहा था, मगर अपने निकट उसकी उपस्थिति का कोई तर्कसगत स्पष्टीकरण नही ढूढ पा रहा था। बडी भयानक-भयानक छायाये-सी उसके सामने उभरती – सबसे ज्यादा तो सेम्योन इवानोविच उसके सम्मुख आता, मगर बहुत ध्यान से देखने पर उसने पाया कि यह तो सेम्योन इवानोविच है ही नही, बल्कि प्सेल्दोनीमोव की नाक है। स्वतन्त्र चित्रकार, फौजी अफसर और गाल पर रूमाल बाधे बुढिया को भी

उसे झलक मिली। सिर के ऊपर लटकता हुआ सुनहरे रंग का छल्ला, जिसके साथ परदे लटक रहे थे, उसका सबसे अधिक ध्यान आकर्षित कर रहा था। मोमबत्ती के मद्धिम प्रकाश में वह इस छल्ले को स्पष्ट रूप में देख रहा था और मन ही मन अपने से पूछता था कि यह छल्ला किसलिये है, यहां क्यों है, इसका क्या अर्थ है? उसने बुढ़िया से कई बार इसके बारे में पूछा, किन्तु शायद वह नहीं कहा जो कहना चाहता था और उसके बेहद कोशिश करने के बावजूद बुढ़िया भी शायद उसकी बात को ठीक तरह से नहीं समझ पायी। आखिर सुबह होते-होते बीमारी के दौरे खत्म हो गये और वह सपनों के बिना, गहरी, बहुत गहरी नींद सो गया। वह कोई एक घण्टे तक सोया रहा और जब जागा तो उसकी चेतना लगभग पूरी तरह से लौट आई थी। दर्द के मारे उसका सिर फटा जा रहा था और मुंह में तथा जबान पर, जो सख्त हो गयी थी, उसे बेहद बुरा जायका महसूस हो रहा था। वह उठकर बिस्तर पर बैठ गया, उसने इधर-उधर देखा और सोच में डूब गया। झिलमिलियों की दरारों में से पतली रेखा के रूप में छन रहे दिन का उजाला दीवार पर कांप रहा था। सुबह के लगभग सात बजे का वक्त था। लेकिन इवान इल्यीच को जब पिछली रात की घटनाओं की चेतना हुई, जब उसे सब कुछ याद आया, भोज की मेज पर अपने सभी कारनामों, अपना प्रभाव पैदा करने के व्यर्थ प्रयास और अपने भाषण का स्मरण हुआ, जब भयानक स्पष्टता के साथ एकबारगी उसे यह एहसास हुआ कि इस सबका क्या नतीजा हो सकता है, उसके बारे में क्या कुछ कहा और सोचा जायेगा, जब उसने इधर-उधर नज़र दौड़ायी और आखिर यह देखा कि अपने मातहत की सुहाग-सेज की उसने कैसी बुरी हालत, कैसी दुर्गति कर दी है,- ओह, तब तो शर्म के मारे उसका डूब मरने को मन होने लगा, उसके दिल में ऐसी टीस उठी कि वह चीखे बिना न रह सका, उसने हाथों में मुंह ढांप लिया और हताश होकर तकिये पर गिर पड़ा। एक मिनट बाद वह उछलकर बिस्तर से उठा। उसे अपने निकट ही कुर्सी पर तह से रखे और साफ किये हुए अपने कपड़े दिखाई दिये, उसने उन्हें उठा लिया और बहुत जल्दी-जल्दी, किसी कारण बेहद डरते और इधर-उधर देखते हुए वह उन्हें पहनने लगा। वहीं एक दूसरी कुर्सी पर उसका फर-कोट, टोपी और टोपी में पीले दस्ताने भी थे। वह चुपके से खिसक

जाना चाहता था। किन्तु अचानक दरवाज़ा खुला और मिट्टी का जल-पात्र और चिलमची लिये हुए प्मेल्दोनीमोव की मा भीतर आई। उसके कधे पर तौलिया था। उसने चिलमची रख दी और कोई फालतू बात किये बिना यह एलान कर दिया कि हाथ-मुह तो ज़रूर ही धोना होगा।

"भला यह कैसे हो सकता है, हुजूर हाथ-मुह धोये बिना आप कैसे जा सकते है "

इस क्षण इवान इल्यीच ने यह महसूस किया कि अगर सारी दुनिया मे कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके सामने अब उसकी आखे झुके बिना रह सकती है और जिसकी उपस्थिति मे वह भय-मुक्त रह सकता है तो वह व्यक्ति यह बुढिया है। उसने हाथ-मुह धोया। बाद मे उसके जीवन की कठिन घडियो मे, आत्मा की अन्य धिक्कारो के साथ साथ उसे जागृति का यह पूरा वातावरण याद आता रहा – मिट्टी का जल-पात्र और पानी से भरी हुई चीनी मिट्टी की चिलमची जिसमे अभी भी बर्फ के टुकडे तैर रहे थे, गुलाबी कागज मे लिपटा हुआ अण्डाकार साबुन जिस पर कुछ अक्षर अकित थे और जिसकी शायद पन्द्रह कोपेक कीमत थी और जो सम्भवत नवदम्पत्ति के लिये खरीदा गया था, किन्तु जिसका इवान इल्यीच ने ही सबसे पहले उपयोग किया था और बाये कधे पर लिनन का तौलिया डाले हुए बुढिया। ठण्डे पानी ने उसे ताज़गी दी, उसने हाथ-मुह पोछा और एक भी शब्द कहे बिना, अपनी इस नर्स को धन्यवाद तक दिये बिना टोपी और प्मेल्दोनीमोव की मा द्वारा अपनी तरफ बढाये गये ओवरकोट को झपट लिया तथा तेजी से बरामदे और रसोईघर को लाघ गया जहा बिल्ली म्याऊ-म्याऊ कर रही थी और बावर्चिन अपने गद्दे से उठकर उसे बडी जिज्ञासा से बाहर जाते हुए देखती रह गयी थी। वह भागकर अहाते मे और फिर सडक पर पहुचा तथा पास से गुज़रती हुई घोडा गाडी की तरफ लपका। पालेवाली सुबह थी, ठण्डा पीला कुहासा सभी घरो और सभी चीजो को अपनी चादर मे लपेटे था। इवान इल्यीच ने ओवरकोट का कालर ऊपर उठा लिया। उसे लग रहा था कि सभी उसकी तरफ देख रहे है, कि सभी उसे जानते है, सभी उसे पहचान रहे है

इवान इल्यीच आठ दिन तक घर से बाहर नहीं निकला और दफ़्तर नहीं गया। वह बीमार था, बहुत बीमार था, किन्तु उसकी बीमारी शारीरिक से कहीं अधिक नैतिक थी। इन आठ दिनों के दौरान उसने नरक की यातना अनुभव की और शायद दूसरी दुनिया में उसके हिसाब में उसकी गिनती की गयी थी। ऐसे क्षण भी आये जब उसने साधु बनकर धर्म-मठ में जाने की सोची। हां, ऐसे क्षण भी आये। इस सम्बन्ध में उसकी कल्पना ने विशेष रूप से उड़ानें भरनी आरम्भ कर दीं। वह धरती के नीचे धीमा-धीमा गान सुनता, खुली कब्र देखता, किसी एकान्त कोठरी, जंगल और गुफा में अपने वास की कल्पना करता। किन्तु सम्भलते ही वह लगभग उसी क्षण यह स्वीकार कर लेता कि यह सब बकवास है, अतिशयोक्ति है और तब उसे इस तरह की बकवास के लिये शर्म आती। इसके बाद उसके existence manquée से सम्बन्धित नैतिक यातनायें आरम्भ हुईं। फिर से शर्म उसकी आत्मा में सिर उठाती, पूरी तरह उसे दबोच लेती, उसे भुलसती-जलाती और घाव पर नमक छिड़कती। तरह-तरह के चित्रों की कल्पना करते हुए वह कांप उठता। लोग उसके बारे में क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे, कैसे वह दफ़्तर में अपना मुंह दिखायेगा, साल भर, दस साल तक, जिन्दगी भर उसके बारे में कैसी बुरी बातें होती रहेंगी। उसका यह किस्सा उसकी भावी पीढ़ी तक पहुंच जायेगा। कभी-कभी वह इतना घबरा जाता कि उसी क्षण सेम्योन इवानोविच के पास जाना, उससे माफ़ी मांगना और दोस्ती करना चाहता। वह अपनी तो कोई सफ़ाई भी पेश न करता, अपनी पूरी तरह भर्त्सना करता – अपने लिये उसे कोई सफ़ाई न मिलती और ऐसी सफ़ाई की बात सोचने से भी शर्म आती।

वह यह भी सोचता कि फ़ौरन अपना त्याग-पत्र दे दे और इस तरह एकान्त में अपने को मानवजाति के कल्याण में लगा दे। कम से कम इतना तो जरूरी था कि सभी पुराने परिचितों-मित्रों की जगह नये ढूंढे जायें और सो भी इस तरह कि अपने बारे में स्मृतियों का चिह्न , म रहे। फिर उसके दिमाग़ में ख्याल आता कि यह भी मातहतों के साथ कुछ अधिक कड़ाई से पेश आने पर । अभी भी ठीक-ठाक किया जा सकता है। ऐसा सोचने न में आशा का संचार होने लगता और वह खिल उठता।

आखिर सभी तरह के सन्देहों और यातनाओं के आठ दिन बीतने पर उसने महसूस किया कि वह अब इस दुविधा को और बर्दाश्त नहीं कर सकता और un beau matin* को दफ्तर चला गया।

पहले, जब वह निराशा से घिरा हुआ घर पर बैठा रहता था तो उसने अनेक बार यह कल्पना की थी कि कैसे वह अपने दफ्तर में प्रवेश करेगा। तब भयभीत होते हुए उसे यह विश्वास हो जाता था कि अवश्य ही अपने आस-पास अप्रिय खुसर-फुसर सुनाई देगी, अप्रिय भावना व्यक्त करनेवाले चेहरे दिखाई देंगे, दुर्भावनापूर्ण मुस्कानें देखने को मिलेंगी। किन्तु जब वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हुआ तो उसे कितनी हैरानी हुई। बड़े आदर-सम्मान से लोग उससे मिले, मातहतों ने झुक-झुककर उसका अभिवादन किया। सभी लोग गम्भीर थे सभी अपने कामों में लगे हुए थे। जब वह अपने निजी कक्ष में गया तो उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था।

इवान इल्यीच फौरन और बहुत गम्भीरता से अपने काम में जुट गया, उसने कुछ रिपोर्टें और विवरण सुने और उनके बारे में अपने निर्णय दिये। वह अनुभव कर रहा था कि पहले कभी भी उसने ऐसे अच्छे ढंग से तर्क-वितर्क नहीं किया था ऐसी समझदारी और व्यावहारिकता से मामले तय नहीं किये थे जैसे उस सुबह को। उसने देखा कि लोग उससे खुश हैं, कि उसकी प्रशंसा करते हैं उसके प्रति आदर दिखाते हैं। बेहद वहमी आदमी भी कोई बुरी बात नहीं देख सकता था। सब कुछ बहुत बढ़िया ढंग से हो रहा था।

आखिर अकीम पेत्रोविच कुछ कागज लेकर उसके पास आया। उसके आने पर इवान इल्यीच को लगा मानो उसके दिल पर छुरी-सी चल गयी है, मगर ऐसा क्षण भर को हुआ। वह अकीम पेत्रोविच के साथ काम में जुट गया, बड़े महत्त्वपूर्ण ढंग से उसने विचार-विमर्श किया, उसे यह बताया कि कैसे, क्या करना चाहिये सब कुछ स्पष्ट कर दिया। उसने केवल यही महसूस किया कि वह अकीम पेत्रोविच की ओर अधिक देर तक देखने से घबराता है या यों कहना अधिक ठीक होगा कि अकीम पेत्रोविच उसकी ओर देखने में झिझकता था। तो अकीम पेत्रोविच ने काम समाप्त किया और कागज समेटने लगा।

* एक सुहावनी सुबह। (फ्रांसीसी)

"एक अनुरोध है, हुजूर," अकीम पेत्रोविच ने यथासम्भव कामकाजी ढंग से कहना शुरू किया, "क्लर्क प्सेल्दोनीमोव दूसरे विभाग मे अपनी तब्दीली करवाना चाहता है महामहिम सेम्योन इवानोविच शिपुलेंको ने वहा उसे नौकरी देने का वादा किया है। हुजूर, वह आपसे प्रार्थना करता है कि कृपया इस मामले मे आप उसकी सहायता करें।"

"तो वह तब्दीली करवाना चाहता है," इवान इल्यीच ने कहा और यह महसूस किया कि उसके दिल पर से भारी बोझ हट गया है। उसने अकीम पेत्रोविच की तरफ देखा और इस क्षण इन दोनों की नजरें मिलीं।

'ठीक है, अपनी ओर से मैं कोशिश करूंगा," इवान इल्यीच ने जवाब दिया, "मैं इसके लिये तैयार हूं।"

अकीम पेत्रोविच तो स्पष्टत जल्दी से जल्दी खिसक जाना चाहता था। लेकिन इवान इल्यीच ने अचानक अपनी उदारता की भोंक में पूरी तरह से अपनी बात कहनी चाही। शायद वह फिर से अनुप्रेरित हो उठा था।

"उससे कह दीजिये," अपनी स्पष्ट दृष्टि अत्यधिक अर्थपूर्ण ढंग से अकीम पेत्रोविच पर केन्द्रित करते हुए उसने कहना शुरू किया, "प्सेल्दोनीमोव से कह दीजिये कि मेरे मन में उसके खिलाफ जरा भी मैल नहीं है, जरा भी नहीं! इसके विपरीत, जो कुछ हुआ था तो मैं वह सब भूल जाना चाहता हूं, सब भूल जाना चाहता हूं"

किन्तु इवान इल्यीच ने अकीम पेत्रोविच के अजीब व्यवहार से हैरान होकर अचानक अपनी बात अधूरी छोड़ दी। न जाने क्यों, अकीम पेत्रोविच ने अपने को समझदार व्यक्ति के बजाय सहसा बहुत बड़ा मूर्ख सिद्ध किया। इवान इल्यीच की बात अन्त तक सुनने के बजाय वह अचानक बुरी तरह से लज्जारुण हो गया, जल्दी-जल्दी, यहां तक कि अशिष्ट ढंग से तनिक सिर झुकाने और साथ ही दरवाजे की तरफ पीछे हटने लगा। उसकी लज्जा-युक्त सारी आकृति कह रही थी कि वह जमीन में धंस जाना चाहता है या और ठीक से कहा जाये तो जल्दी से जल्दी अपनी मेज पर लौट जाने को बेकरार है। अकेला रह जाने पर इवान इल्यीच परेशान होता हुआ कुर्सी से उठा। उसने आईने में नजर डाली, मगर अपनी सूरत को नहीं देखा।

"नहीं, मस्ती, सिर्फ मस्ती और मस्ती!" उसने अनजाने ही अपने से फुसफुसाकर कहा और अचानक उसके सारे चेहरे पर लाली दौड़ गयी। सहसा उसे इतनी शर्म आयी, उसका मन इतना अधिक व्यथित हो उठा जितना कि आठ दिनों की बीमारी के सबसे असह्य क्षणों में भी नहीं हुआ था। "मैं निभा नहीं सका!" उसने मन ही मन कहा और असहाय-सा धम से कुर्सी पर गिर गया।

विनीता

एक काल्पनिक कहानी

विनीता

एक काल्पनिक कहानी

लेखक की ओर से

अपने पाठकों से मैं क्षमा चाहता हूं कि इस बार सामान्य रूप में 'डायरी' छापने के बजाय मैं आपके सामने एक लम्बी कहानी प्रस्तुत कर रहा हूं। लेकिन महीने के अधिकतर समय मे मैं इसी कहानी में व्यस्त रहा हूं। खैर, जो भी हो, मैं पाठकों से अपने प्रति कुछ नर्मी दिखाने का अनुरोध करता हूं।

अब इस कहानी के बारे में। मैंने इसे "काल्पनिक" कहा है, जबकि खुद इसे अत्यधिक यथार्थवादी मानता हूं। किन्तु इसमे सचमुच कुछ काल्पनिक है, यानी इसकी रचना मे , और मैं पहले से ही इसका स्पष्टीकरण आवश्यक समझता हूं।

बात यों है कि यह न तो कहानी है और न ही इसे संस्मरणात्मक रचना कहा जा सकता है। आप एक ऐसे पति की कल्पना करें जिसकी बीवी ने कुछ ही घण्टे पहले खिडकी से कूदकर आत्महत्या की है और उसकी लाश उसके सामने मेज़ पर पडी हुई है। वह एकदम से चकराया हुआ है और अभी तक अपने विचारों को व्यवस्थित नही कर पाया है। वह कमरों में चक्कर काट रहा है, इस घटना पर सोच-विचार कर रहा है और "अपने विचारों को एक बिन्दु पर केन्द्रित करने के लिये" यत्नशील है। इस बात का उल्लेख भी जरूरी है कि यह व्यक्ति अपने स्वभाव से ही विषादोन्मुख और उन लोगों मे से है जो अपने आपमे बाते करते हैं। तो वह अपने आपसे बातें कर रहा है, सारी घटना को दोहरा रहा है, उसे अपने लिये स्पष्ट कर रहा है। प्रकट होनेवाली सुसंगतता के बावजूद वह तर्क और भावना, दोनों ही दृष्टियों से अक्सर खुद ही अपनी बात का खण्डन करता है। वह अपनी सफाई देता है, पत्नी को दोषी ठहराता है और असम्बद्ध स्पष्टीकरणों के चक्कर में

पड जाता है—यहा मन और विचारो का रुखापन भी सामने आता है तथा गहरी भावनाये भी प्रकट होती है। धीरे-धीरे वह वास्तव मे ही सारे मामले को स्पष्ट कर लेता है और "विचारो को एक बिन्दु पर" सकेन्द्रित करने मे सफल हो जाता है। कुछ स्मृतियो को सजीव करने मे वह अकाट्य सत्य पर पहुच जाता है और सत्य बरबस उसके मन और मस्तिष्क को उदात्तता प्रदान करता है। अन्त तक पहुचते न पहुचते अटपटे आरम्भ की तुलना मे कहानी का अन्दाज भी बदल जाता है। काफी स्पष्ट और सुनिश्चित रूप मे सचाई उस बदकिस्मत के सामने आ जाती है। कम से कम खुद उसके लिये तो ऐसा ही होता है।

तो यह है विषय-वस्तु की बात। कहानी कई घण्टो तक चलती रहती है, रुक-रुक कर, टुकडो मे और असम्बद्ध रूप मे। कभी वह अपने आपमे बाते करता है तो कभी अदृश्य श्रोता मानो किसी निर्णायक को सम्बोधित करता है। वास्तविक जीवन मे हमेशा ऐसा ही तो होता है। यदि कोई आशुलिपिक उसे सुन पाता और यह सब लिख लेता तो मेरी तुलना मे उसका वर्णन कही अधिक ऊबड-खाबड और कम परिष्कृत होता, किन्तु मुझे लगता है कि मनोवैज्ञानिक क्रम मेरे जैसा ही रहता। आशुलिपिक के बारे मे इस कल्पना को (जिसकी टिप्पणियो को मैने कहानी का रूप दिया है) ही मै अपनी कहानी मे "काल्पनिक कहता हू। वैसे इस तरह की चीज साहित्य मे पहले भी आ चुकी है। उदाहरण के लिये विक्टर ह्यूगो ने अपनी श्रेष्ठतम रचना 'मृत्यु-दण्ड पानेवाले का अन्तिम दिन' मे लगभग इसी शैली का उपयोग किया है और यद्यपि वहा किसी आशुलिपिक का उल्लेख नही है तथापि लेखक ने यह मानते हुए कि वह व्यक्ति जिसे मौत की सजा सुना दी गयी है, इस धरती पर न केवल अपने अन्तिम दिन बल्कि अन्तिम घण्टे, यहा तक कि अन्तिम क्षण मे भी टिप्पणिया लिखने मे समर्थ है (और उसके पास इसके लिये काफी वक्त भी है) इस तरह और भी अधिक अवास्तविकता का परिचय दिया है। किन्तु विक्टर ह्यूगो यदि इस कल्पना से काम न लेते तो उनकी यह रचना, उनकी सबसे यथार्थवादी और सच्ची रचना कभी न लिखी जाती।

पहला अध्याय

१

कौन था मैं और कौन थी वह

जब तक वह यहां है – तब तक तो सब ठीक है – हर क्षण मैं उसके पास आकर उसे देख लेता हूं, लेकिन कल वह इसे ले जायेंगे – तब मैं अकेला यहां क्या करूंगा ? इस वक्त तो वह बड़े कमरे में है, ताश खेलने की दो मेज़ों को जोड़कर उसे उस पर लिटा दिया गया है, किन्तु कल ताबूत तैयार हो जायेगा, सफ़ेद, सफ़ेद रेशम से मढ़ा हुआ मगर मैं भटक रहा हूं मैं लगातार इधर-उधर आ-जा रहा हूं और इस सारी घटना को अपने लिये स्पष्ट करना चाहता हूं। छः घण्टे हो गये हैं मुझे इसी कोशिश में, किन्तु अपने विचारों को एक बिन्दु पर सकेन्द्रित नहीं कर पा रहा हूं। बात यह है कि मैं लगातार इधर-उधर चक्कर लगाता जा रहा हूं, चक्कर लगाता जा रहा हूं, चक्कर लगाता जा रहा हूं और यह सब हुआ था ऐसे। मैं सिल-सिलेवार बयान करता हूं। (सिलसिलेवार !) महानुभावो, मैं लेखक-वेखक नहीं हूं और आप खुद भी यह देख रहे हैं, पर कोई बात नहीं। मैं वैसे वर्णन करूंगा जैसे स्वयं समझता हूं। किन्तु मेरी मुसीबत तो यही है कि मैं सब कुछ समझता हूं !

यदि आप जानना चाहते हैं यानी अगर शुरू से ही बात शुरू करें तो वह मेरे पास अपनी चीज़ें गिरवी रखने, सिर्फ इसीलिए आयी थी – अर्थात 'आवाज़' अखबार में अपने इस तरह के विज्ञापन के लिये पैसे दे सके कि वह शिक्षिका का काम चाहती है, कहीं जाने से भी उसे कोई आपत्ति नहीं होगी, ट्यूशन करने को तैयार है, आदि, आदि। यह बिल्कुल आरम्भ की बात है और, जाहिर है, मैं उसे दूसरों से किसी भिन्न रूप में नहीं देखता था। वह भी दूसरों की तरह आती और चली जाती। लेकिन बाद में मैं उसे दूसरों से अलग [illegible]

लगा। वह दुबली-पतली थी, सुनहरे बालो और औसत से जरा ऊचे कदवाली। मेरे साथ हमेशा अजीब ढग से पेश आती मानो घबरा रही हो (मेरे ख्याल मे सभी अजनबियो के साथ उसका ऐसा ही रवैया था और स्पष्ट है कि अगर चीज़े गिरवी रखकर ऋण देने का धन्धा करनेवाले के रूप मे नही, बल्कि एक आम आदमी के नाते, तो मैं भी उसके लिये औरो जैसा ही था)। वह पैसे मिलते ही मुडती और चली जाती। वह मुह से कभी एक शब्द भी न निकालती। दूसरे बहस करते, मिन्नत-समाजत और सौदेबाज़ी करते कि उन्हे कुछ अधिक पैसे दिये जाये, मगर यह कभी ऐसा न करती, जो दिया जाता, वही ले लेती मुझे लगता है कि मैं सब कुछ गडबड कर रहा हू अरे हा, सबसे पहले तो मुझे उसकी चीज़े हैरान करती थी – सोने के मुलम्मेवाले चादी के झुमके, बेहूदा-सा लाकेट – सस्ते से टूम-छल्ले। वह खुद भी यह जानती थी कि ये चीज़े कौडी मोल की हैं, लेकिन उसके चेहरे पर मुझे यह लिखा दिखाई देता कि उसके लिये ये बहुत मूल्यवान हैं। और वास्तव मे माता-पिता से उसे यही कुछ विरासत मे मिला था, जैसा कि मुझे बाद मे मालूम हुआ। सिर्फ एक बार ही मैंने उसकी चीज़ो पर व्यग्य करने की हिम्मत की। मेरा मतलब है, देखिये न, मैं कभी ऐसा नही करता हू, अपने रेहनदारो के साथ मैं सदा भलमन-साहत से पेश आता हू – नपे-तुले शब्द, शालीनता और कडाई। "कडाई, कडाई और कडाई।" किन्तु एक बार उसने क्या किया कि खरगोश के समूर के बचे-बचाये टुकडे (सच टुकडे ही) लेकर मेरे पास चली आयी – मुझसे चुप नही रहा गया और मैंने उससे कुछ कह दिया यानी कोई तीखी-चुभती बात। हे भगवान, वह कैसे लाल-पीली हो गयी! उसकी आखे नीली-नीली, बडी-बडी और स्वप्निल-सी थी, किन्तु वे कैसे धधक उठी! लेकिन मुह से एक भी शब्द नही कहा, अपने "टुकडे" लिये और बाहर चली गयी। उसी वक्त उसकी तरफ पहली बार मेरा विशेष ध्यान गया और मैंने इसके बारे मे कुछ सोचा यानी विशेष ढग से सोचा। हा – अपने मन पर पडी एक अन्य छाप की भी मुझे याद है यानी, अगर आप चाहे तो कह सकते हैं कि मुख्य छाप, सारी बात के सार की मुझे याद है – वह यह कि बहुत ही जवान है, मानो सिर्फ चौदह साल की हो। किन्तु वास्तव मे वह तब तीन महीने कम सोलह साल की थी। वैसे मैं यह नही कहना चाहता

... वह अगले दिन फिर आई। मुझे बाद मे मालूम हुआ कि वह यही टुकडे लेकर दोब्रोरावोव और मोज़ेर के यहा भी हो आई थी। किन्तु वे तो सोने के सिवा कुछ भी रेहन नही रखते और उन्होने तो सीधे मुह बात भी नही की। मैंने तो एक बार उसका बहुत मामूली-सा उत्कीर्णन रत्न भी गिरवी रख लिया था और बाद मे इस चीज़ पर विचार करके मुझे हैरानी हुई कि मैं खुद भी सोने और चादी के सिवा कुछ रेहन नही रखता हू, किन्तु उसमे मामूली-सा रत्न भी ले लिया। मुझे याद है कि इसके बारे मे यह दूसरा ख्याल था जो मेरे दिमाग में आया था।

इस बार यानी मोज़ेर के यहा से खाली हाथ लौटने पर वह कहरुवा का एक सिगार-केस मेरे पास गिरवी रखने को लायी। कोई खास अच्छी चीज़ नही थी यह, शौकीन लोगो के लिये महत्त्व रखती थी, मगर हमारे लिये बेकार थी, क्योकि हम तो सिर्फ सोना ही चाहते थे। चूकि वह पिछले दिन की बगावत के बाद आई थी, इसलिये मैं इसके साथ कड़ाई से पेश आया। मेरे लिये कड़ाई का मतलब है रुखाई। किन्तु दो रूबल देते हुए मैं अपने को वश मे नही रख पाया और तनिक झल्लाहट से यह कह दिया—"मैं तो केवल आपके लिये ऐसा कर रहा हू, मोज़ेर आपसे कभी ऐसी चीज़ न लेता।" आपके लिये शब्दो पर मैंने खास ज़ोर दिया और वह भी विशेष अर्थ में। मैं चिढ़ा हुआ था। आपके लिये शब्द सुनकर वह फिर से भड़क उठी, किन्तु चुप रही, उसने पैसे फेंके नहीं, ले लिये—तो इसे कहते हैं गरीबी! मगर कैसे आग-बबूला हो उठी थी! मैं समझ गया कि मैंने डक मार दिया है। और इसके चले जाने के बाद मैंने सहसा अपने आपसे पूछा—इस पर मेरी यह विजय दो रूबल के लायक है या नही? हा-हा-हा! मुझे याद है कि मैंने दो बार अपने से यही सवाल पूछा था—"दो रूबल के लायक है या नही? दो रूबल के लायक है या नही?" और हसते हुए मैंने अपने को यही जवाब दिया था कि हा, दो रूबल के लायक है। तब बहुत खुश हुआ था मैं। किन्तु इसमे दुर्भावना नही थी—मैंने विशेष उद्देश्य, खास इरादे से ऐसा किया था। मैं इसे आज़- चाहता था, क्योंकि मेरे दिमाग मे इसके बारे मे अचानक ... गये थे। इसके बारे मे यह मेरा तीसरा विशेष ख्याल

तो इसी वक्त से यह सब शुरू हुआ। ज़ाहिर है कि मैंने इसके बारे में इधर-उधर से चुपके-चुपके सब कुछ जानने का प्रयास किया और ख़ास बेसब्री से इसके आने का इन्तज़ार करने लगा। मैं पहले से ही अनुभव कर रहा था कि वह आयेगी। जब वह आयी तो मैं बहुत ही शिष्टता से उसके साथ प्यारी-प्यारी बातें करने लगा। आख़िर तो मेरी कुछ बुरी शिक्षा-दीक्षा नहीं हुई और मुझे तौर-तरीक़ा भी आता है। हुम। तभी तो मैंने यह भांपा कि वह दयालु और विनीता है। दयालु और विनीत लोग अधिक देर तक विरोध नहीं कर पाते और यद्यपि बहुत खुलते नहीं है, लेकिन बातचीत से मुह मोड लेना उनके बस की बात नहीं होती। वे इने-गिने शब्दों में उत्तर देते है, किन्तु उत्तर देते हैं और जितना अधिक आप पूछते हैं, उतना अधिक ही उनसे जवाब पाते है। मुख्य चीज़ यही है कि अगर आपको ऐसी जरूरत है, तो ख़ुद नहीं थकिये। ज़ाहिर है कि ख़ुद उसने मुझे तब कुछ नहीं बताया। यह तो बाद में ही 'आवाज़' समाचारपत्र और दूसरी सभी बातों के बारे में मैंने मालूम किया। उस समय वह बड़ी मुश्किल से विज्ञापन छपवा रही थी। स्पष्ट है कि शुरू में कुछ गर्वीले ढंग से – "शिक्षिका का काम चाहती हू, किसी दूसरी जगह पर जाने को तैयार हू, अपनी शर्तें लिफ़ाफ़े में बन्द करके भेजें," और बाद में – "सब कुछ के लिये सहमत हू, पढाने को, महिला-संगिनी बनने को, घर-गिरस्ती सम्भालने को, बीमार की तीमारदारी को, सिलाई करने को" आदि, आदि, जो सर्व-विदित है। ज़ाहिर है कि यह सब, कुछ-कुछ बदलकर प्रकाशित करवाया गया था और आख़िर पूरी तरह मायूस होने पर यह तक छपवा दिया – "वेतन के बिना, सिर्फ़ रोटी-कपड़े पर काम करने को तैयार हू।" नहीं, उसे नौकरी नहीं मिली! तब मैंने उसे आख़िरी बार आज़माने का फ़ैसला किया – मैंने अचानक उस दिन का 'आवाज़' अख़बार उठाया और यह विज्ञापन दिखाया – "पूरी तरह से यतीम एक युवती छोटे बच्चों की शिक्षिका की जगह चाहती है, ढलती उम्र के विधुर को तरजीह दी जायेगी। घर-गिरस्ती का बोझ भी हल्का कर सकती है।"

"देखती है न, यह आज सुबह प्रकाशित हुआ और सम्भवत शाम तक नौकरी मिल गयी। ऐसे विज्ञापन देना चाहिये।"

वह फिर से भड़क उठी, फिर आखें दहकने लगीं, मुड़ी और

उगी क्षण बनी गयी। मुझे यह बहुत अच्छा लगा। वैसे उस समय तक मुझे हर चीज का पूरा भरोसा हो गया था और किसी भी बात से नही डरता था – सिगार-केस तो और कोई गिरवी नही रखेगा। उसके पास तो सिगार-केस भी खत्म हो चुके थे। मेरा अनुमान ठीक निकला – तीन दिन बाद वह आई तो उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था, वह बहुत विह्वल थी – मैं समझ गया कि उसके साथ घर मे कोई बुरी बात हो गयी है और वास्तव मे कोई ऐसी बात हो भी गयी थी। मैं अभी बताऊगा कि क्या बात हुई थी, लेकिन पहले यह याद करना चाहता हू कि कैसे मैंने अपनी शान दिखायी थी और उसकी नजर मे ऊचा उठ गया था। मेरा अचानक ही ऐसा करने का इरादा बना। हुआ यह कि वह यह देव-प्रतिमा लेकर आई (ऐसा करने को मजबूर हुई). ओह, सुनिये तो, सुनिये तो! अब मैं ढग से यह बताऊगा वरना सब गडबडाता जा रहा था बात यह है कि अब मैं यह सब कुछ याद करना चाहता हू, हर छोटी से छोटी तफसील, हर छोटी से छोटी बात को। मैं अपने विचारो को एक बिन्दु पर सकेन्द्रित करना चाहता हूं, मगर कर नही पाता, ये छोटी-छोटी बाते, ये छुटपुट तफसीले

तो वह बच्चे के साथ पवित्र मरियम की देव-प्रतिमा लेकर आयी थी, घरेलू, पारिवारिक, पुरानी देव-प्रतिमा, सोने के मुलम्मेवाले चादी के चौखटे मे जड़ी हुई। कोई छ रूबल कीमत होगी इसकी। मैंने महसूस किया कि देव-प्रतिमा उसे बहुत प्यारी है, चौखटा उतारे बिना पूरी की पूरी प्रतिमा गिरवी रख रही है। मैंने उससे कहा कि चौखटा उतारकर गिरवी रख देना ज्यादा अच्छा होगा और देव-प्रतिमा घर ले जाइयेगा, क्योकि देव-प्रतिमा गिरवी रखना तो कुछ जंचता नही।

"क्या आपको ऐसा करने की मनाही है?"

"नही, मनाही तो नहीं, लेकिन मैंने सोचा कि शायद खुद आपको..."

"तो उतार लीजिये।"

"देखिये, ऐसा करते हैं कि मैं उसे उतारूंगा नही, बल्कि दूसरी देव-प्रतिमाओं के साथ वहा देव-दीप के नीचे (मैंने जब से दुकान खोली थी, देव-प्रतिमा के नीचे दीप जलता रहता था) इसे बक्स में रख दूगा और आपको दस रूबल दे दूंगा।"

"मुझे दस नही चाहिये, पाच दे दीजिये, मैं जरूर ही इसे छुडा लूगी।"

"दस नही चाहती? देव-प्रतिमा इतनी कीमत की होगी," मैंने आखो मे फिर से कौध देखकर कहा। वह चुप रही। मैंने उसे पाच रूबल दे दिये।

"दूसरो को तिरस्कार की दृष्टि से नही देखिये, मैं खुद भी ऐसे बुरे दिन देख चुका हू, इससे भी बुरे और अगर आप मुझे अब यह काम करते हुए देखती हैं तो यह उस सब उसके बाद है जो मैंने सहा है "

"आप समाज से बदला ले रहे हैं? ठीक है न?" उसने काफी तीखे व्यग्य से मुझे टोक दिया जिसमे वैसे बहुत-सा भोलापन था (मेरा मतलब यह है कि सामान्य रूप से व्यग्य था, क्योकि तब वह मुझमे और दूसरो मे कोई अन्तर नही करती थी, इसलिये लगभग किसी तरह की ठेस न लगाते हुए उसने ऐसा कहा)। "अच्छा!" मैंने सोचा, "तो तुम ऐसी हो, अपना नये ढग का मिजाज दिखाती हो।"

"बात यह है," मैंने उसी क्षण कुछ मजाक मे और कुछ रहस्य का पुट देते हुए कहा, "मैं उसी सम्पूर्ण का अश हू जो बुराई करना चाहता है और भलाई करता है "*

उसने तुरन्त और बडी जिज्ञासा से मेरी ओर देखा। उसकी इस दृष्टि मे बहुत कुछ बाल-सुलभ था।

"जरा रुकिये तो . ये शब्द कहा से लिये है आपने? किसके शब्द है? मैंने इन्हे कही सुना है "

"मगजपच्ची नही कीजिये, मेफीस्टोफिलिस ने इन्ही शब्दो के साथ फाउस्ट को अपना परिचय दिया था। 'फाउस्ट' पढा है?"

"नही ध्यान से नही।"

"यानी बिल्कुल नही पढा। पढना चाहिये। लेकिन मैं आपके होठो को फिर से व्यग्यपूर्वक सिकुडते हुए देख रहा हू। कृपया मुझे इतना रुचिहीन नही मानियेगा कि दूसरो की चीजे गिरवी रखनेवाले की अपनी भूमिका पर पर्दा डालने के लिये मैं मेफीस्टोफिलिस के शब्दो का सहारा लूगा। चीजे गिरवी रखनेवाला तो चीजे गिरवी रखनेवाला ही रहेगा। मैं यह खूब अच्छी तरह से जानता हू।"

* गेटे के दुखान्त नाटक 'फाउस्ट' की एक पक्ति का विकृत रूप। – स०

"आप अजीब आदमी हैं ... मैं तो ऐसा कुछ नहीं कहना चाहती थी ..."

वह कहना चाहती थी – "मैं ऐसा नहीं सोचती थी कि आप पढ़े-लिखे आदमी हैं।" उसने यह नहीं कहा, लेकिन मैं जानता था कि उसके मन में ऐसा ख्याल आया है। बहुत ही अचम्भे में डाल दिया था मैंने उसे।

"बात यह है," मैंने कहा, "किसी भी पेशे में आदमी कुछ भलाई कर सकता है। जाहिर है कि मैं अपनी बात नहीं कर रहा हूं, मैं तो बुराई के सिवा कुछ करता ही नहीं हूं, लेकिन ..."

"बेशक, किसी भी जगह पर काम करते हुए आदमी भलाई कर सकता है," उसने मुझ पर तेजी से और पैनी दृष्टि डालते हुए कहा। "हां, किसी भी जगह पर काम करते हुए," उसने अचानक इतना और जोड़ दिया। ओह, मुझे याद है, ये सभी क्षण बहुत अच्छी तरह से याद हैं! मैं यह भी कहना चाहूंगा कि ये युवाजन, ये प्यारे युवाजन जब कुछ बुद्धिमत्तापूर्ण और गहरी बात कहना चाहते हैं तो इनका चेहरा ऐसी निश्छलता और भोलेपन से यह जाहिर करता है – "देखो, इस समय मैं तुमसे बुद्धिमत्तापूर्ण और गहरी बात कह रहा हूं" – और सो भी घमण्ड से नहीं जैसे कि मेरे समान लोग करते हैं। उनके चेहरे से यह साफ पता चलता है कि वे स्वयं अपनी बात को बहुत मूल्यवान मानते हैं, उस पर विश्वास करते हैं, उसे आदर की दृष्टि से देखते हैं और ऐसा सोचते हैं कि उनकी भांति आप भी इसे इज्जत की नजर से देखते हैं। ओह, उनकी यह निश्छलता! इसी से तो उनकी जीत होती है। और उसमें यह सब कितना मनमोहक था!

मुझे सब कुछ याद है, मैं कुछ भी तो नहीं भूला! उसके बाहर जाते ही मैंने अपने मन में पक्का इरादा बना लिया। मैंने उसी दिन उसके बारे में पता लगा ली सभी बातें, उस समय की सभी तफसीलों को जान लिया। बहुत-सी तफसीलें तो मैंने मुकेरिया की मुट्ठी गर्म करके जो उनके यहां नौकरानी थी पहले ही जान ली थीं। ये तफसीलें इतनी असाधारण थीं कि मेरे लिये यह समझ पाना कठिन था कि कुछ समय पहले ऐसी दुखद परिस्थितियों में होते हुए भी वह कैसे हंसती रह सकती थी, और मेफिस्टोफिलिस के शब्दों में दिलचस्पी ले सकती थी। लेकिन बचपन के ये दे युवाजन! उसके बारे में यह दिन मैं

और हर्ष से यही सोचा था, क्योंकि उसमे दरियादिली भी थी – बेशक मैं बरबाद होनेवाली हू, फिर भी गेटे के महान शब्द मन को छूते हैं। जवानी मे हमेशा, बेशक थोडी-सी और गलत दिशा मे, किन्तु उदारता अवश्य होती है। मैं तो केवल उसकी, सिर्फ उसी की चर्चा कर रहा हू। और सबसे बडी बात तो यह है कि उस समय मैं उसे अपनी मानता था और अपनी शक्ति के बारे मे मुझे तनिक भी सन्देह नही था। जानते हैं, बहुत ही मधुर अनुभूति होती है जब हमारे मन मे कोई सन्देह नही रहता।

लेकिन यह मुझे क्या हो रहा है। अगर मेरा यही हाल रहा तो कब अपने विचारो को एक बिन्दु पर केन्द्रित कर पाऊगा? जल्दी जल्दी करनी चाहिये – बात बिल्कुल यह नही है, ओ मेरे भगवान!

२

विवाह का प्रस्ताव

उसके बारे मे जो "तफसीले" मैंने मालूम की, उन्हे सक्षेप मे बताता हू – उसके माता-पिता तीन साल पहले मर चुके थे और वह बेढगी मौसियो के पास रह गयी। उन्हे बेढगी कहना काफी नही। एक मौसी विधवा थी, बहुत बडे परिवारवाली, एक से एक छोटा छ: बच्चे थे उसके। दूसरी अविवाहिता, बूढी और बुरी थी। दोनों ही बुरी थी। उसका बाप किरानी था और अपनी नौकरी की बदौलत ही कुलीन बना था – मतलब यह कि सब कुछ मेरे हक मे जाता था। मैं तो मानो ऊची दुनिया से सम्बन्ध रखता था – शानदार रेजिमेन्ट का छोटा कप्तान रहा था, जन्मजात कुलीन था, स्वावलम्बी था, आदि और जहा तक चीजे गिरवी रखने के धधे का ताल्लुक था तो उसकी मौसिया उसे आदर की दृष्टि से ही देख सकती थी। वह तीन साल से मौसियो की गुलामी मे थी, फिर भी उसने स्कूल की परीक्षाये पास कर ली थी, जानलेवा काम से किसी तरह बचकर ऐसा कर ही लिया था। इसका अर्थ था कि वह ऊचे और उदात्त जीवन के लिये यत्नशील है! मैं किसलिये शादी करना चाहता था? वैसे, मुझे गोली मारिये, इसकी बाद मे चर्चा हो जायेगी क्या महत्त्व की बात यही

है। वह मौसी के बच्चों को पढ़ाती, उनके कपड़े सीती और बाद में तो कपड़े ही नहीं, अपने कमज़ोर फेफड़ों के बावजूद फर्श तक धोती। उसकी पिटाई भी की जाती और रोटी के टुकड़ों के लिये ताने दिये जाते। अन्त में यह हुआ कि उन्होंने पैसे लेकर उसकी शादी कर डालनी चाही। छि! मैं गन्दी तफसीलों को छोड़ रहा हूं। बाद में उसने मुझे सब कुछ सविस्तार बताया। पड़ोस का मोटा दुकानदार साल भर यह सब देखता रहा। वह मामूली दुकानदार नहीं था, उसकी पसारी की दो दुकानें थीं। वह अपनी दो बीवियों को दूसरी दुनिया में भेज चुका था और तीसरी की तलाश में था। उस पर ही उसकी नज़र टिक गयी। उसने सोचा – "यह चुपचाप है, गरीबी में बड़ी हुई है और मुझे अपने बेमां के बच्चों के लिये उसकी जरूरत है।" हां, उसके बच्चे भी थे। उसने उसे अपने लिये चुन लिया, उसकी मौसियों से बातचीत शुरू कर दी। दुकानदार की उम्र पचास साल थी और वह बुरी तरह घबरा उठी। इसी वक्त तो वह 'आवाज़' अखबार में विज्ञापन देने के लिये पैसे लेने को अक्सर मेरे पास आने लगी। आखिर वह अपनी मौसियों से ये अनुरोध करने लगी कि वे उसे सोचने का थोड़ा-सा समय दें। उन्होंने समय दे दिया, लेकिन थोड़ा-सा समय, अधिक समय नहीं दिया और उसकी जिन्दगी दूभर कर दी – "यहां खुद ही खाने के लाले पड़े हैं और फिर हम तुम्हें कहां से खिलायें।" मुझे यह सब कुछ मालूम था और उस दिन की सुबह की बातचीत के बाद मैंने अपना पक्का इरादा बना लिया। शाम को दुकानदार पचास कोपेक की मिठाई लेकर उसके पास पहुंचा। वह उसके साथ बैठी हुई थी। मैंने लुकेरिया को रसोईघर से बुलाया और उससे उसके कान में यह फुसफुसा देने को कहा कि मैं फाटक के पास खड़ा हूं और कोई बहुत ही ज़रूरी बात कहना चाहता हूं। मैं अपनी इस कारगुज़ारी से खुश था। वैसे मैं उस पूरे दिन ही बेहद खुश रहा था।

इसी बात से बेहद हैरान कि मैंने उसे बुलवा भेजा था, वहीं फाटक पर, लुकेरिया के सामने ही मैंने कहा कि इसे अपना सौभाग्य और सम्मान मानूंगा   इस बात को ध्यान में रखते हुए कि वह मेरे इस अन्दाज़ तथा फाटक पर ऐसा प्रस्ताव करने से आश्चर्यचकित न हो, मैंने यह भी कहा कि "मैं सीधा-सादा आदमी हूं और मैंने परिस्थितियों को ध्यान में रखा है।" मैं सीधा-सादा आदमी हूं, मैंने यह झूठ नहीं

कहा था। लेकिन इसे गोली मारिये। मैंने न केवल बडी शिष्टता से बात की यानी अपने को सुशिक्षित ही नही, बल्कि दिलचस्प भी जाहिर किया और यही मुख्य बात थी। क्या ऐसा मान लेना कोई गुनाह है? मैं अपने को जाचना-परखना चाहता हू और ऐसा कर रहा हू। मुझे पक्ष और विपक्ष के दोनो दृष्टिकोण प्रस्तुत करने चाहिये और मैं ऐसा कर रहा हू। मैं तो बाद मे भी खुश होते हुए इसका स्मरण करता रहा यद्यपि यह मूर्खता थी – किसी भी तरह की झेप अनुभव किये बिना मैंने उससे साफ-साफ ही यह कह दिया कि एक तो मैं कोई विशेष गुणवान नही हू, खास अक्लमन्द भी नही हू, शायद बहुत उदार भी नही हू, घटिया किस्म का स्वार्थी हू (मुझे यह वाक्य याद है। मैंने तब राह चलते हुए इसे गढा था और बहुत खुश हुआ था) और बहुत सम्भव है कि मुझमे दूसरी दृष्टियो से भी अनेक अप्रिय बाते हो। मैंने यह सब कुछ विशेष गर्व से कहा – सब जानते है कि यह कैसे कहा जाता है। निश्चय ही मुझमे इतनी समझ तो थी कि अपने दोषो-अवगुणो का बखान करने के बाद मैं अपने गुणो की चर्चा न करू – "दोषो के साथ मुझमे फला-फला गुण भी हैं।" मैंने देखा कि अभी तो वह बहुत डरी हुई है, लेकिन मैंने किसी तरह की नर्मी नही दिखाई। इतना ही नही, यह देखकर कि वह डर रही है, मैंने जान-बूझकर और भी कठोरता से काम लिया – साफ ही कह दिया कि भूखी नही रहेगी, लेकिन जहा तक बढिया पोशाको, थियेटरो और बॉल-नृत्यो का सम्बन्ध है, तो यह कुछ नही होगा, शायद बाद मे, जब अपना लक्ष्य प्राप्त कर लूगा, ऐसा हो सके। अपना यह कठोर अन्दाज मुझे बहुत अच्छा लगा था। मैंने यह भी कह दिया और सो भी यो ही प्रसगवश, कि अगर मैं ऐसा धन्धा करता हू यानी चीजे गिरवी रखकर कर्ज देता हू तो ऐसा करने का एक लक्ष्य है यानी ऐसी परिस्थिति है मुझे ऐसा कहने का हक था – वास्तव मे ही मेरे सामने ऐसा एक लक्ष्य था, ऐसी एक परिस्थिति थी। जरा रुकिये, महानुभावो, गिरवी रखने के इस धन्धे को मैं दुनिया मे सबसे ज्यादा नापसन्द करता हू और यद्यपि खुद अपने से ऐसे रहस्यपूर्ण वाक्य कहना बडी बेतुकी बात है, फिर भी मैं "समाज से बदला ले रहा था," हा, हा, हा, बदला ले रहा था! इसलिये उस सुबह को उसका यह व्यग्य कि मैं 'बदला' ले रहा हू, अनुचित था। बात यह है कि अगर मैं उससे साफ-साफ

ही यह कह देता – "हां, मैं समाज से बदला ले रहा हूं" तो वह खिलखिलाकर हंस देती जैसा कि उसने उसी सुबह को किया था और क्षण मे ही बात मजाक बनकर रह जाती। किन्तु अप्रत्यक्ष रूप से संकेत करके, कोई एकाध रहस्यपूर्ण वाक्य कहकर मैं उसकी आंखो मे धूल झोंक सकता था। इसके अलावा उस समय मुझे किसी भी बात का डर नही था – मैं जानता था कि मेरी तुलना मे मोटा दुकानदार उसे कही बुरा लगता है और फाटक के पास खडा हुआ मैं उसका मुक्तिदाता हूं। यह बात तो मैं अच्छी तरह से समझता था। ओह, कमीनी बातो को तो इन्सान खास तौर पर अच्छी तरह से समझता है! लेकिन क्या यह कमीनापन था? कैसे हम यह निर्णय कर सकते है? क्या मैं उसे उस समय ही प्यार नही करता था?

जरा रुकिये – ज़ाहिर है कि उस वक्त मैंने उससे उपकार करने के बारे मे एक भी शब्द नही कहा था। इसके विपरीत, हां, इसके विपरीत यह कहा था – 'आप मुझ पर उपकार कर रही है, मैं आप पर नहीं।" तो मैंने शब्दो मे भी यह व्यक्त कर दिया, अपने को बस मे नहीं रख सका और सम्भवत: यह मूर्खता ही सिद्ध हुई, क्योंकि मैंने उसके चेहरे पर भाव-परिवर्तन देखा। किन्तु कुल मिलाकर बाजी मेरे हाथ रही। जरा रुकिये, अगर मुझे इस सारी गन्दगी को याद करना है तो अपनी आखिरी मूर्खता को भी याद करना चाहिये – मैं खड़ा था और अपने बारे में मेरे दिमाग मे ऐसे ख्याल आ रहे थे – "मेरा कद अच्छा है, मैं सुघड़-सुगठित, सुशिक्षित हूं – और अगर डींग न हांकी जाये, तो देखने-भालने मे भी कुछ बुरा नही हूं।" तो ऐसे विचार घूम रहे थे मेरे दिमाग मे। ज़ाहिर है कि उसने, वहीं फाटक के पास ही हां कर दी। लेकिन... लेकिन मुझे यह भी कहना होगा कि हां कहने से पहले वहीं फाटक के पास ही वह बहुत देर तक सोचती रही। वह इतने सोच में डूब गयी, इतने सोच में खो गयी कि मैं पूछने-पूछने को हो गया – 'तो क्या फैसला किया?'" लेकिन अपने को यह पूछने से [illegible] न सका और बड़ी शान से पूछा – 'कहिये, क्या फैसला किया है?' –

"जरा ठहरिये, मैं सोच रही हूं।'

और [illegible] गम्भीरता से [illegible] इतना गम्भीर, [illegible] कि [illegible] पूरी तरह से [illegible]

था! लेकिन मैं तो यह सोचकर बुरा मान गया – क्या यह मेरे और इस दुकानदार के बीच चुनाव कर रही है?" ओह, तब मैं कुछ भी नहीं समझ पाया था! तब मैं कुछ भी, कुछ भी नहीं समझ पाया था! आज से पहले कुछ भी नहीं समझ पाया! मुझे याद है कि जब मैं वहा से जा रहा था तो लुकेरिया भागती हुई मेरे पीछे-पीछे आई थी और उसने मुझे सड़क पर रोककर जल्दी-जल्दी यह कहा था – "हुजूर, भगवान आपको इसका फल देगा कि आप हमारी प्यारी बिटिया को अपनी पत्नी बना रहे हैं, किन्तु उससे ऐसा नहीं कहियेगा वह गर्वीली है।"

तो वह गर्वीली है! मैं खुद भी गर्वीलियों को पसन्द करता हू। गर्वीलिया उस समय तो विशेष रूप से अच्छी होती हैं जब तुम्हें उन पर अपनी प्रभाव-शक्ति का विश्वास हो जाता है। ठीक है न? ओह, कितना घटिया, कितना भोंडा आदमी हू मैं! ओह कितना खुश था मैं अपने आपसे! जानते हैं कि जब वह फाटक के पास खड़ी हुई मुझे हां कहने के बारे मे सोच रही थी और मैं उसके इस सोचने पर हैरान हो रहा था, जानते हैं कि उस समय उसके दिमाग मे ऐसा विचार भी हो सकता था – अगर यहा और वहा दोनो जगह ही मेरा दुर्भाग्य है तो क्या अधिक बड़े दुर्भाग्य को चुनना बेहतर नहीं होगा यानी मोटे दुकानदार को चुनना जो शराब के नशे मे कही जल्दी उसकी जान ले लेगा? क्या ख्याल है? क्या सोचते हैं आप हो सकता था ऐसा ख्याल भी उसके मन मे?

हा, मैं अभी भी यह नहीं समझता हू अभी भी कुछ नहीं समझता हू! मैंने अभी-अभी कहा है कि उसके दिमाग मे यह ख्याल आ सकता था – दोनों दुर्भाग्यो मे से अधिक बुरे को यानी दुकानदार को चुने? लेकिन उस समय उसके लिये कौन ज्यादा बुरा था – मैं या दुकानदार? दुकानदार या गेटे को उद्धृत करने और चीज़े गिरवी रखनेवाला मैं? यह तो अभी सवाल ही है! और सवाल भी कैसा? तुम यह भी नहीं समझ पा रहे – उत्तर तो मेज़ पर पड़ा है और तुम बात कर रहे हो सवाल की! मुझे गोली मारिये! सवाल मेरा नहीं है वैसे क्या महत्व है मेरे लिये इस बात का कि सवाल मेरा है या नहीं? यह तो मैं बिल्कुल तय नहीं कर पा रहा हू। यही बेहतर होगा कि मैं बिस्तर पर चला जाऊ। सिर मे दर्द हो रहा है

उत्कृष्टतम व्यक्ति, किन्तु मैं स्वयं ही यह विश्वास नहीं करता

नींद नही आई। आये भी तो कैसे, सिर मे कोई नस बज रही है। चाहता हू कि इस सब को पचा मू, इस सारी गन्दगी को। ओह, गन्दगी! ओह, कैसी गन्दगी मे से मैंने उसे तब बाहर निकाला था! उसे यह तो समझना, मेरे इस कदम का मूल्य आकना चाहिये था! तरह-तरह के विचार मुझे भी अच्छे लगते थे। उदाहरण के लिये यह कि मैं इकतालीस बरस का हू और वह सिर्फ सोलह साल की। उम्र की यह असमानता मुझे बहुत अच्छी लगी, बहुत ही मधुर अनुभूति हुई इससे, बहुत ही मधुर।

मैं तो अंग्रेजी ढग से शादी करना चाहता था यानी हम दोनो और दो गवाह हो जिनमे से एक लुकेरिया हो। शादी के फ़ौरन बाद हम रेलगाड़ी मे बैठकर कही चले जायें, बेशक मास्को ही (जहा मुझे काम भी था)। वहा किसी होटल मे कोई दो हफ्ते तक रहे। किन्तु उसने इसका विरोध किया, मुझे ऐसा नही करने दिया और मजबूर होकर उसकी मौसियो के पास आदर भाव दिखाने के लिये जाना पडा, क्योकि वे उसकी रिश्तेदार थी और मैं उसे उनसे अलग कर रहा था। मैंने उसकी बात मान ली और मौसियो को उनका सम्मान मिला। मैंने तो उनमे से हर दुष्टा को सौ रूबल भी दिये और बाद मे कुछ और देने का भी वादा किया। ज़ाहिर है, मैंने उसे यह कुछ भी नही बताया ताकि वातावरण के घटियापन से उसके दिल को ठेस न लगे। मौसिया तो फौरन ही मुझ पर बडी दयालु-दयालु हो गयी। दहेज के बारे मे भी कुछ वाद-विवाद हुआ। दहेज के तौर पर उसके पास लगभग कुछ नही था, मगर वह चाहती भी कुछ नहीं थी। मुझे उसके सामने यह सिद्ध करने मे सफलता मिल गयी कि दहेज का बिल्कुल न होना ठीक नही और मैंने ही दहेज की व्यवस्था कर दी, क्योकि और कौन उसके लिये ऐसा करता? मगर खैर, मुझे गोली मारिये। फिर भी अपने बहुत-से विचार मैंने उसे बता दिये, ताकि उसे कम से कम उनकी जानकारी तो हो जाये। शायद मैंने कुछ

उतावली की। मुख्य बात यह थी कि शुरू से ही, वह चाहे अपने दिल पर कितना ही जबर क्यों न करती, बड़े उत्साह से मुझ पर अपना प्यार लुटाती, शाम को जब मैं घर आता तो बड़े उल्लास से मेरा स्वागत करती, अपनी गद्‌गद वाणी (बहुत ही प्यारी और भोली-भाली हर्षपूर्ण वाणी मे) अपने बचपन, छुटपन, माता-पिता के घर और माता-पिता के बारे मे बताती। किन्तु मैं उसके इस खुशीभरे जोश को आन की आन मे ठण्डा कर देता। इसी मे तो मेरा विचार निहित था। मैं उसके उत्साह-उल्लास का खामोशी से जवाब देता, बेशक अनुग्रहपूर्वक किन्तु वह बहुत जल्द ही इस बात को समझ गयी कि हम भिन्न प्राणी हैं और यह कि मैं एक पहेली हू। मैं पहेली ही तो बनना चाहता था! उससे पहेली बुझवाने के लिये ही तो शायद मैंने यह सब मूर्खता की! सबसे बड़ी चीज थी – कठोरता – शादी के बाद भी मैंने इसे बनाये रखा। थोड़े मे यह कि उस समय बेशक मैं खुश था, फिर भी मैंने अपने व्यवहार की एक प्रणाली बना डाली। मेरे किसी प्रयास के बिना ही यह प्रणाली बन गयी। दूसरा कोई चारा नही था, एक असाधारण परिस्थिति के कारण मेरे लिये इस प्रणाली की रचना करना जरूरी था – मैं खुद अपने पर क्यों आरोप लगा रहा हू! प्रणाली बिल्कुल ठीक थी। अगर किसी आदमी के बारे मे कोई पैमला करना ही है तो सारे मामले को जानकर ही ऐसा करना चाहिये तो सुनिये!

पैसे मैं यह शुरू करू, क्योंकि यह बहुत मुश्किल है। जब हम अपनी सफाई पेश करने लगते है – तभी कठिन हो जाता है। देखिये न, मिसाल के तौर पर युवाजन पैसे को नफरत की नजर से देखते है – तो मैंने उसी पैसे को अत्यधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया, उस पर बेहद जोर देने लगा। इतना ज्यादा जोर दिया कि वह अधिकाधिक चुप रहने लगी। वह अपनी बड़ी-बड़ी आखो को फैला लेती, सुनती, मेरी ओर देखती और चुप रहती। बात यह है कि युवाजन उदारमना है यानी अच्छे युवाजन उदारमना और जोशीले है, लेकिन उनमे धीरज की कमी है। अगर कोई चीज उनकी आशा से उन्नीस हो जाती है तो वे फौरन तिरस्कार प्रकट करने लगते हैं। किन्तु मैं सच्ची उदारता चाहता था, उसके हृदय मे उदारता का बीज बोना चाहता था उसके दृष्टिकोण मे उदारता लाना चाहता था, ठीक है न? मैं एक घटिया-

सा उदाहरण लेता हूँ — अपने इस गिरवी के धन्धे को भला मैं उस जैसी को कैसे स्पष्ट करता? जाहिर है कि मैंने उससे साफ़-साफ़ बात नहीं की वरना यह मतलब निकलता कि मैं अपने इस धन्धे के लिये माफ़ी माग रहा हूँ और इसलिये मैंने, कहना चाहिये, गर्व से काम लिया, खामोश रहते हुए अपनी बात कही। खामोश रहते हुए अपनी बात कहने के फन का मैं उस्ताद हूँ। मैं अपनी सारी जिन्दगी ही खामोश रहते हुए बात करता रहा हूँ और चुपचाप ही अनेक भयानक घटनाओं का सामना कर चुका हूँ। ओह, मैं भी तो बहुत दुखी रहा हूँ! सभी ने मेरी अवहेलना कर दी थी, सभी ने मुझे ठुकरा और भुला दिया था और कोई भी, कोई भी यह नहीं जानता! और अचानक इस छोकरी ने बाद में कमीने लोगों से मेरे बारे में ब्योरे इकट्ठे कर लिये और यह समझा कि वह सब कुछ जानती है, जबकि महत्त्व रखनेवाली हर चीज मेरे दिल में ही छिपी रही! मैं चुप रहा और खास तौर पर उसके साथ चुप रहा, कल तक चुप्पी साधे रहा — क्यों चुप्पी साधे रहा? गर्वीले व्यक्ति के रूप में। मैं चाहता था कि वह मेरी मदद के बिना खुद ही सब कुछ मालूम कर ले, किन्तु कमीने लोगों की बातों के आधार पर नहीं, बल्कि स्वयं ही मेरे बारे में अनुमान लगा ले, समझ जाये! मैं उसे अपने घर में ला रहा था, इसलिये उससे पूरा आदर-सम्मान चाहता था। मैं चाहता था कि मेरे दुखों-कष्टों के लिये वह मेरी आराधना करे — और मैं इसके योग्य था। ओह, मैं हमेशा ही बड़ा गर्वीला रहा हूँ, मैंने हमेशा ही या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं चाहा! चूंकि सुख-सौभाग्य के मामले में मुझे आधे से कभी सन्तोष नहीं होता, मैं पूरा चाहता था, इसीलिये उस समय मैं ऐसा व्यवहार करने को विवश हुआ — "तुम खुद ही भांपो और मेरा मूल्य आंको!" कारण यह है, और आप मुझसे सहमत होंगे, कि अगर मैं खुद उसे सब कुछ स्पष्ट करने और अपने बारे में बताने लगता, उसके सामने नाक रगड़ने और उसका आदर पाने के लिये अनुरोध करने लगता तो मैं मानो भीख ही मांगता। लेकिन वैसे ... वैसे, मैं किसलिये इस सबकी चर्चा कर रहा हूँ!

मूर्खता, मूर्खता, मूर्खता और मूर्खता! मैंने साफ़-साफ़ और ... से (मैं निर्दयता शब्द पर ज़ोर देना चाहता हूँ) उसे तब कुछ ... मैं यह स्पष्ट कर दिया कि युवाजन की उदारता बहुत अच्छी

चीज है, मगर उसकी कीमत दो कौडी नही। भला क्यो? क्योकि वह उन्हे बहुत सस्ती मिल जाती है, जीना शुरू करने के पहले ही वे उसे हासिल कर लेते है, कहना चाहिये कि वह उनके "जीवन का प्रथम अनुभूति-समूह"* होती है, लेकिन उसे व्यवहार मे लाकर दिखाइये तो! सस्ती उदारता हमेशा आसान होती है, जिन्दगी दे देना भी कुछ महगा नही होता, क्योकि सिर्फ खून गर्म होता है और जरूरत से ज्यादा शक्ति होती है तथा कुछ सुन्दर करने को मन ललकता है! लेकिन नही, उदारता का कोई कठिन, शान्त, अनजाना, चमक-दमक के बिना कोई ऐसा कार्य करके दिखाइये जिसमे निन्दा-भर्त्सना हो, बहुत त्याग और तनिक भी कीर्ति न हो, – जिसमे हीरे की तरह निर्मल तुम जैसे व्यक्ति को नीच के रूप मे पेश किया जाये, जबकि दुनिया मे तुम्हारी टक्कर का कोई दूसरा ईमानदार आदमी ही न हो – तब करके दिखाइये उदारता का कोई कारनामा! नही, आप इन्कार कर देगे! किन्तु मैं – मैं जीवन भर ऐसा ही कारनामा करता रहा हू। शुरू मे वह मुझसे बहस करती थी, ओह, कैसे डटकर बहस करती थी, मगर बाद मे कुछ खामोश रहने लगी, बिल्कुल ही चुप हो गयी और मेरी बाते सुनते हुए केवल अपनी बहुत बडी-बडी, सतर्क आखो को बेहद फैलाकर मुझे देखती रहती। और और इसके अलावा मैने तो अचानक उसके होठो पर अविश्वासपूर्ण, मूक और बुरी-सी मुस्कान भी देखी। इसी मुस्कान के साथ मै उसे अपने घर मे लाया। हा, यह सच है कि उसके जाने के लिये कोई दूसरी जगह भी नही थी

४

योजनायें ही योजनायें

हम दोनो मे से किसने यह सब पहले शुरू किया?

किसी ने भी नही। शुरू मे अपने आप ही आरम्भ हो गया। मैं यह कह चुका हू कि कठोरता दिखाते हुए उसे घर मे लाया, लेकिन शुरू

* पुश्किन की 'दानव' कविता की एक पंक्ति। – सं०

मे ही नर्म हो गया। अभी वह मगेतर ही थी कि उसे यह बता दिया गया था कि वह चीजे गिरवी रखने और उन पर कर्ज देने का काम करेगी। तब उसने कोई आपत्ति नही की थी (इस बात की ओर ध्यान दीजिये)। इतना ही नही, वह बडी लगन से यह काम करने लगी। जाहिर है कि फ्लैट और फर्नीचर सब पहले की तरह ही बना रहा। फ्लैट मे दो कमरे थे – एक बडा हॉल था जिसे विभाजित करके अग्रभाग मे दुकान बना दी गयी थी और दूसरा कमरा भी बड़ा था – हमारे रहने और सोने का कमरा। मेरे यहा फर्नीचर खास अच्छा नहीं था उसकी मौसियो के पास भी बेहतर था। देव-प्रतिमाओ का बक्स और देव-दीप दुकान मे थे। मेरे कमरे मे एक अलमारी थी जिसमे कुछ किताबे थी, तिजोरी थी जिसकी चाबी मेरे पास रहती थी; पलग, मेजे और कुर्सियां भी थी। शादी करने के पहले ही मैंने उससे कह दिया था कि हमारे यानी मेरे, उसके और लुकेरिया (जिसे मैं अपने यहा ले आया था) के भोजन के लिये मैं हर दिन एक रूबल से ज्यादा नही दूगा – "क्योकि मुझे तीन साल मे तीस हजार रूबल बचाने हैं और उसका यही उपाय है।" उसने कोई एतराज नही किया, लेकिन मैंने खुद ही हर दिन के खर्च के लिये तीस कोपेक बढ़ा दिये। थियेटर के मामले में भी यही हुआ। शादी से पहले मैंने उससे यह कहा था कि थियेटर जाने का सवाल नही है, किन्तु खुद ही महीने मे एक बार अच्छी सीटो पर बैठकर थियेटर देखने की अनुमति दे दी। हम दोनो कोई तीन बार थियेटर गये और लगता है वहां 'सुख के लिये दौड़-धूप' तथा 'गाते पक्षी' नाटक देखे (ओह, गोली मारिये, उन्हें गोली मारिये!) हम मुह बन्द किये जाते और ऐसे ही वापस आते। क्यो, क्यो हम शुरू से ही ऐसे चुप रहते थे? शुरू मे तो लड़ाई-झगड़े नहीं होते थे, लेकिन फिर भी हम मौन साधे रहते थे। मुझे याद है कि तब वह चोरी-चोरी मेरी तरफ देखा करती थी। जैसे ही मैंने यह देखा, अपनी खामोशी और बढ़ा दी। यह सही है कि चुप्पी पर मैंने ही ज़ोर दिया, उसने नहीं। उसकी ओर से एक-दो बार प्यार के विस्फोट हुए, उसने मुझे बाहो मे भरना चाहा, लेकिन चूकि ऐसे विस्फोट उन्माद और उन्मत्तता लिये हुए थे, जबकि मुझे उसकी ओर से आदरमहित दृढ़ सौभाग्य की अपेक्षा थी, इसलिये मैंने रुखाई दिखाई। और मैंने ठीक ही किया, क्योंकि प्यार के ऐसे तेज झोंको के अगले दिन हर

ार झगड़ा होता था।

मेरा मतलब यह है कि झगडा तो नही, लेकिन हम फिर से खामोश
ा जाते थे और उसके भावो मे मैं अधिकाधिक उद्दडता अनुभव करता
ा। "विद्रोह और स्वतन्त्रता" – यह था इसका अर्थ, मगर इतना
ही जानती थी कि इसे कैसे व्यक्त करे। हा, उसके विनम्र चेहरे
र अधिकाधिक उद्दडता आती जा रही थी। यकीन कीजिये, मैं उसके
लये घृणित बनता जा रहा था, मैंने तो इसका अध्ययन किया था।
ौर इसमे तो कोई सन्देह ही नही कि अपनी झोक मे वह अपना सन्तुलन
ो बैठती थी। मिसाल के तौर पर कैसे भला वह इतनी गन्दगी और
रीबी मे रहने, फर्श तक धोने के बाद हमारी गरीबी पर नाक-भौह
कोड सकती थी! फिर सचाई यह है कि मेरे यहा गरीबी नही,
फायत थी और जहा जरूरी था वहा ऐयाशी भी थी जैसे कि बिछौनो
ौर सफाई के मामले मे। मैं हमेशा यही मानता रहा था कि पति
ा सफाई पसन्द होना पत्नी को अच्छा लगता है। वैसे वह मेरी गरीबी
र नही, बल्कि तथाकथित कजूसी पर नाक-भौंह चढाती थी – "उसके
ामने लक्ष्य है और वह अपने चरित्र की दृढता दिखाता है।" तो उसने
थियेटर जाने से अचानक खुद ही इन्कार कर दिया। और उसके चेहरे
र अधिकाधिक व्यग्य का भाव उभरने लगा और मैं अधिक चुप
हने लगा, और ज्यादा खामोश हो गया।

क्या जरूरत है अपनी सफाई देने की? इस मामले मे मुख्य चीज
ा है चीजे गिरवी रखकर लोगो को पैसे उधार देने का मेरा धन्धा।
गिये न – मैं जानता था कि नारी, सो भी सोलह साल की नारी को
पने को पूरी तरह से पुरुष की इच्छा के अधीन करना चाहिये।
ौरतो मे विलक्षणता नही होती, यह स्वयसिद्ध बात है और मेरे लिये
भी भी स्वयसिद्ध है। इसमे कोई फर्क नहीं पडता कि इस समय वह
हा हॉल मे मेज पर है – सचाई तो सचाई ठहरी और इस मामले
ुद मिल* भी कुछ नही कर सकता! और प्यार करनेवाली औरत
ट, प्यार करनेवाली औरत अपने प्रिय व्यक्ति के दोषो-त्रुटियो,
सके अपराधो की भी पूजा करती है। मर्द अपने अपराधो की खुद
भी ऐसी सफाई नही ढूढ पायेगा, जैसी औरत पेश कर देगी। यह

* अंग्रेज दार्शनिक तथा अर्थशास्त्री।–स०

उदारता है मगर विनम्रता नहीं। विनम्रता के अभाव ने ही नारी को कहीं का नहीं छोड़ा। मैं सूदखोर हूं, उससे भला क्या फ़र्क पड़ता है कि आप मुझे वह दिखाते हैं जो मेज पर है? जो कुछ मेज पर है, उसमें भला कोई विनम्रता है? ओह-ओह!

सुनिये – उस समय मुझे विश्वास था कि वह मुझे प्यार करती है। आखिर उस समय तो वह मेरे गले में बांहें डाला करती थी। इसका मतलब है कि प्यार करती थी, यह कहना ज्यादा ठीक होगा कि प्यार करना चाहती थी। हां, ऐसे ही था – वह प्यार करना चाहती थी, प्यार करने की कोशिश करती थी। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि यहां कोई ऐसी बुराई भी तो नहीं थी जिसके लिये उसे सफ़ाई ढूंढने की जरूरत पड़ती। आप कहते हैं – गिरवी रखने का धन्धा, सभी ऐसा कहते हैं। तो क्या हुआ कि मैं यह धन्धा करता था? इसका मतलब है, ऐसे कुछ कारण थे कि उदारतम व्यक्ति यह धन्धा करने लगा था। देखिये महानुभावो, ऐसे कुछ विचार हैं यानी कोई ऐसा विचार भी होता है जिसे अगर हम व्यक्त करें, शब्दों का रूप दें तो यह बहुत ही बेहूदा बात होगी। खुद हमें शर्म महसूस होगी। मगर क्यों? ऐसे ही। क्योंकि हम सब घटिया लोग हैं और सचाई का सामना नहीं कर सकते या फिर मैं इसका कारण नहीं जानता। मैंने अभी-अभी "उदारतम व्यक्ति" कहा है। यह बड़ा अजीब-सा लगता है, मगर था तो ऐसे ही। हां, यह सचाई है, सच्ची से सच्ची हक़ीक़त! उस समय मुझे आर्थिक दृष्टि से अपनी स्थिति दृढ़ करने और यह दुकान खोलने का अधिकार था – "आपने मुझे ठुकरा दिया था, आपने, यानी लोगों ने तिरस्कारपूर्ण मौन से मुझे दूर खदेड़ दिया। बहुत ही भावनापूर्ण मेरे अनुरोध के जवाब में आपने मेरा ऐसा अपमान किया था जिसे मैं जीवन भर नहीं भूल सकूंगा। इसलिये मुझे इस बात का अधिकार था कि मैं अपने गिर्द दीवार खड़ी करके अपने को आपसे दूर रखूं, ये तीस हजार रूबल जमा करूं और कहीं क्रीमिया में, दक्षिणी तट पर, पहाड़ों में या अंगूर के बाग़ान में इन तीस हजार रूबलों से खरीदी गयी जागीर पर अपनी जिन्दगी के दिन बिताऊं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आप सब से दूर रहते हुए, आपके प्रति दुर्भावना न रखते हुए, अपनी आत्मा में आदर्श संजोये हुए, अपने दिल की रानी, प्यारी पत्नी और अगर भगवान की कृपा हुई तो बच्चों के साथ और आम-

प के किसानों की मदद करते हुए।" बेशक यह अच्छी बात है कि
। समय मैं खुद अपने से यह सब कह रहा हूं, वरना अगर मैं उस
न उसके सामने यह सब कुछ शब्दों में बयान कर देता तो बड़ी
मि होती न? इसीलिये तो मैंने गर्वीला मौन धारण कर लिया था,
मीलिये तो हम चुपचाप बैठे रहते थे। क्योंकि उसने क्या समझा होता?
र्फ सोलह साल की उम्र थी, जवानी की शुरुआत ही थी – मेरी
ाई, मेरी वेदना-यातनाओं को भला वह क्या समझ सकती थी?
के यहां तो किसी तरह की लाग-लपेट नहीं थी, जीवन की जानकारी
अभाव, जवानी की कच्ची आस्थायें, "उदात्त हृदयों" का अन्धा
श्वास, किन्तु मुख्य बात तो थी चीजें गिरवी रखने का मेरा धन्धा
र बस! (मगर अपनी उस दुकान पर क्या मैं दुष्टता का परिचय
ा था, क्या वह नहीं देखती थी कि मैं कैसा व्यवहार करता था
र क्या किसी से कुछ फालतू लेता था?) ओह, इस दुनिया में सचाई
तनी भयानक चीज है! यह मेरी प्यारी, यह विनीता, यह फरिश्ता –
तानाशाह थी, मेरी आत्मा के लिये असह्य तानाशाह और सन्तापक
! अगर मैं यह नहीं बताऊंगा तो अपने साथ अन्याय करूंगा!
। सोचते हैं कि मैं उसे प्यार नहीं करता था? कौन भला यह कह
ता है कि मैं उसे प्यार नहीं करता था? बात यह है कि इस मामले
भाग्य और प्रकृति ने भयानक व्यंग्य किया! हम अभिशप्त हैं,
गों का जीवन वैसे ही अभिशप्त है! (मेरा तो विशेष रूप में!)
तो मैं यह समझता हूं कि मुझसे कोई भूल हो गयी थी! कहीं
ई गलत बात हो गयी थी। सब कुछ स्पष्ट था, मेरी योजना आसमान
तरह साफ थी – "कठोर और गर्वीला हूं, मुझे किसी की नैतिक
ानुभूति की आवश्यकता नहीं और चुपचाप दुख-दर्द सहता हूं।"
नुन ऐसा ही था, मैं ढोंग नहीं कर रहा था, बिल्कुल ऐसा
ी कर रहा था! "बाद में खुद ही देखेगी कि यह दरियादिली
लेकिन वह ऐसा देख नहीं पायी, और जैसे ही कभी इसे भाप
ी तो दस गुना अधिक मूल्यांकन करेगी और हाथ जोड़कर मेरे
ने घुटने टेक देगी।' यह थी योजना। लेकिन इस मामले में मैं
गों कुछ भूल गया या मैंने किसी चीज को नजरंदाज कर दिया।
कोई चीज ठीक तरह से नहीं कर पाया। लेकिन काफी है, काफी
किससे अब क्षमा मांगी जा सकती है? जो खत्म हो गया, सो

[illegible]

[illegible]

५

विनीता ने विद्रोह किया

झगड़े इस बात से शुरू हुए कि अचानक वह अपने ढंग से ऋ
देने लगी, चीज़ों का उनकी कीमत से अधिक मूल्य लगाती और ए
मामले को लेकर उसने एक-दो बार मेरे साथ बहस भी की। मैं सहम
नहीं हुआ। इसी बीच किसी कप्तान की विधवा दुकान पर आ गई।
कप्तान की बूढ़ी विधवा अपने दिवंगत पति का उपहार, स्मारक
स्मृति-चिह्न, एक लॉकेट लेकर आई। मैंने उसके बदले में उसे तीन
रूबल दे दिये। वह रोने, गिड़गिड़ाने, अनुरोध करने लगी कि उस
लॉकेट को मैं सहेजे रहूँ – ज़ाहिर है कि हम सहेजे रखेंगे। संक्षेप में
यह कि पाँच दिन बाद वह अचानक उसे कंगन से बदलने के लिये
आई जिसकी कीमत आठ रूबल भी नहीं थी। स्पष्ट है कि मैंने इन्कार
कर दिया। उसने शायद उसी वक्त मेरी बीवी की आँखों से कुछ भाँप
लिया होगा और इसलिये वह मेरी अनुपस्थिति में फिर आई और उसने
कंगन लेकर उसे लॉकेट दे दिया।

उसी दिन यह मालूम होने पर मैंने नम्रता, किन्तु दृढ़ता और
तर्क-संगत ढंग से उससे बात की। वह आँखें झुकाये हुए पलंग पर बैठी
थी, दायें पाँव से कालीन पर ताल दे रही थी (उसकी यह एक आदत
थी) और उसके होंठों पर मनहूस मुस्कान थी। तब मैंने आवाज़ ऊँची
किये बिना, बड़ी शान्ति से यह एलान कर दिया कि पैसे मेरे हैं,
कि मुझे जीवन को अपनी दृष्टि से देखने का अधिकार है और जब
मैंने उसे पत्नी बनकर अपने घर आने को कहा था तो उससे कुछ
भी नहीं छिपाया था।

वह अचानक उछलकर खड़ी हुई, अचानक सिर से पाँव तक काँपने

गी और – आप यकीन करेंगे कि अचानक मेरे विरोध मे पाव पटकने गी। वह दरिन्दे जैसी थी, वह दौरा था और दौरे मे वह दरिन्दे सी थी। मुझे तो काठ मार गया। ऐसे विस्फोट की मैंने कभी आशा ही की थी। किन्तु मैंने अपना सन्तुलन नही गवाया, हिला-डुला तक ही और पहले जैसी शान्त आवाज मे यह घोषित कर दिया कि अब अपने काम मे दखल देने की मनाही करता हू। वह मेरा मुह चिढाते ए ठहाका मारकर हसी और घर से बाहर चली गयी।

बात यह है कि घर से बाहर जाने का उसे अधिकार नही था। ादी के पहले ही मैंने यह शर्त लगा दी कि मेरे बिना वह कही नही ायेगी। शाम होते-होते वह लौट आई – मैंने एक शब्द भी नही कहा।

अगले दिन, उसके अगले दिन भी वह सुबह से ही बाहर चली यी। मैंने दुकान बन्द की और उसकी मौसियो की तरफ चल दिया। ादी के फौरन बाद मैंने उनसे नाता तोड लिया था – न तो उन्हे पने यहा बुलाता और न उनके यहा जाता। वहा जाने पर यह पता ला कि वह उनके पास नही गयी थी। मौसियो ने जिज्ञासा से मेरी ात सुनी और फिर मेरे मुह पर ही हसते हुए बोली – "तुम इसी लायक हो।" वे मेरा मज़ाक उडायेगी, इसकी मुझे उम्मीद ही थी। ने इसी वक्त छोटी, चिर अविवाहिता मौसी को एक सौ रूबल देने ा वादा करके अपने साथ मिला लिया और पचीस रूबल पेशगी दे ये। दो दिन के बाद वह मेरे पास आई और उसने यह बताया – कहते हैं कि इस मामले मे आपको उस रेजिमेन्ट का साथी, जिसमे ाप काम करते थे, लेफ्टीनेन्ट येफीमोविच उलझा हुआ है।" मुझे ह सुनकर बहुत हैरानी हुई। इस येफीमोविच ने रेजिमेन्ट मे भी मुझे बसे ज्यादा हानि पहुचाई थी और कोई एक महीना पहले बेहयाई खाते हुए वह दो बार चीजे गिरवी रखने का बहाना करके दुकान र आया था। मुझे याद है कि तब वह मेरी बीवी के साथ हसने- ाने लगा था। मैंने तभी उससे कहा था कि हमारे पुराने कटु सम्बन्धो ो ध्यान मे रखते हुए मेरे यहा फिर कभी आने की हिम्मत न करे। किन कोई ऐसा-वैसा ख्याल मेरे दिमाग मे नही आया, मैंने यही चा कि बेहया आदमी है। लेकिन अब मौसी ने अचानक यह सूचना कि मेरी बीवी का उसके साथ मिलन तय हो चुका है और यह सारा मला मौसियो की पूर्वपरिचिता, यूलिया सम्सोनोव्ना नाम की एक

विधवा, सो भी किसी कर्नल की विधवा के हाथ में है। "आपकी बीवी अब उसी के यहा जाती है।"

इस किस्से को मैं छोटा किये देता हू। इस सारे मामले पर मेरे लगभग तीन सौ रूबल खर्च हुए, किन्तु दो ही दिन मे ऐसी व्यवस्था हो गयी कि मैं बगलवाले कमरे के बन्द दरवाजे के पीछे खड़ा रहकर वह सारी बातचीत सुन सकूगा जो एकान्त मे मेरी बीवी और येफ़ीमोविच के बीच पहले प्रेम-मिलन के समय होगी। किन्तु प्रेम-मिलन के एक दिन पहले हम दोनो के बीच एक छोटा-सा, किन्तु मेरे लिये बहुत ही महत्त्वपूर्ण तमाशा हो गया।

वह शाम को घर लौटी, पलग पर बैठ गयी, उपहासजनक दृष्टि से मेरी ओर देखती हुई कालीन पर पाव से ताल दे रही थी। उस समय उसे देखते हुए मेरे दिमाग़ मे यह ख्याल आया कि पिछले सारे महीने में या यो कहना ज्यादा ठीक होगा कि पिछले दो हफ्तो मे वह अपने असली रूप मे नही थी, यह भी कहा जा सकता है कि उसके बिल्कुल प्रतिकूल थी – उसने अपने को प्रचण्ड, आक्षेप करने को उत्सुक, निर्लज्ज तो नही कह सकता, किन्तु फूहड़ और लड़ाई-झगड़ा चाहनेवाले व्यक्ति के रूप मे प्रस्तुत किया था। वह तो मानो लड़ाई-झगड़े का बहाना ढूढती थी। किन्तु उसकी विनयशीलता उसके मार्ग में बाधा बनती रही थी। जब इस तरह की औरत प्रचण्ड हो उठती है तो बेशक वह सभी सीमाओ का उल्लघन कर जाती है, फिर भी यह साफ़ नज़र आता है कि वह अपने को ऐसा करने को मजबूर कर रही है, अपने को जबर्दस्ती इस रास्ते पर धकेल रही है और वह स्वय ही अपनी लज्जा और शुचिता से पार पाने मे असमर्थ है। इसीलिये तो इस प्रकार की औरते सीमाओ मे इतनी आगे बढ़ जाती है कि हमारी बुद्धि उस पर विश्वास तक करने को तैयार नहीं होती जो हम अपनी आखो से देखते है। इसके विपरीत, दुराचार की अभ्यस्त नारी विस्तार को दबाती है, कहीं अधिक बुरी हरकतें करती है, किन्तु उन पर शिष्टता और शालीनता का परदा डाले रहती है और इस तरह आप पर हीं अपनी श्रेष्ठता की धाक जमाने का प्रयास करती है।

"क्या यह सच है कि आपको रेजिमेंट से इसलिये निकाल दिया गया था कि आपने कायरता दिखाते हुए द्वन्द्व-युद्ध से इन्कार कर दिया था?" उसने अचानक ख़ामोशी तोड़ते हुए पूछा और उसकी आखे

चमक उठी।

"हा, सच है। अफसरो के फैसले के मुताबिक मुझसे यह अनुरोध किया गया था कि मैं रेजिमेन्ट छोड दू, गो मैंने इसके पहले ही अपना त्यागपत्र भेज दिया था।"

"आपको कायर के रूप मे निकाल दिया गया था?"

"हा, उन्होंने मुझे कायर घोषित किया था। किन्तु मैंने कायरता के कारण द्वन्द्व-युद्ध से इन्कार नही किया था, बल्कि इसलिये कि उनका तानाशाही फैसला नही मानना चाहता था और द्वन्द्व-युद्ध की चुनौती नही देना चाहता था, जबकि खुद किसी तरह का अपमान महसूस नही कर रहा था। इतना समझ ले," मैं अपने को वश मे न रख सका, "सभी परिणामों के साथ ऐसी तानाशाही का विरोध करने के लिये किसी भी द्वन्द्व-युद्ध से कही अधिक साहस की जरूरत थी।"

मैं अपने को वश मे नही रख पाया और उक्त वाक्य द्वारा मानो अपनी सफाई पेश कर दी। उसे यही तो चाहिये था मेरे इस नये अपमान की ही तो उसे जरूरत थी। वह दुर्भावना से हस दी।

"क्या यह भी सच है कि उसके बाद तीन साल तक आप पीटर्सबर्ग की सडको पर आवारा की तरह घूमते और भीख मागते तथा बिलियर्ड की मेजो के नीचे सोते रहे?"

"मैंने तो सेन्नाया चौक के व्याज़ेम्स्की मकान* मे भी राते गुजारी। रेजिमेन्ट छोडने के बाद मुझे बहुत अपमान और पतन का सामना करना पडा, किन्तु नैतिक पतन नही हुआ क्योंकि उस समय भी मै खुद ही सबसे पहले अपनी हरकतो की निन्दा करता था। वह तो मेरी इच्छाशक्ति और मस्तिष्क का पतन था और यह मेरी हताशाजनक परिस्थिति का परिणाम था। किन्तु वह तो बीती बात है

"ओह हां, अब तो आप बडे आदमी है – साहूकार है!"

यह मेरे गिरवी रखने के धन्धे की तरफ इशारा था। किन्तु इस बार मैंने अपने को वश मे रखा। मैंने देखा कि वह मेरे लिये अपमानजनक स्पष्टीकरण पाने को बेकरार है और मैंने ऐसे स्पष्टीकरण नही दिये। इसी वक्त ऐसा हुआ कि कोई मास्र गिरवी रखने आ गया और मैं उसके पास चला गया। एक घण्टे बाद वह बाहर जाने के लिये

---

* गरीबों के सस्ते रैनबसेरे का स्थान। – सं०

कपड़े पहनकर मेरे सामने आई और बोली –

"लेकिन शादी से पहले आपने मुझे इस सब के बारे में कुछ नहीं बताया?"

मैंने कोई जवाब नहीं दिया और वह बाहर चली गयी।

तो अगले दिन मैं दरवाजे के पीछे उस कमरे में खड़ा हुआ अपने भाग्य का निर्णय सुन रहा था और मेरी जेब में पिस्तौल थी। वह बन-ठनकर आई थी, मेज के पास बैठी थी और येफीमोविच उसके सामने अपनी अदायें दिखा रहा था। और नतीजा क्या निकला? नतीजा यही निकला (मैं बड़े गर्व से कहता हूं), नतीजा बिल्कुल वही निकला जो मैं पहले से अनुभव कर रहा था और जिसकी पूर्वकल्पना कर रहा था, यद्यपि उस समय मुझे इसकी चेतना नहीं थी कि मैं इसे पहले से अनुभव और इसकी पूर्वकल्पना कर रहा हूं। मुझे मालूम नहीं कि मैं स्पष्ट रूप से अपनी बात कह पा रहा हूं।

तो यह हुआ। मैं पूरे एक घण्टे तक सब कुछ सुनता रहा, और पूरे एक घण्टे तक बहुत ही नेक और पवित्रतम नारी तथा सोसाइटी के बिगड़े व्यभिचारी, मन्दबुद्धि और बेहद कमीने व्यक्ति के बीच इस बात का साक्षी बना रहा। आश्चर्यचकित मैं यह सोचता रहा कि यह भोली भाली यह विनम्र-विनीता नपे-तुले शब्द बोलनेवाली यह सब कुछ कहां से जानती है? सोसाइटी के बारे में प्रहसन लिखनेवाला अधिकतम विनोदी लेखक भी ऐसे उपहास-व्यंग्यों, भोले-भाले ठहाकों और बदी के प्रति नेकी की ऐसी पावनतम घृणा के दृश्यों की रचना न कर पाता। उसके शब्दों नपे-तुले शब्दों में कितना निखार, हाजिरजवाबी में कितना पैनापन और भर्त्सना में कितनी सच्चाई थी! और साथ ही लगभग बालिका जैसी सरलता-सादगी भी। वह उसके मुंह पर ही उसके प्रेम-प्रदर्शन, उसके हाव-भाव, उसके प्रेम-प्रस्तावों की खिल्ली उड़ा रही थी। वह तो यह सोचकर नहीं आया था कि उसके बुरे इरादे का कोई विरोध होगा और दुर्भाग्य अब उसके दिमाग की सारी हवा निकल रही। शुरू में तो मैं यह सोच सकता था कि वह सहज भाव से ऐसा कर रही है – एक दुराचारी किन्तु तेज दिमाग व्यक्ति की [illegible] अपने कौशल बता रहा है। किन्तु नहीं, सच्चाई सूरज की तरह [illegible] उजागर [illegible] हो गयी और सब की सब [illegible] रही। केवल [illegible] मन से [illegible] हुई और उस

घृणा के कारण इस अनुभवहीना ने ऐसे प्रेम-मिलन की बात सोची किन्तु जब वास्तविक स्थिति सामने आई तो फौरन इसकी आखे खुल गयी। वह किसी भी तरह मेरा अपमान करने के लिये छटपटा रही थी, किन्तु ऐसा बुरा कदम उठाने का फैसला करके भी वह ऐसी गन्दगी को बर्दाश्त नही कर पायी। और क्या उसे, उस पाप-मुक्त, उस पवित्र-पावन को, जो आदर्श भी रखती थी येफीमोविच या सोसाइटी का कोई और बाका-छैला अपनी ओर खीच सकता था? इसके विपरीत, वह तो सिर्फ इसका उपहास-पात्र बन गया। उसकी आत्मा मे जो कुछ सच्चा-अच्छा था, जागृत हो उठा था और क्रोध केवल व्यग्य के लिये प्रेरित कर रहा था। दोहराता हू कि अन्त मे तो उस मसखरे की बिल्कुल सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी, वह नाक-भौह सिकोडे बैठा था मुश्किल मे ही कोई जवाब देता था और मुझे तो इस बात की शका भी होने लगी थी कि कही वह नीचता की भावना मे उससे बदला ही न लेने लगे। मैं दोहराता हू, मुझे इस बात का गर्व है कि किसी भी तरह की हैरानी के बिना मैंने यह सब कुछ सुना। मेरे लिये तो यह मानो जाना-पहचाना मामला था। मैं तो मानो इसीलिये यहा आया था कि यह सब सुनूगा। मैं किसी भी तरह के आरोप पर विश्वास न करते हुए यहा आया था, फिर भी मैंने पिस्तौल अपनी जेब मे रख ली थी – यही सचाई है। और क्या मैं उसकी, अपनी बीवी की किसी दूसरे रूप मे कल्पना कर सकता था? आखिर किसलिये मैं उसे प्यार करता था, किसलिये इतना मूल्यवान मानता था किसलिये मैंने उससे शादी की थी? ओह, उस वक्त मुझे इस बात का पूरा यकीन हो गया कि वह मुझसे कितनी ज्यादा नफरत करती है लेकिन साथ ही यह यकीन भी हो गया कि वह चरित्रहीन नही है। मैंने अचानक दरवाजा खोलकर उस दृश्य का अन्त कर दिया। येफीमोविच उछलकर खडा हुआ मैंने पत्नी का हाथ थामा और अपने साथ बाहर चलने को कहा। येफीमोविच सम्भला और उसने बहुत जोर से गूजता हुआ ठहाका लगाया –

"ओह, पति-पत्नी के पावन अधिकारो के विरुद्ध मुझे कोई आपत्ति नही है, ले जाइये इसे, अपने साथ ले जाइए!" और जानते है उसने मेरे पीछे पुकारकर कहा केवल किसी भले आदमी को आपसे द्वन्द्व-युद्ध नही करना चाहिये, किन्तु आपकी श्रीमती का आदर करते हुए मैं ऐसा करने को आपकी सेवा मे हाजिर हू अगर आप ऐसा

मगर मोल लेने को तैयार हो तो ..."

"सुन रही है!" मैंने क्षण भर को उसे रास्ते में रोककर कहा।

इसके बाद हम रास्ते भर मौन साधे रहे। मैं उसका हाथ पकड़े हुए अपने साथ ले जा रहा था और उसने जरा भी विरोध नहीं किया। इसके विपरीत, वह बहुत ही प्रभावित थी, किन्तु घर पहुँचने तक। घर पहुँचते ही वह कुर्सी पर बैठ गयी और उसने मुझ पर अपनी दृष्टि जमा ली। उसके चेहरे का रंग बिल्कुल उड़ा हुआ था, होंठों पर वैसा उसी क्षण उपहासजनक बल पड़ गये, किन्तु आँखें गम्भीर और कठोर चुनौती-सी देती हुई देख रही थीं। पहले क्षणों में मानो उसे इस बात का पूरा यकीन था कि मैं पिस्तौल से गोली चलाकर उसकी हत्या कर दूँगा। किन्तु मैंने जेब से चुपचाप पिस्तौल निकाली और उसे मेज पर रख दिया। उसने मेरी और पिस्तौल की तरफ देखा। (ध्यान दीजिये कि इस पिस्तौल से वह परिचित थी। जब मैंने दुकान खोली थी, उसी समय मैंने पिस्तौल खरीदी थी और उसमें गोलियाँ भर ली थीं। दुकान खोलते वक्त ही मैंने यह तय कर लिया था कि न तो बड़े कुत्ते रखूँगा और न कोई हट्टा-कट्टा चौकीदार, जैसा कि मोजेर के यहाँ था। मेरी तो बावर्चिन ही आनेवालों के लिये दरवाजा खोलती थी। किन्तु हमारे धन्धे में वास्ता रखनेवालों के लिये जरूरत पड़ जाने पर आत्म-रक्षा का कोई उपाय जरूर होना चाहिये और इसलिये मैं गोलियों से भरी हुई पिस्तौल हमेशा अपने पास रखता था। पत्नी बनकर मेरे घर में आने के बाद पहले कुछ दिनों में उसने इस पिस्तौल में बहुत दिलचस्पी ली, इसके बारे में पूछ-ताछ की। मैंने उसे इसकी रचना और कार्य-विधि भी समझायी तथा एक बार निशाने पर गोली चलाने के लिये भी मना लिया। इस सब की ओर ध्यान दीजिये।) उसकी सहमी हुई दृष्टि की ओर कोई ध्यान न देकर मैं पूरी तरह से कपड़े उतारे बिना ही बिस्तर पर लेट गया। मैं अपने को बेहद थका हुआ अनुभव कर रहा था। रात के कोई ग्यारह बज चुके थे। वह [illegible] बिना कोई एक शब्द कहे उसी जगह पर बैठी रही। इसके बाद [illegible] [illegible] उतारे बिना ही [illegible] पर लेट गयी। [illegible] [illegible] मेरे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

६

भयानक स्मृति

अब यह एक भयानक स्मृति है

मेरे ख्याल मे सुबह के सात बजने के बाद मेरी आख खुली। कमरे मे लगभग पूरी तरह उजाला हो चुका था। मैं पूरी चेतना के साथ एकबारगी जागा और मैंने आखे खोल ली। वह मेज के पास खडी थी और उसके हाथ मे पिस्तौल थी। उसने यह नही देखा कि मैं जाग गया हू और उसकी तरफ देख रहा हू। अचानक मैंने क्या देखा कि वह हाथ मे पिस्तौल लिये हुए मेरी तरफ आने लगी है। मैंने झटपट आखे मूद ली और यह ढोंग किया कि बहुत गहरी नीद सो रहा हू।

वह बिस्तर के पास आकर मेरे निकट खडी हो गयी। मैं सब कुछ सुन रहा था, बेशक गहरी खामोशी छाई थी, मगर मैं उस खामोशी को भी सुन रहा था। इसी समय मुझे एक उत्तेजनापूर्ण झटका-सा लगा और अपने को वश मे न रख पाकर मैंने अपनी इच्छा के विरुद्ध सहसा आखे खोल ली। वह सीधे मेरी ओर, मेरी आखो मे देख रही थी और पिस्तौल मेरी कनपटी से सटी हुई थी। हमारी नज़रे मिली। किन्तु हमने एक क्षण से अधिक एक-दूसरे की तरफ नही देखा। मैंने फिर से ज़बर्दस्ती आखे मूद ली और उसी क्षण अपने मन की पूरी शक्ति से यह सकल्प कर लिया कि मेरे साथ चाहे कुछ भी क्यो न हो जाये, मैं अब न तो हिलू-डुलूगा और न आखे ही खोलूगा।

वास्तव मे कभी-कभी ऐसा भी होता है कि गहरी नीद मे सो रहा व्यक्ति अचानक आखे खोल लेता है, क्षण भर को सिर भी ऊपर उठाता है, कमरे मे नज़र घुमाता है और सचेत हुए बिना क्षण भर बाद फिर से तकिये पर अपना सिर टिकाकर सो जाता है तथा उसे कुछ भी याद नही रहता। जब उससे नज़रे मिलने और पिस्तौल को कनपटी के पास महसूस करने के बाद मैंने अचानक आखे मूद ली और गहरी नीद सो रहे व्यक्ति की भाति हिला-डुला नही, तो वह निश्चय ही ऐसा मान सकती थी कि मैं सचमुच सो रहा हू और मैंने कुछ भी नही देखा। खास तौर पर यह बिल्कुल अविश्वसनीय था कि जो कुछ मैंने देखा था, उसे देखने के बाद मैं ऐसे क्षण मे फिर से आखे मूद सकता था।

हां, यह अविश्वसनीय था। किन्तु वह सचाई का अनुमान भी तो लगा सकती थी — मेरे मस्तिष्क में यह विचार भी उसी क्षण सहसा कौंधा। ओह, एक क्षण से भी कम समय में विचारों और भावनाओं का कैसा तूफान-सा मेरे मन-मस्तिष्क में उमड़ पड़ा! मानवीय विचारों की विद्युत-शक्ति जिन्दाबाद! अगर उसने सचाई को भांप लिया है, अगर वह जानती है कि मैं सो नहीं रहा हूं तो उस हालत में (मैंने अनुभव किया) उसके हाथों मरने की अपनी तत्परता दिखाकर मैंने उसे कुचल दिया है और अब उसका हाथ कांप सकता है। इस नयी, असाधारण अनुभूति से उसका पहलेवाला संकल्प डावांडोल हो सकता है। कहते हैं कि ऊंचाई पर खड़े लोग स्वयं ही नीचे की ओर, खड्ड की ओर खिंचने लगते हैं। मेरे ख्याल में बहुत-सी आत्महत्यायें और हत्यायें केवल इसीलिये होती हैं कि पिस्तौल हाथ में ले ली जाती है। यह भी एक तरह का खड्ड ही है, खड़ी ढाल है जिससे आदमी नीचे लुढ़के बिना नहीं रह सकता और कोई अदम्य शक्ति व्यक्ति को पिस्तौल का घोड़ा दबाने के लिये विवश करती है। किन्तु इस बात की चेतना कि मैंने सब कुछ देखा है, कि मैं सब कुछ जानता हूं और चुपचाप उसके हाथ से मरने का इन्तज़ार कर रहा हूं — उसे नीचे लुढ़कने से बचा सकती थी।

नीरवता बनी रही और सहसा मैंने अपनी कनपटी, अपने बालों के पास लोहे का ठण्डा स्पर्श अनुभव किया। आप पूछते हैं — क्या मुझे इस बात का पक्का यकीन था कि मेरी जान बच जायेगी? भगवान को हाज़िर-नाज़िर मानकर आपको जवाब देता हूं कि मुझे इसकी बिल्कुल उम्मीद नहीं थी, शायद सौ में से एक प्रतिशत। तो किसलिये मैं मौत को गले लगा रहा था? लेकिन मैं आपसे यह पूछता हूं कि जिस व्यक्ति को मैं पूजता था, जब उसी ने मुझे मारने के लिये पिस्तौल उठा ली थी तो क्या ज़रूरत थी मुझे इस ज़िन्दगी की? इसके अलावा मैं जी-जान से यह जानता था कि हमारे बीच इस क्षण ज़ोरदार संघर्ष चल रहा है, ज़िन्दगी और मौत का भयानक द्वन्द्व हो रहा है, कुछ समय पहले के उसी कायर का द्वन्द्व-युद्ध जिसे उसके साथियों ने कायरता के लिये रेजिमेन्ट से निकाल दिया था। मैं यह जानता था और अगर उसने इस सचाई को भांप लिया था कि मैं सो नहीं रहा हूं, तो इसे भी इस संघर्ष की चेतना थी।

हो सकता है कि ऐसा कुछ नही था, शायद उस वक्त मैने यह सब कुछ नही सोचा था, लेकिन ऐसा ही होना चाहिये था, बेशक अचेतन रूप से, क्योकि बाद मे, अपने जीवन के हर क्षण मे मैं केवल यही तो करता रहा यानी इसी के सम्बन्ध मे सोचता रहा।

लेकिन आप फिर से यह पूछ रहे है – क्यो मैंने उसे ऐसा अपराध करने से नही बचाया? ओह, बाद मे मैंने हज़ारो बार, जब-जब भी पीठ पर भुरभुरी अनुभव करते हुए मुझे यह क्षण याद आया, खुद अपने से यही सवाल किया। किन्तु उस समय मेरी आत्मा बहुत बुरी तरह से हताश थी – मैं मरनेवाला था, खुद मौत के मुह मे जानेवाला था, इसलिये कैसे मैं किसी दूसरे को बचा सकता था? और फिर आप यह कैसे जानते हैं कि उस समय मैं किसी को बचाना चाहता था या नही? कौन यह जानता है कि उस समय मैं क्या अनुभव कर रहा था?

फिर भी मेरी चेतना उत्तेजित थी, क्षण बीतते जा रहे थे गहरा सन्नाटा छाया था, वह अभी तक मेरे सिरहाने खडी थी, – अचानक मैं आशा से सिहर उठा। मैंने झटपट आखे खोली। वह कमरे से जा चुकी थी। मैं बिस्तर से उठा – मैं जीत गया था और वह सदा के लिये हार गयी थी!

मैं चाय के लिये मेज़ पर गया। समोवार हमेशा पहले कमरे मे रखा जाता था और चाय वह हमेशा खुद बनाकर देती थी। मैं चुपचाप मेज़ के सामने जा बैठा और उससे चाय का गिलास ले लिया। कोई पाच मिनट बाद मैंने उसकी तरफ देखा। उसका चेहरा बेहद ज़र्द था, पिछले दिन से भी ज्यादा पीला और वह मेरी ओर देख रही थी। और अचानक – और अचानक, यह देखकर कि मैं उसकी ओर देख रहा हू, उसके मुरझाये-मुरझाये होठो पर फीकी-सी मुस्कान आ गयी और उसकी आखो मे सहमा-सहमा-सा प्रश्न झलक उठा। इसका मतलब यह है कि उसे अभी तक सन्देह है और वह अपने आपसे पूछ रही है – मैं सब कुछ जानता हू या नही, मैंने सब कुछ देखा है या नही' मैंने उदासीनता से दृष्टि दूसरी ओर कर ली। चाय पीने के बाद मैंने दुकान बन्द की, बाज़ार गया, वहा लोहे का पलग और परदा खरीदा। घर लौटने पर मैंने पलग को बडे कमरे मे बिछाने और उसके गिर्द परदा लगा देने का आदेश दिया। लोहे का यह पलग उसके लिये

था मगर मैंने उससे एक भी शब्द नहीं कहा। इस पलग की बदौलत मेरे कुछ कहे बिना ही वह यह समझ गयी कि "मैंने सब कुछ देखा है और मैं सब कुछ जानता हू" तथा इस बारे मे अब किसी भी तरह के सन्देह की कोई गुजाइश नही है। सदा की भांति मैंने रात भर के लिये पिस्तौल मेज पर रख दी। रात को वह चुपचाप अपने इस नये पलग पर सोने चली गयी। हमारा शादी का बन्धन टूट गया था, "उसे पराजित कर दिया गया था, किन्तु क्षमा नहीं।" रात को वह सरसाम मे बडबडाने लगी और सुबह उसे जोर का बुखार हो गया। वह छ हफ्ते तक बीमार रही।

दूसरा अध्याय

१

गर्व का सपना

लुकेरिया ने अभी-अभी मुझसे यह कहा है कि वह मेरे यहां नहीं रहेगी और जैसे ही उसकी मालकिन को दफना दिया जायेगा, वह चली जायेगी। मैंने घुटनो के बल होकर पाच मिनट तक प्रार्थना की, घण्टे भर प्रार्थना करनी चाही, किन्तु लगातार सोचता, सोचता जा रहा हूं और मेरे विचार भी रुग्न हैं, मस्तिष्क भी रुग्नावस्था मे है – तो प्रार्थना करने मे क्या तुक है – यह तो सिर्फ पाप है! यह भी अजीब बात है कि मैं सोना नही चाहता – बहुत बडे, बहुत ही भयानक दुख की हालत मे, पहले जोरदार झटको के बाद हमेशा सोने को मन होता है। कहते है कि जिन्हे मौत की सजा सुना दी जाती है, वे अपनी जिन्दगी की आखिरी रात को बहुत ही गहरी नीद सोते हैं। हा, ऐसा ही होना चाहिये, यह प्रकृति के सर्वथा अनुरूप है, वरना आदमी बर्दाश्त न कर पाये. मैं सोफे पर लेट गया, मगर मुझे नीद नहीं आई..

..उसकी छ. हफ्ते की बीमारी के दौरान मैंने, लुकेरिया और अस्पताल की कुशल नर्स ने, जिसे मैंने विशेष रूप से इसी काम के

लिये रखा था, दिन-रात उसकी बहुत टहल-सेवा की। पैसे की मैं जरा भी परवाह नहीं करता था, उस पर खर्च करने से मुझे खुशी भी होती थी। डाक्टर श्रेदेर को मैं उसके इलाज के लिये बुलाता और हर बार उसे फीस के रूप मे दस रूबल देता। जब उसे होश आ गया तो मैं बहुत कम उसके सामने आने लगा। वैसे, इस सबका मैं किसलिये वर्णन कर रहा हू? जब उसने बिस्तर छोड दिया तो चुपचाप मेरे कमरे मे उस खास मेज के पास जा बैठी जो मैंने उसी के लिये इन दिनो खरीदी थी.. हा, यह सच है कि हम बिल्कुल खामोश रहते थे, यह कहना ठीक होगा कि बाद मे हम बातचीत तो करने लगे, मगर मामूली चीजो के बारे में। जाहिर है कि मैं तो जान-बूझकर ज्यादा बात नही करता था, किन्तु इतना अच्छी तरह समझ गया था कि वह भी कम से कम बात करके ही खुश रहती है। उसकी ओर से मुझे यह बिल्कुल स्वाभाविक लगा – "वह बहुत ही स्तम्भित और बुरी तरह से पराजित है," मैं सोचता था, "और निश्चय ही उसे भूलने तथा स्थिति का अभ्यस्त होने का समय मिलना चाहिये।" इस तरह हम मौन साधे रहे, किन्तु मैं मन ही मन अपने को भविष्य के लिये हर क्षण तैयार करता रहता था। मेरा ख्याल था कि वह भी ऐसा ही कर रही है और मेरे लिये इस बात का अनुमान लगाना बहुत दिलचस्प था कि अब वह अपने दिल मे क्या सोचा करती है।

मैं तो यह भी कहूगा – ओह, बेशक यह कोई नही जानता कि उसकी बीमारी के दिनो मे आहे भरते हुए मैंने कितना दुख सहा। लेकिन मैं मन ही मन आहे भरता था और उन्हे लुकेरिया से भी छिपाता था। मैं यह सोच ही नही सकता था, यह कल्पना ही नही कर सकता था कि इस सब को जाने बिना ही यह इस दुनिया से कूच कर जायेगी। जब उसके सिर पर से मौत का खतरा टल गया और उसकी सेहत बेहतर होने लगी, तो मुझे याद है, कि मैं बहुत जल्द और पूरी तरह से शान्त हो गया था। इतना ही नही, मैंने तो हमारे भविष्य को यथासम्भव अधिक समय तक टालने और फिलहाल सभी कुछ इसी हालत मे छोड देने का भी निर्णय कर लिया। हा, उस समय मेरे साथ एक अजीब और खास बात हो गयी थी – मैं इसे कोई दूसरी संज्ञा दे ही नही सकता – मेरी जीत हो गयी थी और केवल इसकी चेतना ही मुझे अपने लिये पर्याप्त प्रतीत हुई। सारा जाडा इसी तरह

मे बीत गया। ओह, मैं सन्तुष्ट था, इतना सन्तुष्ट, जितना पहले कभी नही हुआ था और जाड़े भर ऐसा ही रहा।

बात यह है – मेरे जीवन मे एक ऐसी भयानक परिस्थिति थी जो उस समय तक यानी बीवी के साथ पिस्तौल वाली घटना होने तक हर दिन और हर घड़ी मेरे दिल को कचोटती रहती थी यानी मेरी इज़्ज़त पर बट्टा लगने और रेजिमेन्ट से मेरे निकाले जाने की परिस्थिति। संक्षेप में – मेरे प्रति तानाशाही बेइन्साफी हुई थी। यह सही है कि मेरे साथी मुझे मेरे टेढ़े मिज़ाज या शायद इसलिये नही चाहते थे कि मैं उन्हे हास्यास्पद लगता था। बेशक अक्सर ऐसा होता है कि जिसे आप प्यार करते हैं, चाहते हैं, जिसका आदर-सत्कार करते हैं, आपके साथी उसी की खिल्ली उड़ाते जाते हैं। ओह, मुझे तो स्कूल में भी कभी कोई प्यार नही करता था। हमेशा और हर जगह ही मुझे नापसन्द किया गया। मैं तो लुकेरिया को भी अच्छा नहीं लगता। रेजिमेन्ट वाली घटना बेशक इस चीज़ का नतीजा थी कि वे मुझे नापसन्द करते थे, किन्तु थी संयोग की बात ही। मैं इसलिये यह कह रहा हूँ कि किसी संयोग के कारण, जो सम्भव था और जो टल भी सकता था, किन्हीं दुर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों के कारण जो बादलों की तरह तितर-बितर भी हो सकती थी, किसी के नष्ट हो जाने से और अधिक दुःखदायी, अधिक असह्य कुछ भी नही हो सकता। किसी समझदार आदमी के लिये यह अपमानजनक है। घटना यह थी –

एक शाम को थियेटर में अन्तराल होने पर मैं कैन्टीन में था। इसी वक्त हुस्सार अ० अचानक वहां आया और उस जगह उपस्थित सभी फौजी अफसरों और शौकीनों को ऊंचे-ऊंचे सुनाते हुए अपने ही अन्य हुस्सार साथियों से यह कहने लगा कि दालान में हमारी रेजिमेन्ट के कप्तान बेजुम्त्सेव ने अभी-अभी किसी से झगड़ा किया है और "लगता है कि वह नशे में है।" यह बातचीत आगे नहीं बढ़ी, क्योंकि कप्तान बेजुम्त्सेव नशे में नहीं था और दालान में झगड़े जैसी कोई बात नहीं हुई थी। हुस्सार कोई और बात करने लगे और यह मामला यहीं खत्म हो गया। किन्तु अगले दिन यह किस्सा हमारी रेजिमेन्ट में पहुंच गया और हमारे यहां उसी समय यह कहा जाने लगा कि हमारी रेजिमेन्ट का केवल मैं ही एक प्रतिनिधि उस वक्त कैन्टीन में उपस्थित था और हुस्सार अ० ने जिस वक्त कप्तान बेजुम्त्सेव की शान में गुस्ताखी

की थी तो मुझे उसी समय उसके पास जाकर उसे डाटते हुए चुप करवा देना चाहिये था। लेकिन किसलिये? अगर वह हुस्सार कप्तान बेजुम्येव से प्यार करती हुए था तो यह उन दोनों का अपना मामला था और मैं किसलिये अपनी टांग अड़ाता? किन्तु हमारे अफसरों का मत था कि यह व्यक्तिगत मामला नहीं था और हमारी रेजिमेन्ट से सम्बन्ध रखता था और चूंकि अपनी रेजिमेन्ट का केवल मैं ही एक अफसर कैन्टीन में था, इसलिये मैंने वहां उपस्थित फौजी अफसरों तथा असैनिक नाटक-दर्शकों को यह दिखा दिया था कि हमारी रेजिमेन्ट में ऐसे अफसर भी हैं जो अपनी रेजिमेन्ट की इज्जत की बहुत अधिक परवाह नहीं करते। मैं उनके ऐसे निष्कर्ष से सहमत नहीं हो सकता था। मुझसे यह कहा गया कि मैं अभी भी, यद्यपि देर हो चुकी थी अपनी इस भूल को सुधार सकता हूं, अगर हुस्सार अ० को इसके लिये औपचारिक रूप से चुनौती दूं। मैंने ऐसा नहीं करना चाहा और चूंकि झल्लाया हुआ था, इसलिये बड़े गर्व से इन्कार कर दिया। इसके फौरन बाद मैंने अपना त्यागपत्र भी दे दिया – बस इतना ही किस्सा है। मैंने अपना गर्व तो बनाये रखा था किन्तु मेरा दिल टूट गया था। मैं अपनी इच्छा-शक्ति और चिन्तन-शक्ति खो बैठा। इसी बीच यह हुआ कि मास्को में मेरे बहनोई ने हमारी थोड़ी-सी जमा-पूंजी उड़ा दी जिसमें मेरा बहुत ही छोटा-सा हिस्सा भी शामिल था। चुनांचे मैं बेघर-बार और कौड़ी-कौड़ी को मोहताज हो गया। मैं कहीं नौकरी तो कर सकता था, मगर मैंने ऐसा नहीं किया। शानदार फौजी वर्दी के बाद किसी रेल-कर्मचारी की नौकरी करना मेरे लिये सम्भव नहीं था। अगर मुझे लज्जा और अपमान के कड़वे घूंट पीने ही हैं अगर मेरा पतन होना ही है तो जितना ज्यादा यह सब हो उतना ही अच्छा है। तो मैंने अपने लिये यह रास्ता चुना। बहुत ही दुखद स्मृतियों के तीन साल बीते जिनमें भूखे-भूखों के लिये व्याजेम्स्की भवन में बिताया गया समय भी शामिल है। डेढ़ साल पहले मास्को में मेरी धर्म-माता का देहान्त हुआ जो बहुत ही अमीर बुढ़िया थी। उसने अपने वसीयतनामे में अन्य लोगों के साथ-साथ मेरे लिये भी बिल्कुल अप्रत्याशित ही तीन हजार रूबल छोड़ दिये थे। मैंने सोच-विचारकर अपना भाग्य निर्णय कर लिया। मैंने गिरवी रखने की दुकान खोलने का फैसला किया, क्योंकि ऐसा करने पर मुझे लोगों के सम्पर्क आने अर्थात्

की सफाई देने की जरूरत नही रहेगी। पैसा जमा करूंगा, उसके बाद मकान खरीदूगा और कटु स्मृतियो से दूर नई जिन्दगी शुरू करूंगा-यह थी मेरी योजना। फिर भी दुखद अतीत और सदा के लिये मेरी ख्याति तथा इज्जत पर लगा हुआ धब्बा मुझे हर दिन, हर घडी व्यथित करता रहता था। किन्तु इसी समय मैंने शादी कर ली। यह सयोग था या नही—कहना कठिन है। हा, पत्नी को घर में लाते हुए मैंने यही सोचा कि एक मित्र को अपने घर मे ला रहा हू। मुझे तो बहुत ही जरूरत थी मित्र की। लेकिन मैं यह भी साफ तौर पर देख रहा था कि इस मित्र को मानसिक रूप से तैयार करने की आवश्यकता है, उसे एक साचे मे ढालना और उस पर विजय पाना भी जरूरी है। क्या मैं मन मे पूर्वग्रह लेकर आनेवाली इस षोडशी को तत्काल ही कुछ स्पष्ट कर सकता था? उदाहरण के लिये, अगर पिस्तौल वाली भयानक घटना की सयोग से मदद न मिलती तो क्या मैं उसे कभी यह यकीन दिला सकता था कि मैं कायर नही हू और रेजिमेन्ट मे मुझ पर कायर होने का अन्यायपूर्ण आरोप लगाया गया है? यह भयानक घटना बहुत ही अनुकूल समय पर घटी। पिस्तौल के सामने मे अपना सयम दिखाकर मैंने अपने सारे दुखद अतीत से बदला ले लिया। बेशक अन्य किसी को भी इसके बारे मे पता नही चला, किन्तु वह तो जान गयी और मेरे लिये यही सब कुछ था, क्योकि वही तो मेरे लिये सब कुछ थी, मेरे भावी सपनों की सारी आशा थी! वही तो एक ऐसा व्यक्ति थी जिसे मैं अपने लिये तैयार कर रहा था, मुझे किसी दूसरे की जरूरत नही थी—और वह सब कुछ जान गयी थी। कम से कम उसे तो यह मालूम हो गया था कि मेरे शत्रुओं के साथ मिल जाने के मामले मे उसने अन्यायपूर्ण उतावली से काम लिया है। इस विचार से मुझे खुशी होती थी। उसकी दृष्टि मे मैं अब कमीना नही रह सकता था, अधिक से अधिक वह मुझे अजीब आदमी समझ सकती थी। किन्तु जो कुछ हो चुका था, उसके बाद यह विचार भी मुझे कुछ बुरा नही लग रहा था—अजीब होना कोई बुराई नही, इसके विपरीत, वह कभी-कभी नारियों को अपनी ओर आकर्षित करता है। थोडे मे यह कि मैंने जान-बूझकर इस बात को इसी वक्त पूरी तरह साफ नही करना चाहा। जो कुछ हुआ था, मेरे चैन के लिये वह फिलहाल काफी था और अपने सपनों के ताने-बाने बुनने

के लिये अनेक चित्र और सामग्री प्रदान करता था। मुसीबत तो यही है कि मैं स्वप्नद्रष्टा हूं – मेरे सपनो के लिये काफी सामग्री थी और उसके बारे मे मैंने यही सोचा कि वह इन्तज़ार कर सकती है।

सारा जाड़ा ऐसे ही बीत गया, किसी चीज़ की आशा-प्रतीक्षा मे। जब वह अपनी मेज़ के पास बैठी होती तो मुझे चोरी-चोरी उसे देखना अच्छा लगता। वह दिन को सिलाई-कढ़ाई करती और शामो को कभी-कभी मेरी अलमारी मे ली हुई किताबे पढ़ती। अलमारी मे मेरी पसन्द की किताबो से भी उसे मेरी अच्छी रुचि का प्रमाण मिलना चाहिये था। वह लगभग कही भी बाहर नही जाती थी। शाम के भोजन के बाद, झुटपुटा होने से पहले मैं हर दिन उसे सैर के लिये बाहर ले जाता। हम घूमते, किन्तु पहले की भांति बिल्कुल चुपचाप नही। मैं ऐसा जाहिर करने की कोशिश करता कि हम चुप नही है और झगड़ नही रहे है, किन्तु, जैसा कि मैं पहले कह चुका हू, हम दोनो ऐसा करते कि बातचीत बड़ी सीमित रहे। मैं जान-बूझकर ऐसा करता और उसके बारे मे यह सोचता कि उसे 'समय देना' चाहिये। बेशक यह बड़ी अजीब-सी बात है कि जाड़े के लगभग खत्म होने तक मेरे दिमाग़ मे एक बार भी यह ख्याल नही आया कि मुझे तो उसे चोरी-चोरी देखना अच्छा लगता है, लेकिन सारे जाड़े मे उसे तो मैंने एक बार भी अपनी तरफ नज़र उठाते नही देखा! मैंने सोचा कि यह उसकी भीरुता है। इसके अलावा बीमारी के बाद वह इतनी भीरुतापूर्ण विनम्र, इतनी कमज़ोर दिखाई देती थी। नही, इन्तज़ार करना ही बेहतर होगा और "एक दिन वह अचानक खुद ही मेरे पास आयेगी

इस विचार से मुझे बड़ी खुशी होती। इतना और जोड़ देना हू कि कभी-कभी मैं जान-बूझकर खुद अपने को उसके खिलाफ भड़काता और दिल-दिमाग़ को सचमुच इस हद तक गर्म कर लेता कि यह महसूस करने लगता कि उसने मेरे साथ ज़्यादती की है। कुछ अरसे तक यही हाल रहता। लेकिन उसके प्रति मेरी घृणा कभी स्थायी नहीं हो पाती थी, गहरी जड़ नही जमा पाती थी। और मैं स्वय भी यह अनुभव करता था मानो यह खिलवाड़ हो। बेशक पसन्द और पर्दा खरीदकर मैंने शादी का बन्धन तोड़ डाला था मगर वह कोई अपराधिनी हो ऐसा मैं कभी अनुभव नही कर पाता था। यह भी इसलिए नहीं कि उसके अपराध के प्रति मेरा रवैया गम्भीर नहीं था बल्कि इस कारण

की सफाई देने की जरूरत नही रहेगी। पैसा जमा करूंगा, उसके बा
मकान खरीदूगा और कटु स्मृतियों से दूर नई जिन्दगी शुरू करूंगा-
यह थी मेरी योजना। फिर भी दुखद अतीत और सदा के लिये मेरी
ख्याति तथा इज्जत पर लगा हुआ धब्बा मुझे हर दिन, हर घड़ी व्यथित
करता रहता था। किन्तु इसी समय मैंने शादी कर ली। यह
सयोग था या नही – कहना कठिन है। हा, पत्नी को घर में लाते हुए
मैंने यही सोचा कि एक मित्र को अपने घर में ला रहा हू। मुझे तो
बहुत ही जरूरत थी मित्र की। लेकिन मैं यह भी साफ तौर पर देख
रहा था कि इस मित्र को मानसिक रूप से तैयार करने की आवश्यकता
है, उसे एक साचे मे ढालना और उस पर विजय पाना भी
है। क्या मैं मन मे पूर्वग्रह लेकर आनेवाली इस षोडशी को त
ही कुछ स्पष्ट कर सकता था? उदाहरण के लिये, अगर पि
वाली भयानक घटना की सयोग से मदद न मिलती तो क्या मैं
कभी यह यकीन दिला

मे मिले अनेक चित्र और सामग्री प्रदान करता था। मुसीबत तो यही है कि मैं स्वप्नद्रष्टा हूं—मेरे सपनो के लिये काफ़ी सामग्री थी और उसके बारे मे मैंने यही सोचा कि वह इन्तज़ार कर सकती है।

सारा जाड़ा ऐसे ही बीत गया, किसी चीज़ की आशा-प्रतीक्षा मे। जब वह अपनी मेज़ के पास बैठी होती तो मुझे चोरी-चोरी उसे देखना अच्छा लगता। वह दिन को सिलाई-कढ़ाई करती और शामो को कभी-कभी मेरी अलमारी से ली हुई किताबे पढ़ती। अलमारी मे मेरी पसन्द की किताबो मे भी उसे मेरी अच्छी रुचि का प्रमाण मिलना चाहिये था। वह लगभग कही भी बाहर नही जाती थी। शाम के भोजन के बाद, झुटपुटा होने से पहले मैं हर दिन उसे सैर के लिये बाहर ले जाता। हम घूमते, किन्तु पहले की भांति बिल्कुल चुपचाप नही। मैं ऐसा ज़ाहिर करने की कोशिश करता कि हम चुप नही हैं और झगड़ नही रहे है, किन्तु, जैसा कि मैं पहले कह चुका हू, हम दोनो ऐसा करते कि बातचीत बड़ी सीमित रहे। मैं जान-बूझकर ऐसा करता और उसके बारे मे यह सोचना कि उसे "समय देना" चाहिये। बेशक यह बड़ी अजीब-सी बात है कि जाड़े के लगभग खत्म होने तक मेरे दिमाग़ मे एक बार भी यह ख्याल नही आया कि मुझे तो उसे चोरी-चोरी देखना अच्छा लगता है, लेकिन सारे जाड़े मे उसे तो मैंने एक बार भी अपनी तरफ नज़र उठाते नही देखा! मैंने सोचा कि यह उसकी झेंप है। इसके अलावा बीमारी के बाद वह इतनी भीरुतापूर्ण [illegible], इतनी कमज़ोर दिखाई देती थी। नही, इन्तज़ार करना ही बेहतर होगा और "एक दिन वह अचानक खुद ही मेरे पास आयेगी

इस विचार से मुझे बड़ी खुशी होती। इतना और जोड़ देना हू कि कभी-कभी मैं जान-बूझकर खुद अपने को उसके खिलाफ भड़काता और दिल दिमाग़ को सचमुच इस हद तक गर्म कर लेता कि यह महसूस करने लगता कि उसने मेरे साथ ज्यादती की है। कुछ अरसे तक यही [illegible]। लेकिन उसके प्रति मेरी घृणा कभी स्थायी नही हो पाती [illegible] नही जमा पाती थी। और मैं खुद भी यह अनुभव [illegible] यह दिखावा है। बेशक [illegible] और [illegible] [illegible] का बन्धन तोड़ दरता था मगर वह कोई अपराधिनी हो [illegible] मैं कभी अनुभव नही कर सका था। तो भी इसलिये नही कि [illegible] स्पष्ट नही था [illegible] इस कारण

२

परदा अचानक हट गया

अपनी बात जारी रखने के पूर्व कुछ शब्द और कहना चाहता हू। एक महीना पहले मैंने उसमे अजीब विचारमग्नता देखी। यह मौन नही, विचारमग्नता थी। इसकी ओर भी मेरा अचानक ध्यान गया। उस समय वह सिर झुकाये हुए सिलाई कर रही थी और उसे यह पता नही चला कि मैं उसकी ओर देख रहा हू। सहसा मैं इस बात से दग रह गया कि वह इतनी दुबली-पतली हो गयी है, चेहरा पीला पड गया है, होठो से लाली गायब हो गयी है – इन सभी चीजो और उसकी विचारमग्नता से मेरे दिल को भयानक धक्का-सा लगा। इसके पहले मैं उसकी हल्की-हल्की सूखी खासी भी सुन चुका था खास तौर पर रातो को। मैं उसी समय उठा और उससे कुछ कहे बिना मैंने डाक्टर श्रेदेर को बुलाने के लिये कह दिया।

श्रेदेर अगले दिन आया। डाक्टर के आने से उसे बडी हैरानी हुई और वह कभी मेरी ओर, तो कभी डाक्टर की तरफ देखती रही।

"मैं बिल्कुल स्वस्थ हू," उसने अस्पष्ट-सी तनिक हसी के साथ कहा।

श्रेदेर ने उसकी अच्छी तरह से जाच नही की (ये डाक्टर लोग कभी-कभी बहुत लापरवाह होते हैं), और दूसरे कमरे मे मुझसे सिर्फ इतना ही कहा कि यह बीमारी के बाद का असर है तथा वसन्त मे सागर-तट पर जाना उसकी सेहत के लिये अच्छा होगा। यदि ऐसा करना सम्भव न हो तो देहात के बगले मे जाकर रहना चाहिये। थोडे मे यह कि उसने इस चीज के अलावा कुछ नही कहा कि जरा कमजोरी है या ऐसा ही कुछ और। डाक्टर के जाने के बाद उसने बहुत ही गम्भीरता से मेरी ओर देखते हुए मुझसे फिर कहा –

"मैं बिल्कुल स्वस्थ हू, बिल्कुल स्वस्थ हू।

किन्तु यह कहते ही अचानक उसके चेहरे पर मानो दौड गयी शायद लज्जा की लाली। हा यह लज्जा ही थी। और अब मैं समझ पा रहा हू – उसे इस बात से शर्म महसूस हो रही थी कि मैं अभी भी उसका पति हू, असली पति की भाति अभी भी उसकी चिन्ता करता

है। किन्तु तब मैं यह नहीं समझ पाया था और उसके चेहरे पर [illegible]
वाली लाली को मैंने उसकी नम्रता माना था। (परदा!)

इसके एक महीने बाद, अप्रैल में कोई पाँच बजे, [illegible]
तेज धूप थी। मैं दुकान के पास बैठा हुआ अपना हिसाब-किताब ठीक
कर रहा था। वह हमारे कमरे में अपनी मेज पर बैठी हुई [illegible]
कर रही थी और अचानक मुझे उसके धीरे-धीरे गाने की आवाज
सुनाई दी। इस चीज से मैं स्तम्भित रह गया और अभी तक इसे
समझने में असमर्थ हूँ। शुरू के उन दिनों को छोड़कर जब वह मेरे
घर में आई थी और हम पिस्तौल से निशानेबाजी का शुगल ले [illegible]
थे, मैंने उसे कभी गाते नहीं सुना था। तब उसकी आवाज कुछ बेसुरी
होते हुए भी काफी जोरदार और गूंजती हुई थी, बहुत सुखद और
स्वस्थ थी। किन्तु अब उसका गाना इतना धीमा-धीमा था - और
यह नहीं कि वह उदासीभरा हो (वह कोई रोमांस भरी प्रेम [illegible]
था), बल्कि यह कि उसकी आवाज [illegible] और टूटी-टूटी सी
[illegible]

न समझी हो। वैसे, वास्तव में ही मुझे समझना सम्भव नहीं था।

"वह क्या आज पहली बार गा रही है?"

"नहीं, आपकी अनुपस्थिति में कभी-कभी गाती है," लुकेरिया ने जवाब दिया।

मुझे सब कुछ याद है। मैं ज़ीने से नीचे उतरा, बाहर गया और जिधर भी मेरे पांव मुझे ले चले, उधर ही चल दिया। सड़क के नुक्कड़ पर जाकर रुक गया और किसी तरफ देखने लगा। आते-जाते लोग मुझे धकियाते थे, मगर मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। मैंने एक कोचवान को बुलाया और मालूम नहीं क्यों, पुलिस पुल पर जाने के लिये उसकी घोड़ा-गाड़ी किराये पर लेनी चाही। लेकिन फिर अचानक मैंने अपना इरादा बदल लिया और उसे बीस कोपेक दे दिये।

"ये तुम्हें तकलीफ देने के लिये हैं," उसकी ओर देखकर निरर्थक मुसकराते हुए मैंने कहा। किन्तु अपने हृदय में मैं सहसा कोई उल्लास अनुभव करने लगा।

मैं अपने कदम तेज़ करते हुए घर लौटने लगा। उसकी रुग्ण-सी कमज़ोर और टूट जानेवाली आवाज़ फिर से मेरी आत्मा में गूंज उठी। मेरा कलेजा मुंह को आने लगा। हां आंखों पर से पर्दा हट रहा था गिर रहा था! अगर वह मेरे सामने गा उठी तो इसका मतलब है कि मेरे बारे में भूल गयी—यह स्पष्ट और भयानक था। मेरा हृदय यह अनुभव कर रहा था। किन्तु मेरी आत्मा उल्लास से परिपूर्ण थी और वह भय से अधिक प्रबल था।

ओह, भाग्य की विडम्बना! जाड़े भर मेरे हृदय में इस उल्लास के अतिरिक्त न तो कुछ था और न हो ही सकता था। किन्तु मैं कहां रहा था जाड़े भर? अपनी आत्मा के साथ था? मैं भागता हुआ सीढ़ियां चढ़ गया। कह नहीं सकता कि मैं सहमते-सहमते कमरे में दाखिल हुआ या नहीं। मुझे केवल इतना याद है कि सारा फर्श मानो डोल रहा था और मैं मानो नदी में बहा जा रहा था। मैं कमरे में दाखिल हुआ, वह अपनी उसी जगह पर बैठी हुई सिर झुकाकर सिलाई कर रही थी, किन्तु अब गा नहीं रही थी। उसने मुझ पर उड़ती सी और जिज्ञासाहीन दृष्टि डाली। यह तो दृष्टिपात भी नहीं था उसने तो यों ही मामूली ढंग और उदासीनता से मेरी ओर देख लिया था, जैसा कि हम किसी के कमरे में आने पर करते हैं।

न समझी हो। मैंने वास्तव में ही मुझे समझना सम्भव नहीं था।

"यह क्या आज पहली बार हो रही है?"

"नहीं, आपकी अनुपस्थिति में कभी-कभी लगती है," [illegible] ने जवाब दिया।

मुझे सब कुछ याद है। मैं घोड़े से नीचे उतरा, बाहर गया और जिधर भी मेरे पांव मुझे ले चले, उधर ही चल दिया। सड़क के नुक्कड़ पर आकर रुक गया और किसी तरफ देखने लगा। आते-जाते लोग मुझे धकियाते थे, मगर मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। मैंने एक कोचवान को बुलाया और मालूम नहीं क्यों, पुलिस पुल पर जाने के लिये उसकी घोड़ा-गाड़ी किराये पर ले ली। लेकिन फिर अचानक मैंने अपना इरादा बदल लिया और उसे बीस कोपेक दे दिये।

"ये मुझे नसीहत देने के लिये?" उसकी ओर देखकर निर्जीव मुस्कराते हुए मैंने कहा। किन्तु अपने हृदय में मैं गहरा कोई उल्लास अनुभव करने लगा।

मैं अपने कदम तेज करते हुए घर लौटने लगा। उसकी गान-सी कमज़ोर और टूट जानेवाली आवाज़ फिर से मेरी आत्मा में गूंज उठी। मेरा कलेजा मुंह को आने लगा। हां, आंखों पर से पर्दा हट रहा था, गिर रहा था! अगर वह मेरे सामने गा उठी थी तो इसका मतलब है कि मेरे बारे में भूल गयी – यह स्पष्ट और भयानक था। मेरा हृदय यह अनुभव कर रहा था। किन्तु मेरी आत्मा उल्लास से परिपूर्ण थी और वह भय से अधिक प्रबल था।

ओह, भाग्य की विडम्बना! जाड़े भर मेरे हृदय में इस उल्लास के अतिरिक्त न तो कुछ था और न हो ही सकता था। किन्तु मैं कहां रहा था जाड़े भर? अपनी आत्मा के साथ था! मैं भागते हुए सीढ़ियां चढ़ गया। कह नहीं सकता कि मैं सहमते-सहमते कमरे में दाखिल हुआ या नहीं। मुझे केवल इतना याद है कि सारा फर्श मानो डोल रहा था और मैं मानो नदी में बहा जा रहा था। मैं कमरे में दाखिल हुआ, वह अपनी उसी जगह पर बैठी हुई सिर झुकाकर सिलाई कर रही थी, किन्तु अब गा नहीं रही थी। उसने मुझ पर उड़ती-सी और जिज्ञासाहीन दृष्टि डाली। यह तो दृष्टिपात भी नहीं था, उसने तो यों ही मामूली ढंग और उदासीनता से मेरी ओर ऐसे देख लिया था, जैसा कि हम किसी के कमरे में आने पर करते हैं।

हू। किन्तु तब मैं यह नही समझ पाया था और उसके चेहरे पर आनेवाली लाली को मैंने उसकी नम्रता माना था। (परदा!)

इसके एक महीने बाद, अप्रैल मे कोई पांचेक बजे, जब काफ़ी तेज धूप थी, मैं दुकान के पास बैठा हुआ अपना हिसाब-किताब ठीक कर रहा था। वह हमारे कमरे मे अपनी मेज़ पर बैठी हुई सिलाई कर रही थी और अचानक मुझे उसके धीरे-धीरे... गाने की आवाज सुनाई दी। इस चीज़ से मैं स्तम्भित रह गया और अभी तक इसे समझने मे असमर्थ हू। शुरू के उन दिनो को छोडकर जब वह मेरे घर मे आई थी और हम पिस्तौल से निशानेबाज़ी का लुत्फ ले सकते थे, मैंने उसे कभी गाते नही सुना था। तब उसकी आवाज़ कुछ बेसुरी होते हुए भी काफी ज़ोरदार और गूजती हुई थी, बहुत सुखद और स्वस्थ थी। किन्तु अब उसका गाना इतना धीमा-धीमा था–ओह, यह नही कि वह उदासीभरा हो (वह कोई रोमास यानी प्रेम-गीत था), बल्कि यह कि उसकी आवाज़ कुछ रुग्न और टूटी-टूटी थी, मानो वह गाने का साथ देने मे असमर्थ हो, मानो वह गाना खुद भी रोगग्रस्त हो। वह दबी-दबी आवाज मे गा रही थी और अचानक उसे ऊचा उठाने पर वह टूट गयी–ऐसी बेचारी कमज़ोर-सी आवाज़ जो ऐसे दयनीय ढग से टूट गयी। उसने खासकर गला साफ किया और फिर बहुत धीरे-धीरे गाने लगी।

मेरी विह्वलता की हसी उडाई जा सकती है, किन्तु कोई भी यह कभी नही समझ पायेगा कि मैं क्यो विह्वल हो उठा था! नहीं, उसके प्रति मैंने अभी दया-भाव अनुभव नही किया था, यह तो बिल्कुल कुछ और ही था। शुरू मे, कम से कम पहले क्षणो मे तो मेरी समझ में कुछ नही आया और मुझे बेहद हैरानी हुई, बेहद, अजीब, अप्रिय और लगभग प्रतिशोधपूर्ण हैरानी हुई–"वह गाती है और सो भी मेरी उपस्थिति मे! क्या वह भूल गयी कि मैं यहां हूं?"

पूरी तरह से स्तम्भित मैं अपनी जगह पर बैठा रहा, फिर अचानक उठा, मैंने टोप लिया और कुछ भी न समझते हुए बाहर चला गया। कम से कम मुझे यह मालूम नही कि किसलिये और कहा जाने के लिये। मुकेरिया मुझे मेरा ओवरकोट पहनने मे मदद देने के लिये आई।

"वह गाती है?" मैंने मुकेरिया से बरबस पूछ लिया। मुकेरिया मेरा सवाल नहीं समझी और मेरी ओर ऐसे देखती रही मानो कुछ

शर्म महसूस हो रही थी कि मैं उसके पाँव चूम रहा हूँ और उसने उन्हें पीछे हटा लिया। किन्तु मैंने उसी क्षण फर्श पर उस जगह को चूम लिया, जहाँ उसका पाँव टिका रहा था। उसने यह देखा और सहसा शर्म से हँसने लगी (आप जानते हैं कि लोग शर्म से कैसे हँसते हैं)। उस पर हिस्टीरिया का दौरा पड़ने लगा था, मैंने यह देखा उसके हाथ काँप रहे थे – मैंने इसके बारे में नहीं सोचा और लगातार यह बुदबुदाता रहा कि मैं उसे प्यार करता हूँ, कि मैं इसी तरह घुटने टेके रहूँगा – "मुझे अपना फ्रॉक चूमने दो मुझे जीवन भर इसी तरह अपनी पूजा करने दो " मैं नहीं जानता मुझे याद नहीं – और वह अचानक सिसकने और काँपने लगी – उसे हिस्टीरिया का भयानक दौरा पड़ गया था। मैंने उसे डरा दिया था।

मैं उसे बिस्तर पर ले गया। हिस्टीरिया का दौरा खत्म होने पर वह उठकर बिस्तर पर बैठ गयी, उसका चेहरा एकदम उतरा हुआ था, उसने मेरे दोनों हाथ थाम लिये और मुझसे शान्त हो जाने का अनुरोध किया – "बस, काफी है, अपने को यातना नहीं दीजिये शान्त हो जाइये!" और फिर से रोने लगी। उस सारी शाम को मैं उसके पास ही बैठा रहा, उससे यही कहता रहा कि मैं उसे सागर-स्नान के लिये बोलोन* ले जाऊँगा, बहुत जल्द, दो हफ्ते बाद ही ऐसा करूँगा, कि उसकी ऐसी टूटन-क्षीण-सी आवाज है, मैंने आज सुनी है, कि मैं अपनी दुकान बन्द कर दूँगा, उसे दोब्रोन्रावोव को बेच दूँगा, कि सब कुछ नये सिरे से शुरू होगा और सबसे बड़ी बात तो है बोलोन, बोलोन! वह सुन रही थी और भयभीत होती जा रही थी! अधिकाधिक भयभीत हो रही थी! किन्तु मेरे लिये यह नहीं, बल्कि यह मुख्य बात थी कि मैं अदम्य रूप से पुनः उसके पैरों पर गिरना चाहता था, उन्हें फिर से चूमना चाहता था, उस धरती को चूमना चाहता था जहाँ उसके पाँव टिके रहे थे, उसकी पूजा करना चाहता था – "इसके अलावा मैं तुमसे किसी भी, किसी भी चीज का अनुरोध नहीं करूँगा," मैं बार-बार दोहराता जा रहा था, "मुझे कोई भी जवाब नहीं दो, मेरी तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दो, सिर्फ दूर से देखते

---

* फ्रांस में सागर तटवर्ती स्वास्थ्यप्रद नगर। – स०

मैं उसके पास जाकर एक पागल की तरह उससे बिल्कुल सटकर कुर्सी पर बैठ गया। उसने झटपट मेरी ओर ऐसे देखा मानो डर गयी हो। मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और याद नहीं कि मैंने उससे क्या कहा अर्थात् क्या कहना चाहा, क्योंकि मैं तो ठीक से अपनी बात भी नहीं कह पा रहा था। मेरी आवाज़ टूट रही थी और मेरी बात नहीं मान रही थी। मुझे तो यह मालूम ही नहीं था कि क्या कहता हूँ, मैं तो सिर्फ़ हाँफ रहा था।

"आओ, बातें करें... जानती हो... कुछ कहो न!" मैं सहसा मूर्खतापूर्ण कुछ बुदबुदाया – ओह, लेकिन मैं उस समय अक्ल की क्या कोई बात सोच भी सकता था!

वह फिर से सिहरी और मेरे चेहरे को ताकते हुए बेहद डरकर पीछे हट गयी। किन्तु अचानक उसकी आँखों में कठोर आश्चर्य भाव उठा। हाँ, आश्चर्य और कठोर आश्चर्य। उसने फैली-फैली आँखों से मेरी ओर देखा। उसकी इस कठोरता, उसके कठोर आश्चर्य ने मुझे एक बार ही कुचल डाला – "तो तुम प्यार भी चाहते हो? प्यार न?" उसने सहसा इस आश्चर्य से मानो यह पूछा, यद्यपि मुँह से कुछ नहीं कहा। लेकिन मैंने तो उसके चेहरे के भाव से यह सब कुछ, सब कुछ पढ़ लिया। मेरा रोम-रोम झकझोर दिया गया और मैं उसके पैरों पर ढह पड़ा। हाँ, मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा। वह झटपट उठकर खड़ी हो गयी, किन्तु मैंने उसके दोनों हाथ कसकर पकड़ लिये और उसे रोके रहा।

अपनी हरकतों को मैं बहुत अच्छी तरह से समझ रहा था, और समझ रहा था! किन्तु [illegible]

सब कुछ बहुत अच्छी तरह से समझ रहा था। मेरी हताशा पूरी तरह से सामने नज़र आ रही थी।

मैं उससे अपनी और उसकी चर्चा करता रहा। मैंने लुकेरिया के बारे मे भी बाते की। मैंने उसे बताया कि मैं रोया था   ओह, मैं बातचीत का विषय भी बदलता रहा, मैंने यह भी कोशिश की कि कुछ बाते उसे याद न दिलाऊ। यहा तक कि एक या दो बार तो वह चहक भी उठी, मुझे याद है, याद है! आप ऐसा क्यो कह रहे है कि मैं देखते हुए भी कुछ नही देख सका? अगर यह न हो जाता, तो सब कुछ का कायाकल्प हो जाता। आखिर तो दो दिन पहले, जब यह चर्चा चली कि इस जाडे मे उसने क्या कुछ पढा था तो वह गिल-ब्लास के साथ ग्रानादा के आर्कबिशप की बातचीत के दृश्य* का उल्लेख करते हुए हसी भी थी। और कितनी प्यारी, कैसी बच्चो की सी हसी थी वह, बिल्कुल उन दिनो जैसी जब वह मेरी मगेतर थी (क्षण! वे क्षण!), कितना खुश हुआ था मैं! वैसे आर्कबिशप वाली इस चर्चा से मुझे बहुत ही आश्चर्य हुआ। इसका मतलब यह था कि उसने मन का इतना चैन, इतना सुख तो अनुभव किया कि उस जाडे मे अकेली बैठी रहकर वह इस श्रेष्ठ रचना का आनन्द उठा सकी। इसका यह अर्थ था कि वह पूरी तरह से शान्त होने लगी थी, पूरी तरह से यह विश्वास करने लगी थी कि मैं उसे ऐसे ही छोड दूगा। "मैंने सोचा था कि आप मुझे ऐसे ही छोड देगे," – तब, मगलवार को उसने यही कहा था। ओह, ऐसा विचार तो दसवर्षीया बालिका के मन मे आ सकता था! और वह यकीन करती थी, यह यकीन करती थी कि सचमुच सब कुछ ऐसे ही रहेगा – वह अपनी मेज़ के पास और मै अपनी मेज़ के पास बैठा रहूगा तथा इसी तरह से हम साठ साल की उम्र तक पहुच जायेगे। किन्तु अचानक – मैं, उसका पति, उसके पास आता हू और उससे प्यार चाहता हू! ओह, यह मेरी गलती, ओह, यह मेरा अन्धापन!

यह भी मेरी भूल थी कि मैं उसकी ओर उल्लासपूर्वक देखता था।

---

* फ्रांसीसी लेखक अ० र० लेसाज के 'गिल-ब्लास दि सन्तिल्यान की जीवनी' उपन्यास से अभिप्राय है। – सं०

छिपाया जो जिन्दगी भर खुद अपने से छिपाता रहा हूं। मैंने उससे साफ-साफ ही कह दिया कि जाड़े भर मुझे उसके प्यार का विश्वास बना रहा। मैंने उसे स्पष्ट किया कि चीजें गिरवी रखने की दुकान खोलना मेरी इच्छा और तर्क-शक्ति का पतन था, आत्मालोचना और आत्मप्रशंसा का व्यक्तिगत विचार था। मैंने उसे बताया कि तब कैन्टीन मे सचमुच ही मैंने कायरता दिखाई थी—अपने स्वभाव, अपने वहमी मिज़ाज के कारण—उस वातावरण, उस कैन्टीन और इस ख्याल से मैं झिझक गया था कि अगर मैं अचानक दम ठोककर सामने आ जाता हू तो कही यह बेवकूफी तो नही साबित होगी? द्वन्द्व-युद्ध से नही, बल्कि इस बात से डरा था कि यह बेवकूफी न साबित हो... किन्तु बाद मे मैंने इसे मानना नहीं चाहा और सबको व्यथित किया, उसे भी इसके लिये व्यथित किया, इसके लिये यातना देने के हेतु ही मैंने उससे शादी की। कुल मिलाकर यह कि मैं अधिकतर तो मानो बुखार मे बोलता गया। उसने खुद ही मेरे हाथ अपने हाथ मे लेकर मुझसे चुप हो जाने का अनुरोध किया—"आप यह सब बढ़ा-चढ़ाकर कह रहे हैं.. आप अपने को यातना दे रहे हैं,"—फिर से उसके आसू बहने लगे, फिर से उसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ते-पड़ते रह गया! वह तो यही अनुरोध करती रही कि मैं ऐसा कुछ न कहूं और बीते को याद न करूं।

मैंने उसके अनुरोधो की ओर ध्यान न दिया या कम ध्यान दिया—वसन्त, बोलोन! वहा सूरज होगा, हमारे जीवन का नया सूरज होगा, मैं केवल यही कहता रहा! मैंने दुकान बन्द कर दी, सारा कारोबार दोब्रोन्रावोव के हवाले कर दिया। मैंने उसके सामने यह सुझाव रखा कि वह धर्म-माता से मिली तीन हजार रूबल की मूल पूंजी के अतिरिक्त बाकी सभी कुछ गरीबो मे बाट दे। उन तीन हजार रूबलों से हम बोलोन जायेंगे और वहा से लौटकर नया श्रम-जीवन आरम्भ करेंगे। ऐसा ही तय हुआ, क्योंकि उसने कुछ भी नही कहा... वह तो केवल मुस्करा दी। और ऐसा प्रतीत होता है कि उसने शिष्टता दिखाते हुए ही ऐसा किया था ताकि मेरे मन को ठेस न लगे। मैं तो देख रहा था कि मेरे कारण उसे परेशानी महसूस हो रही थी। आप ऐसा न सोचें कि मैं ऐसा मूर्ख और ऐसा स्वार्थी था कि यह न देख पाता। मैं सब कुछ देख रहा था, हर छोटी से छोटी चीज को देख रहा था और

अपराध ही मुझे जाडे भर यातना देता रहा है अभी भी यातना दे रहा है कि मैं आपकी दरियादिली का बहुत ऊचा मूल्य आकती हू . "मैं आपकी वफादार बीवी बनूगी, आपका आदर करूगी " मैं उछलकर खडा हुआ और पागल की तरह मैंने उसे अपनी बाहो मे भर लिया! मैंने उसे चूमा, उसका मुह चूमा, और इतने लम्बे अरसे तक उससे कोई वास्ता न रखने के बाद पति की तरह पहली बार उसके होठो का चुम्बन लिया। और किसलिये मै घर से बाहर गया, सिर्फ दो घण्टो के लिये विदेश जाने के पासपोर्टो के लिये है भगवान! काश, सिर्फ पाच मिनट, सिर्फ पाच मिनट पहले मैं घर लौट आया होता! और अब हमारे फाटक के सामने लोगो की यह भीड़ जमा है, कैसी नजरो से वे सब मुझे देख रहे हैं हे भगवान!

लुकेरिया बताती है (ओह, मैं अब लुकेरिया को किसी भी हालत मे अपने यहा से नही जाने दूगा। वह सब कुछ जानती है, जाडे भर यहा रही है, मुझे सब कुछ बतायेगी), वह बताती है कि जब मैं घर से बाहर गया और मेरे लौटने के कोई बीसेक मिनट पहले वह हमारे कमरे मे अपनी मालकिन से कुछ पूछने के लिये गयी। क्या पूछने गयी, मुझे याद नही। वहा उसने क्या देखा कि मालकिन ने अपनी देव-प्रतिमा (वही पवित्र मरियम की देव-प्रतिमा) को बक्स से निकालकर मेज पर रख लिया है और ऐसे लगा मानो मालकिन ने कुछ ही मिनट पहले उसके सामने प्रार्थना की है। "क्या बात है, मालकिन?"—"कुछ नही, लुकेरिया, तुम जाओ जरा रुको, लुकेरिया।" लुकेरिया के पास आकर उसने उसे चूमा। "आप सुखी है न, मालकिन?"—"हा, लुकेरिया।"—"बहुत पहले ही मालिक को आपके पास आकर माफी माग लेनी चाहिये थी शुक्र है भगवान का कि आप दोनो के बीच सुलह हो गयी।"—"ठीक है, लुकेरिया, अब तुम जाओ, जाओ लुकेरिया,"—और वह कुछ अजीब ढग से मुस्करा दी। इतने अजीब ढग से कि लुकेरिया कोई दस मिनट के बाद उस पर फिर से नजर डालने के लिये लौटी—"वह खिडकी के बिल्कुल निकट दीवार से सटकर खडी थी, एक हाथ दीवार पर था और सिर हाथ पर टिका हुआ था। वह ऐसे खडी हुई कुछ सोच रही थी। इतनी गहरी सोच मे डूबी हुई थी कि उसे यह तक पता नही चला कि कैसे मैं उसी कमरे

मुझे दिल को बड़ा करना चाहिये था, क्योंकि उल्लास उसे भयभीत करता था। लेकिन मैंने अपने दिल को बड़ा किया तो था, उसके पावों को और अधिक नहीं चूमा था। मैंने एक बार भी तो यह जाहिर नहीं किया कि कि मैं उसका पति हू – ओह, मेरे दिमाग में ऐसा ख्याल ही नहीं था मैं तो केवल प्रार्थना-पूजा करता रहा! लेकिन बिल्कुल चुप रहना भी तो सम्भव नहीं था, कोई बात न करना भी तो सम्भव नहीं था! मैंने अचानक उससे यह कहा कि उसकी बातों से मुझे बड़ा रस मिलता है और मैं उसे अपने से कहीं ज्यादा पढ़ी-लिखी और अधिक विकसित मानता हू। वह तो लज्जा से बिल्कुल लाल हो गयी, चकरा गयी और बोली कि मैं अतिशयोक्ति से काम ले रहा हू। इसी वक्त अपने को वश मे न रखते हुए मैंने एक और मूर्खता कर दी, यह कह दिया कि उस वक्त मेरी खुशी का तो कोई ठिकाना ही नहीं रहा था, जब दरवाजे के पीछे खड़ा हुआ मैं उसका वाग्द्वन्द्व सुन रहा था, निर्मलता का उस जगली के साथ वाग्द्वन्द्व सुन रहा था और उसकी समझ-बूझ तथा बाल-सुलभ सरलता के साथ उसकी बहुत ही बढ़िया हाज़िर-जवाबी से मुझे कितना आनन्द मिला था। वह तो मानो सिर से पाव तक सिहर उठी, उसने फिर से यह बुदबुदाना चाहा कि मैं बढ़ा-चढ़ाकर बात कर रहा हू, किन्तु सहसा उसके चेहरे पर छाया-सी आ गयी, उसने हाथो से मुह ढाप लिया और सिसकने लगी. इस वक़्त मैं अपने को काबू मे न रख सका – फिर से उसके सामने घुटनो के बल हो गया, फिर से उसके पाव चूमने लगा और फिर से उसे मगलवार की तरह हिस्टीरिया का दौरा पड गया। यह कल शाम की बात है और आज सुबह

आज सुबह?! ओह, पागल आदमी, यह सुबह तो आज ही थी, अभी थोड़ी देर पहले, बहुत थोडी देर पहले!

सुनिये और समझिये – थोडी देर पहले जब हम चाय पीने के लिये समोवार के पास बैठे (यह कल के दौरे के बाद की बात है) तो वह इतनी शान्त थी कि मैं दग रह गया। तो यह बात थी! पिछली शाम को जो हुआ था, उसी को लेकर मेरा दिल धडकता रहा था। किन्तु वह अचानक मेरे पास आई, मेरे सामने आकर खडी हो गयी और हाथ जोडकर (कुछ ही देर पहले, कुछ ही देर पहले!) मुझसे ˙ लगी कि – मैं अपराधिनी हू, कि मैं यह जानती हूं, कि मेरा

में खडी हुई उसे देख रही हू। मुझे लगा कि वह मानो मुस्करा रही है, खड़ी है, सोचती है और मुस्करा रही है। मैंने फिर से उस पर एक नजर डाली, दबे पाव मुडी, मन ही मन उसके बारे में सोचती हुई कमरे से बाहर चली गयी। तभी अचानक मुझे खिड़की के खोले जाने की आवाज सुनाई दी। मैं फौरन यह कहने के लिये मुड़ी कि 'बाहर ठण्डक है, कही आपको ठण्ड न लग जाये', और सहमा क्या देखती हू कि वह खिडकी के दासे पर खड़ी हो गयी है, मेरी ओर पीठ किये हुए खुली खिडकी के सामने खड़ी है और उसके हाथों में देव-प्रतिमा है। मेरा दिल बैठ गया, मैं चिल्लाई – 'मालकिन! मालकिन!' उसने मेरी आवाज सुनी, मेरी ओर मुड़ना चाहा, लेकिन नही मुड़ी, कदम आगे बढाया, देव-प्रतिमा को छाती के साथ चिपका लिया और – खिडकी से नीचे कूद गयी!"

मुझे तो केवल इतना याद है कि जब मैं फाटक से भीतर आया, तो उसकी देह मे अभी गर्मी बाकी थी। मुख्य बात यह है कि सभी लोग मुझे घूर रहे थे। वे चीख-चिल्ला रहे थे और अब अचानक सब खामोश हो गये तथा मेरे लिये रास्ता बनाने लगे.. और... और वह देव-प्रतिमा लिये जमीन पर पडी थी। मुझे कुछ-कुछ याद है कि मैं चुपचाप उसके पास गया, देर तक उसे देखता रहा और सभी लोग मुझे घेरकर मुझसे कुछ कहते रहे। लुकेरिया भी यहा थी, मगर मैंने उसे नही देखा। वह कहती है कि उसने मुझसे बात भी की थी। मुझे तो सिर्फ उस व्यक्ति की याद है जो लगातार यह चिल्लाता रहा था कि "मुह से मुट्ठी भर खून निकला, मुट्ठी भर, मुट्ठी भर!" और उसने वही पत्थर पर पडे खून की तरफ इशारा किया। मुझे लगता है कि मैंने उगली मे खून को छुआ, मेरी उगली पर खून लग गया, मैंने उगली को देखा (यह याद है) और वह व्यक्ति लगातार यही कहता गया – "मुट्ठी भर, मुट्ठी भर!"

"क्या मुट्ठी भर?" लोग कहते हैं कि मैं अपनी पूरी ताकत से चिल्ला उठा, मैंने हाथ ऊपर उठाये और उस पर झपटा...

ओह, यह पागलपन, पागलपन! यह गलतफहमी! यह अविश्वसनीय बात! यह असम्भव बात!

भी यह विचार नहीं आया कि वह मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखत है? उस मिनट तक, जब उसने मुझे कठोर आश्चर्य से देखा था मेरे मन में इसके उलट ही पक्का विश्वास बना हुआ था। हां, कठोर दृष्टि से ही। उस समय तो मैं फौरन समझ गया था कि वह मेरे प्रति तिरस्कार की भावना रखती है। मैं निर्णायक रूप से, सदा के लिये यह समझ गया था! ओह, बेशक, बेशक वह मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखती रहती, बेशक जिन्दगी भर ऐसा करती रहती, लेकिन जिन्दा रहती, जिन्दा रहती! अभी कुछ देर पहले तक वह चल-फिर रही थी, बोल-बतिया रही थी। मैं बिल्कुल नहीं समझ पा रहा हू, वह खिडकी से कूदी कैसे! क्या पाच मिनट पहले भी मैं ऐसी बात सोच सकता था? मैंने लुकेरिया को बुलाया। अब मैं लुके-रिया को किसी हालत मे, किसी भी हालत में अपने यहा से नहीं जाने दूगा!

ओह, हमारे बीच तो अभी भी आपसी समझ पैदा हो सकती थी। जाड़े के दौरान हम एक-दूसरे के लिये बुरी तरह पराये हो गये थे, लेकिन क्या फिर से निकट नही आ सकते थे? क्या, क्या हम फिर से मित्र नही बन सकते थे, नयी जिन्दगी शुरू नही कर सकते थे? मैं उदार हू, वह उदार है—यह था हमारा मैत्री-बिन्दु! कुछ और बाते होती, दो दिन और बीतते, इससे अधिक नही, और वह कुछ समझ जाती।

सबसे ज्यादा अफसोस की बात तो यह है कि यह केवल स था, साधारण, क्रूर और बेमानी सयोग। यह है अफसोस की बा पाच मिनट, मैं सिर्फ पाच मिनट देर से घर लौटा! अगर मैं प मिनट पहले घर लौट आता तो उडते बादल की तरह यह क्षण निकल जाता और फिर से कभी दिमाग मे न आता। इसका अ यह होता कि सारी बात उसकी समझ मे आ जाती। किन्तु अब फि से खाली कमरे हैं, फिर से मैं एकाकी हू। घडी का लोलक टिक-टि करता जाता है, उसकी बला से, उसे किसी बात का अफसोस नह कोई भी नही है—यही तो मुसीबत है!

मैं कमरे मे चक्कर काट रहा हू, चक्कर काट रहा हू। जान हूं, जानता हू, आपको मुझसे यह कहने की जरूरत नही—आप इस बात से हंसी आ रही है कि मैं सयोग पर, घर लौटने मे पा

सम्भव नही! ओह, मैं जानता हू कि उसे ले जायेगे, मैं पागल नहीं हू और बहक भी नही रहा हू। इसके उलट, मेरी बुद्धि कभी इतनी प्रखर नही थी – लेकिन यह कैसे है कि फिर से घर मे कोई नही, फिर से दो कमरे हैं और फिर से चीज़े गिरवी रखने की अपनी दुकान मे मैं अकेला हू। मैं बहक रहा हू, बहक रहा हू, सचमुच बहक रहा हू! मैंने उसे बुरी तरह सता डाला था, यह है कारण!

क्या परवाह है मुझे अब आपके कानूनों की? मेरे किस काम के हैं आपके रस्म-रिवाज, नैतिक नियम, आपकी ज़िन्दगी, आपका राज्य, आपका धर्म? बेशक आपका न्यायाधीश ही अब मेरी किस्मत का फैसला करे, बेशक मुझे अदालत मे ले जाइये, लोगो से भरी अदालत मे और मैं वहा कह दूगा कि मुझे किसी भी चीज़ की रत्ती भर परवाह नही है। न्यायाधीश चिल्लाकर मुझसे कहेगा – "चुप रहो, अफसर!" और मैं उसे चिल्लाकर जवाब दूगा – "कहा है अब तुम्हारे पास वह ताकत कि मैं तुम्हारी बात मानू? क्यो अज्ञानतापूर्ण जड़ता ने वह सब नष्ट कर दिया जो मुझे सबसे अधिक प्रिय था? मुझे अब क्या लेना-देना है आपके कानून-कायदो से? मैं हर चीज़ से नाता तोड़ रहा हू।" ओह, मुझे कुछ भी परवाह नही!

वह देख नही सकती, देख नही सकती! वह मृत है, सुन नही सकती! तुम नही जानती कि मैंने तुम्हारे लिये कैसा स्वर्ग रचा होता। स्वर्ग मेरी आत्मा मे था और मैंने तुम्हारे चारो ओर स्वर्ग बना दिया होता! तुम मुझे प्यार न करती – न सही, क्या फर्क पड़ता था इससे? सब कुछ ऐसे ही होता, सब कुछ ऐसे ही बना रहता। एक दोस्त की तरह तुम मुझसे बाते करती – हम एक-दूसरे की आखो मे झाकते हुए खुश होते, हसते। इसी तरह से रहते जाते। अगर तुम किसी और को भी प्यार करने लगती – तो भी क्या था, बेशक करती! तुम उसके साथ चलती हुई हसती और मैं सड़क के दूसरी ओर से तुम्हे देखकर रहता ... और चाहे कुछ भी क्यों न होता रहे, लेकिन वह सिर्फ एक बार ही अपनी आँख से! एक क्षण के लिये, केवल एक क्षण के लिये! [illegible] उसी तरह से एक बार देख ले जैसे उसने [illegible] देर पहले देखा था, जब मेरे सामने खड़ी होकर मुझे यह [illegible] कि वफादार बीवी बनेगी! [illegible] तब ही [illegible] कुछ समझ लिया होता!

जड़ता! ओह, प्रकृति! लोग इस धरती पर एकाकी हैं – यही मुसीबत है! "इस मैदान मे कोई जिन्दा आदमी है?" रूसी लोक-कथा का सूरमा चिल्लाकर पूछता है। मैं, सूरमा नही, मैं भी चिल्लाकर यही पूछता हू और कोई इसका जवाब नही देता। कहते हैं कि सूरज दुनिया को जिन्दगी देता है। अभी सूरज निकलेगा और – आप उस पर नजर डालिये, क्या वह मुर्दा नही? सब कुछ मुर्दा है और सभी तरफ मुर्दे हैं। केवल एकाकी लोग हैं और उनके चारो ओर खामोशी है – यह है हमारी धरती! "लोगो, एक-दूसरे को प्यार करो" – किसने कहा था यह, किसका धर्मादेश था यह ? घड़ी का लोलक घृणित और भावनाहीन ढग से टिक-टिक करता जा रहा है। रात के दो बजे हैं। उसके जूते उसके पलग के पास रखे हुए हैं मानो उसकी राह देख रहे हो . नही, अब सजीदगी से यह पूछता हू, कल जब उसे ले जायेगे तो मैं क्या करूगा?

एक हास्यास्पद व्यक्ति का सपना

एक काल्पनिक कहानी

था कि अगर इस दुनिया मे सबसे ज्यादा यह जाननेवाला कोई आदमी था कि मैं हास्यास्पद हू, तो वह खुद मैं था। मेरे लिये यही तो सबसे ज्यादा दुख की बात थी कि उन्हे यह मालूम नही था। किन्तु इसमे मेरा ही कुसूर था· मैं हमेशा इतना गर्वीला था कि मैंने किसी हालत मे और कभी भी किसी के सामने इसे स्वीकार नही करना चाहा। गर्व की यह भावना वर्षो के बीतने के साथ-साथ बढती गयी और अगर कही ऐसा हो जाता कि किसी के सामने भी मैंने इसे स्वीकार कर लिया होता कि मैं हास्यास्पद हू, तो मुझे लगता है, मैंने उसी वक्त, उसी शाम को पिस्तौल की गोली अपने सिर के आर-पार कर दी होती। ओह, अपनी किशोरावस्था मे मैं इस कारण कितनी यातना सहता रहा था कि अपने को वश मे नही रख पाऊगा और अचानक खुद ही साथियो के सामने इसे स्वीकार कर लूगा। किन्तु जब से मैं जवान हुआ हू, मुझे अपने इस भयानक अवगुण की हर साल बेशक अधिकाधिक जानकारी होती गयी है, लेकिन न जाने क्यो मैं अधिकाधिक शान्त होता चला गया हू। वास्तव मे यही तो सवाल है कि न जाने क्यो, क्योकि मैं अभी तक यह निश्चित नही कर पा रहा हू कि इसका कारण क्या है। शायद इसलिये कि एक चीज के बारे मे, जो मेरे पूरे अस्तित्व से कही ऊपर थी, मेरे मन मे एक भयानक उदासी की भावना पैदा हो गयी। यह इस चेतना का पक्का विश्वास था कि दुनिया मे किसी को किसी भी चीज की कोई परवाह नही। बहुत अरसे मे मुझे इसकी पूर्वानुभूति हो रही थी, किन्तु इसका पक्का यकीन मुझे अचानक पिछले साल ही हुआ। मैंने सहसा यह अनुभव किया कि मुझे इससे कोई फर्क न पडता कि दुनिया है या नही या फिर कही पर कुछ हो या न हो। मैं, मेरा समूचा व्यक्तित्व, यह अनुभव करने, यह सुनने लगा कि मेरे पास कुछ भी नही था। शुरू मे मुझे ऐसा प्रतीत होता रहा कि पहले बहुत कुछ था, किन्तु बाद मे मैं यह भाप गया कि पहले भी कुछ नही था, किन्तु न जाने क्यो, ऐसा प्रतीत होता था। धीरे-धीरे मुझे विश्वास हो गया कि कभी कुछ नही होगा। तब अचानक मैंने लोगो पर झल्लाना और उनकी ओर बिल्कुल ध्यान देना बन्द कर दिया। सच, बहुत छोटी-छोटी बातो मे भी ऐसा ही था। उदाहरण के लिये, ऐसा भी होता कि सडक पर चलते हुए मैं लोगो से टकरा जाता। ख्यालो मे खोये रहने के कारण ऐसा नही होता था।

था कि अगर इस दुनिया में सबसे ज्यादा यह जाननेवाला कोई आदमी था कि मैं हास्यास्पद हू, तो वह खुद मैं था। मेरे लिये यही तो सबसे ज्यादा दुख की बात थी कि उन्हे यह मालूम नही था। किन्तु इसमे मेरा ही कुसूर था मैं हमेशा इतना गर्वीला था कि मैंने किसी हालत मे और कभी भी किसी के सामने इसे स्वीकार नही करना चाहा। गर्व की यह भावना वर्षो के बीतने के साथ-साथ बढती गयी और अगर कही ऐसा हो जाता कि किसी के सामने भी मैंने इसे स्वीकार कर लिया होता कि मैं हास्यास्पद हू तो मुझे लगता है, मैंने उसी वक्त, उसी शाम को पिस्तौल की गोली अपने सिर के आर-पार कर दी होती। ओह, अपनी किशोरावस्था मे मैं इस कारण कितनी यातना सहता रहा था कि अपने को वश मे नही रख पाऊगा और अचानक खुद ही साथियो के सामने इसे स्वीकार कर लूगा। किन्तु जब से मैं जवान हुआ हू, मुझे अपने इस भयानक अवगुण की हर साल बेशक अधिकाधिक जानकारी होती गयी है, लेकिन न जाने क्यो मैं अधिकाधिक शान्त होता चला गया हू। वास्तव मे यही तो सवाल है कि न जाने क्यो, क्योकि मैं अभी तक यह निश्चित नही कर पा रहा हू कि इसका कारण क्या है। शायद इसलिये कि एक चीज के बारे मे, जो मेरे पूरे अस्तित्व से कही ऊपर थी, मेरे मन मे एक भयानक उदासी की भावना पैदा हो गयी। यह इस चेतना का पक्का विश्वास था कि दुनिया मे किसी को किसी भी चीज की कोई परवाह नही। बहुत अरसे से मुझे इसकी पूर्वानुभूति हो रही थी, किन्तु इसका पक्का यकीन मुझे अचानक पिछले साल ही हुआ। मैंने सहसा यह अनुभव किया कि मुझे इससे कोई फर्क न पडता कि दुनिया है या नहीं या फिर कही पर कुछ हो या न हो। मैं, मेरा समूचा व्यक्तित्व, यह अनुभव करने, यह सुनने लगा कि मेरे पास कुछ भी नही था। शुरू मे मुझे ऐसा प्रतीत होता रहा कि पहले बहुत कुछ था, किन्तु बाद मे मैं यह भाप गया कि पहले भी कुछ नही था, किन्तु न जाने क्यो, ऐसा प्रतीत होता था। धीरे-धीरे मुझे विश्वास हो गया कि कभी कुछ नही होगा। तब अचानक मैंने लोगो पर झल्लाना और उनकी ओर बिल्कुल ध्यान देना बन्द कर दिया। सच, बहुत छोटी-छोटी बातो मे भी ऐसा ही था। उदाहरण के लिये, ऐसा भी होता कि सडक पर चलते हुए मैं लोगो से टकरा जाता। ख्यालो मे खोये रहने के कारण ऐसा नही होता था।

था कि अगर इस दुनिया मे सबमे ज्यादा यह जाननेवाला कोई आदमी था कि मैं हास्यास्पद हू, तो वह खुद मैं था। मेरे लिये यही तो सबसे ज्यादा दुख की बात थी कि उन्हे यह मालूम नही था। किन्तु इसमे मेरा ही कुसूर था: मैं हमेशा इतना गर्वीला था कि मैंने किसी हालत मे और कभी भी किसी के सामने इसे स्वीकार नही करना चाहा। गर्व की यह भावना वर्षों के बीतने के साथ-साथ बढती गयी और अगर कही ऐसा हो जाता कि किसी के सामने भी मैने इसे स्वीकार कर लिया होता कि मैं हास्यास्पद हू, तो मुझे लगता है, मैंने उसी वक्त, उसी शाम को पिस्तौल की गोली अपने सिर के आर-पार कर दी होती। ओह, अपनी किशोरावस्था मे मैं इस कारण कितनी यातना सहता रहा था कि अपने को वश मे नही रख पाऊगा और अचानक खुद ही साथियो के सामने इसे स्वीकार कर लूगा। किन्तु जब से मैं जवान हुआ हू, मुझे अपने इस भयानक अवगुण की हर साल बेशक अधिकाधिक जानकारी होती गयी है, लेकिन न जाने क्यो, मैं अधिकाधिक शान्त होता चला गया हू। वास्तव मे यही तो सवाल है कि न जाने क्यो, क्योकि मैं अभी तक यह निश्चित नही कर पा रहा हू कि इसका कारण क्या है। शायद इसलिये कि एक चीज़ के बारे मे, जो मेरे पूरे अस्तित्व से कही ऊपर थी, मेरे मन मे एक भयानक उदासी की भावना पैदा हो गयी। यह इस चेतना का पक्का विश्वास था कि दुनिया मे किसी को किसी भी चीज़ की कोई परवाह नही। बहुत अरसे मे मुझे इसकी पूर्वानुभूति हो रही थी, किन्तु इसका पक्का यकीन मुझे अचानक पिछले साल ही हुआ। मैंने सहसा यह अनुभव किया कि मुझे इससे कोई फर्क न पडता कि दुनिया है या नही या फिर कही पर कुछ हो या न हो। मैं, मेरा समूचा व्यक्तित्व यह अनुभव करने, यह सुनने लगा कि मेरे पास कुछ भी नही था। शुरू मे मुझे ऐसा प्रतीत होता रहा कि पहले बहुत कुछ था, किन्तु बाद मे मैं यह भाप गया कि पहले भी कुछ नही था, किन्तु न जाने क्यो, ऐसा प्रतीत होता था। धीरे-धीरे मुझे विश्वास हो गया कि कभी कुछ नही होगा। तब अचानक मैंने लोगो पर झल्लाना और उनकी ओर बिल्कुल ध्यान देना बन्द कर दिया। सच, बहुत छोटी-छोटी बातो मे भी ऐसा ही था। उदाहरण के लिये, ऐसा भी होना कि सडक पर चलते हुए मैं लोगों से टकरा जाता। ख्यालो मे खोये रहने के कारण ऐसा नही होता था।

किस चीज के बारे मे भला मैं सोच सकता था, उस समय मैंने तो सोचना बिल्कुल बन्द कर दिया था – मैं हर चीज के प्रति उदासीन था। अच्छा होता कि मैं समस्याओं के समाधान ढूढ लेता। ओह, नही, एक भी समाधान नही ढूढ पाया और कितनी अधिक समस्याये थी ? किन्तु मैं उनकी ओर से उदासीन हो गया और सारी समस्याये लुप्त हो गयी।

इसके बाद ही मुझे सचाई का ज्ञान हुआ। सचाई का मुझे पिछले नवम्बर मे, कहना चाहिये कि तीन नवम्बर को ज्ञान हुआ और उस समय से मुझे अपना हर क्षण याद है। यह उदास शाम को, बहुत ही उदास शाम को, जैसी कि हो सकती है, हुआ। तब मैं रात के दस बजे के बाद घर लौट रहा था और मुझे याद है, मैंने यही सोचा था कि इससे अधिक उदासीभरा समय नही हो सकता। प्राकृतिक दृष्टि मे भी। दिन भर बारिश होती रही थी। यह बहुत ही ठण्डी और उबानेवाली, यहा तक कि डराने-धमकानेवाली बारिश थी। मुझे यह अच्छी तरह याद है कि वह लोगो के प्रति स्पष्ट शत्रुता का भाव रखनेवाली भी बारिश थी। ग्यारह बजे वह अचानक रुक गयी और इसके बाद भयानक नमी शुरू हो गयी, बारिश के समय से भी ज्यादा नमी और ठण्ड हो गयी। सभी चीज़ो से भाप-सी उठ रही थी, सडक के हर पत्थर से, सडक से दूर कूचे मे झाकने पर वहा से भी भाप नज़र आ रही थी। अचानक मेरे दिमाग मे यह ख्याल आया कि अगर सभी जगह गैस-लैम्प बुझा दिये जाये तो वातावरण अधिक सुखद हो जायेगा, गैस-लैम्पो से मन पर अधिक उदासी हावी हो जाती थी, क्योकि वे सभी कुछ को रोशन कर देते थे। उस दिन मैंने दोपहर का भोजन लगभग नही किया था और शाम होने के वक्त से एक इजीनियर के यहां बैठा रहा था। उसके दो दोस्त भी वहां थे। मैं चुप्पी साधे रहा और लगता है कि उन्हे मेरे कारण बडी ऊब महसूस होती रही होगी। वे किसी चुनौती देनेवाले मामले पर बातचीत कर रहे थे और अचानक कुछ गर्मी मे भी आ गये थे। लेकिन उनको इससे कोई फर्क नही पड रहा था, मैं यह देख रहा था और वे योही गर्म हो रहे थे। मैंने सहसा उनसे यही कह दिया – "महानुभावो, आपको इस सब से कोई फर्क नही पड़ता।" उन्होंने मेरी इस बात का बुरा नही माना और खिलखिलाकर मुझ पर हस दिये। ऐसा इसलिये हुआ कि किसी प्रकार की

जोर से चिल्लाती थी – "अम्मा! अम्मा!" मैंने उसकी तरफ़ मुह किया, किन्तु एक भी शब्द नही कहा और अपनी राह चलता गया। मगर वह भागती और मेरी कोहनी को खीचती रही तथा उसकी आवाज मे वह ध्वनि सुनाई दे रही थी जो बहुत ही डरे हुए बच्चो मे हताशा को जाहिर करती है। मैं इस ध्वनि को जानता हू। बेशक वह अपने शब्दो को पूरी तरह नही कह पा रही थी, फिर भी मैं समझ गया कि उसकी मा कही पर अपनी आखिरी सासे गिन रही है या उसके साथ कोई ऐसी ही बुरी बात हो गयी है और वह किसी को बुलाने, मा की मदद को कुछ ढूढने के लिये सडक पर भाग आई है। लेकिन मैं उसके पीछे नही गया। इसके विपरीत, मेरे दिमाग मे अचानक उसे खदेड देने का ख्याल आया। शुरू मे मैंने उससे कहा कि वह किसी पुलिसवाले को ढूढ ले। किन्तु उसने अचानक अपने छोटे-छोटे हाथ जोड लिये और सिसकते तथा हाफते हुए मेरे साथ-साथ भागती रही और मेरा पीछा नही छोडा। तब मैं पाव पटककर उस पर चिल्लाया। वह सिर्फ "हुजूर, हुजूर!" ही चिल्लाती रही.. अचानक उसने मुझे छोड दिया और बहुत तेजी से सडक के दूसरी ओर भाग गयी – वहा भी किसी राहगीर की झलक मिल रही थी और बालिका मुझे छोड़कर

आई एक नाटी और दुबली-पतली महिला है जिसके छोटे-छोटे तीन बच्चे हैं और जो हमारे यहा आकर बीमार हो गये हैं। खुद यह महिला और उसके बच्चे हौवे की तरह कप्तान से डरते हैं और रात-रात भर कापते तथा सलीब का निशान बनाते रहते हैं। सबसे छोटे बच्चे को तो डर के मारे कोई दौरा भी पड गया था। मैं बिल्कुल सही तौर पर जानता हू कि यह कप्तान कभी-कभी नेव्स्की सडक पर राहगीरो को रोककर उनसे भीख मागता है। उसे नौकरी कही नही मिलेगी, मगर, अजीब बात है (मैं इसीलिये इसकी यहा चर्चा कर रहा हू) कि पूरे महीने मे, जब से यह कप्तान हमारे यहा रह रहा है, उसने मेरे मन मे किसी तरह की खीभ-भल्लाहट पैदा नही की। उससे जान-पहचान करने के मामले मे तो मैने जरूर शुरू से ही कन्नी काटी और खुद उसे भी पहली बार से ही मेरे साथ ऊब महसूस हुई, लेकिन अपने परदे के पीछे वे चाहे कितना ही चीखे-चिल्लाये और वहा वे चाहे कितनी भी सख्या मे क्यो न हो – मेरी बला से। मैं सारी रात बैठा रहता हू और, सच कहता हू कि उनकी आवाज़ ही नही सुनता हू – इस हद तक मैं उनके बारे मे भूल जाता हू। बात यह है कि मैं हर रात ही पौ फटने तक जागता रहता हू और इस तरह से पूरा एक साल हो गया है। मैं मेज़ के पास रात भर

ज़ोर से चिल्लाती थी – "अम्मा ! अम्मा !" मैंने उसकी तरफ़ मुह किया, किन्तु एक भी शब्द नही कहा और अपनी राह चलता गया। मगर वह भागती और मेरी कोहनी को खीचती रही तथा उसकी आवाज़ मे वह ध्वनि सुनाई दे रही थी जो बहुत ही डरे हुए बच्चों मे हताशा को ज़ाहिर करती है। मैं इस ध्वनि को जानता हू। बेशक वह अपने शब्दों को पूरी तरह नही कह पा रही थी, फिर भी मैं समझ गया कि उसकी मा कही पर अपनी आखिरी सासे गिन रही है या उनके साथ कोई ऐसी ही बुरी बात हो गयी है और वह किसी को बुलाने, मा की मदद को कुछ ढूढने के लिये सडक पर भाग आई है। लेकिन मैं उसके पीछे नही गया। इसके विपरीत, मेरे दिमाग़ मे अचानक उसे खदेड देने का ख्याल आया। शुरू मे मैंने उससे कहा कि वह किसी पुलिसवाले को ढूढ ले। किन्तु उसने अचानक अपने छोटे-छोटे हाथ जोड लिये और सिसकते तथा हाफते हुए मेरे साथ-साथ भागती रही और मेरा पीछा नही छोडा। तब मैं पाव पटककर उस पर चिल्लाया। वह सिर्फ "हुजूर, हुजूर !" ही चिल्लाती रही अचानक उसने मुझे छोड़ दिया और बहुत तेज़ी से सड़क के दूसरी ओर भाग गयी – वहा भी किसी राहगीर की झलक मिल रही थी और बालिका मुझे छोड़कर शायद उसकी तरफ भाग गयी थी।

मैं अपनी पाचवी मज़िल पर चढ गया। मैं यहा किरायेदार हू और अलग-अलग कमरो मे कई दूसरे किरायेदार रहते हैं। मेरा कमरा छोटा-सा है, गरीबी की दास्तान कहता है और खिडकी दुछत्ती की तरह अर्ध-चन्द्राकार है। मेरे कमरे मे मोमजामे का सोफा है, मेज है जिस पर किताबे रखी हैं, दो कुर्सिया और एक बहुत ही पुरानी आरामकुर्सी है, मगर उसकी टेक ऊची और सीट गहरी है। मैं कुर्सी पर बैठ गया, मैंने मोमबत्ती जला ली और सोच मे डूब गया। पास मे, परदे के पीछे दूसरे कमरे मे हल्ला-गुल्ला जारी था। उनके यहा यह तीन दिन से चल रहा था। वहा एक सेना-मुक्त कप्तान रहता था, उसके यहा कोई छः लफगे मेहमान थे, वे वोदका पीते और पुराने पत्तों से जुआ खेलते थे। पिछली रात को वहा हाथापाई हुई थी और मुझे मालूम है कि दो आदमी बहुत देर तक एक-दूसरे के बाल खीचने-नोचते रहे थे। मकान-मालकिन ने शिकायत करनी चाही, मगर वह कप्तान से बेहद डरती है। अन्य किरायेदार तो किसी सैनिक की, दूसरे नगर से

जोर से चिल्लाती थी—"अम्मा! अम्मा!" मैंने उसकी तरफ़ मुह किया, किन्तु एक भी शब्द नही कहा और अपनी राह चलता गया। मगर वह भागती और मेरी कोहनी को खीचती रही तथा उसकी आवाज़ मे वह ध्वनि सुनाई दे रही थी जो बहुत ही डरे हुए बच्चो मे हताशा को ज़ाहिर करती है। मैं इस ध्वनि को जानता हू। बेशक वह अपने शब्दो को पूरी तरह नही कह पा रही थी, फिर भी मैं समझ गया कि उसकी मा कही पर अपनी आखिरी सासे गिन रही है या उनके साथ कोई ऐसी ही बुरी बात हो गयी है और वह किसी को बुलाने मा की मदद को कुछ ढूढने के लिये सडक पर भाग आई है। लेकिन मैं उसके पीछे नही गया। इसके विपरीत, मेरे दिमाग़ मे अचानक उसे खदेड देने का ख्याल आया। शुरू मे मैंने उससे कहा कि वह किसी पुलिसवाले को ढूढ़ ले। किन्तु उसने अचानक अपने छोटे-छोटे हाथ जोड लिये और सिसकते तथा हाफते हुए मेरे साथ-साथ भागती रही और मेरा पीछा नही छोडा। तब मैं पाव पटककर उस पर चिल्लाया। वह सिर्फ "हुज़ूर, हुज़ूर!" ही चिल्लाती रही अचानक उसने मुझे छोड़ दिया और बहुत तेज़ी से सडक के दूसरी ओर भाग गयी—वहा भी किसी राहगीर की झलक मिल रही थी और बालिका मुझे छोड़कर शायद उसकी तरफ भाग गयी थी।

मैं अपनी पाचवी मज़िल पर चढ गया। मैं यहा किरायेदार हू और अलग-अलग कमरो मे कई दूसरे किरायेदार रहते है। मेरा कमरा छोटा-सा है, ग़रीबी की दास्तान कहता है और खिडकी दुछत्ती की तरह अर्ध-चक्राकार है। मेरे कमरे मे मोमजामे का सोफ़ा है, मेज़ है जिस पर किताबे रखी हैं, दो कुर्सिया और एक बहुत ही पुरानी आरामकुर्सी है, मगर उसकी टेक ऊची और सीट गहरी है। मैं कुर्सी पर बैठ गया, मैंने मोमबत्ती जला ली और सोच मे डूब गया। पास मे, परदे के पीछे दूसरे कमरे मे हल्ला-गुल्ला जारी था। उनके यहा यह तीन दिन से चल रहा था। वहा एक सेना-मुक्त कप्तान रहता था, उसके यहा कोई छः लफ़ंगे मेहमान थे, वे वोद्का पीते और पुराने पत्तो से जुआ खेलते थे। पिछली रात को वहा हाथापाई हुई थी और मुझे मालूम है कि दो आदमी बहुत देर तक एक-दूसरे के बाल खीचते-नोचते रहे थे। मकान-मालकिन ने शिकायत करनी चाही, मगर वह कप्तान से बेहद डरती है। अन्य किरायेदार तो किसी सैनिक को . . . . . . से

हू, पूर्ण शून्य मे परिवर्तित हो जाता हू। और इस बात की चेतना का कि अब मेरा बिल्कुल अस्तित्व नही रहेगा तथा मेरे लिये किसी भी चीज़ का अस्तित्व नही रहेगा, बालिका के प्रति दया की भावना और नीचता दिखाने के बाद लज्जा अनुभव करने की भावना पर क्या कोई प्रभाव नही पड सकता था? मैने इसीलिये तो पाव पटका और किस्मत की मारी उस बालिका पर इसी कारण चिल्लाया मानो मैने यह कहना चाहा कि "न केवल दया अनुभव नही करता हू, बल्कि अगर कोई अमानवीय नीचता भी करता हू, तो अभी कर सकता हू, क्योकि दो घण्टे बाद सब कुछ समाप्त हो जायेगा।" आप मानते हैं न कि मैं इसीलिये बालिका पर चिल्ला उठा था? अब तो मुझे इसका लगभग विश्वास हो गया है। मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हू कि जीवन और यह ससार अब मुझ पर ही निर्भर करते है। यो भी कहा जा सकता है कि दुनिया अब सिर्फ मेरे लिये ही बनायी गयी है – अगर मैं अपने को गोली मार लेता हू तो दुनिया नही रहेगी, कम से कम मेरे लिये तो खत्म हो जायेगी। इसका तो खैर ज़िक्र ही क्या किया जाये कि मेरे बाद वास्तव मे ही शायद किसी के लिये भी कुछ नही रहेगा और जैसे ही मेरी चेतना का अन्त होगा, वैसे ही यह सारी दुनिया एक छाया की तरह, केवल मेरी चेतना के अग की तरह नष्ट और गायब हो जायेगी। कारण कि शायद यह सारी दुनिया और ये सब लोग – मैं ही तो हू। मुझे याद है कि बैठे-बैठे और तर्क करते हुए बडी तेज़ी से एक के बाद एक अपने सामने आनेवाले इन नये प्रश्नो को मैं बिल्कुल दूसरी दिशा मे मोड देता था और सर्वथा कुछ नया ही सोचने लगता था। उदाहरण के लिये, मेरे दिमाग़ मे एक अजीब ख्याल आया। मान लीजिये कि पहले मैं चाद या मगल ग्रह पर रहता था और वहा मैंने बडी लज्जाजनक तथा बुरी से बुरी कोई हरकत कर दी और इसके लिये मुझे वहा इस तरह कोसा तथा बेइज्जत किया गया, जैसा कि हम कभी केवल भयानक स्वप्न मे देखते और अनुभव करते है, और अगर बाद मे, पृथ्वी पर लौटने के पश्चात् भी मुझे दूसरे ग्रह पर मैंने जो किया था, उसकी चेतना बनी रहती तथा, इसके अतिरिक्त मुझे यह भी मालूम होता कि उस ग्रह पर कभी और किसी हालत मे नही लौटूगा, तो पृथ्वी से चाद की ओर देखते हुए मेरे लिये सब बराबर होता या नही? उस हरकत के लिये मैंने शर्म महसूस की होती या

नहीं ? वे प्रश्न आये और फ़ालतू थे, क्योंकि पिस्तौल मेरे सामने पड़ी थी। मैं अपने रोम-रोम से यह जानता था कि यकीनन आज यह हो जायगा, किन्तु ये प्रश्न मुझे परेशान कर रहे थे और मैं आपे से बाहर हो रहा था। मैं तो मानो प्रश्न से पहले कुछ प्रश्न हल किये बिना मर ही नहीं सकता था। सार यह कि इस बालिका ने मुझे बचा लिया, क्योंकि प्रश्नों के कारण मैंने अपने को गोली मारने का विचार स्थगित कर दिया। इसी बीच कप्तान के यहां भी सभी कुछ शान्त होने लगा—उन्होंने ताश खेलना बन्द कर दिया था, वे सोने की तैयारी करने लगे थे, अभी बड़बड़ा रहे थे, धीरे-धीरे एक-दूसरे को भला-बुरा कह रहे थे। अचानक इसी वक्त मेरी आंख लग गयी, जैसा कि मेरे साथ मेज़ के निकट आरामकुर्सी पर बैठे हुए पहले कभी नहीं हुआ था। बिल्कुल अनजाने ही मुझे नींद आ गयी। जैसा कि सर्वविदित है, सपने बहुत ही अजीब चीज़ है—एक सपना तो बहुत ही स्पष्टता, जौहरी के बारीक काम की तरह हर छोटी से छोटी तफ़सील पेश करता है, लेकिन दूसरे में कुछ भी अनुभव किये बिना, उदाहरण के लिये, हम समय और स्थान की सभी सीमायें लाघ जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि विचार नहीं, बल्कि इच्छा, मस्तिष्क नहीं, बल्कि हृदय सपनों को निर्देशित करता है, मगर इसी बीच मेरे विचार ने सपने में कभी-कभी कैसी अद्भुत बातें कर डाली हैं! इसी बीच सपने में विचार के साथ बिल्कुल समझ में न आनेवाली बातें हो जाती हैं। उदाहरण के लिये, मेरे भाई का पाच साल पहले देहान्त हो गया था। मैं कभी-कभी उसे सपने में देखता हूं—वह मेरे काम-काज में हिस्सा लेता है, हम एक-दूसरे में बहुत दिलचस्पी ज़ाहिर करते हैं, फिर भी सारे स्वप्न के दौरान मुझे यह मालूम होता है और याद रहता है कि मेरा भाई मर चुका है, दफ़नाया जा चुका है। क्यों मुझे इस बात से हैरानी नहीं होती कि बेशक वह मर चुका है, फिर भी यहा, मेरी बगल में है और मेरे साथ दौड़-धूप कर रहा है? मेरी सूझ-बूझ यह सब क्यों सम्भव मान लेती है? लेकिन काफ़ी है। मैं अपने सपने की चर्चा शुरू करता हूं। हा, मुझे तब यह सपना आया था, तीन नवम्बर का यह सपना! वे अब मुझे यह कहकर चिढ़ाते हैं कि वह तो मात्र सपना था। किन्तु इससे क्या फ़र्क पड़ता है कि वह सपना था या नहीं, १४ उसने मेरे लिये सचाई का उद्घाटन कर दिया? अगर आदमी

म में जाया जा रहा है। मैं अनुभव कर रहा हू कि ताबूत नैने डोल रहा है, मैं इसके बारे में सोच-विचार करता हू और सहसा इस विचार में मुझे पहली बार हैरानी होती है कि मैं तो मर चुका हू, बिल्कुल मर चुका हू, यह जानता हू और इसके बारे में मुझे तनिक सन्देह नहीं, न कुछ देखता और न हिलता-डुलता हू, लेकिन फिर भी अनुभव तथा चिन्तन करता हू। शीघ्र ही मैं सामान्य ढग से, जैसा कि सपने में होता है, इस स्थिति को स्वीकार कर लेता हू, तर्क-वितर्क के बिना वास्तविकता को ज्यो का त्यो मान लेता हू।

लीजिये, मुझे ज़मीन मे दफ़ना दिया जाता है। सब चले जाते हैं, मैं अकेला, एकदम अकेला रह जाता हू। मैं हिलता-डुलता नहीं हू। पहले जब मैंने स्पष्ट रूप से इस बात की कल्पना की थी कि किस तरह मुझे कब्र मे दफनाया जा रहा है तो कब्र के साथ हमेशा नमी और ठण्डक की अनुभूति ही जुडी रही थी। इस समय भी मैंने यही अनुभव किया कि मुझे बहुत ठण्ड लग रही है, खास तौर पर पावो की उग-लियो के सिरे ठिठुरे जा रहे हैं और इससे अधिक मैंने कुछ भी अनुभव नही किया।

मैं लेटा हुआ था और बडी अजीब बात है कि किसी भी चीज़ की आशा नही कर रहा था, किसी प्रकार के विवाद के बिना यह मानते हुए कि मुरदे के लिये उम्मीद करने को कुछ नही हो सकता। लेकिन नमी थी। कह नही सकता कि कितना वक्त गुज़रा – एक घण्टा या कुछ दिन या अनेक दिन। अचानक ताबूत के ढक्कन से चू कर पानी की एक बूद मेरी मुदी हुई बायी आख पर गिरी, एक मिनट बाद दूसरी, मिनट बाद तीसरी और हर मिनट के बाद यही सिलसिला जारी रहा। मेरे दिल मे अचानक बहुत ज़ोर का गुस्सा भडक उठा और सहसा मुझे उसमे शारीरिक पीडा की अनुभूति हुई – "यह मेरा घाव है," मैंने सोचा, "यह गोली लगने का नतीजा है, वहा गोली है . ." और हर मिनट के बाद बूद सीधी मेरी मुदी हुई आख पर गिर रही थी। मेरे साथ जो कुछ हो रहा था, उसके सम्बन्ध मे मैंने बोलकर तो नही, क्योकि निर्जीव लेटा हुआ था, किन्तु अपनी पूरी शक्ति से भगवान के सम्मुख गुहार की –

"तुम कोई भी क्यो न हो, किन्तु यदि तुम्हारा अस्तित्व है और यदि इस समय जो हो रहा है उससे अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण कुछ और

के हाथो मे था, जो मानव नही था, किंतु जिसका अस्तित्व था, जो जीवित था – "इसका मतलब यह हुआ कि मृत्यु के बाद भी जीवन है!" मैंने स्वप्न की विचित्र चचलता से सोचा, किंतु मेरी आत्मा का सार अभिन्न रूप से मेरे साथ बना रहा – "अगर मुझे फिर से जिन्दा होना पडेगा," मैने सोचा, "और पुन: किसी की अनिवार्य इच्छा के अनुसार जीना होगा, तो मैं यह नही चाहता हू कि मुझे मात दी जाये और मेरा अपमान किया जाये!" – "तुम जानते हो कि मै तुमसे डरता हू और इसीलिये तुम मेरा तिरस्कार करते हो," मैने अपने साथी से अचानक कहा। मैं अपने लिये ये अपमानजनक शब्द कहे बिना न रह सका जिनमे स्वीकारोक्ति थी और मैंने अनुभव किया कि मेरी अवमानना काटे की तरह मेरे दिल मे चुभ गयी है। उसने मेरे प्रश्न का उत्तर नही दिया, किंतु मैंने अचानक यह महसूस किया कि मेरा तिरस्कार नही किया जाता, मेरी खिल्ली नही उड़ाई जाती, यहा तक कि मेरे प्रति दया भी नही दिखाई जाती और यह कि हमारी इस यात्रा का कोई अज्ञात और रहस्यपूर्ण लक्ष्य भी है जिसका केवल मुझसे सम्बन्ध है। मेरे दिल मे डर बढता जा रहा था। मेरे मूक साथी से चुपचाप, किंतु यातनापूर्ण ढग से कोई चीज मुझ तक पहुच रही थी और मानो मुझे बीधती चली जा रही थी। हम अन्धेरे और अनजाने विस्तारो मे से उडते जा रहे थे। अपने परिचित तारामण्डल को तो मैं बहुत पहले से ही नही देख रहा था। मुझे मालूम था कि ब्रह्माण्ड मे ऐसे तारे भी है जिनकी किरणे केवल हजारो-लाखो साल मे धरती तक पहुच पाती है। शायद हम इन विस्तारो को लाघ चुके थे। दुखो से बहुत बुरी तरह व्यथित हृदय लिये हुए मै किसी चीज का इन्तजार कर रहा था। सहसा सुपरिचित और हृदय को अत्यधिक विह्वल करनेवाली भावना ने मुझे झकझोर डाला – एकाएक मुझे हमारा सूरज दिखाई दिया! मुझे मालूम था कि हमारी पृथ्वी को जन्म देनेवाला यह हमारा सूरज नही हो सकता, कि हम अपने सूरज से असीम दूरी पर है, किन्तु न जाने क्यो मैने अपने आपमें यह जान लिया कि यह हमारे सूरज जैसा ही सूरज है, उसकी अनुकृति, उसका समरूप है। मीठी-मीठी और मन को छूनेवाली उल्लास-भावना से मेरी आत्मा नाच उठी – वह प्यारा-महत्त्वपूर्ण वही प्रकाशधारा था जिसने मुझे जन्म दिया था। उसने मेरे हृदय को झंकृत कर दिया,

धरती को चूमने को लालायित हू जिसे छोड़ आया हू और अन्य किसी पृथ्वी पर अपना जीवन नहीं चाहता, उससे इन्कार करता हू!.."

लेकिन इसी बीच मेरा साथी मुझे छोड़कर जा भी चुका था। मुझे बिल्कुल पता भी नही चला, अनजाने ही मैंने अपने को इस दूसरी पृथ्वी के स्वर्ग जैसे बहुत ही प्यारे दिन के चमकते सूर्य-प्रकाश में खडे पाया। ऐसे लगता है कि मैं किसी एक ऐसे द्वीप पर था जो हमारी पृथ्वी का यूनानी द्वीप-समूह बनाते हैं या फिर इस द्वीप-समूह से सटी हुई तटवर्ती भूमि पर कही खडा था। ओह, सब कुछ वैसे ही था जैसे हमारी पृथ्वी पर, किन्तु ऐसे लगता था कि सभी ओर पर्व की चमक-दमक थी तथा महान, पावन और अन्ततः प्राप्त किये गये परमोल्लास का रंग था। मृदुल मरकती सागर अपने तटो को धीरे-धीरे थपथपा रहा था और उन्हे स्पष्ट, दृश्यमान तथा लगभग सजग प्यार से दुलरा रहा था। फूलो से बौराये हुए ऊचे-ऊचे सुन्दर पेड अपनी अनूठी सौन्दर्य-छटा दिखा रहे थे और उनके असख्य छोटे-छोटे पत्ते (मुझे इसका पूरा विश्वास है) अपनी धीमी मृदुल मरमर से मेरा स्वागत कर रहे थे और मानो प्यारभरे कुछ शब्द कह रहे थे। घास चटक, महकते फूलो से चमक रही थी। पक्षियों के झुण्ड के झुण्ड हवा मे उड़ते थे और मुझसे डरे बिना मेरे कन्धो और हाथो पर बैठते थे तथा सहर्ष अपने प्यारे-प्यारे, फडफड़ाते हुए पख मुझे मारते थे। आखिर मैंने इस सौभाग्यशाली धरती के लोगो को देखा और उनसे मेरी जान-पहचान हो गयी। वे तो खुद ही मेरे पास आये, उन्होंने मुझे घेर लिया और चूमा। सूर्य-सन्तानें, अपने सूर्य की सन्ताने—ओह, वे कितनी प्यारी थी! अपनी पृथ्वी पर मैंने मानव मे ऐसा सौन्दर्य कभी नही देखा था। शायद हमारे बच्चो मे, सो भी उनकी आयु के पहले वर्षों मे ही इस सौन्दर्य की बहुत थोडी, बहुत मामूली-सी झलक मिल सकती थी। इन सुखी लोगों की आखें निर्मल ज्योति से चमक रही थीं। इनके चेहरो पर बुद्धिमत्ता की कान्ति थी और यह बुद्धिमत्ता शान्ति की चेतना से परिपूर्ण थी। किन्तु इन चेहरों पर खुशी झलक रही थी। इनके शब्दो और आवाजो मे बच्चों की सी खुशी छलछला रही थी। ओह, मैं तो उसी क्षण, इनके चेहरो पर पहली नज़र डालते ही सब कुछ, सब कुछ समझ गया! यह पाप-मुक्त धरती थी, इस पर ऐसे लोग रहते थे जिन्होंने पाप नही किये थे, वे उसी तरह के स्वर्ग में रह रहे

वे तो मानो अपने जैसे प्राणियों से बातचीत करते थे। और अगर मैं यह कहू कि वे उनसे बाते करते थे तो शायद गलती नहीं करूगा। हा, वे उनकी भाषा जानते थे और मुझे यकीन है कि पेड़ भी उनकी बाते समझते थे। अपनी सम्पूर्ण प्रकृति की ओर ही वे ऐसी प्रेम-दृष्टि से देखते थे – जानवरो की ओर जो उनके साथ शान्तिपूर्ण ढग से रहते थे, उन पर प्रहार नही करते थे और वहा के लोगो के प्यार के जादू मे बधे हुए उनसे प्रेम करते थे। उन्होंने सितारों की ओर सकेत किया और मुझसे उनकी कुछ चर्चा की जो मेरी समझ मे नही आई। किन्तु मुझे इस बात का विश्वास है कि उन्होंने केवल आत्मिक रूप से ही नही, बल्कि नक्षत्रो के साथ भी सजीव नाता जोड रखा था। ओह, इन लोगो ने इस बात की कोशिश नही की कि मैं उन्हे समझू, इसके बिना ही वे मुझे प्यार करते थे। किन्तु दूसरी ओर मैं यह जानता था कि वे भी मुझे कभी नही समझ पायेगे और इसलिये उनसे अपनी पृथ्वी के बारे मे लगभग कुछ नही कहता था। मैंने तो उनके सामने केवल उस धरती को चूमा जिस पर वे रहते थे और शब्दो के बिना उनकी आराधना करता था। वे यह देखते थे और इस बात से किसी प्रकार की लज्जा अनुभव नही करते थे कि मैं उनकी आराधना करता हू, क्योंकि स्वय भी बहुत अधिक प्यार करते थे। कभी-कभी जब मैं आंखो मे आसू भरे हुए उनके पावो को चूमता था तो वे मेरे लिये दुखी नही होते थे। उस समय मैं खुशीभरे अपने दिल मे यह जानता था कि बदले मे मुझे उनसे कितना अधिक प्यार मिलेगा। कभी-कभी मैं हैरान होकर अपने से यह पूछता कि मेरे जैसे आदमी का ये लोग कभी अपमान क्यों नही करते, मुझ जैसे आदमी मे ईर्ष्या या जलन की भावना क्यो नही पैदा करते? अनेक बार मैं खुद से यह सवाल करता कि मैं जो शेखीखोर और झूठा हू क्यो उनसे अपने ज्ञान की चर्चा नही करता जिसकी, जाहिर है, उन्हे जरा भी जानकारी नही थी, क्यो मैं उससे उन्हे आश्चर्यचकित नहीं करना चाहता या फिर केवल इसलिये कि मैं उन्हें प्यार करता हू? वे बच्चो की तरह प्रफुल्ल और चचल थे। वे अपने अनूठे कुजों और वनों मे घूमते थे, अपने अद्भुत गाने गाते थे और हल्का-फुल्का भोजन करते थे – अपने पेड़ों के फलो, वनो से प्राप्त शहद और अपने प्यारे जानवरों के दूध से पेट भरते थे। अपने भोजन और कपडो के लिये वे बहुत थोड़ी तथा हल्की-सी मेहनत

करते थे। वे प्यार करते थे, बच्चो का जन्म भी होता था, किन्तु मैंने उनमे "प्रचड" कामुकता के आवेग कभी नही देखे जो हमारी पृथ्वी के लगभग सभी लोगो, हर किसी को अपनी गिरफ्त मे ले लेते हैं और जो हमारी मानवजाति के लगभग सभी पापो का एकमात्र स्रोत बनती है। अपने यहा बच्चो के जन्म पर वे उनके परम सुख मे नये भागीदारो के रूप मे खुश होते थे। उनके बीच न तो झगडे होते थे और न ही ईर्ष्या की भावना थी और वे तो इनका अर्थ तक नही समझते थे। उनके बच्चे सबके बच्चे थे, क्योकि वे सभी एक कुटुम्ब थे। उनके यहा बीमारी बिल्कुल नही थी, यद्यपि मौत थी। किन्तु उनके बूढे धीरे-धीरे मानो निद्रामग्न होते और विदा लेनेवाले लोगो से घिरे हुए, उन्हे आशीर्वाद देते, उनकी ओर देख कर मुस्कराते और खुद भी उनकी मधुर मुस्कानो को साथ लेते हुए अपने प्राण तजते थे। किसी की मृत्यु पर मैंने शोक और आसू नही देखे, केवल प्यार ही परम हर्ष की सीमा तक पहुचा जाता था, किन्तु यह परम हर्ष शान्त, चिन्तनमय और पूर्णता लिये होता था। ऐसा सोचा जा सकता था कि मृत्यु के बाद भी अपने मृतको से उनका सम्बन्ध बना रहता था और मृत्यु उनके बीच इस पृथ्वी पर बने नाते को समाप्त नही कर पाती थी। *मैं जब उनसे शाश्वत जीवन की बात करता था तो* वे मुझे लगभग नहीं समझ पाते थे। शायद उन्हे इसका ऐसा पक्का विश्वास था कि उनके लिये यह समस्या थी ही नही। उनके यहा देव-स्थान नही थे, किन्तु उनका पूर्ण ब्रह्माण्ड से सजीव, अटूट और स्थायी नाता था। उनका कोई धर्म नही था, किन्तु उन्हे इस बात का दृढ ज्ञान था कि जब उनका सासारिक सुख पृथ्वी की अन्तिम प्राकृतिक सीमाओ तक पहुच जायेगा, तो उनका, जीवितो और मृतको का, पूर्ण ब्रह्माण्ड के साथ और अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध हो जायेगा। वे उतावली किये बिना, सतप्त हुए बिना इस क्षण की सहर्ष प्रतीक्षा करते थे, मानो अपने हृदयो मे उन्हे इसकी पहले से ही अनुभूति होती थी और एक-दूसरे को इसका भागीदार बनाते थे। शामो को, सोने से पहले वे सुर मे सधे और मधुर सहगान गाना पसन्द करते थे। इन गानो मे वे दिन भर मे प्राप्त अनुभूतियो को व्यक्त करते, दिन का स्तुति-गान करते और उससे विदा लेते। वे प्रकृति, पृथ्वी, सागर और वनों का गुण-गान करते। वे एक-दूसरे के बारे में गीत रचते और बच्चो की तरह

एक-दूसरे की प्रशसा करते। वे बहुत ही सीधे-सादे गाने होते थे, किन्तु दिल से निकलते और दिल मे उतरते थे। केवल गीतो में ही नहीं, बल्कि, ऐसे प्रतीत होता था कि एक-दूसरे की प्रेम-प्रशस्ति मे ही वे अपना सारा जीवन बिताते थे। यह एक-दूसरे के प्रति व्यापक और मार्विक प्रेम-भावना थी। उनके कुछ दूसरे, समारोही और उल्लासपूर्ण गीत तो मैं लगभग नही समझ पाता था। शब्दो को समझते हुए मैं उनके अर्थ की पूरी गहराई को समझने मे असमर्थ रहता था। वह तो मानो मेरी बुद्धि की परिधि से परे रहता था, फिर भी मेरा हृदय अधिकाधिक हुलसता हुआ उनकी ओर खिचता जाता था। मैं अक्सर उनसे कहता कि मुझे बहुत पहले ही इसकी पूर्वानुभूति हो चुकी है, कि यह प्रमन्नता और महिमा हमारी पृथ्वी पर ही मुझे ऐसी तीव्र मनोव्यथा दे चुकी है जो कभी-कभी असह्य अवसाद का रूप धारण कर लेती थी, कि मैं पहले से ही उन सब को और उनकी महिमा को अपने हृदय के सपनो और मस्तिष्क की कल्पनाओ मे अनुभव कर चुका हू, कि मैं अक्सर अपनी पृथ्वी पर डूबते हुए सूर्य को आसुओं के बिना नहीं देख पाता था   कि अपनी पृथ्वी के लोगों के प्रति मेरी घृणा में हमेशा उदासी होती थी – क्यो मैं उन्हे प्यार न करते हुए घृणा नही कर सकता, क्यो मैं उन्हे क्षमा किये बिना नही रह सकता, क्यो उनके प्रति मेरे प्यार मे उदासी बनी रहती है – क्यों मैं उनसे घृणा किये बिना उन्हे प्यार नही कर सकता? वे मुझे सुनते थे और मैं देखता था कि वे मेरी बातों को समझ नही पाते थे, किन्तु मुझे इस बात का अफसोस नही था कि मैं उनसे यह सब कहता था। मैं जानता था कि उनके लिये, जिन्हे मैं छोड़ आया था, मेरी हूक की तीव्रता को वे अच्छी तरह समझते थे। हा   जब वे मुझे अपनी प्यारी-प्यारी, प्यार मे ओत-प्रोत दृष्टि से देखते थे, जब मैं यह अनुभव करता था कि उनके समर्ग मे मेरा हृदय भी उनके हृदयों की भांति निष्कपट और सत्यनिष्ठ हो जाता है तो मुझे इस बात का अफसोस नहीं होता था कि मैं उन्हें नहीं समझ पाता हू। जीवन की पूर्णता की अनुभूति के कारण मेरे लिये सास लेना मुश्किल होता था और मैं चुपचाप उनकी आराधना करता था।

ओह, सब लोग अब मेरे मुह पर ही हसते है और मुझे विश्वास दिलाते है कि स्वप्न मे ऐसे सभी ब्योरे कभी दिखाई नहीं दे सकते

कि मैं अब बता रहा हूं कि स्वप्न में मुझे सौन्दर्य की हालत में मेरे हृदय द्वारा पैदा की गयी अनुभूति की केवल झलक-सी मिली या मैंने उसे तनिक अनुभव किया और जागने पर ब्योरे मैंने गढ़ लिये हैं। और जब मैंने उनके सामने यह स्वीकार कर लिया कि शायद वास्तव में ही ऐसा हुआ हो तो हे भगवान मेरे सामने ही वे मुझ पर कितना अधिक हंसे और कितनी अधिक खुशी मिली उन्हें! ओह हां, उस स्वप्न की अनुभूति ही मुझ पर हावी हो गयी थी और केवल वही मेरे बुरी तरह घायल हृदय में शेष रह गयी थी। लेकिन दूसरी ओर मेरे स्वप्न के वास्तविक बिम्ब और स्वरूप अर्थात् वे जो मैंने स्वप्न के समय देखे, इतने सामंजस्यपूर्ण, इतने आकर्षक और सुन्दर रूप में उभरे, इस सीमा तक सच्चे थे कि जागने पर मैं बेशक उन्हें अपने तुच्छ शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ था। इस तरह उन्हें मानो मेरे मस्तिष्क में धुंधला जाना चाहिये था और इसलिये शायद वास्तव में, मैं खुद अनजाने ही ब्योरे गढ़ने के लिये विवश हुआ तथा जल्दी से जल्दी उनके कुछ अंशों को व्यक्त करने की तीव्र इच्छा के कारण मैंने निश्चय ही उन्हें कुछ तोड़-मरोड़ भी दिया। लेकिन, भला मैं यह विश्वास किये बिना कैसे रह सकता हूं कि यह सब हुआ था? बहुत सम्भव है कि यह सब कुछ उससे शायद हजार गुना बेहतर, उज्ज्वल और सुखद था जितना मैं बता रहा हूं? बेशक यह सपना था, फिर भी था तो सही। सोचिये, मैं आपको एक रहस्य बताता हूं—शायद यह सपना था ही नहीं! कारण कि कुछ ऐसा हुआ, कुछ ऐसी भयानक वास्तविकता सामने आ गयी कि उसे सपने में देखना सम्भव नहीं था। मान लीजिये कि मेरे दिल ने ही मेरे सपने को जन्म दिया, लेकिन क्या मेरा दिल उस भयानक वास्तविकता को जन्म दे सकता था जो बाद में सामने आई? मैं अकेला ही कैसे उसकी कल्पना कर सकता था या मेरा हृदय उसे स्वप्न में बदल सकता था? क्या मेरा सकुचित हृदय और सनकी तथा तुच्छ मस्तिष्क ऐसी [illegible] का उद्घाटन करने की ऊंचाई तक पहुंच सकते थे? ओह, आप खुद ही इसका निर्णय करें—अब तक मैंने इसे छिपाया था, किन्तु अब यह वास्तविकता भी बताये देता हूं। बात यह है कि, मैंने उन सबको भ्रष्ट कर दिया!

हा, हा, इस सब का अन्त यह हुआ कि मैंने उन सब को भ्रष्ट कर दिया! यह कैसे हुआ—मुझे मालूम नही, किन्तु स्पष्ट रूप से इतना याद अवश्य है। मेरा सपना हजारों सालों की सीमायें लाघ गया और अपनी एक पूर्ण अनुभूति छोड गया। केवल इतना ही जानता हूं कि इस सारे पाप का कारण मैं हू। जैसे सक्रामक तन्तु-कृमि या प्लेग का एक अणु सारे राज्य को छूत के रोग का शिकार बना देता है, वैसे ही मेरे आने से पहले सुखी तथा पाप-मुक्त धरती को मैंने छूत लगा दी। वे झूठ बोलना सीख गये, झूठ से उन्हें प्यार हो गया और उन्हे झूठ के सौन्दर्य का ज्ञान हो गया। ओह, बहुत सम्भव है कि यह भोलेपन से, मजाक, चचलता या प्रेम-खिलवाड से आरम्भ हुआ हो, शायद वास्तव मे अणु से ही आरम्भ हुआ हो, किन्तु झूठ का यह अणु उनके हृदयो मे उतर गया और उन्हे अच्छा लगा। इसके फ़ौरन बाद विषयासक्ति का जन्म हो गया और विषयासक्ति ने ईर्ष्या तथा ईर्ष्या ने क्रूरता को जन्म दिया.. ओह, मैं नहीं जानता, मुझे याद नही, किन्तु शीघ्र, अति शीघ्र ही पहली बार रक्त बहा—वे बहुत हैरान हुए, स्तम्भित रह गये और एक-दूसरे से अलग होने तथा अलग-अलग रास्तो पर जाने लगे। उनके सघ बन गये, लेकिन अब एक-दूसरे के विरुद्ध। वे एक-दूसरे की भर्त्सना करने और एक-दूसरे को दोष देने लगे। उन्हे शर्म-हया की चेतना हो गयी और उसे उन्होंने एक गुण बना लिया। इज्जत-आबरू की धारणा का जन्म हुआ और प्रत्येक सघ ने अपना झण्डा लहरा दिया। वे जानवरो के प्रति क्रूर हो गये, जानवर भागकर जगलो मे चले गये और उनके शत्रु बन गये। आपसी बटवारे, प्रभुसत्ता, व्यक्तिगत महत्ता, मेरे और तेरे का सघर्ष शुरू हो गया। वे भिन्न-भिन्न भाषायें बोलने लगे। उन्हे दुख का ज्ञान हो गया और वे दुख को प्यार करने लगे, वे पीड़ा के लिये बेचैन रहने और यह कहने लगे कि पीड़ा के माध्यम से ही सचाई का ज्ञान होता है। तब उनके यहा विज्ञान प्रकट हुआ। क्रूर बनने पर वे भ्रातृत्व और मानवीयता की चर्चा करने लगे और उन्हे इन भावनाओं की समझ भी आने लगी। अपराधी बन जाने पर उन्होने न्याय का आविष्कार किया, न्याय की रक्षा के लिये दण्ड-सहितायें बनायी और दण्ड-

साहताआ का व्यावहारिक रूप देन के लिये गिलोटीन की व्यवस्था कर दी गयी। उन्हे इस बात की बहुत मामूली-सी याद रह गयी कि उन्होने क्या कुछ खो दिया है, वे तो इस बात का विश्वास करने को भी तैयार नही थे कि कभी मासूम और सुखी लोग थे। पहले के सुख-सौभाग्य की ऐसी सम्भावना पर वे हसते भी थे और उसे सपना कहते थे। वे किन्ही आकारो और बिम्बो मे उसकी कल्पना तक करने मे असमर्थ थे, किन्तु अजीब और अद्भुत बात है कि भूतपूर्व सुख मे पूरी तरह अपना विश्वास खोकर और उसे किस्सा कहकर भी वे फिर से ऐसे मासूम और सुखी होना चाहते थे कि उन्होने बच्चो की तरह अपने हृदय की इस इच्छा के सामने घुटने टेक दिये, इस इच्छा को भगवान का रूप दे दिया, देव-स्थान बना लिये और अपने इस विचार, अपनी इस "इच्छा" की पूजा करने लगे, गो वे पूरी तरह से जानते थे कि उनकी यह इच्छा कभी पूरी नही होगी, उसे कभी व्यावहारिक रूप नही दिया जा सकेगा, फिर भी वे आखो मे आसू भर भरकर उसकी आराधना करते थे और उसके सामने शीश नवाते थे। किन्तु यदि ऐसा सम्भव होता कि वे निष्कपटता और सुख की अपनी उसी स्थिति मे लौट सकते जो खो बैठे थे और यदि अचानक उन्हे वही फिर से दिखाकर उनसे पूछा जाता – क्या वे उसी स्थिति मे लौटना चाहेगे तो सम्भवत उन्होने इन्कार कर दिया होता। उन्होने मुझे जवाब दिया – "बेशक हम झूठे, बुरे और अन्यायी है, हम यह जानते हैं, इसके बारे मे रोते हैं, इसके लिये हम खुद को सतप्त करते है, व्यथित होते हैं और अपने को उससे भी अधिक दण्ड देते हैं जो हमारा दयालु निर्णायक हमे देगा और जिसका नाम हम नही जानते हैं। किन्तु हमारे पास विज्ञान है और उसके द्वारा हम फिर से सचाई को ढूढ लेगे और सो भी सचेतन रूप से। ज्ञान भावना से बढकर है, जीवन की चेतना – जीवन से बढकर है। विज्ञान हमे बुद्धिमत्ता प्रदान करेगा, बुद्धिमत्ता नियमो का उद्घाटन करेगी और सुख के नियमो का ज्ञान – सुख मे बढकर है।" तो उन्होने ऐसा कहा और ऐसे शब्दो के बाद प्रत्येक अपने को अन्य सभी मे ज्यादा प्यार करने लगा और वे इसमे भिन्न कुछ कर भी नही सकते थे। हर किसी का अहभाव इतना अधिक बढ गया कि उसकी रक्षा के लिये वह दूसरो के अहभाव पर चोट करने, उसे नीचा दिखाने की पूरी कोशिश करने लगा। यही जिन्दगी का सार

संहिताओं को व्यावहारिक रूप देने के लिये गिलोटीन की व्यवस्था कर दी गयी। उन्हें इस बात की बहुत मामूली-सी याद रह गयी कि उन्होंने क्या कुछ खो दिया है, वे तो इस बात का विश्वास करने को भी तैयार नहीं थे कि कभी मासूम और सुखी लोग थे। पहले के सुख-सौभाग्य की ऐसी सम्भावना पर वे हसते भी थे और उसे सपना कहते थे। वे किन्हीं आकारों और बिम्बों में उसकी कल्पना तक करने में असमर्थ थे, किन्तु अजीब और अद्भुत बात है कि भूतपूर्व सुख में पूरी तरह अपना विश्वास खोकर और उसे किस्सा कहकर भी वे फिर से ऐसे मासूम और सुखी होना चाहते थे कि उन्होंने बच्चों की तरह अपने हृदय की इस इच्छा के सामने घुटने टेक दिये, इस इच्छा को भगवान का रूप दे दिया, देव-स्थान बना लिये और अपने इस विचार, अपनी इस "इच्छा" की पूजा करने लगे, गो वे पूरी तरह से जानते थे कि उनकी यह इच्छा कभी पूरी नहीं होगी, उसे कभी व्यावहारिक रूप नहीं दिया जा सकेगा, फिर भी वे आखों में आसू भर भरकर उसकी आराधना करते थे और उसके सामने शीश नवाते थे। किन्तु यदि ऐसा सम्भव होता कि वे निष्कपटता और सुख की अपनी उसी स्थिति में लौट सकते जो खो बैठे थे और यदि अचानक उन्हें वही फिर से दिखाकर उनसे पूछा जाता – क्या वे उसी स्थिति में लौटना चाहेंगे तो सम्भवत उन्होंने इन्कार कर दिया होता। उन्होंने मुझे जवाब दिया – "बेशक हम झूठे, बुरे और अन्यायी हैं, हम यह जानते है, इसके बारे में रोते हैं, इसके लिये हम खुद को संतप्त करते है, व्यथित होते है और अपने को उससे भी अधिक दण्ड देते हैं जो हमारा दयालु निर्णायक हमें देगा और जिसका नाम हम नहीं जानते हैं। किन्तु हमारे पास विज्ञान है और उसके द्वारा हम फिर से सचाई को ढूढ लेंगे और सो भी सचेतन रूप से। ज्ञान भावना से बढकर है, जीवन की चेतना – जीवन से बढकर है। विज्ञान हमें बुद्धिमत्ता प्रदान करेगा, बुद्धिमत्ता नियमों का उद्घाटन करेगी और सुख के नियमों का ज्ञान – सुख से बढकर है।" तो उन्होंने ऐसा कहा और ऐसे शब्दों के बाद प्रत्येक अपने को अन्य सभी से ज्यादा प्यार करने लगा और वे इससे भिन्न कुछ कर भी नहीं सकते थे। हर किसी का अहभाव इतना अधिक बढ गया कि उसकी रक्षा के लिये वह दूसरों के अहभाव पर चोट करने उसे नीचा दिखाने की पूरी कोशिश करने लगा। यही जिन्दगी का सार

ल गया। दासता प्रकट हो गयी, यहा तक कि स्वैच्छिक दासता भी
कट हो गयी – दुर्बल बडी खुशी से सबसे अधिक शक्तिशाली के अधीन
। गये, सो भी इसलिये कि वे अपने जैसे दुर्बलों को दबाने मे उनको
दद दे सकें। धर्मात्मा सामने आ गये जो आंखो में आसू भरे हुए इन
ोगों से इनके घमण्ड, जीवन के मापदण्ड और सामंजस्य, शर्म-हया
खो जाने की चर्चा करने लगे। उनकी खिल्ली उड़ायी गयी या उन
र पत्थर फेके गये। देव-स्थानो की दहलीज़ों पर पवित्र रक्त बहा।
न्तु ऐसे लोग भी प्रकट होने लगे जो इन विचारों में डूब गये कि कैसे
ा को फिर से इस तरह सूत्रबद्ध किया जाये कि हर कोई अपने को
य सभी से अधिक प्यार करते हुए किसी दूसरे के लिये बाधा न
। और इस तरह सभी एक सहमतिपूर्ण समाज में जी सके। ऐसे
चार के कारण युद्ध लडे गये। युद्धरत लोग साथ ही इस बात में
दृढ विश्वास रखते थे कि विज्ञान, बुद्धिमत्ता और आत्म-रक्षा की
र्गिक प्रवृत्ति आखिर लोगों को सहमति तथा बुद्धिमत्तापूर्ण समाज मे
जुट होने के लिये विवश कर देगी और इसलिये मामले को तीव्रता
ान करने के हेतु "बुद्धिमानों" ने सभी "बुद्धिहीनो" को, जो
के विचार को नही समझते थे, जल्दी से जल्दी समाप्त करने की
शश की ताकि वे इस विचार की विजय मे रोडा न अटका सके।
तु आत्म-रक्षा की भावना तेज़ी से क्षीण होने लगी और ऐसे दम्भी

क झटके से उसे अपने से दूर हटा दिया! ओह, अब मुझे जिन्दगी,
वल जिन्दगी चाहिये! मैंने अपने हाथ ऊपर उठाये और शाश्वत
त्य का आह्वान किया। आह्वान नही किया, बल्कि रो पडा। उल्लास,
रम उल्लास मेरे रोम-रोम मे व्याप्त हो गया था। हा, मुझे जीना
र प्रचार करना है! प्रचार के बारे मे मैंने उसी क्षण और निश्चय
जीवन भर के लिये निर्णय कर लिया! मैं प्रचार करने जा रहा
, मैं प्रचार करना चाहता हू–किस चीज का? सचाई का, क्योकि
। उसे अपनी आखो से देखा है, उसे, उसकी पूरी गरिमा मे देखा है।
तो तभी से मैं प्रचार कर रहा हू! इतना ही नही, जो मेरा
ाक उड़ाते हैं, उन्हे दूसरों से ज्यादा प्यार करता हू। ऐसा क्यो
-मैं नही जानता और स्पष्ट नही कर सकता, लेकिन चाहता हू
ऐसा ही होता रहे। उनका कहना है कि मैं अभी रास्ते से भटक
। हू यानी अगर अभी ऐसे भटक गया तो आगे क्या होगा? यह
कुल सच है–मैं रास्ते से भटक रहा हू और, बहुत सम्भव है,
भविष्य मे और भी बुरी हालत होगी। निश्चय ही यह जानने
पहले कि मुझे कैसे प्रचार करना चाहिये, यानी किन शब्दों और
। कार्यो द्वारा प्रचार करना चाहिये मैं कई बार भटक सकता हू
कि यह करना तो बहुत कठिन है। मैं तो इसी वक्त दिन के उजाले
तरह यह देख रहा हू, किन्तु सुनिये तो–रास्ते से कौन नही भट-

अपने पथ से भटक कैसे सकता हू? बेशक मैं अपने रास्ते से थोड़ा हट सकता हू, कई बार भी हट सकता हू और शायद अपनी बात भी पराये शब्दों मे कहूगा, लेकिन बहुत देर तक नही—जो कुछ मैंने देखा है उसका सजीव बिम्ब सदा मेरे साथ रहेगा सदैव वह मेरी भूल सुधारेगा और मुझे सही रास्ता दिखायेगा। ओह, मुझमे उत्साह और ताजगी है। मैं चल रहा हू, चल रहा हू एक हजार साल के लिये ही सही। जानते हैं, शुरू मे मैंने यह छिपाने की भी कोशिश की कि मैंने उन्हे भ्रष्ट कर दिया है, किन्तु यह मेरी भूल थी—पहली भूल। सचाई मेरे कान मे फुसफुसाई कि मैं झूठ बोल रहा हू। स्वर्ग कैसे बनाया जाये—मैं नही जानता, क्योंकि शब्दो मे इसे व्यक्त नही कर सकता। अपने स्वप्न के बाद मैं शब्द खो बैठा। कम से कम सबसे महत्त्वपूर्ण, सबसे आवश्यक शब्द। लेकिन कोई बात नही—मैं जाऊगा और कभी भी थके बिना सब कुछ कहूगा क्योंकि मैंने यह सब अपनी आखो से देखा यद्यपि मैं वह सब बता नही सकता जो मैंने देखा। खिल्ली उड़ानेवाले यही तो समझते नही—"केवल सपना ही तो देखा है, ऊट-पटाग बाते दृष्टिभ्रम!" ओह! यह भी कोई बहुत समझदारी की बात है? और वे इस पर इतना गर्व भी करते है! सपना? सपना क्या होता है? क्या हमारा जीवन भी सपना नही? मैं तो यह भी कहूगा—बेशक, बेशक यह सपना कभी साकार नही होगा और स्वर्ग नही बनेगा (यह तो मैं समझता ही हू!)—लेकिन मैं तो फिर भी प्रचार करता रहूगा। वैसे यह सब बड़ा सीधा-सादा मामला है—एक दिन, एक घण्टे मे ही सब कुछ तय किया जा सकता है! सबसे बड़ी चीज है, दूसरो को अपनी ही तरह प्यार करो, यही सबसे बड़ी चीज है और बात खत्म। इससे अधिक कुछ भी नही चाहिये—उसी क्षण यह मालूम हो जायेगा कि कैसे सब कुछ ठीक-ठाक किया जा सकता है। वैसे यह एक पुरानी सचाई है जिसे करोड़ो बार दोहराया गया है और फिर भी उसकी जड़ नही जमी। "जीवन की चेतना जीवन से बढ़कर है और सुख के नियमो की जानकारी सुख से बढ़कर है"—यह है जिसके विरुद्ध हमे संघर्ष करना चाहिये! और मैं ऐसा करूगा। यदि सभी चाहे तो फौरन सब कुछ हो सकता है।

यही वह बालिका, जो [illegible] खोज लिया और मैं अपने रास्ते पर चलता जाऊगा! चलता जाऊगा!

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है·
रादुगा प्रकाशन,
१७, जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

Ф. М. Достоевский
ПОВЕСТИ И РАССКАЗЫ
На языке хинди

Перевод осуществлён по книгам:

Ф. М. Достоевский. Собрание сочинений в 10 тт. Гослитиздат, М., 1956–1958.